

UNIVERSAL
LIBRARY

OU-232768

UNIVERSAL
LIBRARY

مَنْ شَاءَ اللَّهُ لَا فُتْرَةَ الْإِسْلَامِ



مَطْبَعُ الْإِسْلَامِ وَتَرْجُومَةُ
دَرْجَةُ زَاوَاكَايُو مَطْبُوعِ

[illegible]

[illegible]

بہارِ شمس
از دل و فضا
جہت میں
نہی ہے

باب العلم و قوم
بعضی افلاک
که در جمیع مذبح
پاره حدیث است
ست ۱۶

[illegible]

عبد
مفتی محمد حسین
منصور آباد
نہرو پور
ابن عباس سی
ایبٹ آباد

محرم الحرام
الحمد لله
الحمد لله
الحمد لله
الحمد لله

[illegible]

[illegible]

ل
عبد
محمد بن عبد الله
عبد الله بن عبد الله
أحمد بن محمد
في المشقة ١٧

١	٢	٣	٤	٥	٦	٧	٨	٩	١٠	١١	١٢	١٣	١٤	١٥	١٦	١٧	١٨	١٩	٢٠	٢١	٢٢	٢٣	٢٤	٢٥	٢٦	٢٧	٢٨	٢٩	٣٠	٣١	٣٢	٣٣	٣٤	٣٥	٣٦	٣٧	٣٨	٣٩	٤٠	٤١	٤٢	٤٣	٤٤	٤٥	٤٦	٤٧	٤٨	٤٩	٥٠	٥١	٥٢	٥٣	٥٤	٥٥	٥٦	٥٧	٥٨	٥٩	٦٠	٦١	٦٢	٦٣	٦٤	٦٥	٦٦	٦٧	٦٨	٦٩	٧٠	٧١	٧٢	٧٣	٧٤	٧٥	٧٦	٧٧	٧٨	٧٩	٨٠	٨١	٨٢	٨٣	٨٤	٨٥	٨٦	٨٧	٨٨	٨٩	٩٠	٩١	٩٢	٩٣	٩٤	٩٥	٩٦	٩٧	٩٨	٩٩	١٠٠
١	٢	٣	٤	٥	٦	٧	٨	٩	١٠	١١	١٢	١٣	١٤	١٥	١٦	١٧	١٨	١٩	٢٠	٢١	٢٢	٢٣	٢٤	٢٥	٢٦	٢٧	٢٨	٢٩	٣٠	٣١	٣٢	٣٣	٣٤	٣٥	٣٦	٣٧	٣٨	٣٩	٤٠	٤١	٤٢	٤٣	٤٤	٤٥	٤٦	٤٧	٤٨	٤٩	٥٠	٥١	٥٢	٥٣	٥٤	٥٥	٥٦	٥٧	٥٨	٥٩	٦٠	٦١	٦٢	٦٣	٦٤	٦٥	٦٦	٦٧	٦٨	٦٩	٧٠	٧١	٧٢	٧٣	٧٤	٧٥	٧٦	٧٧	٧٨	٧٩	٨٠	٨١	٨٢	٨٣	٨٤	٨٥	٨٦	٨٧	٨٨	٨٩	٩٠	٩١	٩٢	٩٣	٩٤	٩٥	٩٦	٩٧	٩٨	٩٩	١٠٠
١	٢	٣	٤	٥	٦	٧	٨	٩	١٠	١١	١٢	١٣	١٤	١٥	١٦	١٧	١٨	١٩	٢٠	٢١	٢٢	٢٣	٢٤	٢٥	٢٦	٢٧	٢٨	٢٩	٣٠	٣١	٣٢	٣٣	٣٤	٣٥	٣٦	٣٧	٣٨	٣٩	٤٠	٤١	٤٢	٤٣	٤٤	٤٥	٤٦	٤٧	٤٨	٤٩	٥٠	٥١	٥٢	٥٣	٥٤	٥٥	٥٦	٥٧	٥٨	٥٩	٦٠	٦١	٦٢	٦٣	٦٤	٦٥	٦٦	٦٧	٦٨	٦٩	٧٠	٧١	٧٢	٧٣	٧٤	٧٥	٧٦	٧٧	٧٨	٧٩	٨٠	٨١	٨٢	٨٣	٨٤	٨٥	٨٦	٨٧	٨٨	٨٩	٩٠	٩١	٩٢	٩٣	٩٤	٩٥	٩٦	٩٧	٩٨	٩٩	١٠٠
١	٢	٣	٤	٥	٦	٧	٨	٩	١٠	١١	١٢	١٣	١٤	١٥	١٦	١٧	١٨	١٩	٢٠	٢١	٢٢	٢٣	٢٤	٢٥	٢٦	٢٧	٢٨	٢٩	٣٠	٣١	٣٢	٣٣	٣٤	٣٥	٣٦	٣٧	٣٨	٣٩	٤٠	٤١	٤٢	٤٣	٤٤	٤٥	٤٦	٤٧	٤٨	٤٩	٥٠	٥١	٥٢	٥٣	٥٤	٥٥	٥٦	٥٧	٥٨	٥٩	٦٠	٦١	٦٢	٦٣	٦٤	٦٥	٦٦	٦٧	٦٨	٦٩	٧٠	٧١	٧٢	٧٣	٧٤	٧٥	٧٦	٧٧	٧٨	٧٩	٨٠	٨١	٨٢	٨٣	٨٤	٨٥	٨٦	٨٧	٨٨	٨٩	٩٠	٩١	٩٢	٩٣	٩٤	٩٥	٩٦	٩٧	٩٨	٩٩	١٠٠
١	٢	٣	٤	٥	٦	٧	٨	٩	١٠	١١	١٢	١٣	١٤																																																																																						

[illegible]

١	الكتاب	٢	٣	٤	٥	٦	٧	٨	٩	١٠	١١	١٢	١٣	١٤	١٥	١٦	١٧	١٨	١٩	٢٠	٢١	٢٢	٢٣	٢٤	٢٥	٢٦	٢٧	٢٨	٢٩	٣٠	٣١	٣٢	٣٣	٣٤	٣٥	٣٦	٣٧	٣٨	٣٩	٤٠	٤١	٤٢	٤٣	٤٤	٤٥	٤٦	٤٧	٤٨	٤٩	٥٠	٥١	٥٢	٥٣	٥٤	٥٥	٥٦	٥٧	٥٨	٥٩	٦٠	٦١	٦٢	٦٣	٦٤	٦٥	٦٦	٦٧	٦٨	٦٩	٧٠	٧١	٧٢	٧٣	٧٤	٧٥	٧٦	٧٧	٧٨	٧٩	٨٠	٨١	٨٢	٨٣	٨٤	٨٥	٨٦	٨٧	٨٨	٨٩	٩٠	٩١	٩٢	٩٣	٩٤	٩٥	٩٦	٩٧	٩٨	٩٩	١٠٠	١٠١	١٠٢	١٠٣	١٠٤	١٠٥	١٠٦	١٠٧	١٠٨	١٠٩	١١٠	١١١	١١٢	١١٣	١١٤	١١٥	١١٦	١١٧	١١٨	١١٩	١٢٠	١٢١	١٢٢	١٢٣	١٢٤	١٢٥	١٢٦	١٢٧	١٢٨	١٢٩	١٣٠	١٣١	١٣٢	١٣٣	١٣٤	١٣٥	١٣٦	١٣٧	١٣٨	١٣٩	١٤٠	١٤١	١٤٢	١٤٣	١٤٤	١٤٥	١٤٦	١٤٧	١٤٨	١٤٩	١٥٠	١٥١	١٥٢	١٥٣	١٥٤	١٥٥	١٥٦	١٥٧	١٥٨	١٥٩	١٦٠	١٦١	١٦٢	١٦٣	١٦٤	١٦٥	١٦٦	١٦٧	١٦٨	١٦٩	١٧٠	١٧١	١٧٢	١٧٣	١٧٤	١٧٥	١٧٦	١٧٧	١٧٨	١٧٩	١٨٠	١٨١	١٨٢	١٨٣	١٨٤	١٨٥	١٨٦	١٨٧	١٨٨	١٨٩	١٩٠	١٩١	١٩٢	١٩٣	١٩٤	١٩٥	١٩٦	١٩٧	١٩٨	١٩٩	٢٠٠	٢٠١	٢٠٢	٢٠٣	٢٠٤	٢٠٥	٢٠٦	٢٠٧	٢٠٨	٢٠٩	٢١٠	٢١١	٢١٢	٢١٣	٢١٤	٢١٥	٢١٦	٢١٧	٢١٨	٢١٩	٢٢٠	٢٢١	٢٢٢	٢٢٣	٢٢٤	٢٢٥	٢٢٦	٢٢٧	٢٢٨	٢٢٩	٢٣٠	٢٣١	٢٣٢	٢٣٣	٢٣٤	٢٣٥	٢٣٦	٢٣٧	٢٣٨	٢٣٩	٢٤٠	٢٤١	٢٤٢	٢٤٣	٢٤٤	٢٤٥	٢٤٦	٢٤٧	٢٤٨	٢٤٩	٢٥٠	٢٥١	٢٥٢	٢٥٣	٢٥٤	٢٥٥	٢٥٦	٢٥٧	٢٥٨	٢٥٩	٢٦٠	٢٦١	٢٦٢	٢٦٣	٢٦٤	٢٦٥	٢٦٦	٢٦٧	٢٦٨	٢٦٩	٢٧٠	٢٧١	٢٧٢	٢٧٣	٢٧٤	٢٧٥	٢٧٦	٢٧٧	٢٧٨	٢٧٩	٢٨٠	٢٨١	٢٨٢	٢٨٣	٢٨٤	٢٨٥	٢٨٦	٢٨٧	٢٨٨	٢٨٩	٢٩٠	٢٩١	٢٩٢	٢٩٣	٢٩٤	٢٩٥	٢٩٦	٢٩٧	٢٩٨	٢٩٩	٣٠٠	٣٠١	٣٠٢	٣٠٣	٣٠٤	٣٠٥	٣٠٦	٣٠٧	٣٠٨	٣٠٩	٣١٠	٣١١	٣١٢	٣١٣	٣١٤	٣١٥	٣١٦	٣١٧	٣١٨	٣١٩	٣٢٠	٣٢١	٣٢٢	٣٢٣	٣٢٤	٣٢٥	٣٢٦	٣٢٧	٣٢٨	٣٢٩	٣٣٠	٣٣١	٣٣٢	٣٣٣	٣٣٤	٣٣٥	٣٣٦	٣٣٧	٣٣٨	٣٣٩	٣٤٠	٣٤١	٣٤٢	٣٤٣	٣٤٤	٣٤٥	٣٤٦	٣٤٧	٣٤٨	٣٤٩	٣٥٠	٣٥١	٣٥٢	٣٥٣	٣٥٤	٣٥٥	٣٥٦	٣٥٧	٣٥٨	٣٥٩	٣٦٠	٣٦١	٣٦٢	٣٦٣	٣٦٤	٣٦٥	٣٦٦	٣٦٧	٣٦٨	٣٦٩	٣٧٠	٣٧١	٣٧٢	٣٧٣	٣٧٤	٣٧٥	٣٧٦	٣٧٧	٣٧٨	٣٧٩	٣٨٠	٣٨١	٣٨٢	٣٨٣	٣٨٤	٣٨٥	٣٨٦	٣٨٧	٣٨٨	٣٨٩	٣٩٠	٣٩١	٣٩٢	٣٩٣	٣٩٤	٣٩٥	٣٩٦	٣٩٧	٣٩٨	٣٩٩	٤٠٠	٤٠١	٤٠٢	٤٠٣	٤٠٤	٤٠٥	٤٠٦	٤٠٧	٤٠٨	٤٠٩	٤١٠	٤١١	٤١٢	٤١٣	٤١٤	٤١٥	٤١٦	٤١٧	٤١٨	٤١٩	٤٢٠	٤٢١	٤٢٢	٤٢٣	٤٢٤	٤٢٥	٤٢٦	٤٢٧	٤٢٨	٤٢٩	٤٣٠	٤٣١	٤٣٢	٤٣٣	٤٣٤	٤٣٥	٤٣٦	٤٣٧	٤٣٨	٤٣٩	٤٤٠	٤٤١	٤٤٢	٤٤٣	٤٤٤	٤٤٥	٤٤٦	٤٤٧	٤٤٨	٤٤٩	٤٥٠	٤٥١	٤٥٢	٤٥٣	٤٥٤	٤٥٥	٤٥٦	٤٥٧	٤٥٨	٤٥٩	٤٦٠	٤٦١	٤٦٢	٤٦٣	٤٦٤	٤٦٥	٤٦٦	٤٦٧	٤٦٨	٤٦٩	٤٧٠	٤٧١	٤٧٢	٤٧٣	٤٧٤	٤٧٥	٤٧٦	٤٧٧	٤٧٨	٤٧٩	٤٨٠	٤٨١	٤٨٢	٤٨٣	٤٨٤	٤٨٥	٤٨٦	٤٨٧	٤٨٨	٤٨٩	٤٩٠	٤٩١	٤٩٢	٤٩٣	٤٩٤	٤٩٥	٤٩٦	٤٩٧	٤٩٨	٤٩٩	٥٠٠	٥٠١	٥٠٢	٥٠٣	٥٠٤	٥٠٥	٥٠٦	٥٠٧	٥٠٨	٥٠٩	٥١٠	٥١١	٥١٢	٥١٣	٥١٤	٥١٥	٥١٦	٥١٧	٥١٨	٥١٩	٥٢٠	٥٢١	٥٢٢	٥٢٣	٥٢٤	٥٢٥	٥٢٦	٥٢٧	٥٢٨	٥٢٩	٥٣٠	٥٣١	٥٣٢	٥٣٣	٥٣٤	٥٣٥	٥٣٦	٥٣٧	٥٣٨	٥٣٩	٥٤٠	٥٤١	٥٤٢	٥٤٣	٥٤٤	٥٤٥	٥٤٦	٥٤٧	٥٤٨	٥٤٩	٥٥٠	٥٥١	٥٥٢	٥٥٣	٥٥٤	٥٥٥	٥٥٦	٥٥٧	٥٥٨	٥٥٩	٥٦٠	٥٦١	٥٦٢	٥٦٣	٥٦٤	٥٦٥	٥٦٦	٥٦٧	٥٦٨	٥٦٩	٥٧٠	٥٧١	٥٧٢	٥٧٣	٥٧٤	٥٧٥	٥٧٦	٥٧٧	٥٧٨	٥٧٩	٥٨٠	٥٨١	٥٨٢	٥٨٣	٥٨٤	٥٨٥	٥٨٦	٥٨٧	٥٨٨	٥٨٩	٥٩٠	٥٩١	٥٩٢	٥٩٣	٥٩٤	٥٩٥	٥٩٦	٥٩٧	٥٩٨	٥٩٩	٦٠٠	٦٠١	٦٠٢	٦٠٣	٦٠٤	٦٠٥	٦٠٦	٦٠٧	٦٠٨	٦٠٩	٦١٠	٦١١	٦١٢	٦١٣	٦١٤	٦١٥	٦١٦	٦١٧	٦١٨	٦١٩	٦٢٠	٦٢١	٦٢٢	٦٢٣	٦٢٤	٦٢٥	٦٢٦	٦٢٧	٦٢٨	٦٢٩	٦٣٠	٦٣١	٦٣٢	٦٣٣	٦٣٤	٦٣٥	٦٣٦	٦٣٧	٦٣٨	٦٣٩	٦٤٠	٦٤١	٦٤٢	٦٤٣	٦٤٤	٦٤٥	٦٤٦	٦٤٧	٦٤٨	٦٤٩	٦٥٠	٦٥١	٦٥٢	٦٥٣	٦٥٤	٦٥٥	٦٥٦	٦٥٧	٦٥٨	٦٥٩	٦٦٠	٦٦١	٦٦٢	٦٦٣	٦٦٤	٦٦٥	٦٦٦	٦٦٧	٦٦٨	٦٦٩	٦٧٠	٦٧١	٦٧٢	٦٧٣	٦٧٤	٦٧٥	٦٧٦	٦٧٧	٦٧٨	٦٧٩	٦٨٠	٦٨١	٦٨٢	٦٨٣	٦٨٤	٦٨٥	٦٨٦	٦٨٧	٦٨٨	٦٨٩	٦٩٠	٦٩١	٦٩٢	٦٩٣	٦٩٤	٦٩٥	٦٩٦	٦٩٧	٦٩٨	٦٩٩	٧٠٠	٧٠١	٧٠٢	٧٠٣	٧٠٤	٧٠٥	٧٠٦	٧٠٧	٧٠٨	٧٠٩	٧١٠	٧١١	٧١٢	٧١٣	٧١٤	٧١٥	٧١٦	٧١٧	٧١٨	٧١٩	٧٢٠	٧٢١	٧٢٢	٧٢٣	٧٢٤	٧٢٥	٧٢٦	٧٢٧	٧٢٨	٧٢٩	٧٣٠	٧٣١	٧٣٢	٧٣٣	٧٣٤	٧٣٥	٧٣٦	٧٣٧	٧٣٨	٧٣٩	٧٤٠	٧٤١	٧٤٢	٧٤٣	٧٤٤	٧٤٥	٧٤٦	٧٤٧	٧٤٨	٧٤٩	٧٥٠	٧٥١	٧٥٢	٧٥٣	٧٥٤	٧٥٥	٧٥٦	٧٥٧	٧٥٨	٧٥٩	٧٦٠	٧٦١	٧٦٢	٧٦٣	٧٦٤	٧٦٥	٧٦٦	٧٦٧	٧٦٨	٧٦٩	٧٧٠	٧٧١	٧٧٢	٧٧٣	٧٧٤	٧٧٥	٧٧٦	٧٧٧	٧٧٨	٧٧٩	٧٨٠	٧٨١	٧٨٢	٧٨٣	٧٨٤	٧٨٥	٧٨٦	٧٨٧	٧٨٨	٧٨٩	٧٩٠	٧٩١	٧٩٢	٧٩٣	٧٩٤	٧٩٥	٧٩٦	٧٩٧	٧٩٨	٧٩٩	٨٠٠	٨٠١	٨٠٢	٨٠٣	٨٠٤	٨٠٥	٨٠٦	٨٠٧	٨٠٨	٨٠٩	٨١٠	٨١١	٨١٢	٨١٣	٨١٤	٨١٥	٨١٦	٨١٧	٨١٨	٨١٩	٨٢٠	٨٢١	٨٢٢	٨٢٣	٨٢٤	٨٢٥	٨٢٦	٨٢٧	٨٢٨	٨٢٩	٨٣٠	٨٣١	٨٣٢	٨٣٣	٨٣٤	٨٣٥	٨٣٦	٨٣٧	٨٣٨	٨٣٩	٨٤٠	٨٤١	٨٤٢	٨٤٣	٨٤٤	٨٤٥	٨٤٦	٨٤٧	٨٤٨	٨٤٩	٨٥٠	٨٥١	٨٥٢	٨٥٣	٨٥٤	٨٥٥	٨٥٦	٨٥٧	٨٥٨	٨٥٩	٨٦٠	٨٦١	٨٦٢	٨٦٣	٨٦٤	٨٦٥	٨٦٦	٨٦٧	٨٦٨	٨٦٩	٨٧٠	٨٧١	٨٧٢	٨٧٣	٨٧٤	٨٧٥	٨٧٦	٨٧٧	٨٧٨	٨٧٩	٨٨٠	٨٨١	٨٨٢	٨٨٣	٨٨٤	٨٨٥	٨٨٦	٨٨٧	٨٨٨	٨٨٩	٨٩٠	٨٩١	٨٩٢	٨٩٣	٨٩٤	٨٩٥	٨٩٦	٨٩٧	٨٩٨	٨٩٩	٩٠٠	٩٠١	٩٠٢	٩٠٣	٩٠٤	٩٠٥	٩٠٦	٩٠٧	٩٠٨	٩٠٩	٩١٠	٩١١	٩١٢	٩١٣	٩١٤	٩١٥	٩١٦	٩١٧	٩١٨	٩١٩	٩٢٠	٩٢١	٩٢٢	٩٢٣	٩٢٤	٩٢٥	٩٢٦	٩٢٧	٩٢٨	٩٢٩	٩٣٠	٩٣١	٩٣٢	٩٣٣	٩٣٤	٩٣٥	٩٣٦	٩٣٧	٩٣٨	٩٣٩	٩٤٠	٩٤١	٩٤٢	٩٤٣	٩٤٤	٩٤٥	٩٤٦	٩٤٧	٩٤٨	٩٤٩	٩٥٠	٩٥١	٩٥٢	٩٥٣	٩٥٤	٩٥٥	٩٥٦	٩٥٧	٩٥٨	٩٥٩	٩٦٠	٩٦١	٩٦٢	٩٦٣	٩٦٤	٩٦٥	٩٦٦	٩٦٧	٩٦٨	٩٦٩	٩٧٠	٩٧١	٩٧٢	٩٧٣	٩٧٤	٩٧٥	٩٧٦	٩٧٧	٩٧٨	٩٧٩	٩٨٠	٩٨١	٩٨٢	٩٨٣	٩٨٤	٩٨٥	٩٨٦	٩٨٧	٩٨٨	٩٨٩	٩٩٠	٩٩١	٩٩٢	٩٩٣	٩٩٤	٩٩٥	٩٩٦	٩٩٧	٩٩٨	٩٩٩	١٠٠٠	١٠٠١	١٠٠٢	١٠٠٣	١٠٠٤	١٠٠٥	١٠٠٦	١٠٠٧	١٠٠٨	١٠٠٩	١٠١٠	١٠١١	١٠١٢	١٠١٣	١٠١٤	١٠١٥	١٠١٦	١٠١٧	١٠١٨	١٠١٩	١٠٢٠	١٠٢١	١٠٢٢	١٠٢٣	١٠٢٤	١٠٢٥	١٠٢٦	١٠٢٧	١٠٢٨	١٠٢٩	١٠٣٠	١٠٣١	١٠٣٢	١٠٣٣	١٠٣٤	١٠٣٥	١٠٣٦	١٠٣٧	١٠٣٨	١٠٣٩	١٠٤٠	١٠٤١	١٠٤٢	١٠٤٣	١٠٤٤	١٠٤٥	١٠٤٦	١٠٤٧	١٠٤٨	١٠٤٩	١٠٥٠	١٠٥١	١٠٥٢	١٠٥٣	١٠٥٤	١٠٥٥	١٠٥٦	١٠٥٧	١٠٥٨	١٠٥٩	١٠٦٠	١٠٦١	١٠٦٢	١٠٦٣	١٠٦٤	١٠٦٥	١٠٦٦	١٠٦٧	١٠٦٨	١٠٦٩	١٠٧٠	١٠٧١	١٠٧٢	١٠٧٣	١٠٧٤	١٠٧٥	١٠٧٦	١٠٧٧	١٠٧٨	١٠٧٩	١٠٨٠	١٠٨١	١٠٨٢	١٠٨٣	١٠٨٤	١٠٨٥	١٠٨٦	١٠٨٧	١٠٨٨	١٠٨٩	١٠٩٠	١٠٩١	١٠٩٢	١٠٩٣	١٠٩٤	١٠٩٥	١٠٩٦	١٠٩٧	١٠٩٨	١٠٩٩	١١٠٠	١١٠١	١١٠٢	١١٠٣	١١٠٤	١١٠٥	١١٠٦	١١٠٧	١١٠٨	١١٠٩	١١١٠	١١١١	١١١٢	١١١٣	١١١٤	١١١٥	١١١٦	١١١٧	١١١٨	١١١٩	١١٢٠	١١٢١	١١٢٢
---	--------	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------

[illegible]

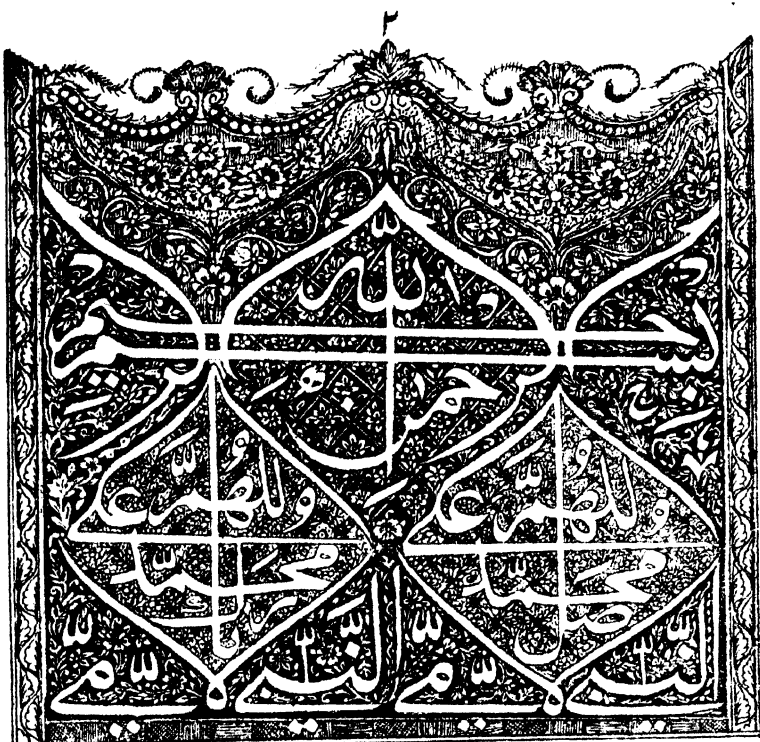
مَنْشَاءُ اللَّهِ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

ابن عنایت بی نهایت پروردگار ابدیش جناب سیدالابرار معجز کار محمدی



ایہ تمام سے شرفان محمد عبدالرحمن علیہ صلوٰۃ و سلام و شرفان منعم و فرزندیت آن حضرت با برکات محمد مصطفیٰ خان سرور

مطبع دارالافتاء و تحقیقات اسلامیہ
دری نظام آباد کانپور مطبوعہ



اور حق تعالیٰ نے انکے فضائل اور کمالات کو اور اوکی کتابوں کو ایسی شہرت دی کہ کچھ بیان کی حاجت نہیں کیں کچھ محفل اور محال برکت کے واسطے مذکور ہوتا ہے انما وہفون کو آگاہی حاصل ہو فائدہ نام و نسب مام بخاری کا ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بن براہیم بن المنذر و دیگر ایک سچو لڑکے ہجری میں پیدا ہوئے جو کھلی میں اندھے ہو گئے تھے انکی مائے حضرت ابراہیم علیہ السلام کو نوشتہ دیکھا کہ طے ہے کہ خوش ہو کہ حق تعالیٰ نے میری دعا اور زاری سے تیرے بیٹے کی آنکھوں میں روشنی عنایت کی کج کو دیکھا تو دنیا پا دس برس کی عمر میں بخاری میں حدیث یاد کرنا شروع کیا جب ستر برس کے ہوئے تو عبد اللہ بن مبارک درویش کی تصنیفات یاد کر چکے پھر حج کے واسطے گئے اور عرب میں حکم تحصیل کرنے لگے اور پھر اہل عرب کے ہوئے فضائل اصحاب اور تابعین میں تصنیف شروع کی آخر اوس سب مجموعے کی مینے بن حضرت کی قبر مبارک کے پاس نسخہ بخاری بنائی حامد بن اسماعیل محدث سے روایت ہو کر میرا در بخاری اوستادوں سے سنا سنی خاصہ حدیث تحصیل کرتے تھایک روز میں نے بخاری سے کہا کہ تمہارے پاس وہ اساتذہ منہج تمام احادیث کو نہیں لکھتے یا در ہنا مثل ہر کتاب کو ایسی تحصیل سے کیا فائدہ ہوگا سولہ روز کے بعد بخاری نے کہا کہ تم نے لکھو بہت تنگ کیا اور اپنی تحریر کو میری یادداشت سے مقابلہ کرو اور میں اس تنگ پندہ ہزار حدیث لکھ چکا تھا آج صبح شیون کو بخاری نے لکھ کر بانی سلیمان اور ایسا خوب یاد تھا کہ میں نے اپنی حدیثوں کو اس وقت صبح کر لیا پھر بخاری نے کہا کہ تم جاننے ہو کہ میری رحمت اور سرگردانی محض یہ فائدہ ہے جو اسی روز میں جان چکا تھا کہ یہ شخص شہنشاہ ہر اسکے راہ کو اپنی نوک سے گا اور صبح بخاری تصنیف کیا یہ سب ہر ایک ایک روز شیون بن راہو کی کلاس میں ذکر کیا کہ اگر کوئی صرف صبح حدیثوں کو علیہ جمع کرے تو خوب فائدہ ہو جائے گا لوگ اوس پر عمل کریں بخاری کے دل میں یہ بات اثر کر گئی چھ لاکھ حدیثیں لکھنے کے پاس تھیں اور کچھ انتہا شہرہ کیا بخاری حدیث کی صحت کمال مستند بن ثابت تھی اور اسکو لکھتے اور بانی کو ترک کرتے اور معمول یہ کیا تھا کہ ہر حدیث کی تحریر کے واسطے غسل کرتے اور دو رکعت نماز پڑھتے اور دعا اور پڑھنا کر کے کہ اتنی جتنے خطا نوشتہ آخر میں کو ہی خط سولہ برس کی رحمت سے مدینے میں حضرت کی مسجد کے اندر نہر اور حضرت کی قبر مبارک کے درمیان صبح بخاری تمام ہوئی صرف صبح حدیثوں کو ایک کتاب میں جمع کرنا اور بخاری سے شروع ہو کر سب حدیثیں صبح بخاری کی سات ہزار دو سو پچھتر ہیں اور اگر مکرر حدیث لکھتے تو چار ہزار ہیں اور کئی خوش نصیبی کے سبب یہ کتاب ایسی مقبول ہوئی کہ انکی حیات میں ستر ہزار آدمی نے بلا واسطہ ان سے یہ کتاب نہ کی تمام بخاری سے روایت ہو کر فرماتے تھے کہ بگو یہ میری ہر کتاب کی قیامت میں مجھے غیب کا سوال ہوگا اس واسطے کہ میں نے کبھی کسی کی طبیعت نہیں کی ایسی کلام سے انکے تقویٰ اور پڑھنا گاری کو خیال کیا چاہیے بخاری نے فرمایا کہ تو وہاں کہہ کہ تم اپنی تصنیفات سے ہر مکان میں لگا کر بیٹھو پڑھو اور بخاری نے کہا کہ ہر حدیث کا علم کو سکون میں لیں نہیں کہ اگر کچھ غرض ہو اپنے بیٹے کو پڑھانے کا یہ بھیجا کہ جسے اور لوگ لکھتے ہر جہ سے بھیجیں لکھا کہ تو بیٹے لایا تو اسے نواد کو بی حال بلکہ بخاری کے پاس لکھے ہمارے چوبدار روایت کرے ہر جہ سے کسی کو ملے دلو گے ہر ہمنام چاہنے کے خواہش کے ہمارے بیٹے کے بارے میں بخاری نے بات غمانی اور کہا کہ حدیث کا علم بخاری کی مرثیہ ہر جہ میں تمام بہت محمدی شریک ہو کر آئیں گے کہ جو ستر ہمنام جو کلمتی حکم مائت خوش ہوا اور بیٹھے دنیا و دنیو نام ہی عالم نے بخاری پر طعن شروع کرنے کے عالم کو اس پر مدح کیا آخر میں کو امام بخاری نے لکھا کہ بگو کچھ اول پیشا پو میں کہ وہاں کے حاکم سے بھی نام و نفقت ہوئی پھر وہاں

[illegible]

جلد اول پیش منہ

فانما من سكاو تعلقه دبا و جهان طلب محال و شكل تھا او سكو فصل كرد يا و جاردن مامون كج نه بجا مناسبا مون مين
تت معصيه شديدا و اياي عت شهادت عاجب بجا مانع كيه غرت كج عديك لبلل سلام ك واسطه عوب عيفه برك اكثر مطا ب عي كوشا
بر حيكه ديتا س جابل عالم بے اور عالم تازہ اطف و تحال حضرت مولانا عبد القادر هلو ي كى هندي تفير اور بركن طاب اعبا ك واسطه
كافي مين نيلد ك حق ترين و فو ك نك مين گوا دو ك مين بركن دو نوبهان ك انجام نظر كے ياد و پر بركن سے عرش ك ك ل كسك قنوى

كيا تحس كمول حديث كيا كبر	دوران دوع مصطفیٰ برك	صوفي عالم كبر و دين	كرتے ر سكاو كوشا عيني
بابا كيمان س كون الايا	حسنه پايامين س پايا	يه شاهره محمدی برك	كج برك راز احمدی برك
شعاع نسا بزار و سنت	بر بركن پنج و شاد بركت	هو توكس مصطفیٰ كى لغار	ست كج برك كيا تون كركار
جنب اسلى تونقل كيا كبر	يان دهر خطا كا دمل كيا كبر	ابن ياد تو مجس كركل كل	خوشيه كے كك كيا شعل
بالفرض فلان تمام و كامل	او سته تھا كيا كيا كس حاصل	و دجلى سى در كا كك كك اتھا	كو فو ت و امام و قنق قھا
ما فوط بركت مين كے ديكھي	ملفوظ محمدى كوا ب لے	ناسق تھك و كچھ برك برك	قرآن و حدیث كلس برك
حق برك حديث خواست خرم	اورش و رسول فخر عالم	تھا علم حدیث سخت و شكل	اور برك كك كك برك غافل
چا كرك بركن نيزه برك محروم	هو ترجمه نسا برك مرقوم	مقبول برك كيا برك يارب	نسا برك برك برك برك برك

الباب الاول

پہلے باب میں ہے حاشین بن جکسہ سے پڑھ کر فرمایا: اَمَّا بَعْدُ فَاَنْتُمْ عَنِ النَّارِ اَنْتُمْ اَنْتُمْ
الصلوة واما رمضان كان حقا على الله ان ياتي بحله الخجوة الهاج في سبيل الله واما
في آخر رمضان التي ولد فيها صبي بخاري من ابو هريرة سے روایت ہو کہ حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ نے اپنے سے خا کو
اور اس کے بچے کو مانا اور نماز کو ٹھیک ادا کیا اور رمضان کا روزہ رکھا کر ان فعل کی راہ سے خود کو اپنا خدا پرست بن
لیجا خواہ اپنا وطن اس سے خدا کی راہ میں جہاد کے واسطے چھوڑا ہو یا اوسى زمین میں ٹھہر رہا ہو جس میں عباد خداوند نہشت
کی پوری روایت بخاری میں یوں ہے کہ اصحاب عرض کیا کہ اگر ملے ہو تو ہم لوگوں کو خوشخبری سنائیو میں کہ بركت سے جہاد اور
اجرت پر ہو تو میں نے حضرت نے فرمایا کہ نہشت میں سو سولہ روزے ہوں کہ خدا نے غازیوں کے واسطے تقریب کی ہیں
ہر ایک وجہ سے میں اتنا فرق ہو جتنا آسمان اور زمین میں موجب تم خدا سے مانگو تو فوراً میں تمھارے کہ فرودس میں بہشت میں
کے درمیان میں ہو اور سب کو اپنی اور اس کے اوپر خدا کا عرش ہو اور اوسى سے بہشت کی سب نہر میں ہیں میں ایمن ہر جہت جہا
پر بہشت ہو تو فصل اصل نہشت کے واسطے ایمان اور نماز روزہ کفایت کرتا ہو لیکن تم بہت کوشش کرو کہ نہشت نہایت پختا عت
کو بلکہ بہت بلند رکھو جہاد کو کہ فرودس پاؤں جکے لگے نہشت میں بہت ہر اس حدیث میں فرشتوں اور خدا کی کتابوں کا اور تقدیر
اور قیامت کا ایمان لازماً ایمان میں فنا ہوا اس کے واسطے کہ جب آدمی رسول کا ایمان لایا تو کبھی ضرور ایمان لا دیا کہ تمام قرآن اور حدیث
میں کجا بیان ہو جو نماز روزہ رکھنا اور حج کا ذکر نہیں فرمایا اس کے واسطے کہ زکوٰۃ اور حج صرف مال پر فرض ہے نہ ہر حق پر نہیں

یغرض ہوا کہ اسی کا خاں اور باطنی ملک اور وہاں ہی تباہی و فساد کی بات کرنا تو کھانپنے کے چھوٹے منہ سے دو غرض حاصل ہوئی اور پہلا یہ کہ

۱۶۲ کو ان سے اور ہر ایک سے بے لطف **خ** ابن کثیر کی حکایت میں اُمّی کہ یسیر علیہ السلام سے گناہ کھل گیا تھا کہ وہ ان کی وفات کے بعد بخاری میں ابو ذر روایت ہے کہ حضرت فرمایا جو میری امت سے اس طرح پرہیز کرے گا کہ اللہ کے ساتھ سیکھا جائے نہ مانا ہو تو وہ بہت کمین

۱۶۳ واصل ہوگا اگرچہ جرم کاری اور جوہری کی ہوف یعنی مسلمان اگرچہ گناہگار ہو لیکن ایمان کی برکت سے ہمیشہ دوزخ میں نہ رہے گا یا بعد نہ کہ ایک شے میں نہ جاوے گا یا نہ کہ نفس کو ہشت پوچھا **ف** ہر صورت نجات ہر حالت میں ہے **ق** عايشة عن عائشة عن عائشة

و علیہ السلام کہ صائم عتہ ویکافہ بخاری اور مسلمین حضرت عائشہ روایت ہے کہ حضرت فرمایا جو شخص اگر صائم اور صبر و دلجو

۱۶۴ قصا کرے گا تو ہوتا ہوگی نشت اور کا وارث روزہ رکھے **ف** امام شافعی کا یہ مذہب و ایمان ہے کہ نبی میں ہر روز کے لیے صدقہ نظر برابر وارث سے ملے گی طرف سے اور اگر کسی نے نماز یا عمر کی اور حد تک لیل ہو **ق** ابو ہریرہ عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے

۱۶۵ نفسہ بقیہ و عتات کلی شعبہ من شغاک اسلام یا ہر روز روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جو شخص اس طرح پرکرتے ہوئے آجائے گا کہ ہر کھانے کو خدا میں لے کر آئے گی نیت کی تو وہ منافقوں کی طرح رہے گا **ف** یعنی جو مسلمان ہوگا جو دین محمدی کا غلبہ چاہے گا تو وہ کافروں

۱۶۶ کے واسطے لڑے گا اور اگر مسلمان نہ ہوگا تو دل میں البتہ اس کا قصد رکھے گا اور جو دل میں بھی جہاد کا جو خیال نہ کرے گا معلوم ہوا کہ منافقین کی طرح اس کا ایمان زبانی ہو ایمان کامل نہیں **ق** ابن مسعود عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے

۱۶۷ بخاری اور مسلمین میں سے ہو اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۶۸ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۶۹ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۰ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۱ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۲ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۳ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۴ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۵ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۶ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۷ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۸ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۷۹ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

۱۸۰ **م** عن عائشة عن عائشة کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص روزہ رکھے اور وہ اس کی حالت پرکرتے ہوئے ہوگا یا نہ تھا اس کو کسی اور کو اور اس کا شریعت کا نام تو وہ دوزخ میں لے گیا **ف** یعنی جو شخص سو کہ اس کی کو بھی اس امر کا الگ باب اور مسکو دفع باہر کا نماز سمجھے ہر روز روزہ رکھے

[illegible]

[illegible]

۳۳۸

انقال کما الامر وسلم علیہم بحکمة نبت فاص ان رجلا کفح صومک فی مال الله یعین کفح فکفهم النار
 یوم الیکمة بخاری من قوله نبت شرب وایت بکر خبث فرما کہ تہ رجول کہ کسے پتے میں خدکے مال میں حق نہیں
 ہونے کے لیے قیامت میں لگ کر خوف یعنی بیت المال سے سوائے حقون کے کو سیکو لینا درست نہیں

۳۳۹

ابن ہریرہ ان رجلا من اهل النبی من العطش فاعطاه النبی جمل خفہ فجعل یخفہ فکفہ یخفی انوار
 فکفہ الله فاذ خفہ فکفہ بخاری من ابوہریرہ روایت بکر خبث فرما کہ البیت ایک دوسرے کو دیکھا کہ ایک کسے کچھ
 کھا تھا اور دوسرے کو پانی پھر وہ لیکر آوین بلای پھر وہ لیکر آیا یہاں تک کہ وہ سکو چکا و یا سونے والے کو سخت ٹھکانے لگا کر پھانسی

۳۴۰

یوسف بن یزید ان رجلا من اهل النبی من العطش فاعطاه النبی جمل خفہ فجعل یخفہ فکفہ یخفی انوار
 ان علیہ قال ابن زید قال انما کان فی ہذہ القریۃ قال حل لک علیک عن نعیم فیہ قال کان علی
 انی احببت فی فیہ الله قال فانی سئل عن الله الیک یا ان الله فکفہ احببت کما احببتہ فیہ سلم بن ابیہریرہ

روایت بکر خبث فرما کہ البیت ایک دوسرے کو دیکھا کہ ایک دوسرے کو پانی پھر وہ لیکر آیا یہاں تک کہ وہ سکو چکا و یا سونے والے کو سخت ٹھکانے لگا کر پھانسی
 خدکے مال میں حق نہیں ہونے کے لیے قیامت میں لگ کر خوف یعنی بیت المال سے سوائے حقون کے کو سیکو لینا درست نہیں
 اپنے بھائی کو بلایا جاتا ہوں فرشتے نے کہا کچھ تیرا اور میرا حسن جو جسکو چھایا جاتا ہے جو سے کہا میں صرف میں اس سے نہ کہ
 واسطے محبت رکھتا ہوں فرشتے نے کہا میں خدا کا بھی ہوں تیرے پاس غلام بکر خدکے مال میں حق نہیں ہونے کے لیے قیامت میں لگ کر خوف
 منکر واسطے دعوت رکھتا ہوں اس حدیث سے معلوم ہوا کہ دیکھنے والی کس نے یہاں سے نہ کہ محبت رکھتا ہوں تیرے پاس غلام بکر خدکے مال میں حق نہیں ہونے کے لیے قیامت میں لگ کر خوف

۳۴۱

خ ان رجلا من اهل النبی من العطش فاعطاه النبی جمل خفہ فجعل یخفہ فکفہ یخفی انوار
 یخفی انوار ان رجلا من اهل النبی من العطش فاعطاه النبی جمل خفہ فجعل یخفہ فکفہ یخفی انوار
 ان علیہ قال ابن زید قال انما کان فی ہذہ القریۃ قال حل لک علیک عن نعیم فیہ قال کان علی

۳۴۲

یخفی انوار ان رجلا من اهل النبی من العطش فاعطاه النبی جمل خفہ فجعل یخفہ فکفہ یخفی انوار
 ان علیہ قال ابن زید قال انما کان فی ہذہ القریۃ قال حل لک علیک عن نعیم فیہ قال کان علی
 انی احببت فی فیہ الله قال فانی سئل عن الله الیک یا ان الله فکفہ احببت کما احببتہ فیہ سلم بن ابیہریرہ

روایت بکر خبث فرما کہ البیت ایک دوسرے کو دیکھا کہ ایک دوسرے کو پانی پھر وہ لیکر آیا یہاں تک کہ وہ سکو چکا و یا سونے والے کو سخت ٹھکانے لگا کر پھانسی
 خدکے مال میں حق نہیں ہونے کے لیے قیامت میں لگ کر خوف یعنی بیت المال سے سوائے حقون کے کو سیکو لینا درست نہیں
 اپنے بھائی کو بلایا جاتا ہوں فرشتے نے کہا کچھ تیرا اور میرا حسن جو جسکو چھایا جاتا ہے جو سے کہا میں صرف میں اس سے نہ کہ
 واسطے محبت رکھتا ہوں فرشتے نے کہا میں خدا کا بھی ہوں تیرے پاس غلام بکر خدکے مال میں حق نہیں ہونے کے لیے قیامت میں لگ کر خوف
 منکر واسطے دعوت رکھتا ہوں اس حدیث سے معلوم ہوا کہ دیکھنے والی کس نے یہاں سے نہ کہ محبت رکھتا ہوں تیرے پاس غلام بکر خدکے مال میں حق نہیں ہونے کے لیے قیامت میں لگ کر خوف

وہ بھی جو حضرت نے حدیث فرمائی میں میراث سے علوم ہو کہ شعر کہنا درست ہو نہ ٹھیک اور اس کا مضمون شریعت کے مخالف نہ ہو
 ق اَلْمَا كَدِيْمًا اِنْ شَدَّ اَلْحَبْسُ مِنْ فَجْحٍ حَكَمَ كَوَاكِدَ شَدَّ اَحْمًا فَاَقْبَضَ اَعْيَا الصَّلَاةِ فَاَعْيَا اَوْ سَمِعَ نَزَلَ
 سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اگر کسی کی تنگی دین کے جوڑ میں ولہ بال سے ہو جو غنہ ہو کہ اسے تہجد کی وقت نماز پڑھا کر و
 ات یعنی میں عالم کی گرمی دین کی گرمی کا نمونہ بنو اور جو غنہ کا وقت ہو تو تہجد کی وقت نماز پڑھا کر و
 ۳۳۳
 ۳۳۵
 ۳۳۶
 ۳۳۷
 ۳۳۸
 ۳۳۹
 ۳۴۰

روایت ہے کہ حضرت فرما کر فرشتے میں سے ایک نے اپنے اہل بیت کے واسطے تیار کر رکھیں ہیں دودھ و زعفران
 آنسوؤں کے واسطے آسمان و زمین میں سے جو حضرت سے ملگا کر دودھ و زعفران کے واسطے کہ فرود سے عذابت و بیماری و اوجھ
 ہو اور اس کے اوپر نہ کا عرض ہو اور جتنی بات کی نہیں ہو وہی خطی میں **ف** فرود سے ورنہ کو کہتے ہیں جہنم کی آگ
 بھولانے والے طرح جس کو سیکھوں نہت کی نہیں جہنم کی آگ نہرمان کی دوسری دودھ کی تیسری شہد کی چوتھی عذابت کی تیسری
 اول باب کے اول حدیث کا نام **موقوف** **ابن مسعود** **قَالَ فِي الصَّلَاةِ كَشَعْلَاءٍ بَنِي أَوَّلِي** اور سلم بن عبد اللہ بن جندب سے
 روایت ہے کہ حضرت فرما کر فرشتے میں سے ایک نے ہر ایک نماز میں سو گناہوں کے واسطے خط فرمایا ہے **ف** عبد اللہ بن
 مسعود سے روایت ہے کہ کہ بعد حضرت کو نماز میں سلام کیا کہ تیرے تھے حضرت جاسد یا کرتے تھے جب ہمہ رکعت کو پڑھیں گے سفر سے آئے
 حضرت نے پڑھیں تھے سلام کیا حضرت جاسد نے پڑھیں تھے نماز میں یعنی یہ کہ اب مقرب ہو گیا جس سے معلوم ہوا کہ اب سلام
 کرنا جواب دینا ہے یہاں آسمان و جہاں وہ رکھیں نماز میں دست نین **وَرَكْعَتَانِ لَكَ حَقٌّ لَكَ شَعْلَاءُ إِنَّ فِي كِتَابِي**
لَا تَنَافَسْتُمْ مَعَهُ فَاكُلْ كَلَامًا لَّيْسَ لَكَ لِيَكُونَ رَكْعَتَانِ لَكَ حَقٌّ لَكَ شَعْلَاءُ لَكَ حَقٌّ لَكَ شَعْلَاءُ لَكَ حَقٌّ لَكَ شَعْلَاءُ
 روایت ہے کہ اس میں سے جو کوئی دوسری رکعت پڑھے کہ حضرت فرمایا کہ تیسری است میں باہر مانا نہیں یعنی مل کے کا فرمان
 کے سلمان و کھشت میں نماز پڑھنا اور اس کی پوجہ نہ سونگھنا پونہا جب تک اس وقت سونگھنے کے لئے نہیں گئے ہیں تو کو بھی
 نہ شہادت نصیب ہے اگر اوس سے تھک کر ہو جائے اور اگر وہ ایسا نہ ہو تو اس کا چاہئے اس کے نہ مانوں نہ نہ پہلے ہوگا اور اگر چاہئے
 تو جس کمال و بیجا یعنی اوس میں سے کسی سوزش ہوگی جیسے جگر کی دھن یا اس کا ہاں ہی ہوا **هَذَا سَجْدَةُ كَيْفَ أَنْ يَكُونَ**
 تحقیق **فَإِنْ كُنَّا كَمَا سَلَّمُوا** اس بات الی کہ جسے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ کیا تکبیر کی قوم میں ایک طار
 خونریز ہو گا اور ایک بہت جو محاف **فَإِنْ كُنَّا كَمَا سَلَّمُوا** کے پاس طائفین ہیں جتنی بھی اوس قوم سے جہنم کی آگ
 خونریز ہو یا ہوا جس کا ظلم علیہم ہو **وَأَيُّكُمْ كُنَّا كَمَا سَلَّمُوا** اور میں نے سنا ہے کہ اوس قوم سے جو تھک کر تھکتے ہیں بعد شہادت
 میں نماز کے کہ کوئی نہیں مہربان ہوگی کہ اسے اول جہوٹا دعویٰ کیا امام کے خون کا اور اس سے اس سے سرور بنا لے سکے چکر
 دعویٰ کیا آخر کو خدا نے اس کو نصیب سے اور بہا دیا سو یہ حدیث حضرت کا جو وہ فرمایا تھا جیسے ہی اوس قوم سے دو
 آدمی پیدا ہوئے **قَالَ كُنَّا كَمَا سَلَّمُوا** کہ کبار لیں بعد کہ جو ہم اللہ کا بخاری اور سلم بن اس سے
 روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ کیا ہے کہ میں نے سنا ہے کہ اوس قوم سے **ف** جہنم کی آگ
 دست کا بیان ہے کہ حضرت کو قیامت میں دینے **هَذَا لَيْسَ لَكَ حَقٌّ لَكَ شَعْلَاءُ لَكَ حَقٌّ لَكَ شَعْلَاءُ**
 اللہ کے سامنے نہت عارض ہے روایت ہے کہ حضرت مسلم نے فرمایا کہ تمہارا دودھ اور زعفران اس کے مجھے سے غافل
 یا یوں فرمایا کہ وہ مجھ سے جمع کے دل تنہا کی کہ میں نے سنا ہے کہ اوس قوم سے **ف** جہنم کی آگ
 جو کہ فرمایا ہائی اور اس کے تالیف ہے کہ حضرت کی دعا **قَالَ أَلَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ حَقٌّ لَكَ شَعْلَاءُ لَكَ حَقٌّ لَكَ شَعْلَاءُ**
قَالَ كُنَّا كَمَا سَلَّمُوا کہ لا کھجور عبد بن القیس بخاری اور سلم بن ابی سعید سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ تمہارا دودھ

۳۵۰

۳۵۱

۳۵۲

۳۵۳

۳۵۴

۳۵۵

کی حاجت نہیں **الجلیل** پریشان الا **الکلی** جو مناسب ہم جسکے حلال کی انتہا نہیں **الکلی** قیامت پر شہی کا
مکھبان **المجرب** حاجت رواد کا قبول کرنے والا **الواسع** کشادہ و جست کشادہ و عطا **الکلی** عالم حکمت
ہستوار کا **الکلی** و **الکلی** کیونکہ محبوب بلبل معرفت کا **المجرب** بزرگات نیکو کار **الباعث** قیامت
قوت مند و دیکھنا والا **الشہید** ہر چیز اس کے سامنے حاضر **الحق** سچ جج جسکی ذات اور صفات میں
کچھ بھی ہو کا نہیں **الکلی** ساسے عالم کا کار ساز و بزرگ **القوی** بڑے دست **المجرب** ہستوار کا
جسکو حکما و دیکھنا والا **الکلی** بزرگ عالم کا کار ساز **المجرب** بزرگ عالم کا کار ساز **المجرب** بزرگ عالم کا
بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
زندہ کا ملنے والا آخرت میں مرد و کونندگی بخشے والا **المجرب** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
زندہ **القیوم** بذات خود قادر و جہان کا تھانے والا **الواحد** ختم جسکے کچھ محتاج نہیں **المجرب** بزرگ عالم کا
الواحد اگر کسی کوئی دوسرے نہیں **الضمد** سردار و بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
القادر ہر مہمت پر قادر **المقدّر** تقدیر والا **المقدّر** تقدیر بخشے والا **المجرب** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
الکلی بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
شکستہ نہیں **الباطن** خلق کا نظارہ ہم سے بچا **الواحد** مالک و حکم **المجرب** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
الکلی اپنے بندوں پر مہربان نیکو کار **الکلی** توبہ قبول کرنے والا **المجرب** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
گناہوں کا نشان والا **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
جو ہم کو **ذو الجلال** و **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
قیامت میں خلافت کا جمع کرنے والا **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
الضار ضرر پہنچانے والا **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
کاظم و **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
کرنے والا **الباقی** جو وجود انہی ہیبت قائم **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
الضیو بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
و **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
اور **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
بجز **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
چاہیے **الکلی** بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
الکلی بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا
روایت بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا بزرگ عالم کا

۳۷۷

۳۷۸

بزرگ عالم کا

۵۵۸

او سکا بیٹ بھر گیا اور جوش مٹے گا خدا کا جو کہ وہ کہہ کر کیا ہو کہ یہاں تو عقل و دُرُنا سنا سنیں جیسا روایت میں آیا ہے
 ہی مانتا ہے اور کہتا ہے **وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّأْتِيكَ نَاقَةٌ فَلَا مَنَاجِيَ لَهَا فَمَا كَانُوا بِهَا فِي الْأَرْضِ خَالِقِينَ**
فَيُنْزِلُ عَلَيْهِمْ طُوفَانًا مِّنْ ثَمَرِهِمْ فَهُمْ فِيهَا خَالِقُونَ **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ**
اللَّهُ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَن فِيهِنَّ يَوْمَ يَكْفُرُ كُلٌّ مَّا كَانُوا بِآيَاتِهِ أَتِينَ
 سنا کہ تیرا بھائی عیسیٰ میرا نانا کہیں گا کہ ان کا سر وار یعنی امام ہدایتی کہ آئینہ امام بنا ہو کہ وہ بڑا چھوٹا عیسیٰ کہیں گے کہ نہیں تم میں
 آپس میں نہ کیونکر شکر کے سر وار نہ ہو تیرے بھائی کی دی جو اس امت کو **ف** **يَوْمَ يَكْفُرُ كُلٌّ مَّا كَانُوا بِآيَاتِهِ أَتِينَ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
 اگر منہ و ستان میں نہ جانتا کہ اسلام غلبہ ہو تو کیا ہوا اور ولایت میں جیسے روم و ایران اور مغرب الحمد للہ کہ اسلام غالب ہوا چنانچہ
 جاری ہوا **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں

۵۵۹

روایت ہے کہ حضرت فاطمہؑ کا کانا ہو سکے بیابان کرنے کو بھیڑا و اسکو اگر بیابان کر لیں تو اس کو گوارا نہ ہوتے سب میں بیابان کیا
 ایک گنوار سب میں بیابان کرنے لگا اچھا ہے و اسکو لگا رہے تھے یہ حدیث میں بھی ہے اب تو ہونے نادانی سے بیابان کیا اب
 کہیں نہ دیکھ حضرت و اسکو بھی یاد ہے حدیث کا تمام ہی زبان نجات ہے چنانچہ ہر دوں مکان کو دھلو والا **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ**
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
 رسولین یہاں بس کہ نبی حضرت کی ہائی ہوئی سے روایت ہے کہ حضرت فاطمہؑ کہ اپنے تئیں تمام اچھا کہ تمہارا و اسنی جو علیؑ کا کوئی
 تو زمین **ف** **يَوْمَ يَكْفُرُ كُلٌّ مَّا كَانُوا بِآيَاتِهِ أَتِينَ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں

۵۶۰

یہ حدیث میں ہے کہ حضرت جنت میں پہلے نہیں اپنی پائی یا شکر تھا جیسے غلہ شمس **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
 کہیں شمس و اسکو چاہا **و** **يَوْمَ يَكْفُرُ كُلٌّ مَّا كَانُوا بِآيَاتِهِ أَتِينَ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
 وہ تو قرآن مجید **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں

۵۶۱

یہ حدیث میں ہے کہ حضرت جنت میں پہلے نہیں اپنی پائی یا شکر تھا جیسے غلہ شمس **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
 کہیں شمس و اسکو چاہا **و** **يَوْمَ يَكْفُرُ كُلٌّ مَّا كَانُوا بِآيَاتِهِ أَتِينَ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
 وہ تو قرآن مجید **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں **وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** کہیں گے کہ نہیں تم میں

۵۶۲

۵۶۳

۵۶۴

حضرت فرمایا کہ نہ ملکی کہ نہ غیر ملکی کوئی اپنے ایمانی مسلمان کی تکلیف پر وف یعنی حبیب است مسلمان کی کسی مگر شادی کی نسبت
شعر کہی ہو تو جو زبان زبانہ بنام دینا طلال میں کہ آیت دیگر مسلمان کی حق تعالیٰ پر اور اگر کسی تکلیفی ہو تو بیجا مہربانہ
نہیں خرم انہو ہر بیکہ لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین اسکو لیکر آدشکل کو کدشکل
۴۶۰ الشار اسکا لایکہ امرایہ مستعدہ من الجنتہ لایکہ احسن لیکن علی کو حسنا کہ بخاری میں ابو ہریرہ روایت ہے کہ حضرت
فرمایا کہ وہ اہل ہوگا بہشت میں کہ فی مکر و سک و کھلیا جاویگا و اسکو دوزخ کا مکان اگر وہ برائی کرتا یا زیادہ شکر کرے و نہ ذل و کلو
دوزخ میں مگر و کھلیا جاویگا و اسکا بہشت والا مکان اگر وہ فعلی کرتا یا کم سکون و خوشی یعنی ہشتی کو دوزخ و کھلیا گیا کہ
اگر وہ برائی کرتا تو دوزخ کے آقا تمام میں ہوتا تو دنیا و دوزخ و شکر و اگر کیا کہ خدا نے اپنے کرم سے جو کھلیا جسے کھلیا اور دوزخ کو بہشت کھلیا
کہ اگر تو نیکی کرتا تو فلا نے مقام میں رہتا تو اسکو سکون و خوشی کا جو کھلیا کہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۶۱ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
اور نہ اسکو دوزخ سے بھیجا و کھلیا و اسکو بہشت میں بھیجا و کھلیا و اسکو بہشت میں بھیجا و کھلیا و اسکو بہشت میں بھیجا و کھلیا
۴۶۲ اص حبیب کا یہ ظہر نہیں کہ کیا کم کچھ کام دے و کیا جیسا بعضے سے دین کہتے ہیں اس سے کہ قرآن میں ہو کہ خدا کو ان نواب عت
مناہج لایکہ ظہر لایکہ امی اپنے نیک کام کچھ نہ کرے اس سے کہ کیا کم کچھ کام دے سے دوزخ خدا کی توفیق دینے میں ہوتا تو کیا
میں بھی اہل خدا کی بہشت میں یعنی اس بہشت میں جلیا اور دوزخ سے اپنے کا خدا کی بہشت میں جلیا اور دوزخ سے اپنے کا خدا کی بہشت میں جلیا
۴۶۳ الش کہ کیا خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
نجا و کھلیا اسکا ہوا و دوزخ سے اسکو دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا
۴۶۴ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
کہ بہشت میں نہ جلیا و کھلیا و اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا
۴۶۵ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۶۶ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۶۷ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۶۸ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۶۹ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۰ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۱ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۲ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۳ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۴ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۵ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۶ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۷ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۸ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۷۹ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین
۴۸۰ ق حبیب بن مطلق لایکہ خل الجنتہ لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین لایکہ امرایہ مستعدہ من الدارین

۴۶۰

۴۶۱

۴۶۲

۴۶۳

۴۶۴

۴۶۵

۴۶۶

بہشت میں جلیا و کھلیا و اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا و دوزخ سے اسکا ہوا

[illegible]

474

475

474

426

477

479

49.

جب ایسا دیکھ کر خیال آئے تو اعوز مابعدہ بن بیان الرتیم پر شعر ابن عمر کا کہیں الٰہ لہذا الٰہا عمرہ فی غمرہ بنی نضیر
وہم لہم تہان بناری بن عبداللہ بن عمر کے رباعیہ جو کہ حضرت فرمایا کہ ہمیشہ اس خلافت اور سرداری کا حق قوم قریش کے

491

واسطے یہ جہت نکلا دینا غرض میں یہ آدمی بھی باقی رہ گیا ہے **ف** یعنی سوا قریش کسی قوم کو اسلام کی سہرا ہی کا حق نہیں ملتا۔
مرا کہ جو کدیمات تک قریش کی حکومت قائم رہی اگرچہ نصف ملک میں ہو چنانچہ اب بھی مکہ کا اور مغرب کا حکم سید محمد کو اچھوٹ کر
لاکسٹر محمد عبداللہ (واللہ اعلم) لا سیدنا اللہ یوم القہدہ مسلمین ابوہریرہ روایت ہے کہ حضرت علیؓ فرمایا کہ یہ عیسائی

492

کوئی زندہ کسی جگہ کا دنیا میں نہ رہتا اور اس کے قیامت میں چھپا دیا گیا اور وہ اس طرح عیث کا کرچہ کی طرح سے کسی کا بدن چھپا دینے کی آبی کو کچرا دیکھتا اور اس کے گناہ آخرت میں چھپا دیا گیا اور مسلمان کو ایسا نہ اچھا کہ دیکھ دوزخ کے آجیاد مسلمان کے روایت کے حضرت نے فرمایا کہ کوئی تم میں بدوین تجیر یا فہیل کے استیجا کیا کرے

495

جادو کے بغیر نہیں لےنا سنتے، اور یہی نہیں کہ امام شافعی کا امام عظیم کے نزدیک اگر ایک ہی سے بھی صفائی نہیں ملے تو نکاحات کرتا ہی اور تین دن ہی لےنا سب سے فرض نہیں **ق** ابوہریرہؓ کہ لا یسم المسلم علی سوم احب المسلمین بخاری ابومرین ابوہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا نہ مول محمدؐ اور مسلمان نہ سہمی مسلمان مول محمدؐ **ف** یعنی اگر

492

چیز کا مول ٹھہر گیا سو در مالک انسانی ہو چکا ہو تو دوسرا آدمی زیادہ میت کی رو سے آگے بڑھ گیا ہے جسے مسلمان کی موتی

سبحانہ ابو سبغہؓ کہلا ستم مکی صفتی الخوف من حیث "وَلَا لِلنَّسِ وَلَا لِلنِّسَاءِ" اَلَا شَهِدَ كَهْ يَوْمَ اَلْقِيَامِ

بخاری میں ابو سبغہؓ روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ جہان تک مؤمن کی آواز نہ پہنچی ہو وہاں تک جہنم کی آواز آدمی اور کونی پہنچ گیا

وہ اذان سننے والے کے واسطے غیام میں رنجی یکایک ایسی اوسکے ایمان کی درستی کی کہ وہ لوگوں کو جانے دے گا یا
 کرنا تھا کہ ابی دینے کے لئے ارجح اور فوری فرشتے اور جانور اور درخت و زمین پر ہر اسی واسطے مستحق کہ وہ اذان سنے

قَابُوهْرَةَ لَا يَسْبِقُ أَحَدُكُمْ دَاوَالَ اجْبِهْ السَّاحِ فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي أَحَدُكُمْ لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْفَعُ

منہ پر لایقہ و حق پر حجت لانا اور غلامی اور مسلم کو بھروسہ کر کے روایت کر کے کہ وہ مالک و شاعرہ کو کوئی ایسے بھائی
مسلمان کی طرف تکیا سے استہلے کر نہیں دیکھو و کسی بے نشا شیطان ان کے ہاتھ لہجے کو بھینچ کر تپے دفن کر کے گراہیں
و ایسی بے نشا و شاعرہ کو نہیں بنو گے کہ ہاتھ چھوٹ جائے اور مسلمان اسے جو تو قاتل و فریخ میں پڑے و معلوم ہو کہ ہاتھ

[illegible]

494

۱۰۱۰
 ۱۰۱۱
 ۱۰۱۲
 ۱۰۱۳
 ۱۰۱۴
 ۱۰۱۵
 ۱۰۱۶
 ۱۰۱۷
 ۱۰۱۸
 ۱۰۱۹
 ۱۰۲۰
 ۱۰۲۱
 ۱۰۲۲
 ۱۰۲۳
 ۱۰۲۴
 ۱۰۲۵
 ۱۰۲۶
 ۱۰۲۷
 ۱۰۲۸
 ۱۰۲۹
 ۱۰۳۰
 ۱۰۳۱
 ۱۰۳۲
 ۱۰۳۳
 ۱۰۳۴
 ۱۰۳۵
 ۱۰۳۶
 ۱۰۳۷
 ۱۰۳۸
 ۱۰۳۹
 ۱۰۴۰
 ۱۰۴۱
 ۱۰۴۲
 ۱۰۴۳
 ۱۰۴۴
 ۱۰۴۵
 ۱۰۴۶
 ۱۰۴۷
 ۱۰۴۸
 ۱۰۴۹
 ۱۰۵۰
 ۱۰۵۱
 ۱۰۵۲
 ۱۰۵۳
 ۱۰۵۴
 ۱۰۵۵
 ۱۰۵۶
 ۱۰۵۷
 ۱۰۵۸
 ۱۰۵۹
 ۱۰۶۰
 ۱۰۶۱
 ۱۰۶۲
 ۱۰۶۳
 ۱۰۶۴
 ۱۰۶۵
 ۱۰۶۶
 ۱۰۶۷
 ۱۰۶۸
 ۱۰۶۹
 ۱۰۷۰
 ۱۰۷۱
 ۱۰۷۲
 ۱۰۷۳
 ۱۰۷۴
 ۱۰۷۵
 ۱۰۷۶
 ۱۰۷۷
 ۱۰۷۸
 ۱۰۷۹
 ۱۰۸۰
 ۱۰۸۱
 ۱۰۸۲
 ۱۰۸۳
 ۱۰۸۴
 ۱۰۸۵
 ۱۰۸۶
 ۱۰۸۷
 ۱۰۸۸
 ۱۰۸۹
 ۱۰۹۰
 ۱۰۹۱
 ۱۰۹۲
 ۱۰۹۳
 ۱۰۹۴
 ۱۰۹۵
 ۱۰۹۶
 ۱۰۹۷
 ۱۰۹۸
 ۱۰۹۹
 ۱۱۰۰
 ۱۱۰۱
 ۱۱۰۲
 ۱۱۰۳
 ۱۱۰۴
 ۱۱۰۵
 ۱۱۰۶
 ۱۱۰۷
 ۱۱۰۸
 ۱۱۰۹
 ۱۱۱۰
 ۱۱۱۱
 ۱۱۱۲
 ۱۱۱۳
 ۱۱۱۴
 ۱۱۱۵
 ۱۱۱۶
 ۱۱۱۷
 ۱۱۱۸
 ۱۱۱۹
 ۱۱۲۰
 ۱۱۲۱
 ۱۱۲۲
 ۱۱۲۳
 ۱۱۲۴
 ۱۱۲۵
 ۱۱۲۶
 ۱۱۲۷
 ۱۱۲۸
 ۱۱۲۹
 ۱۱۳۰
 ۱۱۳۱
 ۱۱۳۲
 ۱۱۳۳
 ۱۱۳۴
 ۱۱۳۵
 ۱۱۳۶
 ۱۱۳۷
 ۱۱۳۸
 ۱۱۳۹
 ۱۱۴۰
 ۱۱۴۱
 ۱۱۴۲
 ۱۱۴۳
 ۱۱۴۴
 ۱۱۴۵
 ۱۱۴۶
 ۱۱۴۷
 ۱۱۴۸
 ۱۱۴۹
 ۱۱۵۰
 ۱۱۵۱
 ۱۱۵۲
 ۱۱۵۳
 ۱۱۵۴
 ۱۱۵۵
 ۱۱۵۶
 ۱۱۵۷
 ۱۱۵۸
 ۱۱۵۹
 ۱۱۶۰
 ۱۱۶۱
 ۱۱۶۲
 ۱۱۶۳
 ۱۱۶۴
 ۱۱۶۵
 ۱۱۶۶
 ۱۱۶۷
 ۱۱۶۸
 ۱۱۶۹
 ۱۱۷۰
 ۱۱۷۱
 ۱۱۷۲
 ۱۱۷۳
 ۱۱۷۴
 ۱۱۷۵
 ۱۱۷۶
 ۱۱۷۷
 ۱۱۷۸
 ۱۱۷۹
 ۱۱۸۰
 ۱۱۸۱
 ۱۱۸۲
 ۱۱۸۳
 ۱۱۸۴
 ۱۱۸۵
 ۱۱۸۶
 ۱۱۸۷
 ۱۱۸۸
 ۱۱۸۹
 ۱۱۹۰
 ۱۱۹۱
 ۱۱۹۲
 ۱۱۹۳
 ۱۱۹۴
 ۱۱۹۵
 ۱۱۹۶
 ۱۱۹۷
 ۱۱۹۸
 ۱۱۹۹
 ۱۲۰۰
 ۱۲۰۱
 ۱۲۰۲
 ۱۲۰۳
 ۱۲۰۴
 ۱۲۰۵
 ۱۲۰۶
 ۱۲۰۷
 ۱۲۰۸
 ۱۲۰۹
 ۱۲۱۰
 ۱۲۱۱
 ۱۲۱۲
 ۱۲۱۳
 ۱۲۱۴
 ۱۲۱۵
 ۱۲۱۶
 ۱۲۱۷
 ۱۲۱۸
 ۱۲۱۹
 ۱۲۲۰
 ۱۲۲۱
 ۱۲۲۲
 ۱۲۲۳
 ۱۲۲۴
 ۱۲۲۵
 ۱۲۲۶
 ۱۲۲۷
 ۱۲۲۸
 ۱۲۲۹
 ۱۲۳۰
 ۱۲۳۱
 ۱۲۳۲
 ۱۲۳۳
 ۱۲۳۴
 ۱۲۳۵
 ۱۲۳۶
 ۱۲۳۷
 ۱۲۳۸
 ۱۲۳۹
 ۱۲۴۰
 ۱۲۴۱
 ۱۲۴۲
 ۱۲۴۳
 ۱۲۴۴
 ۱۲۴۵
 ۱۲۴۶
 ۱۲۴۷
 ۱۲۴۸
 ۱۲۴۹
 ۱۲۵۰
 ۱۲۵۱
 ۱۲۵۲
 ۱۲۵۳
 ۱۲۵۴
 ۱۲۵۵
 ۱۲۵۶
 ۱۲۵۷
 ۱۲۵۸
 ۱۲۵۹
 ۱۲۶۰
 ۱۲۶۱
 ۱۲۶۲
 ۱۲۶۳
 ۱۲۶۴
 ۱۲۶۵
 ۱۲۶۶
 ۱۲۶۷
 ۱۲۶۸
 ۱۲۶۹
 ۱۲۷۰
 ۱۲۷۱
 ۱۲۷۲
 ۱۲۷۳
 ۱۲۷۴
 ۱۲۷۵
 ۱۲۷۶
 ۱۲۷۷
 ۱۲۷۸
 ۱۲۷۹
 ۱۲۸۰
 ۱۲۸۱
 ۱۲۸۲
 ۱۲۸۳
 ۱۲۸۴
 ۱۲۸۵
 ۱۲۸۶
 ۱۲۸۷
 ۱۲۸۸
 ۱۲۸۹
 ۱۲۹۰
 ۱۲۹۱
 ۱۲۹۲
 ۱۲۹۳
 ۱۲۹۴
 ۱۲۹۵
 ۱۲۹۶
 ۱۲۹۷
 ۱۲۹۸
 ۱۲۹۹
 ۱۳۰۰
 ۱۳۰۱
 ۱۳۰۲
 ۱۳۰۳
 ۱۳۰۴
 ۱۳۰۵
 ۱۳۰۶
 ۱۳۰۷
 ۱۳۰۸
 ۱۳۰۹
 ۱۳۱۰
 ۱۳۱۱
 ۱۳۱۲
 ۱۳۱۳
 ۱۳۱۴
 ۱۳۱۵
 ۱۳۱۶
 ۱۳۱۷
 ۱۳۱۸
 ۱۳۱۹
 ۱۳۲۰
 ۱۳۲۱
 ۱۳۲۲
 ۱۳۲۳
 ۱۳۲۴

三

تجدید اور نجات اور نبی پر صبر کرنا و رسمہ پہنک لینا و سلو دیا میت دن جھٹکا و گایا او سکا لواء ہو گا یہ سبیل

498

499

6..

4.1

فصل فی بیان
تأسیس و ترقی
و ترویج

۵

۷۲
یون
کین

۴۰۸

منع کیا کہ اسمیں شرک کی بونھری ہو بواحد کہ کسی کو یوں مناسب نہیں خر ابوہریرہؓ کہ لا یقولون احدکم الا جھرا عن رسول
ان شئت الله جھرا ان شئت لیعلم المسألة فائتہ لا تمکن حالہ بخاری میں ابوہریرہؓ سے روایت ہے کہ حضرت
فرمایا کہ کوئی یون کہ اس کے ہاں جھگڑائیں ہو اگر تو چاہے خدا مجھے رحم کر جو تو چاہے بلکہ جیسے کہ تجا نصدر کے دعا مانگے اس واسطے کہ خدا
پر کوئی جبر کرنے والا نہیں ہے دعا قبول ہو سیکو یعنی خدا مالک مختار ہے کہ کوئی اس کا روکنے والا نہیں ہے یہ کہنا کہ اگر تو چاہے تو
میری دعا قبول کر اس میں نے پرواہی نہ کرتی ہوں اور تیرا اور احتمال ہو جہاں تا ہی تو شرط کرنا اور قید لگانا چاہیے بلکہ خدا کے رحم پر بھروسہ کر کے
یقین کر کے میری دعا قبول ہوگی شک نہ کر تو اس واسطے کہ خدا کے نزدیک کچھ مشکل نہیں ہوسکتا روکنے والا کوئی نہیں ہے اور اسے مستغفر
لا یقولون احدکم الا جھرا عن رسول بن مقی و فی روایۃ ما یسعی لاحد ان یتکون خیر من یؤمن بنی

۴۰۹

بخاری میں عبد اللہ بن مسعودؓ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہرگز کوئی یون نہ کہے کہ البتہ میں بہتر ہوں حضرت یونسؑ میں بھیجی گئی
بیٹے سے اور آپؐ کا روایت میں ہے کہ لانی نہیں کیا کہ یونسؑ بن مثنیٰ سے بہتر ہے سب بغیر آپؐ کے جہاں سے فضل میں ہے کوئی
افضل نہیں ہو سکتا عا کیسہ لا یقولون احدکم خبثت نفسی ولكن لیقل نفسی بخاری میں اس طرح ہے
اسے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہرگز نہ کہے کہ میرا نفس خبیث ہوا یعنی بلیا ہو اور جس کو لیکن چاہیے کہ یون کہے کہ میرا نفس زین
کاہل اور ست ہوا یعنی خبیث اور بلیا کا فرق القہر سلمان اپنے تئیں مجھے سست اور کاہل کہنا مضائقہ نہیں حضرت کا
معمول تھا کہ ہرے بول کو پہلے سے بدل لیتے تھے ابوہریرہؓ کہ لا یقولون احدکم عبدی وامی ملک عبدی الله وکل
یساکم ائمة الله ولكن لیقل غلکھنی وجار سیمو وفنائی وقتاً فی مسلم میں ابوہریرہؓ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا
کہ ہرگز نہ کہے کوئی اپنے غلام کو میرا بندہ اور لونڈی کو میری بندی تم سب لوگ خدا کے بندے ہو اور عورتیں تمہاری خدا کی بندیاں
ولیکن چاہیے کہ یون کہے کہ میرا غلام اور میری لونڈی اور میرا اجا غمرا اور میری جوان عورت یعنی تجبی بندگی کے لائق
سوائے خدا کے اور کوئی نہیں اس واسطے منع فرمایا کہ اسمیں شرک کی بونھری ہو اور تاکہ غلاموں کے مالک غمرا اور جھڑ سے یحییٰ اس

۴۱۰

حدیث سے معلوم ہوا کہ عبد اللہ بنی اور بنڈ علی اور بنڈ حسن نام رکھنا درست نہیں ابوہریرہؓ کہ لا یقولون احدکم عبدی
الذہی فان الله هو الذہی مسلم میں ابوہریرہؓ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ کوئی یون ہرگز نہ کہے کہ کوئی مجھے ربی ہو
کہ رٹنے کا پھیرنے والا تھا ہی ہر رٹنے کو یہ کہنا اس واسطے منع کیا کہ زمانہ خدا کے قبضہ قدرت میں ہوا اسکا پھیرنے والا خدا
تو رٹنے کو یہ کہنا گویا خدا ہے الہی کی اسکی تقدیر کو یہ کہنا اور اگر رٹنے کو خود مالک مختار جان کر کہنا تو صاف کافرا و شرک کا ہوا
معلوم ہوا کہ رٹنے اور فلک کو یہ کہنا جیسے کہ شاعر و ن کی عادت ہے شریع میں ہرگز درست نہیں ہر جا کہ لا یقولون احدکم
احداکم یوم الجمعة ثم لیقل الی مقعدہ فیقعد فیہ ولكن یقول نقضوا مسلم میں ابوہریرہؓ سے روایت ہے کہ حضرت نے
فرمایا کہ ہرگز نہ اٹھاؤ کوئی اپنے بھائی یا مسلمان کو مجھے کے دن پھر پیچھے سے اس کے پیچھے کے مکان پر جا کر بیٹھو لیکن نہ کہے کہ اٹھو
ف مسجد میں نماز کو جہاں آ کر بیٹھا اسکو اٹھانا ہے پیچھے کے واسطے نہیں درست لیکن یون کہنا درست ہے کہ اٹھو بیٹھو جاؤ
نا کہ سب کو مجھ پر بواجوب ان غمرا لا یقولون احدکم الرجل من قبلہ ثم لیقل فیہ بخاری میں اور مسلم میں

۴۱۱

عبد اللہ بن عمرؓ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہرگز کوئی نہ اٹھاوے کسی مرد کو اس کے مکان سے پھر وہاں آ کر بیٹھے

۴۱۲

عبد اللہ بن عمرؓ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہرگز کوئی نہ اٹھاوے کسی مرد کو اس کے مکان سے پھر وہاں آ کر بیٹھے

بیان اس حدیث
مکان میں
۴۱۲

۴۱۵

ف اگلی حدیث خاص مسجد کے ذکر میں تھی اور یہ حدیث عام ہو مسجد ہو یا کوئی اور مکان معلوم ہو کہ شخص سے میں یا خانقاہ میں رہتا ہو یا کوئی شخص کسی مکان پر یا زمر میں بیٹھا ہو تو وہی اگلا شخص ہلکا حدیث ہوا کہ جب وہاں تک کہیں گے بھی مگر اٹھ کر نہ لے لایقون احد کو انکرم و انما انکم قلب المؤمنین میں کہ میں ابو ہریرہ سے روایت کرتے ہیں کہ حضرت نے فرمایا کہ اگر تم کھائے کوئی انکو روک کر سو کر تم تحقیق میں ایمان نہ کا دل ہو ف کرم کے معنی سخاوت ہیں جس کے لوگ انکو روک کر کہتے تھے اس واسطے کہ اس کی بنی شراب کے پینے سے آدمی کے مزاج میں سخاوت ہوتی ہو سو حضرت نے منع کیا کہ جس سے حرام یا کج چیز بنے اسکو یہ عذر نظر کر کے بولیں ہرگز لائق نہیں بلکہ

۴۱۶

کرم مناسب ہو یا ماز کے دل کو نہایت سیر فی ایمان اور سخاوت پر پھر حضرت نے فرمایا کہ انکو کے بغیر انکو انش لا غلبہ کہ انکو بھلا کر نبی جو کچھ اچھا کرے ق سعد بن ابی وقاص لا یکنید اهل المدينة احد الا انما کما یجتمع المسلمون فی المناجی اور مسلم بن سعد بن ابی وقاص سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جو عینہ والوں کو مکر اور جیل کے رنج دیکھا وہ گل جاوے جیسے

۴۱۷

بانی میں گل جاہوق ابن عمر لا یلبس النعیم القویص ولا العیامۃ ولا الذیئس ولا الشر او لک وہو

مستہ و زین ولا زعفران ولا الخفین الا ان لا یجد ملین فلیطجم حافی یكون اسفل من الکعبین بخاری اور مسلم بن عبد بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ نہ پہننے حج کا احرام ناہنہ والا کرتا اور نہ پلمی اور نہ کن ٹوپ

اور نہ پاجامہ اور نہ جب لیسے سن یعنی زرد خوشبودار گھاس اور عثران گلی ہوا اور نہ نوزے پہننے مگر جب تھیل جو تانہ پائے تو دونوں موزوں کو دھان کر کے لک پشت پائے نیچے ہوا میں ف اس حدیث پر سب مامون کا عمل ہے کہ احرام والے کو بے خیز بن نہیں

۴۱۸

مر عمار لا یجوز لہ لا یلحہ التار من صل فکل طلوع الشمس فیکل عن فیہا سلم عمر بن وہب سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ نماز کے روز میں جسے سوچ بخندہ اور ڈوبنے سے پہلے نماز پڑھی ف فجر آرام کا وقت ہو اور عمار کو بار بار

۴۱۹

کا وقت ہو اس واسطے اور فتون کی نمانا کہ اسنا اثر اور ثواب بوق ابن عمر لا یلحہ المؤمن من حق فتون بخاری اور مسلم بن عبد بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ایمان نہ رکھنے سے دو بار ف یعنی ایمان نہ رکھنے کے

کام میں ایسا کجا رہو گھا اور فریب کھا کر دوسری بار فریب نہیں کھا جیسے غفلت الیکار کوئی گناہ اس سے ہو گیا اور پھر جتنا کر اوستے تو بکری کو پھر دوبارہ اوستے اگر نہ نہیں جاتا یا تعریف ہو کامل ایمان نہ رکھنے کی روایت ہے کہ ابو ہریرہ شاعر جنگ بدر میں پڑ آیا حضرت سے

۴۲۰

اوستے منت کی اور وعدہ کیا کہ میں نے دوسری بار کافروں کا ساتھ نہ دوں گا حضرت نے اسکو صبور ٹوڑا دوسری بار وہ کافروں کے ساتھ جنگ لڑا

میں آیا اور گرفتار ہوا پھر پست کرنے لگا کہ میں قصو کو معاف کیجیے یا یہ گرفتاروں کا ساتھ نہ دوں گا کہ حضرت نے حدیث فرمائی یعنی اب ہم

ابا فریب نہیں آتے پھر قتل بوق ابن عمر لا یلحہ احد کھڑک کے پیچیدہ وهو یجول ولا یستخ فی الخلاء و یحییہ ولا یستسک فی الا ناء بخاری اور مسلم بن عبد بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ کوئی ہرگز نہ کہو

بانا الیہ دینے ماتھ سے پیشاب کرتے اور نہ دینے ماتھ سے بائلے میں ڈھیلے پوچھے اور نہ سانس جھٹے برتن میں یعنی بانی پیسے

۴۲۱

ذات انانک یا مومنہ کچھ ٹپک پڑے اور گھٹن آئے اور دھاننا ماتھ کھانے پینے کا پہلے ضرور پیشاب کی جگہ اور سکا گناہا مناسبتیں

خراؤ بھڑکے لا یکنع احد کھجاکہ ان فیئس خشبہ فی حیدرہ بخاری میں ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ نہ کہو کوئی اپنے پڑوسی کو اپنی دیوار میں لکری کاٹنے سے ف اگر پڑوسی دیوار میں لکڑیاں لٹکھا چاہے تو اسکو نہ روکو

۷۲۲

کہ یہ سب کا حق و یقین مسنون ہے لا یمکن احداکم اذ ان یلال من سحرہ فانتہ یؤذون اذ قال یتاؤنی
 یذیل لیکم فایمکنکم ویؤفیظ تاہم کہ لیس الخیر ان یقول ہلکنا وجمع بعض الشواذ لکثیر حتی یقول
 ہلکنا اومدا اصبعہ الشبک بنین بخاری اور مسلمین عبداللہ بن مسعود سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ نہ کہ کسی کو
 بلال کی اذان اور کسی سحری کھانے سے اس واسطے کہ بلال اذان بتا ہی یا راوی کے کہنا کہ اگلی تیسرا ہے تاکہ میں جوتا تیرا تیرا ہوتا
 وہ آرام کرے اور جو نہ ہو وہ مازور سحری کھانے کے واسطے جاگے اور فجر کا وقت وہ میں اس طرح اشارہ کرے اور بعض اصحاب
 کے راوی ابنی و نون یحییان ملا کر ان کا کہہ کہ کھلایا یعنی جوں ہی اونچی روشنی اول ہوتی ہے اس کا نام صبح نہیں حضرت نے فرمایا تک
 اس طرح نشانہ کرے اور حضرت نے اپنے کلمے کی دو اونگھیں کو ملا کر بھیلایا دلہن اور بائیں یعنی صبح وہ ہر جسکی روشنی جوڑی ہو
 ف یعنی صبح و دو سہ ہر ایک صبح کا ذب جسکی روشنی ہوتی ہے اس وقت تک روزہ دار کو کھانا اور مینا حرام نہیں بلکہ فجر کی نماز اور وقت
 درست نہیں دوسری صبح صادق جسکی روشنی جوڑی ہوتی ہے اس وقت روزہ دار کو کھانا پینا حرام ہر وقت ابوہریرہؓ کہ لا یؤمن

۷۲۳

لاحد من المسلمین ثلثة غیر الولد فتمتہ النار الا تحالہ القسم بخاری اور مسلمین ابوہریرہؓ روایت ہے
 کہ حضرت نے فرمایا کہ مسلمانوں میں جسکے تین ارکان نہ ہو سکند و رخ کی آنچ نہ لگے کی طرف تیسری گرنے کے ف یعنی خدا و ان میں
 بطور قسم نماز کو سکوتر و رخ گر کر ہوگا بس اتنا تو ضرور ہوگا کہ رخ کے پل چھینا ہوگا باقی چھ خدا نہیں اور حدیث میں آیا ہے کہ وہ
 یا ایک جو نماز کا بھی ہو گیا وہ رخ سے ہو گیا اس واسطے کہ ایک کی موت کا مان بپ رحمت اغوا ہو جائے اور پھر اس سے باوجود اس حدیث کے کہ
 اور ضلکی تقدیر سے رضی راؤ خدایا اس کے بل و سکند و رخ سے بچا اھرجا پر لا یؤمن احدا الا وھی یحسین الظن بالله

۷۲۴

مسلمین جابر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ نہ کہ کوئی گراس حالت میں کہ خدائے نیک گمان لکھتا ہو ایمان کے دو پیر خوف
 اور امید حالت محنت اور زندگی میں خوف غائب کیے تاکہ ان کا جو سچ اور مرنے کے وقت خوف کو خیال کرے کہ وہ وقت گناہ کے کا نہیں بلکہ
 او وقت خدا کو حرم اور کرم اور خدا اور شاہان کربخش کی ہمدان میں کچھ ناخوشی اور خوف خدا کی طرف جاکر اور مرنے سے بچ جائے اور جو مسلمان
 اس وقت موجود ہو جسکی رحیمی اور کریمی کی صفت بیان کریں تاکہ مرنے والا کا دھارس پیچھے اور خدائے گمان کی نیک صفت ہو جائے

۷۲۵

ہر ابوہریرہؓ کہ لا یستغنی فی القوم ان یتکون لغنا مسلمین ابوہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ صدیق کو لائق نہیں
 کہ بہت نعمت کیا کہ وہ ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ ابوبکر اپنے غلام پر لعنت کی تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی صدیق اس کی کمال کو
 کہتے ہیں جسکے دل میں ایسا نور ہو کہ بے طلب دلیل اور بد و نیک کھائے ایمان لائے جیسے مشہور ہے کہ ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ کچھ حضرت سے مجر
 نما یا اور کچھ دلیل تلاش کی صرف اپنی دل کے نور سے حضرت کو پیغمبران کر ایمان لائے بعد پیغمبر کی تبت کے ولایہ کے درجوں میں صدیق کے برابر

۷۲۶

کوئی مرتبہ نہیں ق عقبہ بن عامر کہ لا یستغنی فی ہذا للمؤمنین قالہ عند نزاعہ فزوج کثر لیسہ
 بخاری اور مسلمین عقبہ بن عامر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اسکا بھتا لائق نہیں پر یہ ہنگام لوگوں کو یہ حضرت نے خود شہمی قبا دار سے
 جو لگے پتے تھے فرمایا فزوج اس کو قبا کہتے ہیں جسکا کچھ سے دامن جاکر ہو سواری کے واسطے خوب ہوتی ہے سو ویسی شہمی قبا
 کیسے حضرت کو بھیجی تھی اور اس وقت کہ شہمی کی پہاڑ تھام تھا حضرت نے اسکو بھیجکر نماز پڑھی بعد نماز کے اسکو برہان کر لیا اور لا حدیث
 فرمائی اس حدیث سے معلوم ہوا کہ شہمی اور پیرنگار دنیا کی آرائش اور زینت نہیں کرنے اگر جلال اور صلح بھی ہو خواہ ان عبا بن

۷۲۷

[illegible]

الكتاب الرابع

[illegible]

455

244

646

64A

649

67.

سوم کا کنارہ ظاہر ہو کر دیکر جب تک کہ سب نکل آئے اور جب تک کہ سورج کا کنارہ تو نماز نہ پڑھو دیکر جب تک کہ سب
 دو بج جائے سورج کے طلوع اور غروب میں نماز پڑھنا علم ہے ہر اُن کو جس نے اِذَا ابُو یحییٰ تَحْلِفُ بِتَنْ فَاقْتُلُوا
 الْاٰخِرِ مِنْهُمْ اسلمین ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب بیت لی جائے دو اماموں اور پانچواں ہونے کے واسطے
 تو ان میں سے دو کو قتل کیجیو یعنی جہنم کے دو مسلمان کے اور یہی جہنم کے دو مسلمان ہیں یہی تھے جو اور اسکو پایا
 سردار بنایا ہوا اسکے بعد دوسرے امام بیعت کچھ اور مسلمانوں کی ہو تو دوسرے امام کی امامت باطل ہے ایک شہر میں ہوں یا دو شہروں میں
 دارالاسلام میں یا ہوا یا دارالاسلام کی بیعت ہو لی یا ناواقفی میں اور یہ جو فرمایا کہ دوسرے امام کو قتل کرو یعنی ہاں کو مہرہ
 شمار کرو لو کہی الامت نکرو اور اسکا حکم جاری ہونے دو اور اگر دوسرا امام امت اپنی نخبہ ہوئے اور اسے اوس صورت میں اوسکو
 قتل کرو اسواسطے کہ وہ حکم ہونے میں بڑے بڑے خساد میں شامل مشہور ہو کہ وہ ظالمین ایک میان میں نہیں رہتے اور وہاں
 ایک ملک میں نہیں رہتے اور اگر راستی میں ایک ہی وقت میں دو امام ہوں ہوں تو دونوں کی امامت درست نہیں ہے اگر کسی کے بعد جسے اکثر
 مستحب لوگوں کا جماع ہو وہ امام ہو اور اگر وہ امام بہت دور دور ملکوں میں ہوں جیسے مشرق اور مغرب کہ ایک ملک سے دوسرے ملک میں
 آتا ہوا شکل ہوا اور ایک دوسرے کی خدمت کر سکتا ہو تو اوس صورت میں دو امام ہونا بھی درست ہے راستی میں یہ ہوا یا آگے بھیجے
 اپنی امت وجہات کا یہ نہیں ہے کہ مسلمانوں پر واجب ہو کہ اگر کیا یا امام ٹھہریں اور لو کہی الامت شرع کے کو باقی اپنے اور اور حاجت میں
 تاکہ امام کا فرق ہے ہمارے مسلمانوں پر کافروں کو غالب ہونے سے بدکاروں کو تہذیب کے احکام شرع کے جاری کر کے کوئی ظلم
 نہ کرنے پانچے محتاجوں کو یتیموں کی نگہبیری کر کے لیکن شرط یہ ہے کہ امام احکام شرعی کو خوب جانتا ہو بہاد اور ہوشیار ہو تاکہ کوئی
 ملک برباد نہ کرے لڑائی نہ بگاڑے قریش کی قوم سے ہو کہ سولہ قریش کے اور کسی قوم کا امامت میں حق نہیں باقی مسلمان
 مفصل امام کے عقائد اور فضائل کتابوں دریافت کیا جاسیے ہر اُن کو سَعِدُ اِذَا اَتَتْكَ ابَاحَدُکُمْ فَلْيُكْسِبْکَ بَیْدُ
 عَلٰی فِیْہِ فَاِنَّ الشَّیْطَانَ یَدْخُلُ مِیْنِ ابْوَسْمِیْنِ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب تم میں کوئی بھائی ایسے تو اپنے
 مومن کو اپنے ساتھ سے بند کر لیا کرے اسلئے کہ شیطان گھس جاتا ہو شیطان فرمایا مودی جزیرے جیسے بھی اور چھوڑ کر غائب
 اور بھائی لیتے اکثر ان میں سے کوئی چیز نہ ہونے کے اندر گھس جاتی ہے یا سچی شیطان ہی گھس جاتا ہوا اسواسطے کہ بھائی امت پریشانی میں
 آتی ہے اور بدن بین سستی لاتی ہے اوس وقت عبادت بخوبی نہیں ہو سکتی یہی اثر ہے شیطان کا ہر اُن کو ہُوْهُنَّ اِذَا اَتَتْکَ ابَاحَدُکُمْ
 فَلْيُکْسِبْکَ بِاللّٰہِ مِنْ اَرْجَعِ قَوْلَ اَللّٰہِ عَلٰی اَعُوْذِ بِکَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ
 فِتْنَةِ الْعُمَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِیْحِ الْکَبَّالِ وَیَنْدِیْ اِذَا فَرَّخَ اَحَدُکُمْ مِنَ الشَّہَادَةِ الْاٰخِرِ
 فَلْيَقُوْذِ بِاللّٰہِ مِنْ اَرْجَعِ قَوْلَ اَللّٰہِ عَلٰی اَعُوْذِ بِکَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْعُمَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ
 الْمَسِیْحِ الْکَبَّالِ اسلمین ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب تم میں کوئی التعمیات پڑھتا ہے کہ نہ اسے چار چیزوں کی یاد ہو
 یوں کہ کہ خداوند میں تیری بنا نہ آجائے ہوں روز کے عذاب اور قبر کے عذاب اور زندگی اور موت کے فتنے سزاور دجال کے فتنے سے
 اور دوسری روایت میں آجائے کہ جب فراغت کرے پچھلے التعمیات سے تو چاہے کہ فتنے چار چیزوں کی بنا نہ آجائے روز کے عذاب اور قبر
 کے فتنے اور زندگی اور موت کے فتنے سے اور دجال کے فتنے سے روز کی کافریہ کہ آؤنی گناہ کرے کافروں کا غلبہ بھائی

۷۷۹

مسلمین ابوہریرہ سے روایت ہے

۷۸۰

۷۸۱

۴۸۲

یا بہت دولت جو کہ لو کھلائے اور موت کا فتنہ موت کے وقت کی سختیاں خاتمہ عراب ہونا سنئے ہو کہ بعد التعمیل سے رو کر یہ دعا پڑھے

ق اَبُو مُہْرَیْرَةَ وَ اَبُو سَعْدٍ اِذَا اَتَعَمَّرَ اَحَدُکُمْ فَلَا تَعْمُرْ فِیْکَ وَ جِہْہِ وَ لَا عَنْ یَمِیْنِہِ وَ لَیْسَ عَنْ شِیْءٍ اِذَا

اَوْتَعَمَّرَ فَقَدْ رَہَ الدُّعْمُ بِخِیَارِی اَوْ سَلَمَ مِّنْ اَبُوہِ رِیْثَہِ اَوْ اَبُو سَعْدٍ رِیْثَہِ رِوایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب کوئی کھلم کے

خوش کے تو اپنے منہ کے سامنے نہ تھو کے اور نہ اپنے دلہنے اور چاہے کہ اپنے بائیں طرف بائیں یا اون کے لئے تھو کے ف ایک یا حضرت نے

مسجد میں قبلے کی دیواروں تھوک لگا دیکھا تھو کی سے اوسکو پھر اذا الات یہ حدیث فرمائی نماز میں قبلے کی طرف تھوکان اس واسطے منع ہوا

کہ نماز کی خالصتہ معروض کرے اور ابھی طرف فرستہ ہے حضرت کے وقت مسجد میں فرش نہ ہوتا تھا اس واسطے قدم کے نیچے تھو کے

فرمایا اس وقت میں اگر نماز پڑھے تھوک اسے تو کپڑے میں لے لیوے چنانچہ اور روایت میں کہ پڑھے کا ذکر بھی آیا تھا اَبُو مُہْرَیْرَةَ اِذَا

تَوَضَّأَ الْعَبْدُ الْمُسْلِمُ اَوْ الْمُؤْمِنُ فَنَسَلَ وَجْہَہُ حَرَجَ مِّنْ وَجْہِہُ کُلَّ حَظِیْقَةٍ نَظَرَ اِلَیْہَا اَبَیْنَہُ مَعَ الْمَاءِ

اَوْ مَعَ اُخْرِیْ قَطْرَ الْمَاءِ وَ اِذَا غَسَلَ یَدَیْہِ حَرَجَ مِّنْ یَّدَیْہِ کُلَّ حَظِیْقَةٍ کَانَ یَطْلُقُہَا یَدًا مَعَ الْمَاءِ اَوْ

مَعَ اُخْرِیْ قَطْرَ الْمَاءِ فَاِذَا غَسَلَ رِجْلَیْہِ حَرَجَتْ کُلَّ حَظِیْقَةٍ مَّشَتْہَا اِجْلَالًا مَعَ الْمَاءِ اَوْ مَعَ اُخْرِیْ قَطْرَ الْمَاءِ

حَقِیْقَہُ حَرَجَ نَقِیْطًا مِّنْ الدُّنُوْبِ سَلَمَ مِّنْ اَبُوہِ رِیْثَہِ رِوایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب وضو کرے یا نہ مسلمان یا مانا نہ کرے

راوی کی کہ حضرت نے غسل کی لفظ فرمائی یا مؤمن کی مودھو تاہم اپنے منہ کو تو کھل جائے ہیں اسکو موندتے سب گناہ جو باقی تھکے سے دیکھا جانی

گرنے کے ساتھ یا پچھلے بالی کے تہ کے ساتھ و جب اپنے دونوں ہاتھ دھوئے تو اوسکے ہاتھوں گناہ نکل جائیں گے جو باقی تھکے سے دیکھا

جانی گرنے کے ساتھ یا پچھلے بالی کے تہ کے ساتھ چھپ جائے دونوں ہاتھوں تو نکل جائے ہیں سب گناہ کہ پورے میں نکل کر یا پانی کے ٹپکے

یا پچھلے بالی کے تہ کے ساتھ میان تک کہ گناہوں کی آگ صاف ہو جائے اس حدیث میں فضیلت ہے وضو کی معلوم ہوا کہ وضو

گناہ دو بیوتے میں یعنی مغنیہ گناہ اور گنہ گناہ و جب سے ق جانی اِذَا اَبَیْءَ اَحَدُکُمْ یَوْمَ الْجُمُعَةِ وَ قَدْ حَرَجَ الْاِسْمَامُ

فَلَمْ یَرَ کَ وَ لَعَنَ مِیْرَیْجَی اَوْ سَلَمَ مِّنْ جَابِرِیْثَہِ رِوایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب کوئی آئے جمعہ کے دن اور امام خطبے کے واسطے

نکلے چکا ہو تو بجا بیٹے کہ دو کہتین پڑھے اس حدیث دلیل ہے امام شافعی کی کہ دو رکعت تحمید مسجد پڑھنا ضروری اگر چہ امام غزالی

پڑھنا جو امام غزالی نے مذہب میں خطبے کے وقت کوئی نماز درست نہیں خطبے کا سننا فرض ہے سنت کیسے میں فرض فوت ہوتا ہو

اور دوسری روایت میں آیا کہ جب امام خطبے کے واسطے نکلے تو کوئی نماز اور کوئی بات کرنا درست نہیں ق اَبُو مُہْرَیْرَةَ اِذَا اَبَیْءَ

رَمَضَانَ فُیْتَتْ اَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَ اُغْلِقَتْ اَبْوَابُ جَهَنَّمَ وَ سُلْسِلَتِ الشَّیَاطِیْنُ مَسْلَمَ مِّنْ اَبُوہِ رِیْثَہِ رِوایت ہے

کہ حضرت نے فرمایا کہ جب رمضان کا مہینہ آتا ہے تو نبوت کے دروازے کھولے جاتے ہیں اور جہنم کے دروازے بند کیے جاتے ہیں اور شیطان بچ کر

باندھے جاتے ہیں اس حدیث میں رمضان کی برکت اور فضیلت کا بیان ہے اس واسطے کہ جب آدمی نے روزہ رکھا اور نبوت خالی ہوا

اکثر گناہوں سے بچا تو رحمت آدمی کا جوش ہو پڑے کہ روزہ رکھے و نیز بچا کہ نبوی شیطان بند ہوئے اس واسطے کہ اکثر شیطان کا قاتل آدمی

ہے نیز یعنی نماز اور اکثر نمازی لوگ بھی رمضان میں روزہ رکھتے ہیں اور نماز شروع کرتے ہیں یہ بھی دلیل ہے شیطان کے قید ہونے کی

سبب رمضان کی برکت میں کہ پھر نہیں ہر اَبُو مُہْرَیْرَةَ اِذَا اجْلَسَ اَحَدُکُمْ عَلٰی حَاجَتِہِ فَلَا یَسْتَقْبِلُ الْقِبْلَةَ

وَ لَا یَسْتَدْرِہَا سَلَمَ مِّنْ اَبُوہِ رِیْثَہِ رِوایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب کوئی باضرور کے واسطے بیٹھنے تو قبلہ کا سامنا نہ کرے

۴۸۴

یہا لقیہا واذ اعز ستمہا فاستبوی المصرق فالتھا طریقی الذی وابت و ماوی الھو اھو باللیل مسلم بن ابی ہریرہ رضی
 روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب تم سفر کیا کرو اور زانی اور سہری کے ساتھ نکلو تو کھانا حصہ نہ کرو دیکارو یعنی اونٹوں کو زمین پر چنے کو چھوڑ دیا کرو
 منزل پر پہنچ کر دو سیم سفر کو قطع و خشکی کے سال القہر جی خشکی کی منزل کو طے کر دالو اونٹوں کا گواہ ہے یعنی اونٹوں کی آواز سے گواہ دیکھو کہ
 پاس سے گھاٹ نالی کی بجائے کہ تم منزل پر پہنچ جاؤ اور بڑی بڑی منزلین کے خشکی سے نکل جاؤ اور حضرت نے فرمایا کہ جب تم
 پہنچو رات کو منزل پر لاؤ رات کو سوئوں کو چھوڑ کے علم کو روکو اور ہوا سے کہتے جاؤ روز کی آمد رفت کی راہ میں دیکھو کہ کس مقام میں
 رات کو ف اصیحت میں حضرت نے سفر کی حکمت بیان کی کہ بتایا میں ہر العباس اذا اجتهد العبد یجد معہ سبعة ارباب
 وھمھ وہا وھو ذکبتا کا وھو کما کا مسلم بن حضرت عباس سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب حجہ وہا کی بندہ رات کو اس کے ساتھ
 برکت سات غصہ ہو کر تیرا ہوں وکما ہو نہ لو اور کسے دونوں تھیلوں اور دونوں اس کے ٹھکانے اور دونوں اس کے قدم ف
 موندہ ہو کر تیرا ہوں یا تھا اور مال الھو ابون عازب اذا اجتهدت فضع کفیک الذی ارفع فضعک مسلم
 میں برادر بنی ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب توجہ کر کے تو رکھ زمین پر اپنی دونوں تھیلیوں کو اور اونچا رکھ دونوں
 اپنی کہیں کو ف یعنی جس سے میں لمبائی میں پرکھنا سکے اور لوڑی کی طرح کرو و ہریرہ اتس اذا اسلمہ
 علیکم اھل الکتاب فقولوا علیکم بخاری اور مسلم میں اس سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب سلام کریں تو کتاب واپس
 یعنی ہو واپس لے لیا ہی تو اس کے جواب میں کہو کہ علیکم یعنی ف سلام دعا جو اس سے کیا گیا کہ فزون کو الھو سلم کہنے کو
 ف یا ایہا الذین یسودہا بوجہ کے تیرا ہوں بوقی ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ اذا سمعتمہ ان قال ما فقامتھو الی الصلوۃ وعلیکم
 السکون فی الذی قالوا لا شریعہ فاما اذا دکنتم فصلوا واما قالوا فاستمعوا ای باری اور مسلم بن ابی ہریرہ سے
 روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب تم نماز کی کیلئے قیام الی الصلوۃ سنو تو علیہا نعت کی نماز کے واسطے ٹھہرے ہو
 آہستگی اور آرام سے نہ بولی کرو و چوتھی نماز امام کے ساتھ پاؤں پر چھو کر چھوٹ کر اسکا پیٹ کر و ف معلوم ہو کہ احادیث
 کے واسطے چھٹا رکوع ہر اس واسطے کہ جلدی میں نہ بیٹھو انجانا ہر نماز میں نہیں ہوتی اور یہی مذہب ہر امام احمد کا اور بعض علماء کے نزدیک
 پہلی کہیں کے واسطے جلدی کرنا درست ہر ق اسما مہ بن زید اذا سمعتمہ الطاعون یا رخص فلا تملکھما
 واذ اذکھ یا رخص واذکھمہا فلا تملکھما یعنی اجماعی اور مسلم بن اسام بن زید سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب
 ترکس زمین میں یا سنو تو زمین جاؤ اور جب ایسی زمین میں جاؤ کہ زمین میں وہا پڑے زمین تم ہو تو اس سے نہ ٹکرو جس ملک میں نہ جاؤ
 یہاں پہنچتے ہیں لہذا اور بلایاں کے اور اگر ایسی ملک میں جاؤ کہ زمین میں وہا پڑے زمین تم ہو تو اس سے نہ ٹکرو جس ملک میں نہ جاؤ
 کسان جو کجا حضرت عیسیٰ سے روایت ہے کہ ہر ماہ میں ہر کرنے والا شہید کا تو باپ کا اور ماں سے بھاگنے والا شہید کا ہر جس طرح
 کا وہ نیک صفت تھا کہ محمد بن عبد اللہ بن عمر اذا سمعتمہ المؤمن فقولوا اصل ما یقول ثم صلوا علیہ
 فانذ من صلی علی صلوۃ صلی اللہ علیہا عشرۃ ثم سلوا اللہ فی الوسیلۃ فانھا من الہ فی الجنتۃ
 لا ینفخ فی النعیم علیہا اللہ وارضوا ان الھو ان الھو فتمن سال فی الوسیلۃ حلک
 علیہ لکن اعلمہ سنہ بن عبد بن بنی سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب تم نماز پڑھو گے تو اس کی آواز سنو تو کہنے جاؤ

۸۱۵

۸۱۶

۸۱۷

۸۱۸

۸۱۹

۸۲۰

وہا لقیہا واذ اعز ستمہا فاستبوی المصرق فالتھا طریقی الذی وابت و ماوی الھو اھو باللیل مسلم بن ابی ہریرہ رضی
 روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب تم سفر کیا کرو اور زانی اور سہری کے ساتھ نکلو تو کھانا حصہ نہ کرو دیکارو یعنی اونٹوں کو زمین پر چنے کو چھوڑ دیا کرو
 منزل پر پہنچ کر دو سیم سفر کو قطع و خشکی کے سال القہر جی خشکی کی منزل کو طے کر دالو اونٹوں کا گواہ ہے یعنی اونٹوں کی آواز سے گواہ دیکھو کہ
 پاس سے گھاٹ نالی کی بجائے کہ تم منزل پر پہنچ جاؤ اور بڑی بڑی منزلین کے خشکی سے نکل جاؤ اور حضرت نے فرمایا کہ جب تم
 پہنچو رات کو منزل پر لاؤ رات کو سوئوں کو چھوڑ کے علم کو روکو اور ہوا سے کہتے جاؤ روز کی آمد رفت کی راہ میں دیکھو کہ کس مقام میں
 رات کو ف اصیحت میں حضرت نے سفر کی حکمت بیان کی کہ بتایا میں ہر العباس اذا اجتهد العبد یجد معہ سبعة ارباب
 وھمھ وہا وھو ذکبتا کا وھو کما کا مسلم بن حضرت عباس سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب حجہ وہا کی بندہ رات کو اس کے ساتھ
 برکت سات غصہ ہو کر تیرا ہوں وکما ہو نہ لو اور کسے دونوں تھیلوں اور دونوں اس کے ٹھکانے اور دونوں اس کے قدم ف
 موندہ ہو کر تیرا ہوں یا تھا اور مال الھو ابون عازب اذا اجتهدت فضع کفیک الذی ارفع فضعک مسلم
 میں برادر بنی ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب توجہ کر کے تو رکھ زمین پر اپنی دونوں تھیلیوں کو اور اونچا رکھ دونوں
 اپنی کہیں کو ف یعنی جس سے میں لمبائی میں پرکھنا سکے اور لوڑی کی طرح کرو و ہریرہ اتس اذا اسلمہ
 علیکم اھل الکتاب فقولوا علیکم بخاری اور مسلم میں اس سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب سلام کریں تو کتاب واپس
 یعنی ہو واپس لے لیا ہی تو اس کے جواب میں کہو کہ علیکم یعنی ف سلام دعا جو اس سے کیا گیا کہ فزون کو الھو سلم کہنے کو
 ف یا ایہا الذین یسودہا بوجہ کے تیرا ہوں بوقی ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ اذا سمعتمہ ان قال ما فقامتھو الی الصلوۃ وعلیکم
 السکون فی الذی قالوا لا شریعہ فاما اذا دکنتم فصلوا واما قالوا فاستمعوا ای باری اور مسلم بن ابی ہریرہ سے
 روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب تم نماز کی کیلئے قیام الی الصلوۃ سنو تو علیہا نعت کی نماز کے واسطے ٹھہرے ہو
 آہستگی اور آرام سے نہ بولی کرو و چوتھی نماز امام کے ساتھ پاؤں پر چھو کر چھوٹ کر اسکا پیٹ کر و ف معلوم ہو کہ احادیث
 کے واسطے چھٹا رکوع ہر اس واسطے کہ جلدی میں نہ بیٹھو انجانا ہر نماز میں نہیں ہوتی اور یہی مذہب ہر امام احمد کا اور بعض علماء کے نزدیک
 پہلی کہیں کے واسطے جلدی کرنا درست ہر ق اسما مہ بن زید اذا سمعتمہ الطاعون یا رخص فلا تملکھما
 واذ اذکھ یا رخص واذکھمہا فلا تملکھما یعنی اجماعی اور مسلم بن اسام بن زید سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب
 ترکس زمین میں یا سنو تو زمین جاؤ اور جب ایسی زمین میں جاؤ کہ زمین میں وہا پڑے زمین تم ہو تو اس سے نہ ٹکرو جس ملک میں نہ جاؤ
 یہاں پہنچتے ہیں لہذا اور بلایاں کے اور اگر ایسی ملک میں جاؤ کہ زمین میں وہا پڑے زمین تم ہو تو اس سے نہ ٹکرو جس ملک میں نہ جاؤ
 کسان جو کجا حضرت عیسیٰ سے روایت ہے کہ ہر ماہ میں ہر کرنے والا شہید کا تو باپ کا اور ماں سے بھاگنے والا شہید کا ہر جس طرح
 کا وہ نیک صفت تھا کہ محمد بن عبد اللہ بن عمر اذا سمعتمہ المؤمن فقولوا اصل ما یقول ثم صلوا علیہ
 فانذ من صلی علی صلوۃ صلی اللہ علیہا عشرۃ ثم سلوا اللہ فی الوسیلۃ فانھا من الہ فی الجنتۃ
 لا ینفخ فی النعیم علیہا اللہ وارضوا ان الھو ان الھو فتمن سال فی الوسیلۃ حلک
 علیہ لکن اعلمہ سنہ بن عبد بن بنی سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جب تم نماز پڑھو گے تو اس کی آواز سنو تو کہنے جاؤ

[illegible]

تھرا کہ مرنے لگا کہ بھلا فرمائیے تو جسکے داؤٹ ہوں بکریاں زمین دیکھا کہ حضرت فرمایا کہ وہ اپنی تلوار کا قبضہ کرتے سو بھر سے
 او سکی بائوہ کو کوٹ لے یعنی اسنے کی چیز کوئی باقی نہ رکھے جو جو صلہ ہو لڑائی کا پھر جلدی کرے اپنے بچاؤ میں مبنی ہو سکے اسی
 میں تیرا حکم پونچا چکا اسی میں تیرا حکم پونچا چکا اسکو تین بار فرمایا پھر ایک مرد نے کہا بھلا بتلائے تو کہ
 اگر مجھے زبردستی کریں بیان تک کہ دو غوغوئیں یاد کرو ہوں میں کسی طرف کھینچ لیجاؤں پھر وہاں کوئی بھگتو مارے یا کوئی
 تیرا کہے اور بھگتو قتل کرے حضرت فرمایا کہ تیرا اور اسکا گناہ اسی پر پلٹ پڑیگا اور وہ دو فریون میں داخل ہوگا **ف**
 حضرت کو معلوم تھا کہ یہ بد فساد ہوئے اور مسلمانوں میں قتل شروع ہوگا اسلئے حضرت نے یہ حدیث فرمائی اور اسوقت میں
 گوشگیری تھائی اکثر حضرت کے ہمسائے عبداللہ بن عمر اور سعد بن ابی وقاص اور ابو بکرہ مسلمانوں کی جنگ میں شریک ہوئے جو جب
 اسی حدیث کی **ق** ابن عمرؓ اذا نصح العبد لسيده واحسن عبادته رقه كان له الاجر كجس مكراتين
 بخاری اور مسلم میں عبداللہ بن عمرؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ غلام نے اپنے مالک کی خبر خواہی کی اور اپنے خدا کی تعجبی بات
 کی تو اسکے دو سہ توابع بنے **ف** یعنی ایک تابع نبی مالک کی اطاعت کا اور دوسرا توابع حقیقی مالک کی اطاعت کا **س**
 ابوہریرہؓ اذا نظر احدكم الى من فضل عليه في المال والخلق فلينظر الى من هو اسفل منه بخاری میں
 ابوہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب کوئی نیچے مال و صورت میں اپنے سے بہتر کو تو جائیسے کہ اپنے سے کمتر کو دیکھے
ف یعنی جب کسی زیادہ مالدار اور خوب صورت کو دیکھے تو لازم ہے کہ چلنے سے کمتر میں مال اور عقل میں او کو دھیان کرے
 تاکہ اسکو حضرت اور افسوس و ناشکری نہ حاصل ہو اسلئے کہ دنیا میں جو شخص ہزاروں ہجرت بھی عالم میں موجود ہیں مثلاً
 اگر کوئی محتاج ہو تو ہزاروں محتاج بھی ہیں یا کوئی محتاج اور بیمار تو سیکڑوں محتاج بھی ہیں یا عجمی ہیں او کان بھی تو ادب
 ہزاروں سے بہتر ہے یہ سب حضرت نے جمع کر کے بتلایا کہ اگر اسکا دھیان کرے تو کبھی مرغ دل میں نہ آئے اور خدا کا
 شکوہ نہ آئے نہ کبھی شکر گزاری کیا کرے اور صانع میں پوری روایت یوں ہے کہ دنیا میں کمتر لوگوں کو سمجھے اور دین میں اپنے
 بہتر لوگوں کو دھیان کرے تاکہ انہی عبادت اور خوبیوں سے غرور و دلین سماؤ مثلاً اگر شیخ نمازیچکا نہ پڑھتا ہی تو دوسرا تہجد بھی
 پڑھتا ہی تو وہ بھی افضل ہو اسی طرح لاکھوں بہت کامیاب ایک عبادت اور بہتر جو دین اگر یہ دھیان کیا کرے گا تو دنیا
 میں آپ کو کمتر اور ست جائیگا اور دنیا داری میں اپنے سے کمتر لوگوں کو خیال کرے گا کہ فلانا نماز زمین پڑھتا فلانا مقدر در
 ہو کر مجھ میں لڑا کر وہ نہیں دیتا تو آپ کو شیخ بہتر سمجھیں گے اور یہی اسلئے حق میں نہر ہو **س** انس اذا انفس احدكم في
 الصلوة فليذكر حتى يعلم ما يقرب من انفسه روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب تم میں سے کوئی نماز میں اٹھنے لگے تو
 اسکو چاہیے کہ سو رہے یہاں تک کہ اپنے بوجہ **ف** یعنی سونے کے بعد جب ایسا ہوش کہ اپنے پڑھنے کو سمجھے تب نماز پڑھے نیند کی
 حالت میں یا اسلئے فرمائی کہ ایسی حالت میں آئی کہ تیری کھیل دیکھتا ہو اور کچھ **ق** عائشة اذا انفس احدكم وهو
 يصلي فليذكر حتى يدركه الله القوم فان احدكم اذا صلى وهو نائس لا يذكر الله تعالى لعل الله يذهب
 يستغفر فيسب نفسه بخاری اور مسلم میں حضرت عائشہؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب تم میں سے کوئی نماز پڑھتا
 تو چاہیے کہ سو رہے یہاں تک کہ نیند جاتی ہے ہو سیکر جب تم میں سے کوئی نماز پڑھتا ہو اسکو یہ معلوم ہوگا شاید وہ تو منفرت

۸۶۴

۸۶۵

ملک بن سنان
دعوت

۸۶۶

۸۶۷

۸۸۲

زیادہ مال کا جمع کرنے سے بدعت فرمائی یعنی دنیا اور دنیا میں ہی طرقت نہیں خدا کی طرف سے ہر خیر المذکور بہر معنی تکمیل
 مَا أَكَلَ أَحَدٌ طَعَامًا قَطُّ خَيْرٌ لِّهُ أَنْ يَأْكُلَ مِنْ عَمَلٍ يَدِهِ وَإِنْ شِئَ اللَّهُ دَاوُدَ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلٍ يَدِهِ
 بخاری میں یہ مقدم ہے کہ یہ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ کس نے کوئی کھانا کھا جس سے اپنے ہاتھ کے سب سے بہتر نہیں کھایا اور اللہ خدا
 کا پیغمبر دَاوُدَ اپنے ہاتھ کے سب سے کھانا تھا ف بقدر قوت کس کس کا فرض ہوا اور ہاتھ کا کس کس پر ملامت اور طیب ہو
 حضرت دَاوُدَ رات کو گشت کے واسطے نکلا حضرت جبریل آدمی کی صورت ہو کر اپنے پیچھے حضرت دَاوُدَ کو لے کر دَاوُدَ کو کہا آدمی جو انھوں نے
 کہا کہ تو بے دینی ہو لیکن اس میں نہ خصالت تھی نہیں کہ کمال حاصل سے کھانا ہوا بہتر آدمی وہ جو ہوا ہاتھ کے سب سے کھانا تھا حضرت دَاوُدَ
 جناب الہی میں عرض کی کہ اے جبریل کوئی چیز کھانا کھانا ہو تو زور بنا تعلیم کیا چھ حضرت دَاوُدَ اسی سب سے اپنا رخ کر گئے تھے
 مَسْئُورٌ وَدُفْعُ الْفَقْرِ فِي مَا لَدُنَّ فِي الْخَيْرِ لَكَ لَمْ يَجْعَلْ أَحَدٌ كَرَامَةً إِلَّا فِي السَّابِقَةِ فِي الْخَيْرِ كَلَيْتَ لَنْ
 یہ ترجمہ مسلمان مسطور ہے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ زمین پر نہایت عزت کے دور ہو کر ہے کہ کوئی بے دینی کے کوئی دینی
 کے لئے بھروسہ کرے کس قدر پانی گلا اور کس قدر پانی آگ لے لینی اخذت کے دور دنیا نہایت تغیر و تفریق ہے دیکھ دو ہر قطرہ
 ع چونکہ نہایت غبار عالم پر ایک خمر ان عبا میں کمال فی ایام افضل منها فی ہذا الایام قالوا کمالا اجماعا
 فی سبیل اللہ قال ولا اجماعا فی سبیل اللہ الا رجل خرج یحاطر بنفسہ وما لہ فلم یجمع بشیء
 یعنی ایام العشر بخاری میں عبد اللہ بن عباس روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ عمل کرنا کوئی دنوں میں افضل نہیں بل ان دنوں
 یعنی جو کچھ کے من فوج سے ہے لہذا اور راہ خدا میں جدا کرنا بھی اس افضل نہیں نہ آیا اور راہ خدا میں جمع کرنا بھی
 اس افضل نہیں بل اگر مراد کمال افضل ہے کہ دیکھا اپنا جان و مال شمار کرنا بجز دنیا کیچھ لیکر یعنی شیبہ ہو گیا ف معلوم ہوا
 اور عشرہ فوج کے برابر کوئی ایام کی عبادت افضل نہیں خ عایشہ مآل انصار فی قالہ لکمال الایام فی جاءہ
 بنا اجماعا فقال اقول قال فاحذرنی ففطنتی حتی بلغ منی اجماعا ثم ارسلی فقال اقول فقلت مآل انا
 بقاری فاحذرنی ففطنتی الثانیۃ حتی بلغ منی اجماعا ثم ارسلی فقال اقول فقلت مآل انا بقاری
 فاحذرنی ففطنتی الثالثۃ حتی بلغ منی اجماعا ثم ارسلی فقال اقول فقلت مآل انا بقاری
 خالق الایمان من علیہ افرأ وکذا لک الایام الایامی علم بالقلم علم الایمان مآل فی علمہ بخاری میں
 حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ میں تو چڑھان میں چڑھنے اور میں سے فرمایا جو حضرت ہاس چراہا کے نماز میں
 آیا تھا سو اپنے حضرت کے کمال کے چڑھنے سے فرمایا چڑھنے سے بیکو کرا اور موت دایمان تک کہ بجا طاعت نری چڑھنے سے بیکو چڑھ دیا اور کمال کے چڑھ
 سے کمال کو میں تو چڑھان میں چڑھنے سے بیکو کرا اور دوسری بار دایمان تک کہ بجا طاعت نری چڑھنے سے بیکو چڑھ دیا اور کمال کے چڑھ
 سے کمال کو میں تو چڑھان میں چڑھنے سے بیکو کرا اور دوسری بار دایمان تک کہ بجا طاعت نری چڑھنے سے بیکو چڑھ دیا اور کمال کے چڑھ
 رب کا نام نہ پڑے کیا کیا آدمی کو خون کی ہلکی سے پڑے اور تیرا رب بڑا بزرگ ہے جس سے قلم کے سب سے علم دیا سکھا آدمی کو جسکی
 او کا و خیر ف حضرت جب پائیس سے کسے سادہ وغیرہ کا زمانہ قریب ہوا تو حضرت نے گوشہ گیری اختیار کی کہ میں
 ایک چراہا میں سے کمال کا میں نے کراؤ فکر میں ہے اور غیب کی آوازیں سننے دخت و تہجہ حضرت کو سلام کرتے جو خواب دیکھتے سو

۸۸۳
۸۸۴
۸۸۵
۸۸۶
۸۸۷
۸۸۸
۸۸۹
۸۹۰
۸۹۱
۸۹۲
۸۹۳
۸۹۴
۸۹۵
۸۹۶
۸۹۷
۸۹۸
۸۹۹
۹۰۰
۹۰۱
۹۰۲
۹۰۳
۹۰۴
۹۰۵
۹۰۶
۹۰۷
۹۰۸
۹۰۹
۹۱۰
۹۱۱
۹۱۲
۹۱۳
۹۱۴
۹۱۵
۹۱۶
۹۱۷
۹۱۸
۹۱۹
۹۲۰
۹۲۱
۹۲۲
۹۲۳
۹۲۴
۹۲۵
۹۲۶
۹۲۷
۹۲۸
۹۲۹
۹۳۰
۹۳۱
۹۳۲
۹۳۳
۹۳۴
۹۳۵
۹۳۶
۹۳۷
۹۳۸
۹۳۹
۹۴۰
۹۴۱
۹۴۲
۹۴۳
۹۴۴
۹۴۵
۹۴۶
۹۴۷
۹۴۸
۹۴۹
۹۵۰
۹۵۱
۹۵۲
۹۵۳
۹۵۴
۹۵۵
۹۵۶
۹۵۷
۹۵۸
۹۵۹
۹۶۰
۹۶۱
۹۶۲
۹۶۳
۹۶۴
۹۶۵
۹۶۶
۹۶۷
۹۶۸
۹۶۹
۹۷۰
۹۷۱
۹۷۲
۹۷۳
۹۷۴
۹۷۵
۹۷۶
۹۷۷
۹۷۸
۹۷۹
۹۸۰
۹۸۱
۹۸۲
۹۸۳
۹۸۴
۹۸۵
۹۸۶
۹۸۷
۹۸۸
۹۸۹
۹۹۰
۹۹۱
۹۹۲
۹۹۳
۹۹۴
۹۹۵
۹۹۶
۹۹۷
۹۹۸
۹۹۹
۱۰۰۰

۸۹۰

ابن سنت کا کہنا ابو ہریرہؓ سے کہ ما بعث الله نبيًا الا رعى الفطرة فقالوا او انت فقال نعم كنت

ارعاها على اقل ريطه اهل مكة بخاري میں ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ ہم کو ایسا پیغمبر نہیں بھیجا

نہ کہ بکریان چالی ہوں نہ مہاجرت کیا اور کیا آپؐ بھی بکریان چرائیں میں نے حضرتؓ سے فرمایا کہ ہاں میں نے بھی سیکے والوں کی بکریان چنے

قیراط کی مزدوری پر چرائیں ہیں **ف** بکریان چرائیں نہ تکتے ہو تا پیغمبرؐ نہ بانی تکمیل نہ آدمیوں کی سرداری کریں

۸۹۱

قیراط پنج جو کے برابر ہوتا ہے کہ ہر ہشام بن عاصم یا لا نصاري ما بين خلق اذ امر الى قيام الساعة

خلق الكفر من الذنابل مسلمین ہشام بن عاصمؓ سے روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ آدم کی خلقت قیامت تک کوئی ظلم نہ فرما

بہن حال سے برا نہیں **ف** یعنی ہر نفسہ دان اور گمراہ کو کہنے والوں کے مجال زیادہ تر ہی عالم میں کوئی بلا اسکے برابر نہیں **ق**

۸۹۲

اسما بن عبد مناف کہ توفيت بعد من سنة احدى على الحال من النساء بخاري اور مسلمین اسامہ بن زیدؓ سے

روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ میں نے جو رسولؐ بھیجے وہ یا دوسرے پر بچانے والا ہو مردوں پر عورتوں **ف** یعنی

مردوں کے حق میں عورتوں کے برابر کوئی بلا اور نہ ذلیل و خوار کی اطاعت میں نہ غفلت والی پر غرض کہ

۸۹۳

اگر خدا عورتوں کے سبب جو ہیں اس واسطے حضرتؓ کو زیادہ تشریف ہی **ق** ابن عمرؓ مائن ال النساء يا لعبد حتى يلقى

الله وما في وجهه من علة على او مسلم بن عبد بن عثمت روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ ہمیشہ سوال کرنا آدمی کا یہ نسبت

یونچا بگاڑنا کہ کیا کوئی نہ ہو ہی **ف** یعنی لوگوں کو سوال کرنے والا قیامت میں نہایت ذلیل ہو گا **ق**

۸۹۴

ابن عمرؓ صاحب احادیث فرماتے ہیں مسلم بن عبد بن عثمت روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ ہمیشہ سوال کرنا آدمی کا یہ نسبت

یونچا بگاڑنا کہ کیا کوئی نہ ہو ہی **ف** یعنی لوگوں کو سوال کرنے والا قیامت میں نہایت ذلیل ہو گا **ق**

ابن عمرؓ صاحب احادیث فرماتے ہیں مسلم بن عبد بن عثمت روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ ہمیشہ سوال کرنا آدمی کا یہ نسبت

یونچا بگاڑنا کہ کیا کوئی نہ ہو ہی **ف** یعنی لوگوں کو سوال کرنے والا قیامت میں نہایت ذلیل ہو گا **ق**

ابن عمرؓ صاحب احادیث فرماتے ہیں مسلم بن عبد بن عثمت روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ ہمیشہ سوال کرنا آدمی کا یہ نسبت

۸۹۵

ق المسئلة من فخره وقره وان بن احكام ما خلا من القصص او وما ذاك لها خلق ولو كرت

حب باحاطت الغنل والذني نفسي بيد ولا يشكوا نبي خطه يعظمون فيها احسان مات الله

الا اعطيتهم اياها بخاري اور مسلم میں ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ میں نے تم کو

آپؐ کی جیسا کہ وہی نام ہے اور یہ آپؐ کی خدمت میں نہ کہ دوسرے کے ہند کرنے والے یعنی حضرتؓ قسم عاوس و اثات پاک کی

نیک قابو میں رہی جان بہت سے نہایت گنت کوئی کام نہیں کہ ان کی تعظیم کریں مگر کہیں اور کو دیکھا یعنی وہ بات قبول کرو گا

ف حضرتؓ نے تین سال احرام باندھنے میں سے کہ کو چلنے نہ کرنے کو رہیں وہی حضرتؓ کی بیٹھ گئی صحابہؓ کے کہا کہ اونٹنی

تھا گئی تب حضرتؓ یحییٰ بن زبیریؓ کو اپنی بھری ہوئی حضرتؓ صلح کر کے پلٹنے پہنچا اسکا فصل قصہ دوسرے باب میں ہو گا

۸۹۶

ق انس ما راينا من شئ وان وجدنا له لغيره يعني في اس اني ملحه الذي كان يقال له منذ و

بخاری اور مسلم میں انسؓ سے روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ ہمارے کو کچھ نہیں دیکھا اور اس گھڑ کا قدم تو دریا پامار دابو لمحہ کا گھوڑا جیسا

سندوب کہتے تھے **ف** ایک بار مدینہ میں بڑی بھول چڑی رات کو حضرتؓ ابو طلحہ کا گھوڑا عاریت لیکر سوار ہو چکے تھے

بیان لکھ کر
حضرتؓ سے روایت ہے
کہ وہ گھوڑا
جو ان کے پاس
تھا وہ گھوڑا
جو ان کے پاس
تھا وہ گھوڑا

اقتضیٰ من جمیع جوہرین محمدی پر کسے ہر سی طرح وہی بتا ہی ہیں اگر کھڑا بھی شہر و آبادی ہو تو بخوبی ان کی جواب دہی کرے اسکے واسطے کچھ زید و علم کی حاجت نہیں **ق** اَشْهَدُ مَا مَاتَ مُحَمَّدٌ قَدْ اَمَّا الْعِلَاقَةُ اللَّهُ وَ اَنْتَ مُحَمَّدٌ عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّوْا عَلَیْکُمْ اَلَا تَحْسَبُوْنَ مَا اللَّهُ عَلَی الْبَشَرِ جَارِی اور سلم بن ابی ہر کہ حضرت نے فرمایا کہ کوئی ایسا آدمی نہیں ہے جس کی گواہی ہو یا جو اپنے سچے دل سے کہ کوئی لائق بندگی کے نہیں ہو اُحد کے اور بیشک محمد اوس کا بندہ اور اوس کا رسول ہو کہ خدا و سپرد و رخ حرام کر گیا **ف** یعنی سچے ایمان دار کو دوزخ سے نجات ہوتی ہے **ق** اَبُو مُرَّیْہَا مَا مِنْ اَلَا تَسْمَعُوْنَ اَلَا اَعْطٰی حَرْثَ الْاٰیَاتِ مَا مِثْلُهُ اَمِنْ عَلَیْکُمُ الْبَشَرُ اَوْ اَمَّا کَانَ الَّذِیْ اَوْفِیْتُہُ وَحِیًا اَوْ حَالَہُ اللَّهُ اِلَیَّیْ فَاصْبِرْ اَنْ کُنَ الْکَلْبُ مَعَهُ تَابِعًا لِّقَوْمٍ الْفٰعِقَةِ بَعَارِی اور سلم بن ابی ہر کہ روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا یہ خبر میں سے کوئی بغیر نہیں کر گا و سکو خبر سے دے گئے ارفع رکھ آدمی اور سپر ایمان لاوین ہو چکا تو وہ خبر دی گئی ہوئی ہے یعنی قرآن پاک جو نہ میری عزت میں ہوا میں امید رکھتا ہوں کہ قیامت کے دن سب بغیر میں سے زیادہ تر سب زمانہ روا ہو گئے **ف** یعنی ہر ایک بغیر کو جسے دے کہ تیسرے سے ان کی ہستی اور بغیر ہی ثابت ہو جاوے اور لوگ ان کا ایمان لاوین لیکن حضرت کا جو بغیر قرآن پاک کا کلام سب پرست ہے زوال و افشل ہو گیا نیز قیامت تک باقی ہو یا بغیر کے بغیر باقی نہیں ہے اور جب قیامت آئی رہا تو ہر حضرت کے بغیر کی دلیل قائم ہی تو ہر نے میں قیامت لوگ سلمان پہنچ جائیں گے اس واسطے حضرت نے فرمایا کہ حضرت کی اس صحابی لوگ یاد ہو سکا اور چند ہمارے حضرت سے ہزار دن خبر سے ہونے لیکل قیامت تک باقی رہنے والا جو قرآن ہی پرست ہو سکا صرف اوس کا ذکر کیا عادت تھی ہوں جاری ہو کہ جس نے میں جن کا بہت جہاں ہو یا جو تو اس کے بغیر کہیں ایسی قسم کا جو ہر دین کے ساتھ عنایت ہو یا جو خدا کو کہ بہت پیغمبر کی ہستی معلوم ہو جاوے چنانچہ حضرت وہی کس وقت میں جاوے گا جو چاہتا ہو یا جو اوس کی قسم کا صحیحہ بلا یعنی قصداً سنا بن جاتا تھا اور حضرت عیسیٰ کے معجزات میں اکثر شفا ہی امراض تھی کہ طب کا بہت جہاں تھا اور ہر ایک حضرت کے وقت میں فصاحت اور بلاغت کا عرب میں بہت جہاں تھا اس واسطے حضرت کو قرآن ملا اور حکم ہوا اگر کوئی بغیر ہی میں شہید ہو تو ایک سوچ کے بار کو کسی سے نہ ہو سکا سب صحابہ عرب عاجز ہو گئے اگر ہو سکتا تو ضرور کئے سہل کام جو حضرت کے ہاں جاننا کیوں اختیار کرتے اور انجا قرآنی کے سبب قرآن شریف میں اختلاف نہیں آیا اس واسطے کہ اسلام میں بہت مذہب ہوئے ہر شخص اپنے مذہب کے موافق بنا لیتا بخلاف تو بیت اور جبل کے کہ زمین و آسمان اس واسطے ان میں تحریف اور اختلاف ہو گیا **ق** اَشْهَدُ مَا مَاتَ مُحَمَّدٌ قَدْ اَمَّا الْعِلَاقَةُ اللَّهُ وَ اَنْتَ مُحَمَّدٌ عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّوْا عَلَیْکُمْ اَلَا تَحْسَبُوْنَ مَا اللَّهُ عَلَی الْبَشَرِ جَارِی اَمَّا کَانَ الَّذِیْ اَوْفِیْتُہُ وَحِیًا اَوْ حَالَہُ اللَّهُ اِلَیَّیْ فَاصْبِرْ اَنْ کُنَ الْکَلْبُ مَعَهُ تَابِعًا لِّقَوْمٍ الْفٰعِقَةِ بَعَارِی اور سلم بن ابی ہر کہ روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ کوئی نہیں ہے کہ کوئی ایسا سلمان نہیں جس کے تین ارکے مر گئے ہوں جو جوانی کو نہیں پونچے مگر کہ خدا و سکو بہت میں داخل کر گیا سبب یہ دینی رحمت ہے کہ لوگوں پر **ف** یعنی باپ کو لو کہ لکھا کہ ابا کی رحمت ہوتی ہے اور دینی رحمت زیادہ دینی ہی اوس کی رحمت کی نسبت زیادہ ہے چربا ہے یعنی عیسیٰ میں ہمہ کیا تو لائق ہنس کے ہوا **ق** وَ مَعْقِلٌ مِنْ اَیْکَ اَصْرَافٍ اَوْ غَیْرِہِیْ اَمَّا اَلَا تَسْمَعُوْنَ اَلَا تَحْسَبُوْنَ مَا اللَّهُ عَلَی الْبَشَرِ جَارِی اَمَّا کَانَ الَّذِیْ اَوْفِیْتُہُ وَحِیًا اَوْ حَالَہُ اللَّهُ اِلَیَّیْ فَاصْبِرْ اَنْ کُنَ الْکَلْبُ مَعَهُ تَابِعًا لِّقَوْمٍ الْفٰعِقَةِ بَعَارِی اور سلم بن ابی ہر کہ روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ کوئی ایسا حاکم نہیں کہ جو سلطان کو کہ کا ہو یا مالک ہو بغیر محنت کے کہ اس کے واسطے اور دنیا کی خبر ہو اس کی اگر مرد و حاکم سلمانوں کے ساتھ بہت میں داخل ہو گا **ف** معلوم ہوا کہ حاکم پر فرض ہو کہ رعیت کی واسطے محنت اور جانفشانی کرے اور جو

بغیر ہی میں شہید ہو تو ایک سوچ کے بار کو کسی سے نہ ہو سکا سب صحابہ عرب عاجز ہو گئے اگر ہو سکتا تو ضرور کئے سہل کام جو حضرت کے ہاں جاننا کیوں اختیار کرتے اور انجا قرآنی کے سبب قرآن شریف میں اختلاف نہیں آیا اس واسطے کہ اسلام میں بہت مذہب ہوئے ہر شخص اپنے مذہب کے موافق بنا لیتا بخلاف تو بیت اور جبل کے کہ زمین و آسمان اس واسطے ان میں تحریف اور اختلاف ہو گیا

من النار من يؤم عرفة أو يكمل الدنيا ثم يباهي بهم المسلمون ذلك فيقول أحسا أكان ذلك هو الإسلام من حضرت عائشة
روایت ہے کہ حضرت خولیا عمرہ کے دن زیادہ تر کوئی دن میں تین خندانہ کو دیکھ دوں جس سے زیادہ ان کو زیادہ تر حضرت عائشہ کو کہہ سکتا

رحمت بہت قریب ہوتی ہے جو غمخوار کو تسخیر کرنے والا ہے اور کج سبب فرشتوں میں پھر فرماتا ہے کہ تم سے کہیے لوگ کیسا پتھر ہے

عزیز ترین تابعِ دی اے جو کا نام پڑا اس نے مجھ کو تیار اس کے معلوم ہو کر میرے کان میں فون سے افضل ہجر ام سلمہ

نہایت بے فکر و بے پروا کہ نہیں گفتہ مال کو دینے سے اور کوئی مردِ ظالم و ستمیاء کہ تاہم کہ خدا مومن کرنے کی نسبت اس کی عزت

او قدر مہیا ہوں یعنی زکوٰۃ عین سے مال نہیں گھستا ہر غنیہ ظاہر میں نقصان معلوم نہ ہوتا ہے اور اس طرح اس کا تواضع کے نزدیک

نابت ہوا جو اردو میاں مال کے اندر برکت بھی ہو جی اور ظلم معاف کرے مین ہر چند بغیر ظاہریت اور لاپرواہی علوم ہوتی ہیں لیکن حد تک مذکور حدت زیادہ ہوتی ہے مگر کافہہ ہر کچھ کے لئے یہ تہہ تہہ کی کتبہ کے لئے لکھا گیا ہے۔

اگر او سپر ظلم اور زیادتی ہوئی تو اس سے دم نہ مارا بلکہ دنیا کی ساری دولتیں دے کر وہ اپنے گناہوں کو معاف کر لیا۔

فَنُقِطَصَاحِبَيْنَا فَيُصَيَّبَانِ مِنْهَا **وَاللَّهُ الْقَدَّادُ عِنْدَ حَلْبِهِ** الْأَعْنُ الثَّلَاثُ مَرَّةً ثَانِيًا

مسکرتے ہوئے روایت کیا کہ حضرت فرمایا اللہ دوسری بار کا دودھ تھا اور خدا کی رحمت بھی پھر نونے پستہ نہ مچاؤ بلکہ تو ہم اپنے

مفصل قصہ احسن میت کا مقدار سچوین روایت ہو کہ ہر مرن آدمی ہجرت کر کے مین میں لے لے اور مکہ بھیج دے کہ اسے نماز کے سے سوچتا تھا

اور کانون کے کچھ سنائی دیتا تھا حضرت پاس آئے نصیحت کیا کہ اپنے گھر لے گئے اور فرمایا کہ ان میں کوئی بکا دودھ دے دے وہ انکا دودھ ہم تم پر پاکر گئے سو

یہ یونانی اور کلدانیوں کے لئے ایک عجیب و غریب چیز تھی۔ یہ ان کے لئے ایک نیا اور بے مثال شے تھی۔

انصار یوں گھر ترس رہے تھے کہ وہ چار سو روپے بھر اسدیطان کے لیے دل بیچ خیال والا اکہفت جہان گئے ہن کھانی کے

شش و نواست و اینک از مرین حضرت کا بھی حصہ بی جاؤں میں ان سکو پی گیا پھر بکری و عطا و آیا کہ سینے کیوں حضرت کا حصہ بی لیا شاید کہ حضرت

اور میں نے کہا کہ اگرچہ یہ سب باتیں سن کر میری طرف سے ہنس مانی ہوئی تھی، لیکن اس کے باوجود میں نے ان کی بات کو غور سے سمجھا اور ان کے خیالات پر غور کیا۔

لوگئے سوہتر کو خالی پایا آسمان کی طرف سزاؤ تھا یا سینے جانا کہ مجھ کو بد دعا کر گئے سو تو حضرت نے یوں فرمایا کہ اے نبیؐ ہے اس کو جو

مجاہد کھلا تاہر اور پانی سے اسکو جو مجھ کو ملتا ہے میں نے جانا کہ اس سے اس کے برادران میں تو کسی ہونگی بھر کیا دیکھتا ہوں کہ بکریوں کے تھن درود ہے

حضرت کے کبریا میں نے اٹھو دو اور حضرت کے لئے لیا حضرت فرمایا کہ مولا کی اپنے حصے ہی میں لے لیا کہ ان میں ہی چکے میں

یہ تمام قصہ کہتا بھڑکتے یہ حدیث فرمائی یعنی دودھ کا زیادہ بھجانا خدکی کثرت تھی اگر نوک سے بتلاتا ہم اون دونوں آدمیوں کو بھی

اس مسئلہ کو دو حصوں میں تقسیم کیا اور برکت پر حضرت کی دعا کی عبارت عایشہؓ مآیخلف اللہ وعدہ ولا رسلہ

25.

441

१५८

مجلس شورای ملی

تبصرے ہو نہ کھول کر یہ حدیث فرمائی یعنی ایک دن ایسے راک کا کچھ نہ پایا نہ میں اس واسطے کہ اول تو دفن بجا نامہ نہیں دوسرے
 گمانے والی راکیاں میں جو ان عورت نہیں جو مجلس موت ہوتی تیسرے کوئی مضمون نکالتے شروع نہیں بلکہ بھادی دین کی کار آمدنی
 چیز ہر کسی حدیث سے کمالوں کا یہ مذہب ہو کہ خوشی کے حالوں میں جیسے شادی اور قضا و عیدین میں ہر راک یا دفن کے
 ساتھ بہت ہی خوش طبعی کا مزین چہرہ ہوتا اور گائے والا خوبصورت لڑکا اور اجنبی عورت لڑکا کا سطحی خلاف شروع
 نہ ہو غرض کہ راک کشی کی عادت ہرگز درست نہیں بلکہ اسی حدیث سے صاف منع ہوتا معلوم ہوتا ہے کہ حضرت نے عید کا عذر فرمایا
 تو عام ہوا کہ سب کی عادت کرنا درست نہیں اگرچہ خلاف شروع راک نہ ہو **عَائِدٌ مِّنْ عَجْمٍ** یا اکابر کی لکھا **أَعْضَبَتْهُمْ**
لَئِنْ كُنْتُ أَغْضَبْتُهُمْ لَقَدْ أَغْضَبْتُ رَبَّكَ یعنی ستمان **وَكُفَّيْنَا بِلَا كَاحِمِينَ** قالوا لَئِنْ كُنْ سَمِيحًا
مَا أَخَذْتَ سُبُوتَ اللَّهِ مِنْ عُنُقٍ عَدُوٍّ لِلَّهِ مَا أَخَذَ هَذَا عَمَلُ الْبُؤْسِ یعنی کون ہذا **الْإِسْلَامِ فِي كَيْفِ**
تُؤَسِّدُهُمْ مسلمین کا مذہب عورت سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا **إِنِّي بَكْرِشِي** کہ تو نے اور کون غصہ دلائی اگر تو نے اور کون غصہ
 دلائی ہو گا تو ایسا تو اپنے آپ سے بکری غصہ دلائی اور ان لوگوں سے ستمان **فَأَمْسَى** اور بلال حبشی میں جب کہ اون تین نے ابو سفیان
 کو مٹا کر لے لیا تو اس نے کہ غصہ کی گڑبگڑ میں کہ کون نہیں پایا تو صدیق اکبر نے کہا کہ تم ایسی بات قریش کے بدلتے اور ان کے خزا کو
 کہتے ہو **أَبُو سَفْيَانَ** لکھ کر کہ حالت میں حضرت نے کہی **بَارِئًا** مٹا ہوا سلاطین کو جو خود کہا روایت ہے کہ ابو سفیان جب کہ ظاہر میں
 مسلمان ہوا تو رسول میں بیان نہ تھا کہ ایک روز سلمان اور صہیبؓ کے پاس ہو کر کھانا منیوں اصحاب نے جو شل اسلام سے
 وہ بات کہی صدیق اکبر نے اسے اس کے دوسرا **أَمَّا** کہ ابو سفیان ظاہر ہی سلام بھی چھوڑے اس کی خاطر داری کی بات کہی اور
 ابو کبیر سے بات کہنے سے منع کیا چھوڑنے کی بات کہی اور یہ حدیث بیان کیا حضرت نے یہ حدیث فرمائی چونکہ اون کا سخت کلام
 مٹنے کے واسطے اور جو شل اسلام سے تھا ان اور رسول کو پسند آیا جب صدیق اکبر نے حضرت سے یہ سننا سنا تو ان دنوں صحابہ کو پاس بٹھ کر لے کر
 گئے کہ ابو کبیر یہ جہان کو غصہ نہ دیا یعنی معاف کرو انھوں نے کہا کچھ نہیں اور چنانچہ ان کے غصہ نے جس حدیث سے معلوم ہوا کہ ایک
 لوگوں کی عزت عزت کے ساتھ ہے **بَارِئًا** مٹا ہوا سلاطین کو جو خود کہا روایت ہے کہ ابو سفیان جب کہ ظاہر میں
 یا اکابر کی لکھا **أَعْضَبَتْهُمْ** لَئِنْ كُنْتُ أَغْضَبْتُ رَبَّكَ یعنی ستمان **وَكُفَّيْنَا بِلَا كَاحِمِينَ** قالوا لَئِنْ كُنْ سَمِيحًا
 تیرا گمان ہے جو ان میں سے ایک تیرے ساتھ ہی ہو گا **خَيْرٌ** صدیق اکبر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اگر ایسی بات کہی
 کہتا ہے میں ابو حضرت غازیہ کے بیٹے کو کہ تو کا فرمکو تلاش کہتے کہتے اسی غار پر خاص ماسے سر نہ چڑھتے ہوئے جب بیٹے
 مشرکوں کے پاس نہ گئے تھے کہ اگر رسول اللہؐ انھیں سے کوئی اپنے باپوں پر نظر کرے تو مجھ کو دیکھتے تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی
 یعنی تم میں جو ابادہ کا رہا ہے جو رسول اللہؐ کو سونے کو سونے لکھ کر اس حدیث سے حضرت کا حال توکل خدا پر اور دوسرے کی
 نمازت غصہ نہ ثابت ہوئی کہی طرستے اول یہ کہ حضرت نے اپنے ساتھ اور صدیق کے ساتھ خدا کو ملا یا سبحان اللہ کیا عمدہ و تر ہے جو
 جو خدا پر رسول کے ساتھ شمار میں آئے دوسری یہ کہ ایسے ذات وقت میں کہ تمام عالم حضرت کا بانی دشمن تھا صدیق نے حضرت کا
 ساتھ دیا اور اپنی جان و مال اور خاندان کی بربادی حضرت کے واسطے اعتقاد کی ہے زیادہ جان نثاری کیا ہو گی تیسری یہ کہ
 معمول ہو کہ ایسے سخت وقت میں جان و مال کا خون ہوا ہو کہ ساتھ لیتے ہیں جسے اخلاص اور کوشش پر بحال اعتماد اور نہایت

۹۷۰

۹۷۱

بَابُ الْخَامِسُ

اپنے گھر پہنچے اور تمکھ کے مین دوزخی ہوں اس واسطے کہ میری آواز نہایت بلند ہو ایک روز حضرت سعد بن معاذ سے پوچھا کہ نہایت بن قیس کیوں نہیں تاجر کیا میرے سعد بن معاذ نے کہا کہ وہ میرا ہمسایہ ہو کر مجھ کو اس کی بیماری نہیں معلوم پھر سعد بن معاذ نہایت بن قیس سے حال دریافت کیا اور بدست آنے کا پوچھا تا بہت کہا کہ تم جانتے ہو کہ میری بڑی آواز ہو تو مین دوزخی ہو اس واسطے یہ قصہ حضرت کا حضرت فرمایا بلکہ وہ ہشتی ہی یعنی آیت کا یہ مطلب نہیں جو ثابت سمجھا بلکہ اے ادبی سے شکر نا پھر میرے روبرو منع ہوا درجہ کی پیدائشی آواز بلند ہو تو وہ معذور ہو سچان امیر حضرت کے اصحاب کیا باز رہا و رخنہ ناک تھے ق

۹۸۰ **اَسْ كَا اَنَا عَمِيْنٌ مَا فَعَلَ النَّفْثُ** بخاری اور مسلم میں اس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے ابو موسیٰ کیا لال نے یعنی تیرے لال کو کیا ہو گیا **ف** ابو موسیٰ نے اس کا چھوٹا بھائی تھا اس نے چڑیا پالی تھی جس کو ہندی مین لال کہتے ہیں سو وہ لال مین تھا اور اس کے غم میں اس نے بیٹھا تھا تب حضرت اس لڑکے سے یہ حدیث فرمائی سچان امیر کیا حضرت مین اخلاق سننے کہ چھوٹے چھوٹے لڑکوں کی بھی غلط کاری کرتے تھے **ق** **اَبُو مُوسٰی یٰ اَبَا کَامُوسٰی لَقَدْ اَعْطٰیْتَ فِرَاقًا قَدْ مَنَّ اَمْرًا لِّدَاوُدَ** بخاری اور مسلم میں ابو موسیٰ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے ابو موسیٰ البتہ تجھ کو بکواسی بکواسی بکواسی ابو موسیٰ نہایت خوش آواز تھے حضرت نے سفر میں ایک ات او کو قرآن پڑھتے سنا دوسرے روز یہ حدیث فرمائی یعنی تیری آواز ایسی دلکش ہو گویا تیرا گلا بکواسی ہو اور تیری آواز مین لال کی آواز کا اثر ہو عبدالمعین عباس سے روایت ہے کہ حضرت داؤد علیہ السلام ستر آوازوں مین زبور پڑھتے تھے بھی اس طرح پڑھتے کہ نگلیں آدمی خوش ہو جاتا اور جب نگلیں آواز سے پڑھتے تو شعلہ کی اور تری کا کوئی جاندار خوش مین رہتا اور تاج مین لکھا ہو کہ حضرت داؤد علیہ السلام زبور پڑھتے تو جنگل کے بہر مین حضرت کو حلقہ کر لیتے اور شیر اور بھیڑیے قریب ہو جاتے اور دریا کا بہنا بند ہو جاتا اور ہوا چلنے سے تم جاتی اور سب کو خوش آجاتا اور لڑکی مین ریح بدلتی نکلتی جاتی غرض کہ خوش آوازی نعمت خدا اور جو بشر طبع کا اس کو خلافت شرع اور گون مین اور واپسیت غزلون مین نہ صرف کرے بلکہ بے بناؤ قرآن پڑھے کہ مین ہم عبادت اور ہم لذت و دنون و جود مین **هٰذَا اَبُو مُوسٰی یٰ اَبَا کَامُوسٰی اَذْهَبَ تَنَکَلٰی هَآذِهِ فَمَنْ لَّغِيَتْ عَنْ ذٰرَءِ هٰذَا اَلْحَا اَلْحٰطِیْثُ هَٰذَا اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُسْتَقِيْمًا اَهَا قَلْبُهُ فَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ** ۹۸۲

مسلم میں ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اے ابی ہریرہ یہ بھی اس مین دنون و جود مین کو سب سے قوی اس بات کے اور طرف کہ وہ گواہی دیتا ہو کہ کسی کسوا خدا کی کوئی بندگی اور پوجنے کے لائق نہیں کسی گواہی دیتا ہو بولی یقین الا ہو کہ تو اس کو بشت کی بشارت ہے **ف** ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ صحابہ حضرت کو ایک بار تلاش کرتے پھرتے تھے کسی کو معلوم تھا کہ حضرت کہاں مین سینے دیکھا کہ ایک انصار سچی غم مین مین غصہ مین حاضر ہوا تب حضرت نے حدیث فرمائی پھر ابو ہریرہ حضرت کی جو زبان بیکار بشارت تھی کو پہلے اول عرفا کو خط ملاقات ہوئی پھر کہاں تھا ہوا ابو ہریرہ کے قصد نقل کیا عرفا کو پہنچا ابو ہریرہ کو دیکھا دیکر بات اون کو کہنا ابو ہریرہ نے عرفا کو کہ لکھا حضرت جاکر کیا حضرت نے عرفا کو کہ لکھا کہ تو نے ابو ہریرہ کو بشارت دینے کے واسطے کیوں نہ پہنچا ابو ہریرہ نے کہا کہ میں نے کہا کہ یہ پھر فرمان ہوں باز رسول امیر نے نہایت بات صحت مین مین تا ہوں کہ لو کہ اس بشارت مین عمل کرنا چھوڑ دینا حضرت لوگوں کو چھوٹے کی عبادت کریں غرض حضرت نے عرفا کو کہ مصلحت پسند کی معلوم ہوا کہ وہ علم خلافت کو ایسی بات سناوے جس سے ان کے عقیدہ اور عمل مین خلل نہ آوے اور حضرت نے اپنی جو زبان ابو ہریرہ کو واسطے دین تعین نہ تا لوگ ان کی بات کو سند جان مین

۹۸۶

جب شمن پر غالب ہوئے تو گزندہ کزن افضل بات ہو کر عکس یابا ابن الخطاب اذہب فتاوی الناس انکما کما یخجل
المحکمۃ انکما المونی من حق سلم بن عمار وق سے روایت ہو کر حضرت مجھے فرمایا کہ ان خطبے میں جتنا کج کاری ہے لوگوں کو بتا دینا
ہو کر بنو نضیر کے ہشت میں سے ایک یا مازون **ف** جنگ خیبر میں ایک شائق کوٹ کی لالچ سے حضرت کا تختہ بکرا لیا سو اس کے تیرگا
وہ مگر بیکوٹوں کے کما کوڑہ سید جو حضرت نے فرمایا کہ وہ دفن میں ہو چھ بیعت حدیث فرمائی معلوم ہو کہ بدرون یا کان کوئی عبادت کا مضمین نہ لانی
عبادت کی جڑ ایمان اور خالص نیت **وق** عکس یابا ابن الخطاب اکثر خفی ان تکلمون لنا الا فی حق وکمہ اللہ انما

۹۸۷

ویروی یابا ابن الخطاب و انکما عجلت لکم طینا ثم فی السجود اللہ انما انما ہی اور سلم بن عمار وق سے
روایت ہو کر حضرت نے فرمایا کہ ان خطبے میں جتنا کج کاری ہے لوگوں کو بتا دینا
کی آرام ہو یعنی چند روزہ آرام ہوتا رہا ہمیشہ کی آرام آورد و سری روایت یون ہو کر ان خطبے میں بیٹے اون کا فروق واسطے تھمرا لانی در
عیش آرام کی چیزیں جلدی گئیں دنیائی زندگی میں **ف** مصابیح میں عمار وق سے روایت ہو کر ایک دن حضرت کا پاس گیا
تو حضرت چٹائی پر لیٹے تھے کوئی کپڑا اوپر بچھا تھا چٹائی کے نقش حضرت پر لگے تھے اور چہرہ کا لکھنا دیکھتے تھے حسین مجبور کے ذوق مجبور
بھر سے تھے سینہ کیا رسول اللہ بیان اور روم کے کافر بنو نضیر سے جھگڑا دیکھتے تھے اور کوٹ بٹال اور دولت اور امیر اور آرام دیا جی آپ

۹۸۸

و حاکم بھی تو خدا آپ کو او آپ کی امت پر روزی کشادہ کرے حضرت نے فرمایا کہ کیا تو اس حال میں بڑا عمر بھر یہ حدیث فرمائی یعنی ایماندا کو مٹاتا
نہیں کہ اس زمانہ غانی کے حدیث و آرام کی تمنا کرے ہو اسلئے کہ ایماندار کے آرام کا مقام ہشت بڑا اور کافروں کا کٹر عیش اور آرام دنیا میں
اسلئے بڑا کج آخرت میں اور انکا کچھ حدیث نہیں اسلئے اکثر بزرگوں نے انکے عیش سے کنارہ کیا کہ سب ناما آخرت میں مجسمہ انہو
ق سہل بن حنفیہ یابا ابن الخطاب سلامتی رسول اللہ و ان یقتضی اللہ انکما انما ہی اور سلم بن سہل بن حنفیہ سے

۹۸۹

روایت ہو کر حضرت نے فرمایا کہ ان خطبے میں بیٹے میں بیشک ما کا بغیر ہون اور جگہ خدا پر گزشتہ نیکو **ف** جنگ خندیسہ میں
حضرت صلحت جاکر کا فروق خطا بہرین بہت بکرم صلح کی چنانچہ صلح میں بھی داخل تھا کہ اگر کافروں کا آہی مسلمان ہو کر حضرت پاس
آجائے تو حضرت اسکو کافروں کے حوالے کریں اور اگر کوئی مسلمان کا فر پڑے سچا تو کافرا کو سکون دین اور صاحب کو اسکا بہت بچ تھا
اور عمار وق سے بسبب حبش اسلام کے رہا گیا تو کیا یا حضرت ہم کیا حق پر نہیں ہیں اور ہمارا دشمن کا فر باطل ہے اور ہمارے مقتول ہشتین
اور ایشہ دفن میں حضرت نے فرمایا کہ ان یون ہی جو عمار وق سے لکھا کہ مجھ پر کیوں اپنے دین میں اس طرح کی ذلت اختیار کریں تب

۹۹۰

حضرت یہ حدیث فرمائی یعنی جن حکم خدا کرتا ہوں خدا اپنے غیر کو بھی منافع نہ کرے صلح حدیبی سے غالی نہیں چنانچہ صلح حدیبی سے
فائدہ ہوا اور اسلام کی نہایت ترقی ہوئی کہ حضرت تمہارا کہ سے خاطر جمع ہو کر بغیر کو فتح کیا اور بہت جمعیت اور سامان
حاصل کر کے آخرش کو بھی فتح کیا چمکتا سو خدا اور رسول کے سکون معلوم تھی اسی واسطے رخ پیچے **عکس یابا ابن الخطاب**

۹۹۱

ما یذکر انکما لعل اللہ کل طلع علی ہذا العصابۃ من اہل بکر یقال اعلموا ما شئتم فقد
عقرت لکم سلم بن عمار وق سے روایت ہو کر حضرت نے فرمایا کہ ان خطبے میں جتنا کج کاری ہے لوگوں کو بتا دینا
البتہ آگاہ ہو چکا سو اسنے فرمایا کہ تم کو جو تمہارا ہی چاہے میں تم کو تمہارے شجک **ف** اس حدیث کا قصہ مذکور ہو چکا کہ ایک بدی صحابی
بڑا قصور ہوا تھا عمار وق سے حضرت نے لکھا کہ یا حضرت اگر حکم ہو تو میں کو مار ڈالوں تب حضرت یہ حدیث فرمائی یعنی بدو اسلئے صحابہوں کے

ایضا و ندیری است کو بخش منی دو بار تو سوال کر چکا او بیچھے ڈال رکھا سینے تیرے سوال کا وہ سن کر
 واسطے کرب خلق بھگے گی میری طرف سب کی سب میان تک دار جہم علیہ السلام **ف** ابی بن کعب سے روایت کی کہ ایک شخص نے
 قرآن و سری قرات میں بڑھایا میں اس قرات کو نہیں جانتا تھا میں اس کو حضرت پاس لایا حضرت نے میری اوڑھلی دونوں قرات کو درست
 فرمایا سو کہل میں اس وقت ایسا شک نہ کیا کہ حالت کفر میں بھی ویسا شک تھا حضرت بھگے سو حضرت ایسا ہاتھ سے سینے پر مارا
 کہ میں خوف کئے پسے میں ڈوب گیا اور گویا سینے خدا کو دیکھ لیا یعنی شک جاتا رہا باقی بات صاف کھل گئی پھر حضرت نے یہ حدیث فرمائی
 حضرت کو اپنی امت پر کیا شفقت تھی کہ عرض معروض کر کہ کس سات قرات یا سات بولہوں کی اجازت ملی تاکہ امت پر ایک قرات مشکل
 نہ پڑے اور خدا کی رحمت کو خیال کیا جیسے کہ کیا اپنے عیب کو اپنی امت پر اتنا نہ رہا کہ کچھ تو اس حدیث میں تین بار سوال کرنے کی بھی اور
 اجازت دی سو حضرت امت کی بخشش کا وہ سوال کیا اور تیسرا سوال کیا کہ واسطے کھچو کہ کرب تمام غیر خوفناک ہوئے اور کھچے
 واسطے کہ سیکھیں تب ہا حضرت شفاعت پرستہ ہوئے اس سے سلام ہوا کہ قیامت میں غمیر ہو گی حضرت نے اپنے واسطے کھچے ہی سفار
 چاہیں گے مگر انکے کہ نہ ہم علیہ السلام غیر بھی دین ہمیں پکڑے آئے ہیں ہر حضرت کی فضیلت تمام غیر میں برصاف ثابت ہوئی
ہ قَدِیْصَةُ بْنُ مُحَمَّدٍ رَأَى بَنِي عَبْدِ مَنَاظِرٍ رَأَى نَكْرًا كَثْرًا مِمَّا مَنَعَتْنِي وَمَثَلًا كَثْرًا مِمَّا مَنَعَتْنِي رَأَى أَمِي الْعَدُوِّ
 فَاسْطَلَقَ مِنْ بَابِ أَهْلِهِ فَخَفِيَ أَنْ يَكْفِيْعَهُ كَفَجَعَلَ كَهَيْفَتِ يَأْتِي صَبَاحًا مَسْلُومًا قَبِيْضَةً مِنْ خَلْقٍ سَوِيٍّ رَأَى بَنِي
 حضرت نے فرمایا کہ امی عبد مناف کی اولاد میں نہ آیا آج سے تمہارا دلے والا ہوں اور میری تمہاری مثل جیسے اس مرد کی مثل سننے دشمن کو
 دیکھ لیا کہ غارت ہو گئی ہیں تو وہ مرد چلا اپنے لوگوں کو بھی بوسور اگر اس کے پونچنے سے دشمن کے پونچ جانے کا وہ نہیں سے جلائے لگا کہ
 اسے لوگوں پر وجہ ہو گا کہ دشمن آپ کو بچا **ف** جب قرآن میں حکم ہوا کہ انہی غیر اپنے برادر کو مکر اور عذاب الہی سے تب حضرت نے
 اپنے سر و اذان میں عبد مناف کی اولاد سے یہ حدیث فرمائی یعنی حکم بیکر کل کی کہ کا فہرہ میں پڑے سو میرا دل تھا کہ کفر نہ جانتا کہ
 میں کبر و کبر اگر کبر تھا مگر کفر تو خدا ہے پھر جیسے وہ مرد کہ گبر الہی قوم کو کھٹے ہوئے دشمن سے خبردار کہتا ہے
ہ رَفِیْقُ بَانَ يَأْتُو بَانَ أَصْلَهُ فَمَعَهُ هَذِهِ الْخَفِيَّةُ مَسْلُومًا قَبِيْضَةً مِنْ خَلْقٍ سَوِيٍّ رَأَى بَنِي
 گوشت کو بنا یعنی پکا **ف** ثوبان حضرت غلام تھے اس وقت گوشت پکانے کو فرمایا تو بانیس روایت ہو کہ وہ گوشت ککے سے شینے تک
 رہا تو معلوم ہوا کہ ثوبان نے گوشت زیادہ کھنا بھی درست ہوا اول میں اسے زیادہ کھنا منع تھا **ف** ابوبکر
 یا حَسَنُ ابْنِ عَمْرِو بْنِ مَرْثُومٍ رَأَى بَنِي عَبْدِ مَنَاظِرٍ رَأَى نَكْرًا كَثْرًا مِمَّا مَنَعَتْنِي وَمَثَلًا كَثْرًا مِمَّا مَنَعَتْنِي رَأَى أَمِي الْعَدُوِّ
 نے فرمایا کہ حسن ابوجواب رسول اللہ کی طرف آئی اور کسی مرد کو جبریل سے **ف** حسن مجاہدی تھے شاعر کا فہرہ میں حضرت
 کی جو کہ تھی تب حضرت حسن ان کو کہ جو کہ لوئی اور سانچے واسطے دعائی کہ جبریل ان کے شریک ہوں اس سے معلوم ہوا کہ کا فہرہ میں جو کہ
 درست ہو شریک اس میں ہی قائم ہوا ثواب ہوا کہ وہ القدس یعنی جبریل کو نہیں غن کی خدمت ہی **ف** حاکم نے کہا کہ
 یا حاکم اِنَّ هَذَا الْمَلِكَ أَحْمَرُ حُلُوٍّ قَمِيْنٌ أَحْمَرٌ يَسْتَحْوَاةٌ نَفْسُ مَوْلَاكَ فَهِيَ مَوْلَاكَ أَلَمْ يَكُنْ مَوْلَاكَ فَهِيَ مَوْلَاكَ
 کہ کیا ارف کہ فہم و کان کا لہی یا کل مولا و لا یشتع و الیک علیا حاکم بن الیک الشفلی الجمالی میں مکر بن
 حزام سے روایت ہو کہ حضرت فرمایا کہ وہ علیہ السلام یا مال مرزب اور شیرین یعنی بہت پیارا معلوم ہوتا ہی سو سننے اور سکولیا جان ہی

۹۹۷

۹۹۸

۹۹۹

۱۰۰۰

فیہ کثرت
افضل
عبداللہ
مکہ مکرمہ

اسی مرقی تیرا تیرے نزدیک جیسے ہارون کا تیرے ہی کے نزدیک مگر اتنا فرق ہو کہ سیرہ کوئی پیغمبر نہیں **ف** ہجری میں
سال حضرت جنگ تبوک کو پہلے تو علی رضی اللہ عنہ نے غلیظہ کا ساتھ لیا تھا تو کئی سال پہلے حضرت مرقی علیؑ ہارون واسطے
اونکو ساتھ لیا علی مرقی کو اس کا بیٹا ہو اتیار ہو کر حضرت کو ملا اور یہ سنا فتوح کا طعنے بیان کیا اور کہا یا حضرت کیا آپ مجھ کو
عورتوں اور لڑکوں پر غلیظہ کرتے ہیں تب حضرت نے حدیث فرمائی میں کہ ہجرت بنیمن جاتا دیکھو موسیٰ علیہ السلام جب کہ وہ لوہے پر گئے تھے تو
پلے پڑے جہاں ہارون بیٹا کو لے کر ہارون بنی ہارون پہلے غلیظہ کر گئے تھے تو جیسے ہارون کی عزت موسیٰ علیہ السلام نزدیک تھی اسی جھاری
عزت سیر نزدیک ہو اتنی بات البتہ ہارون میں زیادہ تھی کہ وہ پیغمبر تھے اور پیغمبر بنی اسرائیل کے پہلے تھے ان میں سے کبھی کیا بیٹا ہونا
مکن نہیں اس لیے حضرت مرقی علیؑ علیہ السلام کی ثابت ہوئی اور کمال تیرے مرقی جلد ہوا اور شیعہ جو کہتے ہیں کہ حضرت
علی مرقی کی خلافت کی حقیقت ثابت ہوئی دینی حضرت کے بعد سو علی مرقی کے کوئی خلافت کے لائق نہیں سو سراسر جہالت ہے ہوا
حضرت ہارون حضرت موسیٰ کے منہ سے گئے تھے حضرت موسیٰ علیہ السلام حضرت ہارون زندہ تھے اور حضرت موسیٰ کے بعد غلیظہ
ہوتا تو البتہ پوری مثال ہوتی اس لیے معلوم ہوا کہ حدیث میں ہر طرح کی خلاف ورزی نہیں کی جہاں تک خلاف ہو جہاں نہیں
جیسے حضرت ہارون کی بھی خلاف ورزی ہوئی تھی جہاں حضرت موسیٰ طوے تشریف لائے تھے ہاں یہ مقرر ہو کہ اس حدیث سے علی مرقی کی
خلافت کی ایقات بخوبی ثابت ہوئی بلکہ اس سے دوسرے خلیفہ کی انکار بھی نہیں صدیق زادہ فاروق عظیم کے قصداں بھی تھا
میں شہما ہر اس کتاب میں بھی بہت حدیثیں مذکور ہیں کہ میں اور ہونے لگی انہی خود ہر شے کے موافق ایک حدیث کو لکھ لیتا اور اسکے ساتھ
اور یہ تینوں کو خیال کر لیا یہاں تک کہ حضرت عمرؓ کا عمر اکا کلفناک **۱۰۱۲**
النساء **قالہ** حنین اکثر علیہ فی السوال عن الکلام مسلمین مرقا روق سے روایت ہو کہ حضرت فرمایا
کہ عمر کا جو کلمات نہیں کرتی یا عمر کی آیت جو سورہ نساء کے آخر میں ہے حضرت اوصاف فرمایا جب عمر فاروق حضرت
بہت پوچھا کہ اگر کے علم سے **ف** الکلام و مراد عورت جو کسا پایا و مراد سورہ نساء کی آخریت یہ ہو کہ تہم عقوبت کا
قل اللہ فیئینک فی الکلام علیہ فی غیرتہ کلام کی وراثت کا حکم ہو جیسے ہن نو کہ اگر مرد مرداد اور اس کے بیٹا ہوں اور
ہیں ہوں تو ادھامال و کمال ہو اور اگر وہ ہوں ہوں یا زیادہ تو دو تھائی لویوں اور اگر بھائی ہیں ہوں تو مرد کا حصہ عورت سے دو یا تین
گرمی کے بموجب تری تھی اس واسطے کہ مگر مرقی کی آیت فرمایا **۱۰۱۳**
صلوا لیئہ وسلم بنی ہارون یہ روایت ہو کہ حضرت فرمایا کہ عمر تو نہیں جانتا کہ مرد کا چچا اور او کا پایا یک جہاں کی دو شافین ہیں
ف یعنی چچا اور باپ وغیرہ تو تین تین برابر ہیں کہ دونوں یکاویس ہیں جیسے ایک جڑ سے دو شاخ عمر فاروق نے کوئی تحصیل
کے عامل تھے حضرت عباسؓ کے کوئی شے کی حضرت عباسؓ نے روایت ہے حدیث فرمائی **۱۰۱۴**
اکما یصلی صلا تک لا یصلی الاصل کیف یصلی فاما یصلی لیس فی الاصل
فرمائی کہ اکما یصلی من تینوں کی ہی سلم بن ابی ہریرہ روایت ہو کہ حضرت فرمایا کہ انہو لائے تو کہوں میں بی بی ناخبر ہے چڑھا
کیونکہ تھکتا نماز میں چھٹا پڑھتا ہو کہ طرح پڑھتا ہے سورہ تو اپنے بھلے کے واسطے پڑھتا ہے مقررین دیکھتا ہوں اپنے چھپے
جیسا لائے گئے تھکتا ہوں **ف** ایک شخص حضرت عباسؓ سے پوچھا میں نا پڑھتا تھا اور دھرو دھرتا جاتا تھا تب حضرت

قتل کرینگے کیا تو ساقی جو سنا غمزن کی حمایت کرتا ہرگز نہ کہ قریب تھا کہ گشت خون چودھو حضرت سبکو چکا کیا حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ میں نے بھی ساقی کو حضرت گھر میں شریف لے آؤں گے نزدیک بیٹھے اور فرمایا کہ اے عایشہ میرے حق میں نے اسی باتیں سنیں ہیں اگر تو نے گناہ ہے تو غفر میرے لیے یہی پاکیزگی بیان کر گا اور اگر تو نے گناہ کیا ہے تو تو یہ کہ اس واسطے کہ جب سبکو نے توبہ کی تو خدا گناہ معاف کرنا ہے حضرت بات تمام کر چکے تو یہ کہ اس واسطے بالکل بند ہو گئے حضرت کہ کہ مجھ کو معلوم ہے کہ آپ کو اس بات کی خبر ہو چکی ہے اور آپ کے دل میں مجھ کی ہر سوا اگر میں ہوں کہ میں نے جس عیب سے پاک ہوں تو حضرت تعجب کیسیکو بیٹھا اور اگر نادر گناہ کا اقرار کروں تو حضرت اسکوچ جانیں کہ اب یہ اور حضرت کے درمیان ہوا حضرت یعقوب اور کوئی نیکو نہیں کہ جتنی قصیدیں بچھین لے گا واللہ المستعان علی ما یصفون یعنی اب بہتر ہے اور تمہاری اس گفتگو پر خدائی کی مدد کار ہے حضرت یہ پاس ناٹھے تھے کہ وہی ہلوٹنے کی نشانیاں حضرت پر ظاہر ہوئیں اور وہ نور میں پیدا ہوئے سیری پاکیزگی اسنی اور تمت کرنے والو کی ذمت بیان کی تھی تو حضرت خوش ہو کر فرمایا اے عایشہ بشارت ہے تجھ کو کہ تیرے لیے یہی بیان کی ہے میرا باپ نے کہا اے عایشہ اور خدا کے فضل کی تفسیر اور تعریف کریں اور سن وقت نہایت مختصر میں تھی مینے کہا کہ میں ناٹھوئی اور نہ حضرت کی تعریف کرونگی میں اپنے خدا کی تعریفنا اور نہ کرونگی جسے سیری بیگناہی ظاہر کی حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ یہ کہ یہ بیوقوفین تھا کہ خدا میری بیگناہی آخر کو ظاہر کر لیا گیا یہ معلوم تھا کہ میرے حق میں قرآن اور کتاب جو قیامت تک پڑھا ہوا گا **ف** اس حدیث بہت شاف ظاہر ہے اول یہ کہ بیگناہی کو عیب لگانا یہ وہ آخر کو خود نصیحت ہونا ہے اور ہالوں کی پائی زیادہ تر ثابت ہو جاتی ہے دوسرے کہ جسے حضرت عایشہ کو یہ کہا سقا اور اسے حضرت کو بوجہ دیا اور انھیں سنا فقون میں بھی اعلیٰ اور اسے یہ کہ عقیب سوا خدا کے سیکو نہیں جیسا بھرا سکا تو وہ اور حضرت کو رہا لیکن ہر وہ خدا کے بتائے حقیقت حال حضرت کو معلوم ہوا **ق** اَبُو سَعْدٍ یَا مَعْشَرَ الْاَنْسَاءِ تَصَدَّقِي فَاِنَّ اَرَبَیْکُمْ اَکْثَرُ اَهْلَ الدِّارِ یعنی اے مسلمانوں! روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا اور قرون گروہ خیرات کرو واسطے کہ وہ سب عین تمہیں مجبور زیادہ نظر نہیں یعنی دون میں سے عورتیں مردوں سے زیادہ دھین **ف** حضرت عید کو عید کا یہ ہے تو قرون گروہ پر گدے پھر حدیث قرآنی تو قرون پوچھا حضرت کا کیا سبب ہے کہ عورتیں مردوں سے زیادہ دون میں ہیں حضرت نے فرمایا کہ بہت کو سار کی ہیں اور یہ خداوند کا حق نہیں زمین میں ناٹھ کر کی ہیں اس میں سے معلوم ہو کہ انیز کرنا دون سے بچاتا ہے **ق** اَبُو مُہْرَبٍ یَا مَعْشَرَ الْیَهُودِ اسْلَمُوا اسْلَمُوا یَا سَلَمَیْنِ ابوشیرہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا اے یہودیوں! گروہ مسلمان ہو جاؤ تو جو یہودی قتل و جزیہ اور دوزخ سے **ف** یہ حضرت نے اپنے کے یہودیوں فرمایا جب نے کانے کا ارادہ کیا کہ عایشہ **یَا مَعْشَرَ الْیَهُودِ وَذَکُمْ کُلُّهُمُ اَنْتُمْ لَیْسَ لَکُمْ اَلَا لَہُ اَلَا ہُوَ اَنْتُمْ لَعَلَّکُمْ اَنْ اَنْیَ سَرْ سَعَالُ اللّٰہِ حَقًّا اَنْیَ یَحْکُمُکُمْ بِحَقِّ فَاَسْلَمُوا** **ا** **اَوَّلُ مَا قَدَّمَ الْمَدِیْنَةَ بِعَدْلِ اِسْلَامِ عَبْدِ اللّٰہِ مِنْ سَلَامِ** سخاوت میں حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے یہودیوں! گروہ تمہاری کتنی خیر داسے ڈر و سوسم ہوا خدا کی نیک سوا کوئی لائق پوچھنے کے نہیں البتہ تم جانتے ہو کہ میں مقرر خدا کا رسول ہوں اور میں کہ تھا کہ اسطرحی دین لایا ہوں سو مسلمان ہو جاؤ پھر نے اول میں نے میں آئے ہوں بعد مسلمان ہوئے بعد امدہ بن اسلم کہ فرمایا تھا **ف** تو میں نے حضرت کی نشانیاں دیکھو کہ عین یہودیوں کو خوب معلوم تھا کہ نبی انصار الزمان تھا وقت کا نشانہ ظالی قوم میں پیدا ہو گا اور کہ سے ہجرت کرے

128

مجلس شورای اسلامی
تهران

1025

1025

۱۰۵۵ **ه** اَسْ كَا مَ ثَلَانٍ وَانْطَرَيْتُ اَيَّ السَّلَکِ شِئْتُ حَتَّى اَفْضَى لَكَ حَاجَتَكَ **قَالَ** لَا مَرَأَةَ كَانَ فِي عَقْلِهَا شَيْءٌ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ اِنَّ لِي اَيْتَكَ حَاجَةً سَلِمَ مِنْ سِوِ رَوَايَتِكَ عَنْكَ فَمَا لَكَ اِنْ فُلَانِي مَا وَكَيْلُهُ دَبْلُ مِسْ كَلِي وَتَوَارِيحِي سَاجِدَاتُ بَيْنِ يَدَيْكَ مَرَدُونَ مَعْرُوفٌ اَوْ مِسْ رَسْتٌ فَمَا يَسْكُنِي عَقْلٌ مِنْ كُفٍّ خَلَّيْتُ تَحَايِي دِيَوَانِي فَهِيَ سَوِيكُتُ لِمَا كَرِهَ اَبُو اَلْمَكْحُوفِ بِسَاطِئِ كَمَرِي **ف** اَيْكُم مَوْتُ قَوْمِي دِيَوَانِي فَهِيَ بَاسٌ لِي عَنْ فَضِيحَةِ اِفْذَالِ كَامَرٍ بِجِيَّةِ فَضِيحَةِ كَمَالِ اخْلَاقِي اَوْ كِي مَعْنَى خَاطِرِ شَيْئِي نَكْرَتِي اَوْ اَوْسَا كَامَرِي **ق** عَائِشَةُ يَا كَبِيرُ مَا هَلْ رَأَيْتَ مِنْهَا شَيْئًا يُرِي بِكَ يَعْنِي عَائِشَةَ **۱۰۵۶** **قَالَ** حِينَ كَانَ فِيهَا اَهْلُ الْاَفَاكِ مَا قَالَوا اُبْحَارِي اَوْ سَلِمَ مِنْ مَعَانِيهِ رَوَايَتُكَ عَنْكَ فَهِيَ بَاسٌ لِي عَنْ فَضِيحَةِ اِفْذَالِ كَامَرٍ بِجِيَّةِ فَضِيحَةِ كَمَالِ اخْلَاقِي اَوْ كِي مَعْنَى خَاطِرِ شَيْئِي نَكْرَتِي اَوْ اَوْسَا كَامَرِي **ق** عَائِشَةُ يَا كَبِيرُ مَا هَلْ رَأَيْتَ مِنْهَا شَيْئًا يُرِي بِكَ يَعْنِي عَائِشَةَ **۱۰۵۷** **قَالَ** حِينَ كَانَ فِيهَا اَهْلُ الْاَفَاكِ مَا قَالَوا اُبْحَارِي اَوْ سَلِمَ مِنْ مَعَانِيهِ رَوَايَتُكَ عَنْكَ فَهِيَ بَاسٌ لِي عَنْ فَضِيحَةِ اِفْذَالِ كَامَرٍ بِجِيَّةِ فَضِيحَةِ كَمَالِ اخْلَاقِي اَوْ كِي مَعْنَى خَاطِرِ شَيْئِي نَكْرَتِي اَوْ اَوْسَا كَامَرِي **ق** عَائِشَةُ يَا كَبِيرُ مَا هَلْ رَأَيْتَ مِنْهَا شَيْئًا يُرِي بِكَ يَعْنِي عَائِشَةَ **۱۰۵۸** **قَالَ** حِينَ كَانَ فِيهَا اَهْلُ الْاَفَاكِ مَا قَالَوا اُبْحَارِي اَوْ سَلِمَ مِنْ مَعَانِيهِ رَوَايَتُكَ عَنْكَ فَهِيَ بَاسٌ لِي عَنْ فَضِيحَةِ اِفْذَالِ كَامَرٍ بِجِيَّةِ فَضِيحَةِ كَمَالِ اخْلَاقِي اَوْ كِي مَعْنَى خَاطِرِ شَيْئِي نَكْرَتِي اَوْ اَوْسَا كَامَرِي **ق** عَائِشَةُ يَا كَبِيرُ مَا هَلْ رَأَيْتَ مِنْهَا شَيْئًا يُرِي بِكَ يَعْنِي عَائِشَةَ

بَابُ الْخَلْقِ
 فِي رَوَايَاتِهِ
 وَفِي رَوَايَاتِهِ
 وَفِي رَوَايَاتِهِ

۱۰۷۹

حبش میں مانا اور آماجہا ہے ہواحق عثمان لیس یلدا کہ من اصدکم بین انہما فقال خیرا انی نمی
خیرا ہمارے اور سلم بن حضرت عثمان سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ وہ شخص جو تمہا نہیں جو ملاپ کر لے دے وہ میں تو کہنے نیک ہے
یا اپنی طرف سے جو کہ نیکیاں ملاپ واسطے **ف** یعنی ہر چند جو تھوہر ام ہی لیکن نیت صہل کے دست ہو کہ وہ دفع صہل کے
باز راستی فقہانہ **خیر** الصعب بن جحامة لیس ینارک علیک ولکن احکم بحجری میں منہ بن بنیامہ سے

۱۰۸۰

روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ ہمارے ہر ایک کو تھوہر دینا نہیں لیکن ہم تو احرام باندھیں **ف** یہ قصد ہو چکا کہ حضرت احرام باندھ
ج کو چاہتے ہیں اور میں نے جو کہ کاٹا کر کیا خاص حضرت کو تھوہر دیا صہل کے دل تو ابویکتاب حضرت سے حدیث فرمائی
اگر ہمارے ہر ایک سے جو کہ تھوہر قبول کرتے **ہو** تھوہر کے لیس السنۃ بان لا تمطشوا ولکن السنۃ ان
تمطشوا و تمطشوا و لا کما شئتم الا من شئنا مسلم بن ابی ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ قطع دی نہیں کہ تمہارے

۱۰۸۱

واسطے منہ پر سیاہ یا سیاہ و لیکن قطع ہو کہ حسین یا شہنشاہ اور بن کچھ **و** اولا یعنی سخت فطوہ کر لیں اور بن
سے کچھ اچھے کہ اس میں کل سقے ہو اور غضب آجی کھلا جو **ق** ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ لیس علی المسلم فی عبدہ وہ لا یسیر
صدقہ ہمارے بنی ابی ہریرہ سے روایت ہے کہ اسلام کا غلام ہو گھوڑے پر زکوۃ نہیں **ف** یعنی خدمتی غلام ہو گھوڑے پر

۱۰۸۲

زکوۃ نہیں اور اگر غلام ہو گھوڑے سو اگر کسی کے ہون تو نیز زکوۃ ہو **ہو** حار لیس فیما دون خمس ان فی من
القریق صدقہ و لیس فیما دون خمس دون من الا بل صدقہ و لیس فیما دون خمس
او شقی من القم صدقہ مسلم بن ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ زمین بیچ اوقیہ سے چاندی میں زکوۃ اور زمین

۱۰۸۳

بیچ اوقیہ میں زمین زکوۃ اور زمین بیچ موت کے چھ پہلے میں کوہ **ف** اوقیہ چالیس من کا ہوتا ہے جو بیچ اوقیہ کے دو سو دم
ہوے جو توبہ کے سبب سانس باون پہلے میں دوسو سانس کا ہوتا ہے چھ پہلے میں بیچ چھ پہلے میں موت کے حدیث میں
نسب کیا گیا ہے کہ زمین کوہ زمین کا نام غنی اور ابوسفند و محمد کے نزدیک تاج اور زہد جب تک بیچ میں ہو اس میں کوہ

۱۰۸۴

زمین اور زمین حدیث و ابی ایل ہمارے امام غفر کے نزدیک تاج اور زمین میں کچھ تھوہر زمین تھوہر اور بہت سب میں زکوۃ ہر کسی
دوسرا **عق** عایشہ لیس لک لک و لکن المؤمن اذا ابشر بحجۃ اللہ و رضعوا انہ و حجۃ احب
للقاء اللہ و احب اللہ لقاءہ و ان الکافر اذا ابشر بعد اللہ و سخطہ کل لقاء اللہ و کل لقاء اللہ

۱۰۸۵

ف قالہ لما حین قالت کلن اکلن کالموت ہمارے اور سلم بن حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جو زمین میں
اور مانا کہ کتب الکی بہت اور فرمانی اور شہادت کی خوشی سنانی جاتی ہے یعنی شہادت تو وہ جس کے کوہ دست لگتا ہے اور نہ لگتا ہے کو
بہت لگتا ہے اور اللہ کا جو بہت شرف و عذاب الہی اور اس کے غصے کی خبر لگتی جاتی ہے تو وہ جس کے کوہ لگتی ہے کوہ لگتی ہے کوہ لگتی ہے

۱۰۸۶

برایا تا جو حضرت حضرت عایشہ سے فرمایا کہ حضرت عایشہ کو پوچھا تھا کہ یا حضرت ہم سے تکرار آتا ہے **ف** یعنی ہر ایک میں بہت
برایا تا ستمیز زمین شہادت کو اعتبار کیا جائے زمین الہی کی شہادت خوشی سے فرمایا کہ اگر خدا کا دست گھبرا تا ہر اور موت کو
برایا تا جو ہر فاطمہ بنت قیس لیس لک علیہ فقہ **ف** قالہ لما لک طلقہا و رجھا ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اگر

۱۰۸۷

جو شخص لکبتہ مسلم بن ابی ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اگر خیر اوپر واجب نہیں ہے حضرت فاطمہ بنت شہادت

فرمایا جب کہ اس کے خاوند ابو عمرو بن حفص نے اس کو طلاق بائن ہی بھی **ق** طلاق دو قسم ہے پہلی اور بائن طلاق جس میں صبیح کے اندر جو رو کا خچر خاوند پر واجب ہے اس کے نزدیک طلاق بائن میں صبیح کے اندر خاوند پر خچر دینا آٹھ مرتبہ فحی کے نزدیک واجب نہیں ہے جو صبیح صبیح کے اوپر اگر حمل ہو تو واجب ہے اور امام غزالی کے نزدیک طلاق بائن میں خاوند پر خچر واجب ہے خواہ وہ ملن ہو خواہ نہ ہو اور یہ حدیث مخالف امام غزالی کے نزدیک نہیں بلکہ امام غزالی کے نزدیک طلاق بائن میں خاوند پر خچر واجب ہے خواہ وہ ملن ہو خواہ نہ ہو نیز یہ اور ایک نکتہ ہے کہ حضرت فرمایا کہ وکیل پیر خچر واجب نہیں جو تکرار کرتی ہے اور یہ طلب نہیں کہ خاوند پر واجب نہیں

ق سہل لیس من الدین الضمان فی الشجر بخاری اور مسلم میں ہے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ سفر میں روز رکنا پھر نیک کا نہیں **ق** حضرت سفر میں ایک شخص کو دیکھا کہ غش میں ہے اور لوگوں کو اس پر سیاہ کیا ہے حضرت نے پچھا کہ کیا کیا ہے لوگوں کو اس کا یہ غش روزہ ہے حضرت نے یہ حدیث فرمائی کہ غش میں غش ہو تو سفر میں روزہ رکنا خواہ وہ ضرور نہیں ہے سب علماء کا یہی مذہب ہے کہ سفر میں روزہ رکنا اور رکنا دونوں درست ہیں لیکن اگر طاقت ہو اور حضرت کس طرح کہ فرمایا کہ روزہ رکنا ہی افضل ہے **ق** ابو موسیٰ لیس من صلاتی حلق ولا حرق ولا سلق بخاری اور مسلم میں ہے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ وہ شخص جو لوگوں سے نہیں جو غم اور مصیبت میں کہ بال ہونے اور کپڑے پھاڑے اور ہونے کھڑے اور چلاوے **ق** کفری کہ تم بھی کہ جب کوئی مہاجر یا تاجر کے غم میں نہ کہ کرے جس طرح ہندوؤں میں بال بٹانے کی رسم ہے اس واسطے حضرت نے منع فرمایا اس حدیث سے معلوم ہوا کہ عیسیت یا محمد میں جیسے عوام کی عادت ہے بٹانے اور چلا کر ونا حرام ہے اور ایسے لوگ حضرت کے طریق نہیں اس واسطے کہ مصیبت میں صبر لازم ہے اور اس قسم کے کام مخالف صبیح میں **ق** انس لیس من بلدی الا سبط کذا الذبح الی الا مکاة والی المذینۃ لیس نقب من انفاجا الا علیہ المذکاة صافین محمد رسولہا فینزل السیخۃ ثم یسجف المذینۃ یا علی عاتلک رجفات فیحہر الیہ کل کافر ومنافی بخاری اور مسلم میں ہے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ ایسا شہ نہیں کہ جو دجال روزیگا یعنی سب جملہ کافر کا عمل دخل ہو گا سو اس کے بغیر کے مینے کہ وہ روزہ آج کوئی دروازہ ایسا نہ ہوگا جس پر شے قطار بارہ رکھوانی کہے تو بنگا سود جال اور تیرا مینے کے قریب شورہ زار یعنی او سرزمین میں پھر کپڑے کا مہر نہ بے سب لوگوں کے ساتھ تین بار توکل جائیگا دجال کی طرف سب کافر اور منافق

ق ابو ذر لیس من رجلی ادعی لغیرہ وھو یعمل کذا کفر ومن ادعی ما لیس لہ فلیس مننا ولیمتقوا مقعد من النار ومن دعا رجلا بالكفر او قال عدو لله ولیس کذا لک الاتعاذ علیک لک اقال مسلم وقال البخاری لا بد من رجل رجلا بالقسوف ولا ین صیہ بالکفر کذا الذکات علیہ ان کفریک صاحبتہ کذا لک بخاری اور مسلم میں ہے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ کوئی ایسا نہیں جو اپنا باب چھوڑے غیر کو باب بنا و جان بوجہ کر کہ وہ کافر ہو گیا اگر سب کو حلال بنا دے تو اسے کفرانِ نعمت کیا اور شخص عیسیٰ ملکیت ہو گا کہ اس میں وہ ہماری راہ نہیں اور چپکے اپنا نکھانا دوزخ کو فتح کرے اور جو چپکے کسی مرد کو کافر کہے کہ یا اس کو زندا کافر کہے اور حال نہ کہ وہ ایسا نہیں جو تو کہنے والے پر پٹ پڑے اس طرح روایت کی اور بخاری میں ہے روایت ہے کہ یہ بگڑا گیا کہ مرد و سرور کو گناہ کا کافر کہہ کر کہنے والے پر پٹ پڑے گا اگر وہ شخص گناہ بچاؤ کافر ہو گا **ق** معلوم ہوا کہ اپنا نسب چھپا کر

۱۰۸۴

۱۰۸۵

۱۰۸۸

۱۰۸۹

ولیکن کاغذ نے یہی عن بن کثیر کہ بخاری میں ہے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب حالت یقین نہ ہو تو بڑھ جاتے تو ان پر
سے کسی کی خبر کا جھنڈا کرنا تو حضرت ابوباب سے کہہ رہے ہیں کہ میں نے کئے سوا ان کے کہنے کے کہنا کہ ابوباب کیا میں تم کا لدا دل اور اس سے
سے جس کو تو دیکھنا چاہو پورا وہ نہیں کہ چکا یعنی تو متعلق نہیں کہوں کہ سب سے بہتر حضرت ابوباب کہہ کر کہ کوئی بین مجھ کو تیری عزت کی قسم جو مجھ کو تو
مال کی تو کچھ پورا نہیں کہیں تیری برکت اور عنایت کی جوئی چیز سے مجھ کو شہ پر دانی نہیں کہ بعضی بار مال کا لینا محتاج کیجیے
نہیں وہ بلکہ تیری عطا مجھ کو لیتا ہوں کہ غلام مالک کی عنایت کی جوئی چیز سے کسی حالت میں نہ پورا نہیں ہو سکتا کہ اس کو سرور مالک کی
مہربانی پر مال نہیں اس سے یہ معلوم ہوا کہ ہر نہ غسل کرنا درست ہوا و مالدار کو اپنے علم اور شہ تلاش مال سے تو اس کو عنایت خدا کی
سمجھ کر لینا تو اس کے خلاف نہیں ہم ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس وقت کہ تم صبح کھاتے ہو یا شام
حید یقہ فلاں ففعلی ذلک الشحاب فافق ماء وہ فی سخن و فاذا شربہ من ماء الشراب فکما شربہ من ماء
ذلک الماء کما کما ففعلی الماء فاذا رجع فافق ماء وہ فی سخن و فاذا شربہ من ماء الشراب فکما شربہ من ماء
ما شربہ قال فلاں لا لاشم الذی یسبح فی الشحاب فقال لہ یا عبد اللہ لہ تسکونی عن اسمی فقال
انی سمعت صوماً فی الشحاب الذی ہذا ماء فی یقول اسوق حدیقة فلاں لا شربہ فکما کنتی
فیہما قال اما اذا قلنا ہذا انا فی انظر لے ما یخرج منها فاصد فی یثابہ و اکل انا و عیالی
فلما و اکر فیہما کنتی مسلم بن ابی ہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ جب حالت یقین نہ ہو تو بڑھ جاتے تو ان پر
سوا کے ایک ماہر میں دلی میں کہ فلاں شخص کے باغ کو سینچ دے جو ایک طرف نہ بادل ٹھک پڑا چھڑا پانی ایک تھری زمین میں پانی نہ لیا دیا
تو ایک تھری زمین کی جھیلوں کو اس پانی سے لبا بہ کوئی سوو شخص سے پانی کے پیچھے پیچھے گیا تو ناگاہ ایک مرد کو دیکھا کہ اپنے باغ میں
کھڑا پانی کو اپنے چھوٹے سے ادھر ادھر کرتا ہوا اپنے باغ میں لے کر گیا کہنا کہ ان کے بعد تیرا کیا نام ہے تو اس نے کہا فلاں نام ہے تو پانی چھوڑی
میں بیٹھا سو باغ میں لے کر اس کے لڑکے کے بعد تو نے مجھے میرا نام کہوں پوچھا سو کہ میں نے اس میں پانی اس کی حکایت پانی
جو کوئی کہتا ہے کہ سینچ دے فلاں کے باغ کو تو انام پیکر سو تو اس میں پانی میں لے کر اس کے لڑکے کے بعد تیرا کیا نام ہے تو اس نے کہا
جبکہ تو نے کہا تو اب میں لبتہ دیکھتا ہوں کہ اس کو جو اس باغ سے پیدا ہوگا سلو کی ایک تائی تو خیرات کر دو گا اور ایک تائی میرے
لوگا اور میں کہا تو گا اور ایک تائی اسی باغ کی مرست میں پلٹ کر خرچ کرو گا اس سے یہ معلوم ہوا کہ اس نے تائی مال
خدا کی ماہ میں خرچ کرنا تھوڑا ہے اور معلوم ہوا کہ اگر تیرے تین سو کو جو جب علم آئی کے پلٹے ہیں اور حکم نام اور نشان کے ساتھ ہوتا ہے
کہ فلاں ملک فلاں ملک تھا حکایت اور غنیمت پانی برسا و اسی طرح مسند کے کام جب حکم فرماتے کرتے ہیں تو مسلمان کو لازم ہے کہ
جو نعمت و سلو سے خواہ جان کی خواہ مال کی تو اپنے رب کی شکر گزاری کرے اس کو لغات میں نہ پانچنے حق میں دالوئی سمجھے
ق ما لک من مصفحة بینما آانی الخطیبر و رجا قال فی النحر مضطجعا اذا آانی آیت فقد قال
و سمعته یقول تشق ما بین ہذا آالی ہذا فاستخرج قلبی ثم ایتیت بطست من ذهب فملکتہ
انما فافیل قلبی ثم خشی ثم ایتیت ہذا آویہ و ان البعل و کوئی انما ہا امین یضع مخلوقہ
عند انفسی مرفوف فملکت قلبی فانا طلق فی جہنم فیل حتی آتی السماء الذی انما فاستفهم فیل من ہذا

۱۱۰۹

۱۱۱۰

قال جبرئيل فيل ومن معك قال محمد فيل وقد ارسل اليه قال نعم قال مرحبا به فينعم
 المني جاء فيهم فلما خلصت فاذا فيها ادم فقال هذا ابوك ادم فسلم عليه وسلمت عليه ومن
 السلام ثم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم صعد بي حتى اتي السماء الثانية فاستقم
 فيل من هذا قال جبرئيل فيل ومن معك قال محمد فيل وقد ارسل اليه قال نعم فيل مرحبا به
 فينعم المني جاء فيهم فلما خلصت اذ انجي وعيسى ومهما استاخالة قال هذا انجي وعيسى فسلم
 عليهما وسلمت في اذ انهم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم صعد بي الى السماء الثالثة
 فاستقم فيل من هذا قال جبرئيل فيل ومن معك قال محمد فيل وقد ارسل اليه قال
 نعم فيل مرحبا به فينعم المني جاء فيهم فلما خلصت اذ ابراهيم قال هذا ابراهيم فسلم عليه
 وسلمت عليه في اذ انهم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم صعد بي حتى اتي السماء
 الرابعة فاستقم فيل من هذا قال جبرئيل فيل ومن معك قال محمد فيل وقد ارسل اليه
 قال نعم فيل مرحبا به فينعم المني جاء فيهم فلما خلصت فاذا ادريس قال هذا ادريس فسلم عليه
 وسلمت عليه في اذ انهم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم صعد بي حتى اتي السماء
 الخامسة فاستقم فيل من هذا قال جبرئيل فيل ومن معك قال محمد فيل وقد ارسل
 اليه قال نعم فيل مرحبا به فينعم المني جاء فيهم فلما خلصت فاذا هارون قال هذا هارون فسلم
 عليه وسلمت عليه في اذ انهم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم صعد بي حتى اتي السماء
 السادسة فاستقم فيل من هذا قال جبرئيل فيل ومن معك قال محمد فيل وقد ارسل
 اليه قال نعم فيل مرحبا به فينعم المني جاء فيهم فلما خلصت فاذا موسى قال هذا موسى فسلم عليه
 وسلمت عليه في اذ انهم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم صعد بي حتى اتي
 قال ابي لاني غلاما بعثت بعدني يدخل الجنة من امة اكثر ممن يذبحها ثم اخرجتكم صعد بي
 الى السماء السابعة فاستقم جبرئيل فيل من هذا قال جبرئيل فيل ومن معك قال محمد فيل
 وقد بعث اليه قال نعم فيل مرحبا به فينعم المني جاء فيهم فلما خلصت فاذا ابراهيم قال هذا ابراهيم
 ابن ابراهيم فسلم عليه وسلمت عليه في اذ انهم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح
 ثم روي عن النبي واذا اربعة اظهروا ان ظاهرا ان ظاهرا ان باطنا فقلت ما هذا ان
 يا جبرئيل قال اما الباطن ففهم ان في الجنة واما الظاهر ان فالليل والقرات ثم رفع
 لي البيت المعمور ثم اريدت باناء من نبي وانا من لاني وانا من عسل فاخذت الكائن فقال
 هي الفطر وانا عليها وامنتك ثم وضعت علي الصلوة ثم صعد بي صلو كل يوم ثم وضعت ثم روت

قال جبرئيل فيل ومن معك قال محمد فيل وقد ارسل اليه قال نعم فيل مرحبا به فينعم المني جاء فيهم فلما خلصت فاذا ابراهيم قال هذا ابراهيم ابن ابراهيم فسلم عليه وسلمت عليه في اذ انهم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم روي عن النبي واذا اربعة اظهروا ان ظاهرا ان ظاهرا ان باطنا فقلت ما هذا ان يا جبرئيل قال اما الباطن ففهم ان في الجنة واما الظاهر ان فالليل والقرات ثم رفع لي البيت المعمور ثم اريدت باناء من نبي وانا من لاني وانا من عسل فاخذت الكائن فقال هي الفطر وانا عليها وامنتك ثم وضعت علي الصلوة ثم صعد بي صلو كل يوم ثم وضعت ثم روت

یعنی ہماری اور علم دونوں میں اتنی جو یکساں تھیں ہمیں ہماری کی روایت کی پیروی کی جو **ف** خیر اور مجاہدوں مکان کا نام
ہر کعبہ جسے ہم نے کعبہ بنایا تھا تو کعبہ میں داخل تھا جب قریش نے حضرت کی نوبت پہلے کعبہ بنایا تو اس میں بیکر مکان کیسے
اور اگر کی طرف مٹھ کر دیا کیسے کا بیان وہی طرف ہی آج تک معلوم ہوا کہ حضرت معراج کے وقت علیہ السلام کی وہی
روایت یوں ہے کہ اول وقت حضرت پہنچے کہ وہی طرف پہنچے کہ اول حضرت معراج تھے پھر جبریل حضرت کو طیم میں لے گئے پھر وہاں معراج کو پہلے
تو کعبہ ہی حضرت کے کمرہ کا ذکر کیا اور کعبہ طیم کا دونوں سمت میں آدھ یعنی روایت میں اتھانی کا گھر کو اصفانی علی مرتضیٰ کی بہن کا نام ہے
حضرت کا اور اونکا ملا ہوا گیا ایک ہی گھر تھا اور پھر جس میں ایک مکان جو وہاں کے کتبے پر جو خط تھے ہیں اور حضرت کا دو بار سینہ
چیر کر مل صاف ہوا ایک بار تو لوگوں میں تھا کہ کھیل کود کی ہوس نہ ہو دوسری بار معراج کے وقت تاہو اتنی کی ہوس نہ ہو اور وہی میں
ایک علی اصفانی ہو کر دوبارہ لکھی کی ایسا قیامت علی رضی کی حال ہو اور حضرت موسیٰ کا رفا معاذ اللہ جسے سب تنہا اٹھ سکے کہ پیغمبر لوگ
سعدہ بن عترہ کا کہ ہیں بلکہ انکو اپنی بہت پارسوساں ایک مہنت تکا میں رہا اور بہت سہجرات دکھائے ہر لوگ بیان کہم کہ
تو بہشت میں ہی کہل چکے اور محمد کی تصویر میں عمر میں شمار لوگ بیان کہ اور قیامت تک کہ چھائی گئے تو بہشت میں میری اس سے
زیادہ تر وہاں لٹکے اور اگر معاذ اللہ سعد بن ابی وقاص حضرت کے کھلو چاس ناں کو باغ نماں تک کہ ایک کو کہنے اور حضرت موسیٰ بہت حضرت
کو لڑکا حقا کہ نہین کہا بلکہ بڑی عمر لے جو ان کو لڑکا کہتے ہیں بلکہ یہی حضرت کی گواہی ہے کہ باوجود کہ عمر کی ایسا بلند ہے
کہ پیغمبروں کے فضل ہو گئے اور یہ جو بلکہ انکے اور فرات سعدہ انتہی کے پیچھے سے نکلیں ہیں یعنی اگر اس عالم کے پانی کو اس عالم کے پانی
سے شبہ نہ کیجئے تو نیل اور فرات دونوں نہروں کا نمونہ ہیں با حقیقت میں نیل اور فرات کی سردا و نصین نہروں ہوتی ہو کر کو نہ نظر آوے
وامد علم اور معراج سلم کی روایت میں یوں ہے کہ اول حضرت کے سے مسجد قہمی یعنی بیت المقدس میں گئے وہاں دو رکعت نماز پڑھنے
آسمان پر چڑھے اور بیت المعمور میں جو ساقیوں آسمان پر ہے شہزادہ ہر روز فرشتے عبادت کو بلا تہ میں پھسکے ہیں دوبارہ زمین
پہنچ گئے ہیں اور بیت المعمور پہنچے ساقیوں آسمان پر ہے لیکن ہر ایک آسمان میں اسی کی سیدہ پر اویسی طرح کا عبادت خانہ ہے
اور کہ یہی اویسی کے بیچے ہی بالفرض اگر وہاں پہنچے گھر کے تو کعبہ کی چھت پر پڑے صبح سلم میں روایت ہے کہ یہی حضرت پہنچے وقت کی
نماز پڑھتی ہو گئے تو حکم ہوا کہ ایک نماز کا تو اب نماز کے نواب کے برابر ملے تو پہنچ کی بجائے ہو گئیں بہت کی تحفیت بھی ہوئی اور وقت
الہی کے خلاف بھی نہوا **ف** معراج کے میں جبر کے اول ایک برس ہوئی اور پہلے اختلاف ہے کہ معراج یونان سمجھی یا راقہ سمجھی
ہوئی یا جاکے صبح مذہب اہل سنت کا یہی ہے کہ میداری میں صبح اور بدین دونوں سے ہوئی چنانچہ صبح حدیثوں سے صاف بھی ثابت ہوتا ہے
اور اگر خواب میں معراج ہوئی تو عمدہ کمالات اور مجازات میں داخل ہوتی اور کفار قریش زیادہ انکار بھی نہ کرے اور بیت المقدس کی
حضرت کے سبب نشانیاں پڑھتے اور حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ حضرت کی روح کو معراج ہوئی جسم کے میں ہوا تو خطاب نے کہا کہ حضرت
دو مہاجرین یوں ایک معراج روحی دوسری معراج جسمی اور پہلے اختلاف ہے کہ معراج میں حضرت کے خدا کو دیکھا تھا یا نہیں حضرت عائشہ اور
ابو ہریرہ اور عبداللہ بن جابر سے مشہور روایت یوں کہ نہیں دیکھا اور یہی مذہب ہے کہ اکثر محدثین نے لکھیں اور فقہا کا اور عبداللہ بن عباس
سے ایک روایت یوں ہے کہ آگے سے دیکھا اور عطا سے یوں روایت ہے کہ دل سے دیکھا و امد علم کہ جس سے بیت المقدس تک جانا کا کار کر
وہ کافر ہو سکتے کہ قرآن میں اسکا صاف بیان ہے اور بیت المقدس سے آسمانوں کے چڑھنے کا کار کرے تو بدعت ہے **ج**

ہوئے محمد پتا منور نہاک پتا پہنچی جگہ کو تاج کو فروغ لگا کہ ان ابوبس نے کلمات ابو بصری کی قسم کہ اگر میں اسکو اس حالت میں
دیکھوں تو اپنے پانوں سے اکی گردن کھنکھانوں ایک در حضرت نماز پڑھتے تھے کہ وہ پالاکوسی محمد پر ملا جب حضرت کے پاس گیا
تو اسنے قبر میں خود کے لئے بجا کا گوشت کھا تو کون طرح حاکا اسنے کمال بجا اپنے او محمد کے درمیان اس سے بھری ہوئی خندق
نظر پڑی اور اسنے گواہ اندر نہایت اگلا و بہت پر معلوم ہوئے جس نے یہ حدیث فرمائی مینی اگر میرے قریب مرو و جاتا تو فرشتے
اوسکو چمکے مرنے کے کڑا لے یہ حدیث مجھ پر **ہر ایتھی منی لکھ را کینتی و انما اتبع لہما تا تک الباریہ قالہ** کہ
مسلم بن ابویوسف سے روایت ہے کہ حضرت علیؓ کو کھانا پیش کیا کہ میں نے کہا کہ تم نے قرآن پڑھا سنا تھا تو کھانا کھا کر معلوم
ہوتا اور تو زیادہ خوش آواز پڑھتا ہے حضرت نے فرمایا **ف** ابویوسف نہایت خوش آواز تھا کہ کو قرآن پڑھتے تھے
کہ حضرت دو گھنٹہ سے تو کھڑے ہو کر سنا لیں کہ یہ حدیث ابویوسف نے فرمائی **خر ابن عباس** لکھتا ہے **ہذا القطعة مما**
اعطینکما و کن تعدا و اقر اللہ فیہ و لکن اذینا لیعقر نیک اللہ و اری کا ران الذی اری فیہ
ما اریہ و ہذا انما یجد فی عینک قالہ المسئلۃ و ثابت ہوا ثابت بن قیس بن شکان بخاری میں عبد
بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت سید کذاب نے فرمایا کہ تو میرے اس چھوڑی چھڑی کا کلمہ لانا گیا کہ تو اتنا بھی مجھ کو دو گا اور جسے محمد کو جو
تیس سنی میں تھیں چکا تو اسکو گھر نہ بٹا سیکے یعنی مجھ کو مال کر گیا اور دونوں جہان میں نفیست کر گیا اور اگر تو اسلام سے بھرا تو ابد
نذا تیرے کو پٹے کاٹے گا اور مقررین مجھ کو ہی جانتا ہوں جو مجھ کو اب میں کھلا لیا جو کہ دکھلایا گیا اور شامت مجھ کو ہی طرح جواب گیا
مرو ثابت بن قیس بن شکان کا بیان ہے **ف** عبد اللہ بن عباس سے روایت ہے کہ سید کذاب نے حضرت کی حیات میں ملک
یاسر سے ستائش کی قوم کا جو ہم یکسر شیعہ ہیں یا اور حضرت کو بیام دیا کہ اگر محمد بنی دست کہ اب غیر کی کا عہدہ ہو جو دنیا کی میں ملک کا
مالک ہوں تو میں اسلام قبول کروں و تا بعد ہوں تو حضرت اسنے پائش لیت لیتے حضرت کے ہاتھ میں کھوڑی چھڑی تھی جسکے سر کے اوپر
کھڑے ہو کر یہ حدیث فرمائی مینی میں تر حال خواب میں کھچکا ہوں کہ تو غیر کی کا دعویٰ کر گیا تو خدا کا نخواستہ بھی کر گیا اور سید کذاب نے قرآن
کے مقابلہ میں کچھ حفاظ اور راہبیاں کی ملک بندی کی تھی سو فرمایا کہ وہ خافات میرے سننے کے لائق نہیں اوسکی جواب میں کو یہی
طعن سے ثابت بن قیس کی کفایت کرتا ہے ثابت بن قیس انصاری تھے بڑے گویا حضرت کے خطیب چنانچہ ثابت اسنے خافات کو
ایسا بھٹکا کہ کچھ ثابت نہ کھایا اسنے سید کذاب اپنے ملک کو پٹ گیا اور وہاں حضرت کی خیمہ میں شرکت کا دعویٰ کیا حضرت
خطا لکھا کہ جنہو میں جماعت شریک ہو سب ملک کی زمین بھی تھی آدمی جاری حضرت نے جواب لکھا کہ زمین تو حقیقت میں نہ
کی چلنے بندوں جسکو چاہے اوسکو اور آخرت تو خاص پرہیزگاروں کے لیے جو یہ حضرت کے انتقال کے سبیلے نے شرکت کا دعویٰ
پھوڑ کر ملک کا دعویٰ شریعت میں کیا ہزاروں لوگوں کے فائدہ ہوا کہ گئے تھے صدیق اکبرؓ نے غلامی خلاف میں خوب فوج کشی کر کے اوسکو مار
اور اوسکو لوگوں کو مایا اگر صدیق اکبرؓ اوسکو نہ مارے تو اب تک اوسکو لوگ وہی کلمہ پڑھتے پڑاویں میں نہ سنا پڑتا جیسے شیعہ سنی
میں بحث رہتی ہے اسنے نہایت اوس سے بھی اسی مقام سے اگر آدمی ہو کر کے تو صدیق اکبرؓ کی فضیلت کو مجھ سے کہ میں میں ایسے
ایسے عہد کا مالک ہوں ہے **خر ابن عباس** لکھتا ہے **لا خذ نہ انا کلمۃ یحییٰ اباجہل لما قال ان و انک محمد**
یصلی عند الکعبۃ کا طاعی حلل کہ قسم ہم بخاری میں عبد اللہ بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ

۱۱۳۴

۱۱۳۵

فیہ

۱۱۳۶

۱۱۳۷

۱۱۳۸

۱۱۳۹

۱۱۴۰

مستخرج من
کتاب
الاصناف
لشيخنا
رحمته

اگر وہ نے ادبی کرتا تو اس کو کفر سے پکڑ لیتے یعنی اب وہ جس کو جب کہ اس نے کہا تھا اگر میں تم کو کہے پاس نہ آؤں پھر دیکھا تو اس کی گردن
کھنکھانے لگا کہ اس کا تیسری حدیث میں ہے کہ **جاء من قال قد جاء ما لا اله الا الله** جہاں سے کہنے والا آگیا کہ اگر میں تم کو کہے
مکہذا او ملکاً او ملکاً **قال له** کہ بخاری میں اس حدیث میں ہے کہ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اگر میں تم سے مال آؤں گا
تو میں تم کو دیکھا اس طرح اور اس طرح یعنی ابھی بھر بھر کے میں بار دیکھا یہ حضرت جابر سے کہ **ما تصاف** جابر سے
روایت ہے کہ جسے حضرت نے یہ وعدہ کیا تھا حضرت کی زندگی میں جو کچھ کہتے تھے اسے ایسا ہی حضرت کا انتقال ہوا اور صدیق اکبر علیہ
ہوئے تو اس ملک الیٰ صدیق کہنے لگا کہ یہ حضرت پر فرض ہو یا جس سے حضرت نے کچھ کہنے کا وعدہ کیا ہو وہ ظاہر کرے
تب میں نے حدیث بیان کی صدیق نے کہنے لگا کہ اپنا اہل بھراؤ رکھ لینے لوں دیکھو اپنے دونوں ہاتھ بھر کے لٹاؤ تو میں
درم تھے صدیق نے کہنے لگا کہ ہزار درم اور کچھ آج حدیث معلوم ہوا کہ جو مالک عدہ کہے تو اس کا نام اب دس ملے کو
پور کرے **ما یؤخر عنہ من قول قلت نعم لو جئت ولما استطعت فقال** حدیث میں ہے کہ اکل جابر سے
وینزل الجحیم مسلم میں ابوشیر سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اگر میں بیان کرتا تو ہر سال حج جاؤں جانا اور ہر گز نہ نکلتا
حضرت فرمایا جب لوگوں نے کہا کہ کیا ہر سال حج فرض ہے **ف** حضرت نے حیدر الوداع میں فرمایا کہ لوگوں کو حدیث میں ہے کہ فرض کیا
ج کر و اربع بن عباس نے کہا کہ حضرت کیا ہر سال حج فرض ہے میں نے ہاں چاہا حضرت نے شفقت سے کہ جب جواب دیا کہ حدیث میں
ہے ہر سال اور نہ فائدہ سوال کیا کہ اگر ہر سال فرض ہوتا تو حضرت کو حسان بیان کرتے **ق** حضرت ان میں سے تھے کہ
وانت عمالت امرک افلحت کل الفلاح قال لا یسیر من یسیر معقیل اصحابنا معھا العصباء
فاو تقوۃ فقال اے مسئلہ بخاری میں عمران بن حصین سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اگر تو اس کو کہتا ہے یعنی اہل انظار کہتا
اور حالت میں کہ تو اپنا اختیار رکھتا تھا تو نہایت چھٹکارا پانا یہ حضرت نے قوم بنی قریظ کے قیدی کو فرمایا جسے پاس اصحاب نے وہ
انہی بانی مسلمانانہ غصہ بلکہ پھر صحابہ اس کو باندھا تو میں نے کہا کہ میں تو مسلمان ہوں **ف** صحابہ میں عمران بن
حصین سے روایت ہے کہ تو بنی قریظ قوم بنی قریظ سے تم تمہاری بنی قریظ کی قوم نے حضرت کو وہاں پکڑ لے حضرت کے اصحاب بنی قریظ
کے ایک شخص کو پکڑ لائے اس شخص نے حضرت سے کہا کہ مجھ کو یوں پکڑا ہے حضرت فرمایا کہ تو اپنے قسم کو گواہ بنے اگر قاتل ہوا تو حضرت
وہاں سے ہٹے تو اس نے کہا اے محمد بن تو مسلمان ہوں تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی اگر حالت اختیار میں تو قیدی نہ ہوتے تو سلام ظاہر کرتا تو
یہ سن کر میں نے ہمت بھلا ہونا بچھڑا نہ کہتا پھر حضرت اس کو بلا دیکر اپنے دونوں اصحاب بنی قریظ کی قید چھڑے **سبحہ** اے محمد بن
کہا کہ ان ایمان معلق بالذین لکن انما یکتاؤ قاریس و یؤی فی لکن کان الامان عند الذین لکن انما یکتاؤ قاریس
آئی رحمتی جمع کلاخ بخاری میں ابوشیر سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اگر ایمان میں پکڑا ہوتا تو بھی غازیوں کی اطلاع
اس کو جاتی اور دوسری روایت یوں ہے کہ اگر ایمان میں پکڑا ہوتا تو بھی ان غازیوں کے مدد سے وہاں سے **سبحہ**
میں ابوشیر سے روایت ہے کہ ہم حضرت ہارث سے کہے کہ سو وہ ہم کی نیابت اتوری و اخین و حیدر منک الیٰ الحق و اعتراف ہاں کہ
وہ خدا سے پیوستہ ہوا جب کی طرف و دور دن کی طرف جوا بھی عرب کو نہیں ایک طرف نے میں ہاں چھڑا کہ لوگ کون ہیں جو
عرب سے سوائے بنی قریظ کے مسلمان غازی پر ہاتھ رکھا اور یہ حدیث فرمائی ثریا اور پروین اور چند ستاروں کا نام یہ جو نہایت متعل بن

قواب بعثنا اور فجر کی جماعت کا تو آدین گھنٹے **ف** یعنی اگر اذان اور اوصاف کا تو اسے معلوم ہو جائے تو لوگوں میں سے کچھ
 ہر ایک شخص ہی پہنچ کر میں ہی اذان میں داخل ہوں پھر یہ جانیں کہ جگہ جگہ اذان کے قریب سے نہیں گنا تو غرض
 قمر الدین جگانام نے وہ اذان کے اوصاف میں داخل ہوا اور اگر جماعت فجر اور عشاء کا تو اسے معلوم ہوا اور بعد میں بسبب ضعف او
 نہ اتوانی کے پانچوں نہ اسکیں تو ان کو ان کی طرح گھنٹے چلے آدین حدیث میں اذان و وصاف وال اور ظہر کے اذان وقت اور حضور عجات
 فجر اور عشاء کی تفصیل کے بیان میں اس کی دوسری حدیث میں آیا جو اگر کسی میں ظہر کی نماز گھنٹے وقت سے پہلے اگر کوئی کو تکلیف نہوار
 جماعت پوری ہو سو **ف** ابن عمر رضی اللہ عنہما صاف اذان و اوصاف کے ماساں رک رک کر کہے تو حدیث کی تکمیل ایک گناہی میں عیدین
 عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا اگر لوگ جانیں جو کہ تنہائی میں رہی تو رات کو کوئی سوا تہما کہی **ف** معلوم ہوا اگر کہنے پر
 کہ تہمت میں واسطے کہ میں ہی اور دنیاوی فتنوں نقصان میں ہی نقصان ہے کہ نماز جماعت محرم یا اور دنیاوی یہ کہ تنہائی میں رات کو گھنٹے اور
 وہم و فتنہ اور نزل و شرف و فوج کا اثر ہو تا ہے اور جہاں میں ہوا تو پتا ہے کہ زیادہ تر اوست پر شل شہور کی اکثریت میں الطریق
فصل اس میں دو حدیثیں ہیں پہلی کہ یولائی لفظ **ف** ابن عباس رضی اللہ عنہما کہ اَنْ اَشَقَّ عَلَيَّ اَمْتِي
 لا مَرَّ مَعْرُوفَانِ فَصَلُّوا هَا كَذَلِكَ يَعْنِي صَلُّوا الْعِشَاءَ **ف** ابن عباس رضی اللہ عنہما کہ اَنْ اَشَقَّ عَلَيَّ اَمْتِي
 بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا اگر میں اپنی امت پر کھلا ورٹہ بناتا تو میں ان کو واجب کے حکم کے لئے عشاء کی نماز ہی طبع
 پڑھا کرتا لیکن حضرت نے زیادہ رات کے عشاء کی نماز پر ہی تہمت فرمائی **ف** معلوم ہوا کہ عشاء کی نماز میں تاخیر مستحب ہے
 یعنی تنہائی رات آدھی رات تک بعد اسی رات کے وہ وقت ہے **ف** ابن عباس رضی اللہ عنہما کہ اَنْ اَشَقَّ عَلَيَّ اَمْتِي لا مَرَّ مَعْرُوفَانِ
 بالشیخ ابن مسلم ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا اگر میں اپنی امت پر کھلا ورٹہ بناتا تو میں ان کو واجب کے مسواک کا حکم کرنا ہی
 بیجا نہ تھا میں **ف** مسواک کرنا سنت ہے یا اتفاق خصوصاً نماز کے وقت اور امام شافعی کے نزدیک فجر اور ظہر کو زیادہ تاکید
 مسواک سے وہ دفع ہوتی ہے وضو اور قرات قرآن اور دنیا و سکوت اور جبکہ کے وقت زیادہ تر مستحب ہے مسواک کر دینی اگر کسی کی جگہ
 بیلو کی مسواک سب سے بہتر چھوٹی اور چمکی براہی ہو اور اہل سنت برابر اپنی **ف** انس رضی اللہ عنہما کہ اَنْ اَشَقَّ عَلَيَّ اَمْتِي لا مَرَّ مَعْرُوفَانِ
 بخاری میں اس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا اگر جماعت نہوتی تو انصار یوں ہیں میں ایک مرد ہوتا **ف** یعنی انصاری صحاب
 مجھ کو ایسے پسند خاطر ہیں کہ اگر جماعت کی صفت مجھ سے ہو نہوتی تو میں اپنی ذات کو انصار یوں میں شمار کرتا **ف** انس رضی اللہ عنہما کہ اَنْ اَشَقَّ عَلَيَّ اَمْتِي
 اَنْ لَا تَكُنْ اَفْقَى الدَّعْوَةِ اَللّٰهُ اَنْ تَكُنْ مَعَكُمْ مَعْنَى هَذَا اَيْ الْقَبْلِ مَسْلُومٌ اِنْ اَنْتُمْ رَوَيْتُمْ عَنْكُمْ حَرْفٌ فَلَا اَكْر
 مجھ کو اس کا خون نہواتا تم تہمتیں سلزم دون کا دفن کرنا چھوڑ دو گے تو خدا سے دعا کرو کہ تم کو خدا تہمت کا سنا دیتا **ف** یعنی اگر
 تم خدا تہمت کا سنا دیتے ہو جو اس کا ہوا کہ دفن کرنا اپنے مہر و ن کا بھول جاؤ معلوم ہوا کہ مرد و عورتیں خدا تہمت چلائی تو وہی دین
 اس واسطے نہیں ہے کہ ان کی زندگی نہ ختم ہو جائے **ف** ابن عباس رضی اللہ عنہما کہ اَنْ اَشَقَّ عَلَيَّ اَمْتِي لا مَرَّ مَعْرُوفَانِ **ف** انس رضی اللہ عنہما کہ اَنْ اَشَقَّ عَلَيَّ اَمْتِي لا مَرَّ مَعْرُوفَانِ
 بالصحفین جتانما اَمْ اَهْدَى الْاَلْبَسَاجِدَ وَخَشِشَ سَلْمَنَ بْنَ عَبْدِ رَبِّهِ اَنْتُمْ رَوَيْتُمْ عَنْكُمْ حَرْفٌ فَلَا اَكْر اِنْ اَنْتُمْ رَوَيْتُمْ عَنْكُمْ حَرْفٌ فَلَا اَكْر
 باجے نہوتے تو تم سے قبول کرتے یہ حضرت سعد بن زید سے فرمایا جب کہ وہ گھر کو نکلا کہ کہ حضرت کو تہمت دیتا **ف**
 یعنی محرم کو نہوتی کا کیا لینا درست نہیں اس واسطے ہم قبول نہیں کرتے معلوم ہوا کہ عذر دینی سے دعوت کا قبول کرنا اور تہمت پڑنا

۱۱۵۱

۱۱۵۲

۱۱۵۳

۱۱۵۴

۱۱۵۵

۱۱۵۶

بعضی نسخوں میں
 ہے

اوسکا خان اور اوسکی عزت آبرو اور اوسکا مال **ف** حضرت مجتہد المولود عین جہان بن ہارون سلمان مجتہد تھے یہ حدیث فرمائی
 اوفساد و ظلم کی ہر گھڑائی ہر سولے کے گزے عالم میں فساد نہیں مینوں کا مومن میں ہوتا ہے جو سنا ہے جب تک کہ باقی خون کرنا حرام ہو تو
 خون کا جھوٹا دعویٰ کرنا اوسکی باقی کو بھی مباح ہے حرام ٹھہر اور جب سلمان کی برادری میں ہوتی تو اسکو قتل کرنا غریب کرنا اوسکی
 جو رویتی سے ارم کا ہی اوسکی غیبت کرنا بھی حرام ہوا اور جب تک کہ مال لینا درست نہ ہوا تو قتل الطریق جو بھی غریب باری
 ڈانڈ رشوت قمار بازی خرچی بھی حرام ہو گئی اسواسطے کہ ان کا مومن اوسکا مال باقی زیاد ہونا ہی محافظت نوع انسانیت
 کی عمدہ غرض ہے ہوا و کامیان اس میں من جوئی بھاد باق ابو مھر رقة کل اُمّی معافی الا الجاہل رون و ان
 من الا جھال ان یعمل العبد باللیل عمل کثیر یضع قد سن کربة فیقول یا فلاں یحلت لبا راحة کذا و کذا
 وقد بات یسن کربة و یضع یکشف سن اللہ عندہ بخاری اوسم میں ابو ہریرہ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ
 یہی ہے اس کے گناہ حاکم بنو کر کے گناہ نہیں مینوں کے چلنے پر شیعہ و گناہوں کو ظاہر کرتے ہیں و البتہ یہ بات بھی اطمینان
 داخل ہے نہ نہ و رات کو کوئی پر کام کرے پلو سکون اس حالت میں ہو کہ اوسکے سبے اوس گناہ کو چھپا دالا ہو وہ شخص خود کو
 کہ اوسیان کلمتینے قرات کو ایسا ایسا کام کیا رات کو اس کے سبے گناہ پر پردہ ڈالا اور وہ صبح کو نہ کہنے کے کو کون برف
 پوشیدہ گناہ کو گھونٹ ظاہر کرنا ایسا سخت گناہ ہے جو کہ سعادت نہ ہو گا اسواسطے کہ میں گناہ پر جرات اوشیروانی ثابت ہوئی ہو
 صاف ظاہر ہو کر باقی کے گناہ پر نہ لانا اور یہ چھپنے نادان کہتے ہیں اوصاحب کا کہتا ہے وہ نہیں لگا آدمی سے پردہ کرنا
 کیا ضرر و غلط ہے میں کہ اگر وہ شرارت اور ظاہر کرنا تو البتہ خدا کی پردہ پوشی کرنا اور جب کہ اٹھتے ہیں یا خود اپنا پردہ فاش کیا
 تو حضرت شایر و پردہ پوشی کے لائق نہرا اور حدیث میں آیا ہے کہ پوشیدہ گناہ کی پوشیدہ تو بہ کرے اور ظاہر گناہ کی ظاہر ہو کر تو بہ کرے
 سنا کہ لوگ خوش ہو کر اوسکی توبہ کے گواہ ہوں یا اور گناہ کا رو سکھو دیکھا تو بہرے توبہ میں **خ** ابو مھر رقة کل اُمّی
 یکن خلق ان اُتیتہ الا من ابی فیل و من یأبى قال من اُطاعنی دخل الجنة و من عصانی فقد اذی
 بخاری میں ابو ہریرہ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ سب سے بڑی گناہ شت میں اعلیٰ کوئی گناہ ہے کہ انا اور اوسکا کو گناہ کیا کہ لا کا کرنا والا
 کون ہے حضرت فرمایا کہ میری اطاعت کی اور میری سنت چلاؤ شت میں اعلیٰ ہو گا اور جسے میری غائی کی یا بدعت کالی یا شریعت
 سے انہی نہ اوستے نما اور وہی سنگ و **و** اس میں میں اتباع سنت کی نفیست ہل و بدعت اور حکم شرعی سے راضی ہو کر
 انکار **ق** ابو مھر رقة کل سلامی من الناس علیہ صدقة کل یقام تطلع فیہ الشمس
 تعدل بین الاثنین صدقة و تعدل الرجل فی ذاتہ فتحملة علیہا او من فعلہ علیہا مناعة
 صدقة و الکل الطیبة صدقة و کل خطوة تمسکھا الی الصلوة صدقة و یطی الا ذی
 عن الطریق صدقة بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ ہر روز ہمسراں تک آؤ ہوں کہ ہر ایک کو
 ہر ایک جو جو چھتہ ہر نصف کرنا و ہضم میں نہایت تہہ نہ کرنا نہر کی اوسکی سواری میں ہوا و سکھو سواری پر چڑھنا و اسکا سہارا
 اوسکے جان و برا و ٹھکانا و لا و نہ عزت ہوا ورنیک بات کسی کا دل خوش کر دینا یا لا الہ الا اللہ پڑھنا بھی خیرات ہوا و ہر ایک
 جو نازک واسطے طے خیرات ہوا و رکعت کا شایر ہوئی اور پھر کو رستہ دو کرنا خیرات **ز** یعنی ہر روز آدمی کو

۱۲۱۵

۱۲۱۴

۱۲۱۶

بعضی روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ

بعضی روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ

یا کوئی گھاس جو جیسے بڑا غیر قلیل اور کثیر اس کا سبب معلوم ہو اور یہی مذہب جو امام مالک اور امام شافعی اور امام احمد اور
امام محمد اور محدثین کا ہر چند امام غفرلہ کے نزدیک غیر حرام شراب ہی ہے جو شہید الکلبی سے ہے اور جوشائے کے کاڑھی ہو اور گھاس کا لپ
اور چیرن اس کے سوا کہ برون نشے کے حرام نہیں بلکہ ان کے شرعاً و تحقیق نزدیک امام محمد کے قول پر فتویٰ ہے جو ناخچہ نما یہ اور زلیخا
اور قبی، اور عشاوی، علیگیری اور الدلتا اور شہادہ و ظاہر میں کہ جو چنانچہ مولانا عبدالحی اللکھوی نے تاریخ زمانہ کی روایت سے ہر ایک متفق
اس طلب کو خوب بیان کیا ہے اور یہاں سے حد تک کھنکی اور شافعی نے اس پر تعلق ہے میں جو چاہے اس کو کہے **فان عین عیناں کل**
مصدق فی الدار بخاری اور مسلم بن عبد اللہ بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہر ایک قسم پینے والا
دو فن میں ہے **ف** یعنی جاندار کی صورت بنا احرام ہے **ق** جاندار کے معروف و صدقہ بخاری اور
مسلم بن جابر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہر ایک جلی بات جھلا کا صدقہ ہے **ف** یعنی وہ میں خیرات کے برابر ہے
فصل اس فصل میں دو حدیثیں ہیں ایک ہے **ق** اُمّ ہانی بنت اُمّی طالیب قد اُجبت فاصن
اجرت و امننا منی **قالہ** **لما یوم فلیع مکہ** بخاری اور مسلم میں امامانی زیادہ بوطالب کی بیٹی سے
روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ عتہ بنہادی جسکو تو نے پناہ دی اور شہنشاہی یا جسکو تو نے امن دیا حضرت نے امامانی سے فرمایا
جس نے کفر میں ہوا **ف** امامانی نے اپنے خاوند کے رشتہ دار کو پناہ دی تھی علی قضی نے اس کے قتل کا ارادہ کیا امامانی نے
اپنے بھائی کا شکوہ حضرت سے عرض کیا حضرت نے چار بیٹھ فرمایا **ق** **جاءت قد اخذت بحملک** یا **دُبْعَة** دنا دینا
و لک ظلم کہ انی **المکذبة** **ق** **الک** بخاری اور مسلم بن جابر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ عتہ تیرا و نہ
چار دینا کو لیا اور گھونٹنے لگا وہ کی سواری کی اجازت ہے حضرت نے جابر سے فرمایا **ف** جابر سے روایت ہے کہ میں
سفر میں حضرت کے ساتھ تھا میرا اونٹ نہایت تھک گیا تھا میں سبکے پیچھے بڑا رہتا تھا ایک بار حضرت میرے پاس آئے ایک سویرے
اونٹ کو ایک کوڑا مارا پھر وہ اونٹ خوب تیز رفتار ہو گیا کہ کبھی دیر نہ تھکا پھر حضرت نے فرمایا کہ اس اونٹ کو کھینچ کر ڈال دے
اسکو یہاں تک کہ کی سواری شکر لڑی حضرت نے چار بیٹھ فرمائی پھر جب میں نے اونچے تو میں حضرت کے پاس اس اونٹ کو لے گیا
حضرت نے چار دینا اور پانچ سو کے برابر ہونا قیمت زیادہ دیا اور فرمایا کہ قیمت اور اونٹ دونوں تجھ کو دیے **ف** جب چیر چیری تو
بائع کو وہ میں کچھ شرط کرنا درست نہیں ہے جو سواری کی شرط کی تھی سو حقیقت میں شرط تھی بلکہ حضرت کی طرف سے احسان
تھا سواری کی اجازت بطور عاریت تھی یا کہ یہ بات حضرت کو خاص تھی اور ظاہر اجرت کو جابر احسان کرنا منظور تھا حال انہی
غرض تھا **عبد اللہ بن عمر** **قد اُفم من اسلم و زنی کفا** **و ففہ** **اللہ** **یحا** **انا** **المسلم** **بن عبد اللہ**
بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ البتہ مرد کو پونچھا جو مسلمان ہو اور اسکو بقدر ضرورت روزی ملی اور دلے جتنا اسکو دیا
اور یہ قناعت نصیب کی **ف** قناعت وہاں ان کو اس واسطے کامیاب فرمایا کہ ایمان کے سبب اس کی آخرت سنوری و قنوت
ضرورت کی دنیا کی تحفہ بھی نہ ہوئی تو کو دو فون جہاں سے بخوردار ہو اور اگر ایمان ہو اور قناعت نہ ہو تو ایمان کی خوبی اور طوطی مطلق
ظاہر نہیں ہو طوطی آدمی کو فون میں لے لیا اور فقیر کہتی ہے شہری قناعت تو اگر کم کر دے کہ وہ راہی تو سب نعمت نیست +
لیکن اہل و عیال کی ضروریات کو طلب کرنا قناعت سے مخالف نہیں بلکہ کمال نادر حاجت خیر کی تلاش کا نام ہے **سرخ** **ابن عمر**

۱۲۲۳

۱۲۲۴

۱۲۲۵

۱۲۲۶

۱۲۲۷

۱۲۲۸

جو کہ سورہ حضرت کو وحی سے یہ حال معلوم ہوا تب حضرت ابو طلحہ اور اذہ کی بی بی سے یہ حدیث فرمائی کہ میں نے حضرت کو کہا کیا
 حضرت پر قیامت ہے اور کیا عامل بنا رہا ہے کہ عتقی کی حالت میں اپنی جان پر قربان ہو کر مقدم کرتے تھے پھر پانچ سو کوئی تعالیٰ
 قرآن میں فرمایا **وَمَنْ يُؤْتِكُمْ ذَنْبًا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَوْ أَنَّهُمْ خَصَّاصَةٌ لَّيُمَيِّتَنَّكُمْ** یہی ہے کہ صاحب اپنی جانوں پر غیروں کو
 مقدم رکھتے ہیں اگرچہ ان کو کوئی اور حاجت ہو جیسا ایسے کامل لوگوں سے کیا ممکن ہے کہ ان کی یہ کافر تھے لیکن یہاں تک کہ حضرت ابو طلحہ
 بیت النور میں تھے تعالیٰ نے ان کی جان سے پناہ میں رکھی **أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ كَانَ قَبْلَكَ مُحَمَّدٌ بَنِي إِسْرَءِيلَ رَجُلًا يَجْعَلُ مَنَافِعَ**
مَنْ غَدَرَ عَنْكَ يَكْفُو لَكَ أَنْ يَذْبَأَكَ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِي أَهْلِ بَيْتِي أَحَدٌ فَخَسَمْتُ بِنَارِي مِنْ ابْنِ بَنِي إِسْرَءِيلَ یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا مقرر تھے
 پہلے ہی اسرائیل میں سے ہر جو شخص تھے جسے کام ہوتا تھا میں نے خدا کی طرف سے ان کے دل میں الہام ہوتا تھا یا فرشتے کے کام کرتے تھے
 حال ان کے یہ چیزیں تھیں سو سو سالہ عمر کی ہی تھیں کوئی ہوگا تو عمر فاروق نے ہر گاہ کہ یہ شہادت کی بہت سبب تھی حضرت نے
 توبہ کی کہ میں نے یہ سبب الہام اور کام لوگوں کو توفیق کی امت میں بطریق اولیٰ ہوا چاہی میں حضرت سے یہ عہد و ضمانت فاروق عظمیٰ کی جانب ہوا
فَصَلَ مِنْ بَيْنِ مُحَمَّدٍ وَبَيْنِ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَقَدْ احْتَضَرْتُ بِمُحْطَا شِدَّةٍ يَوْمَئِذٍ لَمْ يَكُنْ
قَالَ لَهُمْ أَنَا كَأَنَّكَ لَمْ تَكُنْ لِي كَلْفًا ذَكَرْتُ لَكَ اللَّهُمَّ یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اللہ نے تو پہلے
 گردن پر مضبوط کر دیا اور نہ کچھ بچاؤ کا یہ حضرت نے اس عہد سے فرمایا تھا کہ حضرت سے واسطے دیکھنا جیسے وہ البتہ میں کوئی ایک
 گارنٹی ہو **فَإِنْ بَيْنَ بَيْنِ مُحَمَّدٍ وَبَيْنِ بَنِي إِسْرَءِيلَ** اور اس نے ان کی تفریق میں بھی کیا وہ آتش و بیعت پناہ میں ہو گیا عورت
 جو بھی تھی کہ یہ بیعت ہوئی اور اللہ کی واسطے اسے حضرت دعا کو کہا کہ حضرت نے اس کی تسکین کی کہ وہی کوئی بیعت ہو جائے
 غلطی سے نہیں حضرت نے **لَقَدْ أَتَيْتُكَ عَنِّي الْيَمَاءُ سَمَوَاتٍ لَمْ يَكُنْ أَحَدٌ إِلَّا رَضِيَ طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ مَقَامًا**
أَنَا فَخَنَّا لَكَ فَخًا صَدِيدًا یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کی رات مجھ پر ایسی سورت اور بڑی کہ میرے
 نزدیک آتا نہ دیکھتا ہے یہ حضرت نے انھن کی سورت پر بھی **فَإِنْ بَيْنَ بَيْنِ مُحَمَّدٍ وَبَيْنِ بَنِي إِسْرَءِيلَ** یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کی رات مجھ پر ایسی سورت اور بڑی کہ میرے
 غمزدہ ہو گئے زیادہ کہانچہ تھا تو واسطے اس سے فرستے پڑے پڑے رات کو حضرت نے دعا فرمائی کہ میں نے اپنے کفار کے شرارتوں کا
 غمزدہ ہو گیا **أَبُو هُرَيْرَةَ لَقَدْ أَهْلَكْنَا وَقَطَعْنَا طَهْرَ الرَّجُلِ بَعْنِي الْمُطَهَّرِ فِي الْيَمِّ حَتَّى بَنَى رِيَّ**
 مسلمان ابو ہریرہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ تیرے تواس میں کوئی پیچھا کرتا ہے یا اس شخص سے
 فرمایا ہے تو یہ شخص کی جہنم کی **فَإِنْ بَيْنَ بَيْنِ مُحَمَّدٍ وَبَيْنِ بَنِي إِسْرَءِيلَ** یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کی رات مجھ پر ایسی سورت اور بڑی کہ میرے
 کہتا ہے حضرت یہ حدیث فرمائی کہ میں نے کہا کہ وہی تعریف کرنا نہایت بہت ہو کہ آدمی اپنی تعریف سن کر خند میں آتا ہو اور آپ کو بہتر
 سمجھ کر تعریف کرے **فَإِنْ بَيْنَ بَيْنِ مُحَمَّدٍ وَبَيْنِ بَنِي إِسْرَءِيلَ** یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کی رات مجھ پر ایسی سورت اور بڑی کہ میرے
 اہل المدینہ کو سب سے پہلے **وَجَدْتُ أَفْعَلَ مِنْ أَنْ جَادَتْ بِنَفْسِهَا لِلَّهِ الْكَوْنِيَّةِ**
 الخیاتی **أَفْعَلَ مِنْ أَنْ جَادَتْ بِنَفْسِهَا لِلَّهِ الْكَوْنِيَّةِ** یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کی رات مجھ پر ایسی سورت اور بڑی کہ میرے
 اور کسی توبہ دینے والے شکر نگاروں میں ہائی تھا تو مقرر کرنا کوئی کفایت کرے اور جیسا کہ اسے راہ میں اپنی جان نثار ہے
 بھی کیوں نہیں پایا حضرت نے اس سے کہ میں نے فرمایا جو چیزیں ہیں کہ میں نے تم سے بھی حرام کاری کے عمل کا انکار کیا تھا **فَإِنْ بَيْنَ بَيْنِ مُحَمَّدٍ وَبَيْنِ بَنِي إِسْرَءِيلَ**

۱۳۳۲

۱۳۳۳

۱۳۳۴

۱۳۳۵

۱۳۳۶

اس حدیث میں
 حضرت نے فرمایا
 اللہ تعالیٰ کی رات
 مجھ پر ایسی سورت
 اور بڑی کہ میرے
 نزدیک آتا نہ دیکھتا
 ہے یہ حضرت نے انھن
 کی سورت پر بھی
 فرمایا کہ اللہ تعالیٰ
 کی رات مجھ پر ایسی
 سورت اور بڑی کہ میرے
 نزدیک آتا نہ دیکھتا
 ہے یہ حضرت نے انھن
 کی سورت پر بھی

حضرت کو روایات کی دعوت ملی کہ میں نے کیا حضرت نے حرام کاری کا کائن کیا ہوا نہ تو یہی اور مداریے حضرت نے اوسکے والی سے
 فرمایا کہ اسکو بھی طبعی رکھ جب کہ پہنچے تو یہ سب پاس سکولانا چھڑا کر کے رکھ دیا ہوا اور حضرت کپاس کو سکولایا حضرت اوسکے
 پر سے اوسکے بدن پر مضبوط بندھا کہ بدن میں داخل نہ ہو جو وہ تھوڑے ہی میں ماری گئی حضرت نے اوسکے جنازے کی نماز میں تو غور فاروق
 رضی اللہ عنہ نے کہا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس نے میری حدیث کو فراموش کر لیا اسکی حرام کاری
 کی سیکوئے معلوم تھی اسنے خود خود منہ افرا کر کیا اور بعد اوسط اپنی جان ہی اوسکی توبہ ایسی خالص ہو کر سقر گناہگاروں کی منضرت
 کے واسطے کفایت کرتی تھی جس سے معلوم ہوا اگر اصرار سے مل ہو تو بدو نہ جب پیدا ہو اوسپر نہ مارنا چاہئے کہ معلوم ہے بعض اہل ایمان
 حضرت کو قتل کیا کہ بکت تھی کہ اگر کسی گناہ بھی ہو جائے تھا تو غدا باعزت کا اتنا اوسکو دیتا تھا کہ انبی جان دینا اوسکو اسلحہ معلوم
 ہوتا تھا ایمان کا نام رخ ابو ہریرہ **لَقَدْ تَخَرَّجْتُ وَاسِعًا قَالَهُ لَا عَزَازِي قَالَ اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي**
وَيُحْمَدُ اَوْ لَا تَحْمِمْ مَقْعًا أَحَدًا عَمَّارِ بْنِ أَبِي سَرْجٍ رَوَيْتَ ہر کہ حضرت نے فرمایا کہ البتہ تو نے تو تنگ پکڑا کہ وہ بہت
 کو حضرت نے اوسن لگی دیتی فرمایا جسے یون عمار کی کہ اتنی مجھے رحم کراد محمد پر اور ہر سنا تھی اس پر ہر حرف یعنی رحمت
 اتنی میں نے رحمت سے سب سے زیادہ کفار کو کفایت کرتی ہے تو کہیں تنگ حوصلہ ہوتا ہے ہر اس **لَقَدْ رَأَيْتُ ابْنِي عَشْرًا**
مَلَكًا يُبْشِّرُ دُوحًا أَتَيْتُهَا فَنَمَّهَا قَالَهُ لَسْتُ بِجَاءَ وَقَدْ حَقَّقَ كَمَا تَقَرَّرَ فَقَالَ اللَّهُ أَلَمْ أَتِيكَ بِمَلَكٍ
طَلَبَ كُتُبًا رَاغِبًا وَفَقِيلَ إِنَّ رَجُلًا هُوَ رِفَاعَةُ بْنُ رَاغِبٍ لَا تَضَارِعِي مُسْلِمٌ مِنْ نَسَبٍ رایت ہر کہ حضرت
 نے فرمایا کہ البتہ میں نے دیکھا کہ وہ فرشتہ کو اوسکی طرف بھینٹے تھے کہ ان میں کو ان فرشتہ اوسکو اٹھا لیا یہ حضرت نے اوس مروے
 فرمایا جو ہوتا آیا پھر جسے کہا اللہ کہ محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا فیہ بعضوں نے کہا کہ وہ مروزا عبد بن رافع الانصاری ہے **وَف**
 نماز میں تھے کہ رفاعہ انصاری جماعت کے واسطے دوڑتے پڑتے اور نماز میں یہ کلمات پڑھتے حضرت نے ابن زکریا کے پوچھا کہ کلام کس
 پر تھا اس نے فرمایا کہ طواف شاد و کیا ہے حضرت نے یہ حدیث فرمائی معلوم ہوا کہ اگر کسی کے واسطے فرشتہ تقریبین کہ آسمان پر اوسکو اٹھا
 لیا ہے **بَيْنَ هَاتَيْنِ مَرَّةٍ لَقَدْ رَأَيْتُ رَجُلًا يَتَقَلَّبُ فِي الْجَنَّةِ فِي قَبْجَةٍ فَفُصِّلَ عَنْهُ ظُهُرُ الطَّرِيقِ**
 کانت ثوبه من ثياب النّاس مسلم بن ابو ہریرہ رایت ہر کہ حضرت نے فرمایا کہ البتہ میں نے تو دیکھا ابے مرو کہ وہ بہت میں جلتا ہوتا تھا
 بسبب ثوبہ من ثياب النّاس کے جسکو اوسنے اسے کاٹ ڈالا تھا اوسن سے لوگوں کو تکلیف تھی **وَف** معلوم ہوا کہ خلق کی
 راحت رسانی بہت میں ہوتی تھی **وَهَاتَيْنِ مَرَّةٍ لَقَدْ رَأَيْتُ فِي الْجَنَّةِ رَجُلًا يَتَقَلَّبُ فِي قَبْجَةٍ فَفُصِّلَ عَنْهُ ظُهُرُ الطَّرِيقِ**
فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ إِنَّهُ كَانَ يَتَقَلَّبُ فِي قَبْجَةٍ فَفُصِّلَ عَنْهُ ظُهُرُ الطَّرِيقِ اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ!
مَا أَيْسَرُ لِي عَنْ شَيْءٍ إِلَّا أَنْبَأْتُكُمْ بِهِ وَقَدْ رَأَيْتُنِي فِي سَمَاعَةِ قَوْمٍ كَيْبَاءَ وَادَّامُوا لِي قَائِمٌ يُصَلِّ
فَادَّارَ جِلِّ جَدِّ ضَرْبٍ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ سُلَاقَةٍ وَادَّارَ عَيْسَى بْنُ مَرْيَمَ قَائِمٌ يُصَلِّ اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ!
عَرَوْهُ بَنُ مَسْعُودٍ فِي النَّفْعِ وَادَّارَ ابْنَاهُ قَائِمٌ يُصَلِّ اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ! اے اللہ!
الصلوة فَاَمْتَحَمَهُمْ كُلُّهُ عَنِ الصَّلَاةِ قَالَ قَائِلٌ يَا مُحَمَّدُ هَذَا مَا لَيْتَ صَاحِبِ النَّارِ فَسَلِّمْ
مَكَرًا لِنَفْسِكَ لَيْتَ مَقْدَامِي بِالسَّلَامِ مسلم بن ابو ہریرہ رایت ہر کہ حضرت نے فرمایا کہ البتہ میں نے تو طہر میں تھا اور تیرش

۱۲۳۷
عائی ص ۱۱۱
درای ص ۱۲

۱۲۳۸

۱۲۳۹

۱۲۴۰

مجلس شب معراج کا حال پوچھتے تھے سو فرشتے بیٹھا مقدس کی وسعہ زمین و رشتا نیان پوچھیں جو کھو خربت و تھیں اور مجھ کو
 رنج ہوا کہ وہاں سب کچھ ہوا تھا سو دھن اوس مکان کی کہوت اٹھا کر سیر کرنے کو دی کہ میں اوسکو دیکھتا ہوں تھا جو نشانہ
 جسے میں پوچھتے تھے میں کو کھلا تھا اسی کو دیکھ کر اٹھ بیٹھا معراج میں نینا اپنے تین بیٹوں کے گردہ میں کچا سو موسیٰ کو طہرا
 نما دیکھتا تھا سو وہ تو ایک مرد تھا لنگر لے بال والا وہ ایسا تھا جیسے قوم شنو اہ کے گول و ناگاہ عیسیٰ بن مریم کو دیکھا کہ کھڑا
 پڑھتا ہوا جس سے زیادہ تر شاہست میں قریب تر عروہ بن سو دفعی ہوا و ناگاہ ابراہیم کو دیکھا کہ کھڑا نما پڑھتا ہوا سب لوگوں میں
 سے زیادہ تر افسے ساتھ مشابہ تھا صاحب ہر صاحب اپنی ذات راوی کی پھر نماز کا وقت آیا تو سینے وان بغیر میں کی آہستہ
 کی پھر میں جب نماز سے فارغ ہوا کسی کھنڈے کے کما اچھکد مالک ہر رونج کا داروغہ سو تو اوسکو سلام کر تو میں اوسکی طرف متوجہ ہوا
 سو اوسکی ہلکے پہلے سلام کیا **ف** جس حالت حضرت کو معراج ہوئی اوسکی صبح کو حضرت اسکا حال کیسے میں طبع کے اندر لوگوں سے
 بیان کیا کفار قریش کے ہمارے تعجب ہوا کہ قریش بیٹا المقدس کو دیکھ کے تھے اون کو گوشہ دیان کی نشانیاں حضرت پوچھیں حضرت کو
 یاد نہیں تھا اوسکی صورت سن کر ہی حضرت ٹھیک ٹھیک بان کہتے تھے کافر قریش نہ ہو کر بیٹھے معراج کے تھے میں یاد کرتے
 کہ حضرت خبر نیک سے کہا کہ اگر میں معراج کا قصہ کہی سے کہوں تو کون کجا و تپا کجا خبر نیک نے کہا ابی بکر صدیق تیری تصدیق کر کجا
 کافر قریش حضرت معراج کا حال سنا تو چلنے کے واسطے ابی بکر صدیق نے کہا کہ کچھ نہیں کہو چنا کہ ایک مہین
 جب نیک کو عرش سے زمین پر بھیجا یہ وہ قادری اسی طرح حضرت کو بھی زمین سے آسمان پر لیا اوسی دن ابی بکر کا صدیق لقب ہوا
 شنو امین میں ایک قوم کا نام ہوا اوسکو لوگ گنگر لے بال والا دیکھتے ہو میں اس سے معلوم ہوا کہ عالم رواج میں پیغمبر لوگ نماز
 پڑھتے ہیں ہر خدا و علی مرتضیٰ بن عبادت و فرشتے میں **ق** اَلْمَسْؤُومُ کَفَرًا وَ مَرَاؤُنَ اَلْحَکَمُ لَقَدْ رَاہِی
 ۲۷۴
 هَذَا اَدْعَاہُ اَحَدُ اَلْجَلَّالِیْنَ اَلَّذِیْنَ رَجَعَا بَاہِیْ بَصِیْرَہِ مِنَ الْمَدِیْنَةِ فَوَیَّحَی رَی و سدر میں سورین مرقوم اور مروان
 بن حکم سے روایت ہے کہ حضرت فزاکہ اکر قریش سے شخص نے خوف دیکھا اون دودھ و آج ایک مرد اور جو ابی بصیر کو دینے سے پٹا لگے تھے
ف صحابہ کے سال حضرت اور کفار قریش سے چند شرطوں پر عہد ہوا تھا او میں نے ایک ہی شرط طے کی کہ اگر قریش سے کوئی مسلمان
 ہو کہ حضرت پاس سے تو حضرت اوسکو کر دینا و اگر حضرت کا کوئی مسلمان قریش پاس بھاگ جاوے تو قریش اوسکو نہ دیوں حضرت نے
 اس شرط کو مانا تھا غار و قنوا اسکا نہایت رنج تھا حضرت فزاکہ کو جو انہیں سے مسلمان ہوا اور کجا کجا اوسکے بچاؤ کی کوئی راہ نکال لیا
 اور جو کوئی چار پاس سے کافروں میں لگا خوب ہوا اٹھ اوسنا پاک کو دفع کیا جب حضرت دینے میں قشریت کا تو قمر قریش ابی بصیر
 مسلمان ہو کہ حضرت پاس میں نے اپنے قریش سے دواہی حضرت پاس بھیجے حضرت نبویہ عسک ابی بصیر کو اٹھنے ساتھ کر باہر بیٹھے سے
 چھوڑ دیں پوچھتے تو ناشتہ کا اور دیکھا ابی بصیر نے ایک آدمی سے کہا کہ تیری تلوار نہایت عمدہ معلوم ہوتی ہے اے کماں بہت عمدہ ہر
 ابی بصیر نے دیکھنے کے بہت سے تلوار مانگا کہ اوسکو مار ڈالا و ملا بھی بھاگ کر کا پتا ہوا حضرت پاس ابی بصیر نے اوسکو چھکے حدیث فرمائی
 پھر حضرت اوسے حالی پوچھا اوسے بیان کیا ابی بصیر نے حضرت فزاکہ ابی بصیر لڑائی کی اگر بھڑکانے والا ہو ابی بصیر نے جانا
 کہ حضرت مجھ کو چھوڑ کر دینے تو میں نے عمل کر سندر گناہ پر چاٹھ ہے پھر جو شخص کہ کفار قریش سے مسلمان ہو کہ اٹھا ہوا ابی بصیر
 پاس سے تھا ابی بصیر نے اون کی بہت بھیڑ ہو گئی تو کفار قریش کے قافلہ جاکشام سے آئے تھے اوجھون نے مارا تا شروع کیے قریش

بہت ہی عجیب و غریب

حکم کے سوا عالم کا نظام کرتے ہیں گناہوں کی پاکیزگی میں مروجہ عورت اور کتا بویں کا عقیدہ کر کے خدا کا قد ہی کلام ہی جو
 ان میں سے جو شخص کہتے ہیں کہ خدا کی ایک چوہا کتا میں ہیں اس شخص کو آدم پر اور تین اور بیچ اس شخص شیت پر اور تیس حضرت
 اور تیس پر اور تیس حضرت ابراہیم پر باقی جا کتا میں تو تمام عالم میں مشہور ہیں تو ریت اور چیل اور تیرہ اور دو اور تیرہ ان لیکن قرآن میں
 انھیں جو قرآن کی کسی کتاب پر عمل کرنا درست نہیں اس واسطے کہ ان پر اول تو اعتقاد نہیں اور دوسرے یہ کہ اسے منسوخ ہیں
 اور تیس پر یہ کہ جو اگلی کتابوں میں ہے سو سب قرآن میں موجود ہیں تو ہوتے قرآن کی دوسری آسمانی کتاب کی کچھ حاجت ہیں اور پیغمبر کا
 یون عقیدہ کر کے کہ سب انھیں اور پاک لوگ میں کھدواؤ گویا کمال رحمت آدمیوں کی طرف سے یہاں کہ او کو نیکہ اور بتلاوین
 اور اونکا دین اور دنیا سنو این اور اونکو قسم قسم کے جہنم کے لئے لادو گئی آسمانی میں کوئی عاقل آدمی شک لادوے سب گناہوں
 پاک میں مضبوط ہوں یا کہ جو بوجہ پہلے ہی اور بعد ہی اور ہی مذہب ٹھیک ہی اور حضرت آدم کا گیموں کھانا بقصد تھا بھول چوک
 تھی ہی طبع اور غیر میں کو بھی قیاس کیا چاہتا اور سب پیغمبروں سے بہار حضرت فضل میں جو کمالات ظاہری اور باطنی کا انسان میں
 ممکن تھے تو تمام ہمارے حضرت پر جمع ہو گئے اسی واسطے بہار حضرت کے بعد کسی پیغمبر کے آنے کی حاجت نہ رہی خلافت اور امامت کا عقیدہ
 نبوت کا عقیدہ میں داخل ہوا ایمان کا رجا در کتا میں جیسا کہ شیعہ کہتے ہیں اور پچھلے دن کا یون عقیدہ کر کے کہ بعد نبوت کے قیامت
 دوسرے اور نبوت کے داخل ہونے تک جو حضرت نے فرمایا جو درست ہی یعنی عذاب قبول و قیامت کی نشانیاں اور صو کا پھلنا اور مرد و کا
 جینا اور سب کتا میں بار عمل کا بلا اور ترار عمل کرنے کی اور پل صراط اور جوش کو تراور و ذریعہ اور بہشت پر سب چیزیں حق دین نہیں
 کچھ شک نہیں اور تقدیر کا یون عقیدہ کر کے کہ جو عالم میں ہوا اور ہوتا ہی اور ہو گا بھلا یا برا سو سب تقدیر سے جو دین
 او کی خواہش ہی ہے نہ کوئی بوجہ ٹھیک لیکن باوجود اسے آدمی کو کچھ اتنا اختیار دیا ہو کہ اس کے سبب انسان تعریف یا مذمت
 ثواب یا عذاب کے لائق ہوتا ہے تقدیر کا عقیدہ اسی طرح مجمل چاہیے زیادہ ہمیں غور اور گفتگو کرنا بدعت اور گمراہی ہی اس واسطے کہ
 عقل ہماری میں اتنی ایمان طاقت ہے کہ کوئی کتا میں خدا کی کچھ حد سے ہی اس سے حد سے ہی تقدیر کی بحث اور تکرار سے منع فرمایا
 یہ ایمان عقل کی حضرت کی حقیقت بیان کی اور ایمان عقل کی حقیقت ہو کہ یون عقیدہ کر کے کہ جو حضرت نے فرمایا اور بتلایا سو ٹھیک
 اور درست ہو چاہیے اس واسطے اتنا بھی کفایت ہی جو حضرت نے احسان یعنی نھلا کے دو دوزخ فرما اعلیٰ درجہ تو یہ ہو کہ عبادت میں
 ایسا تصور ہو کہ گویا خدا کو دیکھتا ہی سلوک مشاہدہ کہتے ہیں اور ادنیٰ درجہ یہ ہو کہ یہ تصور کر کے کہ خدا کو دیکھتا ہی سلوک مذہب کہتے ہیں
 اس تصور میں بھی کمال تغیر و نہایت اوسلہ و حیا اور شوق اور حضوری حاصل ہوگی ممکن نہیں کہ اس تصور میں آدمی ادب و جھوٹ
 یا احرار و دھرم انتفاع کرے جیسے بادشاہ اگر کسی کو دیکھتا ہو تو کیا ممکن ہو کہ وہ ہاتھ پائوں ہلاک و یا نخر کو اٹھاوے معلوم ہو گا
 تعذیب اور درویشی احسان کا نام نہ ظاہری اعمال کو اسلام کہتے ہیں اور باطنی کا عقیدہ کو ایمان کہتے ہیں اور حضوری اور نھلا کے
 احسان کہتے ہیں اور دین اور شریعت اسلام اور ایمان اور احسان کے مجموعے کا نام ہی اور گاہے ہلام اور ایمان کو ایک کہتے ہیں اس واسطے
 کہ ہلام بدون ایمان کورت نہیں اور ایمان بدون ہلام کامل نہیں اور بعض لوگ احکام ظاہری کو شریعت اور تعظیفہ یا صل کو طہرت
 اور شاپہ اور مراقبہ کو حقیقت کہتے ہیں معلوم کیا چاہیے کہ دین کی بنیاد فقہ اور کلام اور تصوف پر ہی جو اس حدیث میں حضرت نے
 تمیز کیا تمام ایمان فرمایا اسلام شاپہ ہی فقہ کا حسین عقیدہ کا بیان ہی اور ایمان شاپہ ہی تصوف کا حسین حق یقین و شاپہ

اور مراقبہ نہ کر دے معلوم ہو کہ دین میں کامل ہی جو فقہ اور کلام اور تصوف کا جامع ہو اور جو میں ان تینوں میں سے بعض ہو اور بعض نہ ہو
 وہ ناقص اور کچھ ہی اس واسطے کہ درویش نے فقہ کے شیطانی جو کہ احکام الہی سے غافل ہوا اور اہل اعمال کو دیکھا اور فقہیہ و درویشی
 ناہن شکل و قال ہے روح ہی اس واسطے کہ عمل بد میں مبتلا نہ ہو مگر اصل یہ شوق اور حضور کے ہاتھ میں رہی رہے مستقیم ہو اور باقی
 کہ ای **ق** عَصَمَ الْكَعْغَالُ بِالْثِيَابِ وَلِكُلِّ اَمْرِى مَقَالُی قَسَمٌ كَانَتْ هَجْرَتُی اِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ هَجْرَتُی
 اِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَرَسْمُكَ كَانَتْ هَجْرَتُی اِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا اَوْ اَمْرٌ اَوْ كَيْفَانٌ وَهَجْرَتُی اِلَى مَا هَاجَرَ
 اِلَيْهِ وَهَاجَرَ اَوْ اَمْرٌ مِنْ عَمَلٍ مَرُوفٍ رَجَعْتُ رَوَايَتِی ہر کہ حضرت فرمایا کہ علون کا اعتنا نہ کرو جس سے ہر اور ہر ایک مرد کے واسطے دینی ہر
 جواز سے نیت کی یعنی کوئی عمل بد میں نہ ٹھیک اور شاہک لائق نہیں ہو جس کی ہجرت اسدہ رسول کے واسطے ہوئی تو اس کی ہجرت
 خلا اور رسول کے واسطے ہو چکی یعنی کا خوف ہوا گویا وہ اس کی ہجرت دنیا کے واسطے ہوئی کہ اس کو پاؤ یا کسی عورت کے واسطے کہ
 اس سے نکاح کرے تو اس کی ہجرت ہو سکی طرف ہوئی جس کے واسطے اس سے ہجرت کی یعنی دنیا اور عورت **ف** یعنی دین میں
 یوں یا کہ ایک شخص ایک عورت کے واسطے ہو گا اتم قس نام تھا میں نے کی طرف ہجرت کی لوگوں نے یہ حال حضرت کہتا ہے حضرت نے سخت
 فرمائی یعنی ایسی ہجرت کا کچھ ثواب نہیں ہے نیت غرض نہیں ہجرت اسدہ تو قصد لی کا نام ہی رہا جس نے کہنے کی کچھ حاجت نہیں اگر نشاناً
 نمازی کی نیت میں کی رہا جس نے کچھ یا زبان غلام اس کے نکلے کچھ مضائقہ نہیں کار کے زبان سے نماز میں نیت کرنا تو ہرگز درست
 نہیں بلکہ اس میں اختلاف ہے کہ زبان سے بھی کہنا درست ہے یا نہیں اہل فقہ اس کو سختی سے ہیں تاکہ دل اور زبان موافق ہو جائیں اور اہل
 حدیث کے نزدیک زبان سے نہ کہے اس واسطے کہ حضرت ثابت بن نہیں ہر چند ہجرت میں میں نہایت عمدہ عبادت ہے کہ یکن بدو فی خالص سے کہ
 اس کی بھی کچھ حقیقت نہیں ہی طرح علم اور درویشی اور ہر قسم کی عبادت کو قیاس کیا جاسیے اگر نہ خیر اس واسطے جو توسل جان اسدہ
 اور میں تو اس کو موقوف علیہ روح سمجھا جاسیے اور جب یہ ہے تو ہر اچھے اور خیر شے سے سباحت میں بھی ثواب ہوتا ہے جیسے کھانا اس سے
 کہ عبادت کی قوت میں مل جیسا کہ ہر اچھا کام کا نوازہ ہے ہر اچھی شے سے صحبت کرنا کا نیک لادہ اور حرام کاری سے بچنے بلکہ اگر ایک عمل
 میں ہی طرح نیت کرے تو ہر ایک نیت کا علم ہر ثواب ہو مثلاً جس میں بیٹھا ایک عمل ہو لیکن اس میں ہی طرح کی نیت ہو سکتی ہے اگر ایک نو
 یہ کہ دوسری نماز کی انتظار کرنا دوسرے کیلئے اور کان کو گھبراہٹ سے روکنا دیکھنا اگر ناچوتھے حضرت پروردگار اور اسلام کرنا یا چوین
 علم سکھانا یا غلو سکھانا یا نیکات تلائیر کے کام سے روکنا غرض کہ یہ حدیث خلاص عمل و کردہ نیت میں اصل ہی اور بدعتی اور
 ریاء کاری کی تیج کہ جو ہی اسطے میں کہ معمول ہے کہ حدیث کی کتابوں میں اول ہی حدیث کو لکھتے ہیں تاکہ حدیث پڑھنے والوں کی سر
 سے نیت درست ہو جاوے خدا ہی کے واسطے علم حدیث پر حصین بن عیسا کا کسی طرح لگاؤ نہ لکھیں تاہم شافعی سے روایت ہے کہ اس حدیث کو دین
 میں تھوڑے بدل جیسا کہ اکثر تفسیری ہے بلکہ کا کل ہر عبادات میں اور عبادات میں سب کا حدیث اس حدیث کی صحت سے
 متفق ہیں اور بعضے اس کو تواتر سے ہیں اللہ علمہ **اَبُو اَبُو ثَوْبٍ الْاَنْصَارِيُّ وَمُرْبِيْنَةُ وَجْهَانَةُ وَخَفَاءَةُ وَاشْجَعُ وَصَنْ**
كَانَ مِنْ بَنِي عَبْدِ اللَّهِ مَوْلَى ابْنِ دُرَّوَانَ النَّاسِ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ مَوْلَى كَلِّهِمْ مسلمان ہوا اور شافعی سے روایت ہے کہ حضرت نے
 فرمایا تو ام انصار اور قوم خزندہ اور قوم غنمہ اور قوم غنمہ اور قوم اشجع اور جو عبد اللہ کی اولاد ہے سر و دست ہر میں نہ اور لوگ اور
 خدا و خدا کا رسول اس کے دوست و راجی ہیں **ف** حدیث میں ان چارہ قوموں کی فضیلت کا بیان ہے کہ ایک بیان کی بھی ہیں اور

۱۲۵۷

بہارِ شریعت جلد اول

۱۲۵۸

از این متعلق بین این جمعی گوای و دنیا و دوسر کال می کورام کاری کی تعمت لکنا تیسر جمعی قسم کھا ناچسخته جادو کرنا اور
 زمین گناہ بیست متعلق بین اول شراب پینا و دوسر تیسر کما حق ال کھا ناچسخته سودا و ریاچ کھا نا اور دو گناہ شرک و کفر متعلق بین
 اول زنا کاری و دوسر اعلام نارایسی چه بازی کور و گناہ و تیسر متعلق بین اول ناسخ خوان و دوسر جوری او یا کس گناہ نام
 بدست یعنی با پاک و نیک و دنیا مسلمان کولایم که ان گناہوں نہایت ندرت ہے جسے کہ نہایت دوتا یا سو سے کہ نہایت دنیا
 کی زندگی میں خلل ہے چنانچہ منجانبی اور کیر گناہ سے آخرت بگڑتی ہے جس کو کبھی فتنائیں اور غیرو گناہ و پراسرار کرے اس واسطے
 کہ یہ بے غیرو گناہ پر عمل کرے اور وہ گناہ جو باہر اچھڑا ہو دینا کتب الکلب الکس و شیطان مسلمان ابو زریعہ روایت ہے کہ
 حضرت فرمایا کہ اگر شیطانی برتبی مودی حرف کالے گئے کو ہوا اسطے شیطانی فرمایا کہ نہایت بد ذات ہوتا ہے اور کما
 نہیں بد ذات تعالیم نہیں قبول کرتا اور اگر شراب یا زہری واسطے کہ قتل کرنا درست ہے **حرف** ابو ہریرہؓ ان کلمۃ الطیبہ
 صدقہ کا ہے چنانچہ ای اور سلم بن ابو ہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اچھی بات بھی صدقہ ہے یعنی خیرات میں داخل **حرف**
 یعنی اگر کوئی سوال کرے اور کچھ موجود ہو تو دوسکو دے اور کچھ نہ ہو تو دلا دے یہ بھی خیرات میں داخل ہے اور اچھی بات سے
 مراد یہ کہ مسلمان کمال کو کسی بات خوش کرنے بشیطان عنایت شرع منبوق سعیدؓ میں فرماید ان کلمۃ صحت اللہ یا
 مافی حاشا شفاء للعلیق چنانچہ اور سلم بن سعید بن خنیس روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ کھنی یا شرمین میں ہوا اور اسکا پانی آنکھ
 کی شفا ہے **حرف** یعنی جس طرح حضرت موسیٰؑ وقت میں بن اور ساری بنی اسرائیل کو بے نیچ اور تلاش ملتا تھا ویسی کھنی بھی
 بدون تیرہ بونے زمین تیرہ جتنی جو ہر اسکا فائدہ فرمایا اور اسکا پانی آنکھ کی دھت کھتا ہے چنانچہ بھی فائدہ ہو علی سینانے
 قانون میں لکھا ہے **حرف** ابو ہریرہؓ کہ اگر ای شخص نے نفسہ متفقہا فی النار والذی یطعمہا فی النار
 بخاری میں ابو ہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ شخص اپنی جان کو لگا لکھو جس کے لئے وہ آپ کو دوزخ میں گھونٹا کر گیا اور جو
 آپ کو توبہ یا نیچری ہو جس کے لئے وہ دوزخ میں آپ کو بھونکا کر گیا یعنی جو جس طرح آپ کو حرام موت مارے گا وہ
 اویس طرح کی دوزخ میں سنایا کر گیا جیسے غیر کو باق مارنا حرام ہے ویسے ہی اپنی جان بھی مارنا حرام ہے **حرف** انسؓ اللہ یوم
 اطلق النار اسے آقا قاتلہم القلیبہ مسلمان انسؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اگر انسان نے اپنے طلبے قیامت
 کے دن سب لوگوں گردن بلند ہوئے **حرف** بلند گردن ہوئے یعنی رحمت الہی کے زیادہ تر امیدوار چونکہ ہوا اسطے کہ منتظر
 اور امیدوار اپنی طرف اسطے گردن بڑھائے تاکہ اگر ایہ طلبہ کی قیامت میں پسینا لوگوں کو لبو لبو کیسے پہنچا لیکر ان ذرا نیچے والو
 کو سب گردن بلند ہو گئے نہ تو یہ طلبہ گردن بلند ہوئے یعنی سب لوگوں میں با عزت اور نمودار ہوئے **حرف** ابو ہریرہؓ کہ
 اللہ یوم یخرج المؤمنین من قبرہم ابو ہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ ایمان اور ایمان کا **حرف** یعنی جب مسلمان دوسرے
 مسلمان کا دینی بھائی ٹھہرے تو اسکی محبت و غیر خواہی واجب ہے جیسے بھائی کو بھائی سے ہوتی ہے **حرف** ابو ہریرہؓ کہ اللہ یوم
 القوی یخرجہ من قبرہ و احب الی اللہ من المؤمنین الضعیف و فی کل حدیث اخرص علی مایہ ففعلت فی استعین
 بانہ لا یفعل وان اصابت کتفی فلا تفعل لئلا آتی فعلت کان کذا اولکذا اولکذا لکن قل قد اراد اللہ وما لک ان تفعل
 وان لکن تفعل مع علی الشیطانی سلم بن ابو ہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ اگر ایمان اور ایمان کا **حرف** یعنی جب مسلمان دوسرے

۱۳۲۶

۱۳۲۷

۱۳۲۸

۱۳۲۹

۱۳۳۰

۱۳۳۱

۱۳۳۷

۱۳۳۸

۱۳۳۹

تو کیا رحمت بخشد که اگر مسک و اسطوخودوس و ثواب قرصی طلب که قرآن کسی طرح غفلت چشمه الخرب و اقصای تو سبحان الله که
 فرشتون من شمار و اگر خوب بان من بنی تو بھی دو و ثواب موجودی **ق** اَسْمَا کَوْنَتْ اِنِّی لَکِی الْمُسْتَشِیْعُ بِمَا لَکَ یُعْطَا
 کلکریس خوابی رُؤُوسِ بخاری او سلم بن اما بن ابی بکر صدیق رضی روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ نہ کسی چیز سے آپ کو
 آسودہ و کھلانے والا ایسے کو بخورے اپنے والا **ف** ایک عورت کہا کہ یا حضرت میری ایک سوت ہے تو مجھ پر اس میں کچھ گناہ
 تو نہیں کہ میں اپنے خاوند کی طرقت اور خیر کا دنیا ظاہر کروں جو حقیقت میں نہیں ہے تاکہ سوت بخلا اور مجھ پر اس میں کچھ گناہ
 فرمائی میں بیان کماں اور خزانہ مانی جو ہرگز دست نہیں کہ ظاہر میں کچھ اور باطن میں کچھ **ق** عَلَیْکَ الْمَدِیْنَةُ حَسْرًا
 مَا بَیْنَ عَمْرِو بْنِ قُورَیْہِمْنَ اَحَدًا فَفِیْہَا حَدٌّ ثَاوَدَ اَوَّیْ مُحَمَّدًا فَاعْلَیْہِ لَعْنَةُ اللّٰہِ وَالْمَلَائِکَۃِ وَالنَّاسِ
 اَجْمَعِیْنَ لَا یَقْبَلُ اللّٰہُ مِنْہُ یَوْمَ الْقِیَمَةِ صَرَخًا وَاَعْدَ کَذَمًا مَّۃُ الْمُسْلِمِیْنَ وَاحِدًا یُسْغِیْ بِہَا اَذُنًا مِّنْ
 اَخْفَرِ مَسْلًا فَعَلِیْہِ لَعْنَةُ اللّٰہِ وَالْمَلَائِکَۃِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ لَا یَقْبَلُ اللّٰہُ مِنْہُ یَوْمَ الْقِیَمَةِ صَرَخًا
 وَاَعْدَ کَذَمًا مِّنْ قَوْلٍ یَّغْبِیْہِ اَذُنَ مَوَالِیْہِ وَفِیْ رِوَاۃٍ وَّمَنْ اَدْعٰی اِلٰی غَیْرِ اَیْمٰہِ اَوْ اَتَمَّی اِلٰی
 غَیْرِ مَوَالِیْہِ فَعَلِیْہِ لَعْنَةُ اللّٰہِ وَالْمَلَائِکَۃِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ لَا یَقْبَلُ اللّٰہُ مِنْہُ یَوْمَ الْقِیَمَةِ صَرَخًا
 وَاَعْدَ کَذَمًا مِّنْ بَیِّنَا یَا اَوَّلَ سَلَمٍ عَلٰی قَوْمٍ یَّحْتَضِرُ رِوَاۃٌ ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میرے حرام حیران دو پہاڑوں کے درمیان میں کہ
 ایک پہاڑ کو غیر کرتے ہیں اور دوسرے کو تو سوجاؤ میں کوئی جنت تک یا بدعت کا نہ والے کو چھو کہ دو تو اوپر خدا کی اور فرشتوں کی
 اوپر آویزون کی لعنت ہے خدا قبول کرے گا اور سب قیامت کے دن نفل عبادت کو نہ فرض کو امان مسلمانوں کی ایک ہی جہاد کی مسلمان
 جی امان کی پیش کش کرے جو شخص کہ مسلمان کی امان کو تو سب سے اوپر چڑھائی اور فرشتوں کی اوپر سب آدمیوں کی لعنت جہر قبول
 کرے گا اور سب قیامت کے دن نفل فرض اور جو کسی قوم سے دوستی کرے سب اجازت اپنے لگے اور دگاریوں اور سرداروں کے اور دوسری
 روایت میں یوں ہے جو جو شخص نہ لگے اپنے باپ کے سوا غیبت اپنے مالکوں کو چھو کہ غیبت نسبت کرے تو اوپر چڑھائی اور فرشتوں
 کی اوپر آویزون کی لعنت ہے جو قبول کرے گا اور سب قیامت کے دن نفل اور فرض **ف** یعنی جیسے کدے کی حرم میں زیادتی
 اور سب ادبی دست نہیں ہے ہی شینے کی حرم میں بھی اور اگر لشکر اسلام ادنی مسلمان کسی کا فز کو پناہ دے تو سب مسلمانوں پر
 اوکی رعایت واجب ہوگی جو اوکی امان کو تو سب سے اوپر چڑھائی اور سب ایک قوم سے دوستی کی اور آج میں ایک دوسری کی روگاری
 کا عہد کیا تو اوکی بدوں باز ہے اور قوم سے اور سب کرنا اور دگاری کا قول قرار کرنا دست نہیں کہ شایدا کو سب ہو اور عدالت
 پیدا ہو **و** سَعْدُ بْنُ اَبِیْ وَکَاسٍ الْمَدِیْنَةُ حَسْرًا لِّمَا لَکُمْ اَعْلَمُوْنَ لَا یَدْعُہَا اَحَدٌ وَرَغَبَ عَنْہَا
 اِلَّا اَبَدَکَ اللّٰہُ فِیْہَا مَرْمَعٌ حَسْبُ مَرْمَعٍ وَلَا یَنْکُبُہُ اَحَدٌ عَلٰی کَاوَاِہِہَا وَحَدِّحَہَا اِلَّا کُنْتُ لَہٗ شَفِیْعًا
 اَوْ شَفِیْعًا لِّہَا یَوْمَ الْقِیَمَةِ مسلم بن عبد بن ابی قحطیسے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ مدینہ اونکے واسطے ہتھیار اور کوکبہ جو
 جو نہ چھو رہا ہو گا کوئی شینے کو زبان کرے گا اور سب کے عوض اوپر بہتر کروا دین اور لگا اور نہ ثابت رہے گا کوئی شینے کی
 کہری جو کہ اور اوکی کا یقین ہو کہ زمین اور سکا شفیق یا اوکے ایمان کا گواہ ہو گا قیامت کے دن **ف** پوری حدیث
 یوں ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ زمین کا مکاشح ہو گا یقینے لوگ شینے سے نکل کر وہاں جیسے پھر یہ حدیث فرمائی اور شاہد کیا کہ شینے والوں کو

کما بھلا فرما ہے تو اگر سرے بجائی میں سچ ہو ہی بات ہو سنیے کسی حضرت نے فرمایا اگر ترسے بجائی میں ہی تحقیق ہو
جو تو نے کہا تھی تو تو نے اس کی غیبت کی اور اگر او میں نہ بات نہیں جو تو نے کہی پھر تو نے اس میں بہتان باندھا
یعنی سچ ہی بات کا نام تو غیبت ہی اور اگر جو سچی بات ہو تو اس کا نام بہتان ہو خلاصہ مطلب یہ کہ جس چیز کو آدمی تکبر پر مانے
وہی غیبت ہو خواہ اس کے نسب کا نقصان ہو خواہ جان کا خواہ اس کے قول اور فعل کا خواہ اس کے دین کا خواہ اس کی غیبت
زبان سے کرے خواہ اس کے کہ یہ سب حرام ہی لیکن ظالم کی غیبت ظالم کے روبرو اور فاسق کی جو بے پردہ گمان کرنا ہوا
ناقص لقب جو مشہور ہو جیسا اندھا ہر چہ تو درست یہ رہا ابو ہریرہؓ کہ اَتَدْرُونَ مَا هَذَا اَلَّذِي اَللّٰهُ وَرَسُولُهُ

۱۳۵۱

اَعْلَمُ قَالَ هَذَا حَقٌّ رُبَّمَا فِي النَّارِ مُنْذُ سَبْعِينَ خَرَفًا يَقُفُّوْا يَحْكُمُوْنَ فِي النَّارِ الْاَثَلِ
حَدَّثَنَا اَبُو اَسْحَمٍ اَلِیْقَعِیُّ قَالَ لَمَّا سَمِعْتُ وَجَّهَ سَلَمٍ مِنْ اَبُو هُرَيْرَةَ رَوَيْتُ عَنْكَ عَنْ نَبِيِّكَ عَنْ نَبِيِّكَ
تہم جانتے ہو کہ یہ کیا تھا غیبت نہ کہا اللہ اور اس کا رسول زیادہ تر دانا ہے حضرت نے فرمایا کہ یہ پتھر تھا کہ دو رخ میں تیرے سچے کلمہ
سو دو رخ میں ایک اور تہا جاتا تھا یہاں تک کہ اس کی تہ میں ہر سچ کلمہ گرا پڑتا تھا حضرت نے اس وقت فرمایا جب ایک ہمارا مسند
ابو ہریرہؓ روایت ہے کہ ہم حجاب حضرت کی خدمت میں حاضر تھے کہ تنہا ایک ایسی اُسی جیسے کوئی چیز اور سے بچھ لگائی ہوئی تھی
یہ حدیث فرمائی معلوم ہوا کہ دو رخ میں چوٹی سے تہا تیرے سچے کلمہ گرا پڑتا تھا یہاں تک کہ اس کی تہ میں ہر سچ کلمہ گرا پڑتا تھا
الْمُفْلِسُ فَيَدْنُو مِنْ لَدُنْهُمْ وَهَلْ لَكَ مِنْ مَتَاعٍ قَالَ اِنَّ الْمُفْلِسَ مَنْ لَيْسَ لَهُ عَمَلٌ يَتَّبِعُهُ بِصَلَاةٍ
وَصِيَامٍ وَزَكَاةٍ وَيَا تَنِي فَذَلِكُمْ هَذَا وَقَدْ هَذَا وَاَكَلَ مَالَ هَذَا وَسَعَتْ دَمَ هَذَا
فَضَرَبَ هَذَا فَيُعْطَى هَذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ وَهَذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ فَانْ فَيَنْتَ حَسَنَاتِهِ قَبْلَ
اَنْ يَقْنَطَ مَا عَلَيْهِ اِخْذَ مِنْ حَطَايَا هُمْ فَطَرَحَتْ عَلَيْهِ لَمْ يُطْعَمْ فِي النَّارِ سَلَمٍ مِنْ اَبُو هُرَيْرَةَ رَوَيْتُ
روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کیا تم جانتے ہو کہ مفلس کون ہے وہ حجاب نے کہا کہ ہم میں مفلس ہے جو کہ جسکے پاس نہ ہو جو نہ اسباب
حضرت نے فرمایا کہ البتہ میری بات سے صفت میں مفلس ہے جو قیامت کے دن آئے گا نہ اور روزہ اور زکوٰۃ لیا اور حال نکلا اور سکو گالی
اور او کو ہر کام کی کا عیب لگا یا اور اس کا مال کھا گیا اور اس کی خوریزی کی اور اس کو مارا اور سولو کی لپیٹ سے اس علوم کو دلا یا جو
اور اس سے دوسرے مظلوم کو دلا یا جو کچھ اس کا قصور اور اس کے قبل اس کی نیکیاں ہو چکی تھیں تو ان میں مظلوموں کے گناہ لیے جاویں گے
سو اس ظالم پر پڑے گا جو گناہ مجھ سے دو رخ میں لگا لگا ہو گا ف معلوم ہوا کہ مسلمان کی عبادت اور نیکیاں حق العباد کے
بے جاویں گی اور اگر نیکیاں کم ہوئیں اور لوگوں کے حق زیادہ تو ان کے گناہ ظالم کی گردن پر پڑے گا جو گناہ تیرے نیکیاں جہنم میں
اور لوگوں کے گناہ گردن پر پڑے تو حقیقت میں ہی شخص آخر کا مفلس ٹھہرا اگرچہ دنیا میں نہایت مالدار ہو اس حدیث میں اشارہ ہے
کہ مسلمان حق العباد اور ظالم سے ڈرتا ہے اپنے حسنات اور کثرت عبادت پر بھروسے سے عَمَّا اَتَدْرُونَ مَرِيْنِ
السَّائِلُ قُلْتُ اَللّٰهُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ قَالَ فَانَّهُ حَدَّثَنِي اَنَا كُرَيْبٌ لَيْعَلَكُمْ دِيْنَكُمْ بِنَارٍ مَرِيْنِ فَارَدَ
میں روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اگر تم کو کیا مانتا ہے کہ یہ بوجھنے والا کون ہے سنیے کہا اللہ اور اس کا رسول زیادہ
دانا ہے حضرت نے فرمایا کہ یہ جبریل تھا تمہارے پاس آیا کہ تم کو تمہارا دین سکھلا دے اس حدیث کا پورا تفصیلی باب

۱۳۵۲

۱۳۵۳

تو بلا پرے افرح نے کہا کہ ان حضرت نے فرمایا تو قسم ہو اوس ذات پاک کی جسکے قابو میں میری جان ہو کہ وہی قوم منی سلمیٰ ہو
 بہتر ہیں ان قوموں سے یعنی بنی تمیم وغیرہ سے یہ حضرت نے افرح بن حابس سے فرمایا جب کہ اوسنے حضرت سے یوں کہا تھا
 کہ تجھے تو حاصیون جو قون نے بیعت کی تھی بنی سلمیٰ اور غفار اور ذریہ اور جبینہ نے ف سلم اور غفار اور ذریہ اور جبینہ
 کی قوم کے کی راہ میں تھی عرب میں کم ذات تھی اور کفر کی حالت میں حاصیون کو لوٹ لیتی تھی اور بنی تمیم اور بنی عامر اور
 اور غطفان کی قوم عمدہ لوگ تھے سواول سلم وغیرہ مسلمان ہوئے تو افرح بن حابس کہ بنی تمیم کا سردار تھا مسلمان ہوئے کے وقت
 حضرت پر اپنے مسلمان ہونے کا احسان جتا اگا اور قوم سلم کی حقارت شروع کی تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی خدا کے نزدیک بنی تمیم
 جو دین پر چلے اگرچہ ذات کا کینہ ہو سرداری اور شرف اتنی بدوئی پر ناری کے کچھ حقیقت نہیں مگر شہدہ عشق شہدے کی برب
 کن چاہی ہے کہ دین اذہلان بن فلان خیر نیست **ق** اَللّٰهُ اَرَايْتَ اِنْ مَنَعَ اللّٰهُ الْقَمَرُ يَوْمَ كَسَحَلَ مَالُ اَخِيهِ
 بخاری اور مسلم میں اس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا بھلا بتلاؤ کہ اگر خدا روئے کہ چل کو تو کس طرح اپنے بھائی مسلمان کے
 مال کو حلال کر لیا **ف** اس حدیث کا قصہ جیسے باب میں پہنچا کہ حضرت نے بچے پھل کے بیچنے سے منع کیا یعنی قرآن مجید کے
 اگرچہ بجاؤ تو شہر سے قیمت لینا کہ جو حلال ہوگا خام ابوا مامہ اَرَايْتَ اِنْ مَنَعَ اللّٰهُ الْقَمَرُ يَوْمَ كَسَحَلَ مَالُ اَخِيهِ
ق اَللّٰهُ اَرَايْتَ اِنْ مَنَعَ اللّٰهُ الْقَمَرُ يَوْمَ كَسَحَلَ مَالُ اَخِيهِ **ق** اَللّٰهُ اَرَايْتَ اِنْ مَنَعَ اللّٰهُ الْقَمَرُ يَوْمَ كَسَحَلَ مَالُ اَخِيهِ
 یَا رَسُولَ اللّٰهِ قَالَ اِنْ اللّٰهُ قَالَ لِقَوْمٍ شَهِدَتْ الصَّلَاةَ وَهَمَّ اَنْ يَأْكُلَ
 یَا رَسُولَ اللّٰهِ قَالَ اِنْ اللّٰهُ قَالَ لِقَوْمٍ شَهِدَتْ الصَّلَاةَ وَهَمَّ اَنْ يَأْكُلَ
 بھلا بتلاؤ جب کہ تو اپنے گھر سے نکلا تھا کیا تو نے اچھی طرح وضو نہیں کیا تھا اوسے کہا کہ دست ہی رسول اللہ حضرت نے فرمایا جو
 ہمارے ساتھ نماز میں حاضر ہوا اوسنے کہا یا رسول اللہ حضرت نے فرمایا سو غرض ہے تیری حدیث بنی یاقون فرمایا کہ تیرا گناہ بخشا
ف ایک شخص نے کہا کہ یا رسول اللہ میں نے گناہ بدلنے کے لائق کیا مجھے جہاد کا حضرت نے پوچھا کہ کون گناہ ہے حضرت
 نماز میں غول ہوئے شخص بھی نماز میں شریک ہوا بعد فراغت کے پھر اوس شخص نے کہا کہ مجھے جہاد پر ہے حضرت نے یہ حدیث فرمائی
 شاید کہ اوس گناہ کو صغیرہ تھا جیسے بوسہ یا مساس چنانچہ بعضی روایت میں صاف آیا ہے اسی اسطے حضرت نے اوسکی مغفرت
 جماعت پڑھنے سے فرمائی اوسا سطرے صغیرہ گناہ عبادت سے معاف ہو جاتے ہیں اور حضرت نے اسو سطرے اوس سے نہ پوچھا
 کہ یہ کام کا نقص نہ زمین اور اگر وہ اپنے گناہ کو مکمل کر بتلاؤ اور وہ لائق حد کے ہوتا تو حضرت ضرور اسے پھر جہاد سے **ق**
 اِنْ مَنَعَ اللّٰهُ الْقَمَرُ يَوْمَ كَسَحَلَ مَالُ اَخِيهِ **ق** اَللّٰهُ اَرَايْتَ اِنْ مَنَعَ اللّٰهُ الْقَمَرُ يَوْمَ كَسَحَلَ مَالُ اَخِيهِ **ق** اَللّٰهُ اَرَايْتَ اِنْ مَنَعَ اللّٰهُ الْقَمَرُ يَوْمَ كَسَحَلَ مَالُ اَخِيهِ
 بخاری اور مسلم میں عبد اللہ بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ بھلا تم بتلاؤ تو اپنے اس رات کے حال کو سوال اللہ
 حال تو یوں ہو کہ اس بات سے سو برس کے سرے تک جہاد میں زمین پر کوئی نہ باقی رہے گا **ف** عبد اللہ بن عمر سے روایت ہے
 کہ حضرت نے آخر عمر میں جو عشا کی نماز پڑھائی پھر حدیث فرمائی یعنی سو برس سے زیادہ اس وقت میں کسی کی عمر نہ ہوگی اسطے حدیث کا
 یہ کہ جب عمر ایسی کم تھی تو دنیا کا لالچ کرنا بیفائدہ ہو اور دوسرا فائدہ اس بیان کا یہ کہ حضرت نے جانا تھا کہ یہ کہ اپنے
 جھوٹے لوگ میری صحبت کا دعویٰ کر سکتے جیسے کہ ہندوستان میں کہی سو برس کے بعد بابر تین حضرت کی صحبت کا دعویٰ کرتا تھا
 سواں حدیث سے اس کا دعویٰ غلط ہو گیا اسو سطرے کہ حضرت نے فرمایا کہ لوگ سو برس کے اندر پہنچے **ق** اِنْ مَنَعَ اللّٰهُ الْقَمَرُ يَوْمَ كَسَحَلَ مَالُ اَخِيهِ

۱۳۸۱

۱۳۸۲

۱۳۸۳

۱۳۸۴

لو كان على ابيك دين فقتلته او كان على ابيك دين فقتلته قال نعم قال فقتلته عن ابيك بخاري اور مسلم بين
عبد المدين عباس بن مسعود روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ بھلا تم لو اگر تیری ماں پر قرض ملتا تو اس کو لو ادا کرتی بھلا اس کے اوپر
ادا ہوتا اس عورت کے کہنا کہ ماں ادا ہو جائے حضرت نے فرمایا تو روزہ بھی رکھ اپنی ماں کی طرف سے ایک عمر سے حضرت کی ماں
یا رسول اللہ صبریٰ ماں گئی اور ابوہریرہ پر فرض رکھتے تھے اگر میں روک دوں گا تو اس کی طرف سے ادا ہوں گے حضرت نے یہ حدیث فرمائی اور فرمایا
کہ جس طرح بھلا کا قرض ادا ہو جاتا ہو وارث کے ادا کرنے سے جیسے ہی خدا کا بھی قرض ادا ہو جائے اور یہی مذہب ہوا اس میں کا اور ہاں
امام کہتے ہیں کہ روزہ رکھنے سے مراد یہ کہ ہر روز کے لئے ایک سنگین کو کھانا کھلاؤ چنانچہ دوسری حدیث میں صاف آیا ہے کہ جو
مرحوم اور ابوہریرہ کی ماں کا وارث اس کی طرف سے سنگین کو کھلائے اور دوسری وجہ یہ کہ زندگی میں کیسے چلے روزہ رکھنا
تو درست نہیں اسی طرح بعد میں کہ بھی ق اَبُو هُرَيْرَةَ اَنَّ اَكْبَرَ لَوَانَ فَهَكَذَا بَابُ احَدٍ كَوْنُهُ يَسْتَلِ مِنْهُ كُلُّ
يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرِيْهِ شَيْءٌ قَالُوا لَا كَيْفَ مِنْ دَرِيْهِ شَيْءٌ قَالَ فَاِنَّكَ تَسْتَلِ الصَّلَاةَ
اَلْخَمِيْسَ يَكُوْنُ اللهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا بِخَارِيٍّ اور مسلم میں ابوہریرہ روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ تم لو کہ اگر تم میں سے کسی کے روزہ
پر تیری روک دے اور میں نے ہر روز باجی بارہ رکھ دیا اور سچا کچھ سبیل باقی رہے گا احباب کہنا کہ کچھ اس سبیل سے نہ باقی رہے گا حضرت نے فرمایا
کہ یہ مال ہی باجی نمازوں کا کہ اگر کسی سب سے حق تعالیٰ گناہوں کو مٹا دینا یوسف یعنی جیسے ہر روز باجی وقت نہانے سے ہوا
سبیل میں ہوتا اسی طرح بھلا نماز سے گناہ نہیں بچتے لیکن ہر روز باجی ڈالنے سے سبیل نہیں چھوڑتا مگر ملنا اور مانجنا بھی ضرور
اسی طرح نمازیں بھی ضرور پڑھنی اور اپنے رب کے رو بہ رو گناہوں کو مٹا دینا اور جیسے تاکنا گناہوں کا سبیل دل سے چھوڑ دینا
اَرَكَمْتُ رَكْعَتَيْنِ قَالَ لَا قَالَ فَوَقَّارٌ كَمَا وَبُرُوْى فَمَعْمُ قَارَكْعَ رَكْعَتَيْنِ وَبَحَقَّ رَقِيْعًا قَالَ لَسَلِيْعًا
لَا لَفَطًا كَانِي حَتَّى جَاءَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ وَهُوَ قَاعِدٌ عَلَى الْمَسْبُورِ فَقَعَدَ سُلَيْكُ فَبَلَّ أَنْ يَصْلِيَ لَخَارِيٍّ
اور مسلم میں جابر بن مسعود روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ کیا تو دو رکعتیں پڑھ چکا ہے یعنی تحیۃ المسبح کی او سے کہنا کہ نہی حضرت
نے فرمایا کہ اوٹھ اور اڑو تو پڑھ لے اور دوسری روایت یوں ہے کہ اوٹھ اور دو رکعتیں پڑھ اور ان میں اختصاص کر یعنی ہلکی چم
حضرت نے سلیک غلطی سے فرمایا جب کہ وہ جمعہ کے دن آیا اور حضرت منبر پر بیٹھے تھے تو سلیک بیٹھ گیا بدون تحیۃ سبح
پڑھ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ خطبہ کے وقت بھی تحیۃ سبح پڑھنا درست ہے اور یہی مذہب ہوا امام شافعی کا اور امام غزالی
کے نزدیک خطبہ کے وقت تحیۃ سبح نہیں درست واسطے کہ دوسری حدیث میں آیا ہے کہ جب امام خطبہ پڑھنے کو کھلا تو نماز
اور کلام نہیں چھوڑا اَبُو هُرَيْرَةَ اَنَّ اَكْبَرَ لَوَانَ فَهَكَذَا بَابُ احَدٍ كَوْنُهُ يَسْتَلِ مِنْهُ كُلُّ
يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرِيْهِ شَيْءٌ قَالُوا لَا كَيْفَ مِنْ دَرِيْهِ شَيْءٌ قَالَ فَاِنَّكَ تَسْتَلِ الصَّلَاةَ
اَلْخَمِيْسَ يَكُوْنُ اللهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا بِخَارِيٍّ اور مسلم میں ابوہریرہ روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ کیا
ذوالیدین سے کچھ کہتا یوسف مصباح میں ابوہریرہ روایت ہو کہ حضرت نے غصہ کی نماز پڑھائی اور وہی رکعت کے بعد سلام
پھیر کے اوٹھ کر مسجود جماعت میں صلیب اور غار و حق بھی تھے مگر عرب کلام نہ کر کے جماعت میں ایک شخص تھا خفاق نام اس کا
لفظ ذوالیدین تھا اس واسطے کہ اس کے ہاتھ لنبے تھے اس نے کہا یا رسول اللہ کیا نماز کہ گویا یا آپ بھول گئے حضرت نے
فرمایا یہ کچھ بھی نہیں یعنی نہ نماز نہ کوئی زمین بھولا ہوں اس نے کہا کچھ تو ضرور ہوا یہ نماز کہ کوئی یا آپ بھولے ہیں تب
حضرت نے اصحاب کی طرف متوجہ ہو کر یہ حدیث فرمائی یعنی ذوالیدین کیا کچھ کہتا ہے اصحاب نے کہا کہ ہاں کچھ حضرت نے اس کے

۱۳۸۵

۱۳۸۶

۱۳۸۷

عن ابی الدرداء
عن ابی الدرداء
عن ابی الدرداء

اور دو رکعت نماز بھی اور سجدہ سو کا کیا اس حدیث سے معلوم ہوا کہ بھول چکے بغیر وہ کبھی ہوتی ہے اور اگر امام کو شک ہو تو وقت چونکہ قول جمل کرے اور کلام قلیل نماز کو نہیں باطل کرنا لیکن امام غلطی کے نزدیک جرح کا کلام نماز کو باطل کرنا ہے امام کا طوطی کہنا کہ اس وقت تک نماز میں کلام کرنا حرام نہیں تھا پھر کلام کرنا نماز میں منوع ہو گیا تھیں نے شرح ہوا یہیں لکھا کہ اول اسلام میں کلام کرنا نماز میں درست تھا چنانچہ زید بن ارقم کی حدیث ثابت ہے جو جب کلام کرنا منع ہوا تو حضرت نے فرمایا کہ جب امام چوکے تو مقتدی سبحان اللہ کہہ کر امام کو آگاہ کرے سو اگر یہ حدیث نسخ کلام کے بعد کی ہوتی تو ذوالیدین تسبیح سے حضرت کو آگاہ کرتے کلام کرتے اور جب کلام کیا تو صاف معلوم ہوا کہ یہ قصداً وسوق کا ہے جب کلام کرنا درست تھا تو ثابت ہوا کہ یہ حدیث نسخ ہوا اسد علم ق کتب بن معین کا یہو ذیاب ہوا کہ رأیہ کہ فلت تسبیح قال فاحلین وصغر نکتہ ایامہ واطعم سبۃ مساکین اوانسک نسیکہ کا ادرنی بآی ذلک بد ا قال لہ زمن الخدیجۃ بخاری اور سلم بن کعب بن عجرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ کیا تم کو تکلیف دینے میں میرے سر کے ٹپ سے کھانا ان حضرت نے فرمایا تو باون کو منڈا ڈال او تین روزے رکھنا مجھ ممتاز جو کو کھانا کھلایا ایک فرمایا ذبح کر آوی کہتا ہے کہ میں نہیں جانتا کہ ان تین چیزوں سے کون چیز اول حضرت نے فرمائی یہ حضرت نے کعب بن عجرہ سے فرمایا جبکہ حدیث کے رتبے میں معلوم ہوا کہ جب مخرم کو سر کی چون تکلیف دیوین تو باون کو منڈا کرے اور یہ کفار دیوے باقی قصہ حدیث کا ہو چکا ہے ابو ہریرہ کا یہو ذیاب ا یحیٰ احد کما اذا رجع الی اہلہ ان یجد ذیہ فلت خلیفات عظامہ سمان فلنا نعم قال فلتک ایات یقر ا یمن احد کما فی صلاۃ یخدی لہ من نکتہ خلیفات عظامہ سمان سلم بن ابوبریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تم میں کوئی جانتا ہے کہ جب اپنے گھر میں جانا تو تین گاجن اوٹھیاں بڑی قدوالدین میں گھر میں پاؤں سے کھانا ان حضرت نے فرمایا تو جو کوئی تین آئین اپنی نماز میں پڑھے اس کے حق میں تیرہ چیزیں گاجن اوٹھیاں بڑی قدوالی ہوئیں خ ابو سعید کا یہو ذیاب ا یحیٰ احد کما ان یقر ا یمن احد کما فی صلاۃ فی لیکلہ بخاری میں ابو سعید سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ کیا ہر ایک تم سے عاجز ہو اس کے تہائی قرآن ہر ایک رات پڑھے اصحاب نے کہا یا رسول اللہ تہائی قرآن ہر رات کو پڑھنا کس سے ہو سکے حضرت نے فرمایا کہ قل ہوا صد قرآن کی تہائی بڑی اس کا ثواب تہائی قرآن کے برابر ہے سعد بن ابی وقاص ا یحیٰ احد کما ان یقر ا یمن احد کما فی صلاۃ فی کل یوم الف حصۃ فساکل من جلسا ۃ کیف یکتب احدنا الف حصۃ قال یسبح وایۃ تسبیحۃ فیکتب لہ الف حصۃ وایحط عنہ الف خطیۃ وقرن وی و یحط مسلم من بعد بن ابی وقاص سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ کیا ہر ایک تم میں عاجز ہو اس کے ہر روز ہزار نیکیاں حاصل کرے پھر حضرت کے پاس بیٹھے والون میں ایک شخص پوچھا کہ کیونکر ہو سکے گا کوئی ہم سے ہزار نیکیاں حاصل کرے حضرت نے فرمایا کہ سو بار سبحان اللہ پڑھو اس کے واسطے ہزار نیکیاں لکھی جاویں یعنی اگر وہ نیک ہی یا ہزار گناہ اس کے لئے جاویں یعنی اگر وہ گناہ کا حرف سو بار سبحان اللہ پڑھنے سے ہزار نیکیاں اس واسطے ہوئیں کہ خدا نے ایک نیکی کا دس گنا ثواب قرار دیا ہے تو سو کا وہ چہ ہزار ہوا فصل اس فصل میں یہ حدیثیں ہیں جن کے سر بالہ ارق ابو ہریرہ کا ا یحیٰ احد کما حدیثنا عن النبی

۱۳۸۸

۱۳۸۹

۱۳۹۰

۱۳۹۱

۱۳۹۲

بہار شریعت
جلد اول
صفحہ ۱۳۹

۱۳۰۶

مکمل کرنا جو تیر اندازی جو تیر اندازی کا واسطے حکم ہوا کہ دو رکعتھ باریان اور بدوق اور توپ بھی تیر اندازی میں داخل ہو
 واسطے کہ تیر کی طرح اوکلی بھی مارو دوستق السعوط بن محمد مہمہ الا ان بنی ہشام بن المغيرة استأذنی ان
 یخولک بنی ہشام علی بن ابی طالب فلا اذن لهم ثم لا اذن لهم ثم لا اذن لهم الا ان محبنا بن ابی طالب
 ان یطلق ابنتی وینکحہا بنی ہشام فاکما البتعی بفضہ صبی بریہ بنی ما را اہا کو بی ذہنی ما اذ اہا بنی
 اور سلم بن مؤثر بن محمد بن ہشام سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ خبردار ہو کہ بنی ہشام میں خیر کوئی اولاد مجھے اسکی اجازت ملے گی
 کہ ابی ہشام کو علی بن ابی طالب سے نکاح کر دیوں میں انکو اجازت نہیں دیتا بھر بھی میں انکو اجازت نہیں دیتا بھر بھی میں انکو اجازت
 نہیں دیتا مگر کہ ابی طالب کا بیٹا بیچے کہ میری بیٹی کو طلاق دے اور اوکلی بیٹی سے نکاح کر لے سو میری بیٹی کو میرے بدلے
 ایک کلو ہر جو بھوکو دیجی چیز مرغ دینی ہو جو اسکو مرغ دینی ہو اور مجھ کو تکلیف دینی ہو جو اسکو تکلیف دینی ہو علی مرتضیٰ جوہل
 بن ہشام کی بیٹی سے نکاح کا ارادہ کیا فاطمہ زہرا سے حضرت سے شکایت کی کہ یا رسول اللہ لوگوں کو یہ گمان ہے کہ حضرت بنی ہشام سے
 عقد نہیں کرتے اور علی مرتضیٰ جوہل کی بیٹی سے نکاح کرتے ہیں ترجمہ اٹھ اور خطبہ پڑھا اور یہ حدیث فرمائی میری طرف سے اور سکا
 نکاح حقون کا دیا اگر کوئی کہے کہ شرع میں جو نکاح مرد کو درست ہیں بھر حضرت کیوں منع کیا اسکا جواب یہ ہے کہ حضرت صلح حدیبیہ کے
 حضرت کو اختیار تھا کہ اسکو نہ کریں واسطے کہ حضرت سے خلافت منی کرنا شرع میں درست نہیں اور دوسری وجہ یہ کہ جیسے نبی کی کے
 ہوتے ہو وہی سے نکاح نہیں اسی طرح جمعیہ اسکی بیٹی کے ہوتے عدو اسکی بیٹی سے نکاح جائز نہ ہوا فاطمہ الا محمد بن
 ان یخولک بنی ہشام علی بن ابی طالب فلا اذن لهم ثم لا اذن لهم ثم لا اذن لهم الا ان محبنا بن ابی طالب
 نے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ابی ہشام سے نہیں بی بی کہ تو مسلمانوں کی عورتوں کی سردار بنے یا ہوں فرمایا اس مست کی
 عورتوں کی سردار ہو کہ حضرت فاطمہ زہرا فرمایا ف مصلحہ بنی ہشام فی حدیبیہ روایت ہے کہ ہم حضرت کی بیٹی بنی ہشام کے
 پاس میں جمع کئے فاطمہ زہرا بنی ہشام کے فرمایا ابی ہشام نے کہا کہ مجھ کو بھلا یا اور اسے سرگوشی یعنی کان میں بات کی تو فاطمہ
 نہایت سوگندیں جسے کہے اور تو گندیں بچھا تو دوسری بار سرگوشی کی بھڑوہ بنسنے لگیں بیٹے پوچھا کہ حضرت نے جسے کیا سرگوشی کی
 فاطمہ زہرا نے کہا کہ حضرت کا بھید تو میں نہیں ظاہر کر سکتی بھر حضرت کا انتقال ہوا تو بیٹے فاطمہ زہرا سے کہا کہ میرا حق جو میرا ہو
 مکمل ہو دیتی ہوں کہ اس سرگوشی کا حال مجھے بتلاؤ فاطمہ زہرا نے کہا ان ابنو کچھ ضایقہ نہیں اول باجہ حضرت نے جسے سرگوشی کی تھی تو
 یہ فرمایا تھا کہ ہر سال مجھے جبریل ایجاب قرآن کا دور کرتے تھے اور ابلی سال دو بار دو رکعت سو حکمو معلوم ہوتا ہے کہ میری موت
 قرب ہو واسطے میں رو لگتی تھی پھر دوسری با حضرت نے میرے کان میں کہا کہ میرا بعد میرا اہل بیت فوہی پہلے میری خندے ڈھکی ہو
 اور کہو کہ میں تیرا بہتر و شویا ہوں اور کیا تو اسے راضی نہیں ہوں کہ بہشتی عورتوں کی سردار ہو کہ یا ہوں فرمایا کہ مسلمانوں کی
 عورتوں کی سردار ہو اس سے کہ بڑی عمدہ فضیلت فاطمہ زہرا کی ثابت ہوئی ق ابقی عمری الا شیعہ مومن ان اللہ کا
 یعد بید جمع العین وکذا یخزن القلب و لیکن یعد بید هذا آوین حکم بخاری اور سلم بن عبد اللہ بن عمر
 سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ یا مہمہ بن ہشام بنی ہشام سے کہ آئندہ سے اور دل کے غم سے غلاب نہیں کرتا لیکن
 مذاق اس کے سبب دینی زبان کرتا ہی باجمہ کراہی و مصلحہ بن عبد اللہ بن عمر سے روایت ہے کہ سعد بن عبادہ بیمار تھے

۱۳۰۷

۱۳۰۸

عن ابن عباس
 علیہ السلام

حضرت اویسی عیادت کو گئے اور حضرت کے ساتھ عبدالرحمن بن عوف اور سعد بن ابی وقاص اور عبداللہ بن مسعود تھے حضرت حبیب
 ویمان پونچے تو دیکھا کہ سعد بن عبادہ غش بن ہوش پڑے ہیں پوچھا لگ گیا یہ مگر کیا لوگوں نے کہا کہ غش بن ہوش تو حضرت رولے
 اور لوگ بھی حضرت کا رونا دیکھ کر رونے لگے حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی ان میں غم کرنا اور صرف آنسو سے رونا درست ہے اور زبان
 سے نوحہ کرنا اور رونا دیکھنا غضب الہی کا سبب ہے اور اگر زبان سے انا سدا وانا الیہ راجعون کہے تو حیرت الہی کا مرتبہ
 خرا بومر برة الک تعجبون کیف یصرف اللہ عینی شکر و فیض و لعلہم یشعرون مد شعا و یلعنون
 ۱۲۰۹ مَدَّ شَعَا وَاَنَا مُحَمَّدٌ بِنَارِیْنِ ابُو ہریرہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کیا تمکو تعجب نہیں آتا کہ کیونکر حق تعالیٰ میری
 طرف سے قریش کی کالی اور لعنت کو بچھیرنا پو دی گالی دیتے ہیں تم کو اور لعنت کرتے ہیں تم کو اور میں تو محمدیوں کا محمدی یعنی
 سربراہ نہایت تعریف والا اور مذم کے معنی اتنا رازبازی والا سوتو قریش عدو کے سبب حضرت کو تمہرے کتے تھے مذم کہتے تھے اور بدگوئی کرتے
 سو حضرت نے احباب کو جان لائی تھا کہ دیکھو کس پر سے خدا نے تمکو دلی بدگوئی سے بچا رکھی تو تم کو بد کہتے ہیں تو تمکو کیا
 ۱۲۱۰ میرا نام تو حقیقت میں محمد ہے مَحَمَّدُ بْنُ الْحَسَنِ الْأَكْبَلُ یَا نَبِیَّنا خَیْرُ الْعَالَمِ جَعَلَهُ اللَّهُ مَعِیْ یَوْمَ الْقِیَمَةِ
 فَاتَّكَمْنَا لَكَ الْکَلِمَةَ الْاُخْرٰی اب مسلم بن حذیفہ بن بیان روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کیا ایسا کوئی مرد نہیں جو
 ہلکو تو کم کفار کی خبر لاو بوسے خدا کو قیامت میں میرے ساتھ کرے یہ حضرت نے تین بار جنگ لڑ کر کی رات میں فرمایا
 ف جنگ لڑ کر اپنی جنگ خندق میں قریشین وغیرہ کفار نے جو کم کے مدینہ گھر اتھا سو ایک ات نہایت سرد ہوا چلی شدت
 مرنے سے کسی کو ٹپنے کی طاقت نہ تھی اوس وقت حضرت نے یہ حدیث فرمائی کہ کوئی کافروں کی خبر لاوے تو یہ عالی درجہ کا حذیفہ
 سے روایت ہے کہ حضرت نے تین بار یہ فرمایا لیکن کیونکہ حرات نبوی پھر حضرت نے مجھ سے فرمایا کہ یہ حذیفہ تو اوٹھ لو اور انکی خبر لاو تمکو
 اب کچھ اندر نہ رہا سو اسلئے کہ یہ راہ لہم لاو خواجہ جگہ جگہ جانا پڑا اور حضرت نے فرمایا کہ کچھ خبر لاو مان سکیو پھر یہ وجہ میں حضرت نے
 پاس سے چلا تو تمکو ایسا معلوم ہوتا تھا جیسے کہ میں حمام میں ہوں جب میں مان پونچھا تو سینے ابو سفیان کو دیکھا کہ اس سے
 اپنی بیٹھ بیٹھنا ہے سینے چا کر ایک تیرہ سکواروں ایکین حضرت کی بات یاد کر کے میں رگڑ رہا پھر میں پلٹ آیا ابو حضرت نے
 اونکی خبر پونچائی تو حضرت نے اپنا کسل جس پر نماز پڑھتے تھے جھکواڑھا یا میں کرتی باکر صبح تک ہو کیا جب صبح ہوئی تو حضرت
 نے فرمایا کہ اوٹھ ایڑے سے اٹھ اس بیٹ سے حذیفہ کی عمدہ فضیلت ثابت ہوئی مَحَمَّدُ بْنُ الْحَسَنِ الْأَكْبَلُ یَا نَبِیَّنا
 رَجُلٌ عِنْدَ امْرِئٍ یَنْتَظِرُ لَکَ اَنْ یَّجِیْکَ اَنْ تَکُنْ اَوْ اَنْ تَخْشَکَ مسلم بن جابر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ خبر
 ہو کہ مرد رات کو اس عورت پاس نہیں جو کواری نہیں مگر یہ کہ اسکا خاوند ہو یا رشتہ دار محرم ہو بیگانہ عورت پاس نہ
 کو رہنا اور خلوت کرنا محرم خواہ رات ہو خواہ دن کواری عورت ہو یا بیوی یا بیوہ لیکن اس حدیث میں کواری عورت
 ۱۲۱۲ پاس سے نہ صاف منع نہیں فرمایا سو اسلئے کہ اکثر عادات یوں ہے کہ کواری پاس اجنبی مرد نہیں ہوتا خواہ ان میں سے کسی ایک
 كَانَ حَکَمًا فَلَا یُخْلِفُ لَکَ بِاللّٰهِ بِنَارِیْنِ اب عبداللہ بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ خبر دار ہو کہ تم کھانا کھا
 تو سولہ خدا کے سیکڑی قسم کھاؤ ف حالت کفر میں عادت تھی کہ بتوں کی اور اپنے باپ دادوں کی قسم کھاتے تھے
 ۱۲۱۳ سوا کوئی منع نہ فرمایا سو اسلئے کہ قسم نام کی چاہیے جو سکا مالک ہو مخلوق کی قسم کھانا درست نہیں مَحَمَّدُ بْنُ الْحَسَنِ الْأَكْبَلُ یَا نَبِیَّنا

صَدَقَهُ وَبِئْسَ تَكْلِيْفٌ صَدَقَهُ وَبِئْسَ تَكْلِيْفٌ صَدَقَهُ وَبِئْسَ تَكْلِيْفٌ صَدَقَهُ وَبِئْسَ تَكْلِيْفٌ
صَدَقَهُ وَبِئْسَ تَكْلِيْفٌ صَدَقَهُ وَبِئْسَ تَكْلِيْفٌ صَدَقَهُ وَبِئْسَ تَكْلِيْفٌ صَدَقَهُ وَبِئْسَ تَكْلِيْفٌ
يَكُونُ لَهُ فِيهَا أَجْرٌ قَالَ أَرَأَيْتُمْ لَوْ وَضَعَهَا فِي حَرَامٍ لَكَانَ عَلَيْكَ فِيهَا وَدُرٌّ فَكَذَلِكَ إِذَا وَضَعَهَا
فِي الْحَلَالِ كَانَ لَهُ أَجْرٌ فَسَأَلَهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِهَا قَالَ أَيْهَا رَسُولَ اللَّهِ ذَهَبَ أَهْلُ الدُّشُورِ
يَا أَجْوَادَ يَصْلُحُونَ كَمَا تَصْلُحُ وَيَصُومُونَ كَمَا تَصُومُ وَيَصَدَّقُونَ كَمَا يَصَدَّقُونَ أَمْوَالَهُمْ سَلِمَ الْبُخْرُ
مِنْهُ رَوَيْتُ عَنْ أَبِي حَظْرَةَ فِيهِمْ نَعْمُ وَنَعْمُ وَنَعْمُ وَنَعْمُ وَنَعْمُ وَنَعْمُ وَنَعْمُ وَنَعْمُ وَنَعْمُ وَنَعْمُ
أَوْ هَرَّاجِيبَ الرَّسَالَةِ كَمَا كُنَّا صَدَقَهُمْ أَوْ هَرَّاجِيبَ الرَّسَالَةِ كَمَا كُنَّا صَدَقَهُمْ أَوْ هَرَّاجِيبَ الرَّسَالَةِ
بِتِلْكَ أَمْصَدَقَهُمْ أَوْ بَرَّكَ كَامٍ سَرَّ كُنَّا صَدَقَهُمْ أَوْ تَحَارَّسَ جَمَاعُ مَيْنَ صَدَقَهُمْ أَصْحَابُ
سَعَى كَوْنِي تَوَاقِي شَهْوَتِ كَامٍ كَرَمٍ أَوْ سَكُونِ هُوَ كَالْبَنِيِّ لَيْسَ فِيهِ نَزْهَاتُ ثَوَابٍ هُوَ كَالْبَنِيِّ
عِبَادَتِ مَيْنَ هُوَ تَوَاقِي شَهْوَتِ كَامٍ كَرَمٍ أَوْ سَكُونِ هُوَ كَالْبَنِيِّ لَيْسَ فِيهِ نَزْهَاتُ ثَوَابٍ هُوَ كَالْبَنِيِّ
تَوَاقِي هَرَّاجِيبَ وَسْ شَهْوَتِ وَحَلَالِ مَيْنَ كَمَا تَوَاقِي هُوَ كَالْبَنِيِّ لَيْسَ فِيهِ نَزْهَاتُ ثَوَابٍ هُوَ كَالْبَنِيِّ
شَهْوَتِ كَامٍ سَرَّ كَامٍ مَيْنَ كَرَمٍ كَيْفَ حَضَرَ فِي لَيْسَ فِيهِ نَزْهَاتُ ثَوَابٍ هُوَ كَالْبَنِيِّ
وَنَزْهَاتِ تَجَهُّتِ مَيْنَ جَسْبِهِ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ أَوْ رَزَقَتْ مَيْنَ جَسْبِهِ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ أَوْ رَزَقَتْ
خَرَجَ كَرَمٍ مَيْنَ لَيْسَ فِيهِ نَزْهَاتُ ثَوَابٍ هُوَ كَالْبَنِيِّ لَيْسَ فِيهِ نَزْهَاتُ ثَوَابٍ هُوَ كَالْبَنِيِّ
ثَوَابٍ حَالِ مَيْنَ كَامٍ جَمَاعُ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
كِي أَوْسَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
كَيْفَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
سَعَى فَرَايَا كَلِمَا هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
جَسْبِهِ كَرَمٍ كِي أَوْ رَزَقَتْ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
ضُرُورِ هَرَّاجِيبَ كَرَمٍ كَامٍ أَوْ رَزَقَتْ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
حَضَرَ كَرَمٍ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
أَقْرَبَ كَرَمٍ حَضَرَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
لَوْ كَرَمٍ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
مَيْنَ شُغُولِ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
وَاحِدٍ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
حَضَرَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ
مَيْنَ كَرَمٍ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ مَيْنَ هَرَّاجِيبَ

میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ میں قریب تر مسلمانوں سے ہوں ان کی ذائقہ سے زیادہ موجود کوئی مسلمان نہیں ہے اور
 اپنے ابوہریرہ سے جو میرا ہے تو اس کا ادا کرنا مجھ پر لازم ہے اور جو مال چاہے تو اس کے وارثوں کا حق ہے **وف** ابوہریرہ سے روایت ہے
 کہ حضرت کا قبہ اسلام میں معمول تھا کہ جب کوئی جنازہ آتا تو حضرت پر چھٹے کہ اس نے اپنے فرض ادا ہوئے گا کچھ مال حبیروں پر ہوگا اگر
 معلوم ہوگا کہ فرض ادا ہوئے گا کچھ مال بھی تو حضرت اس کے جنازہ کے کی نماز پڑھتے اور اگر فرض ادا ہوئے کی کوئی صورت ہوتی تو خود نماز
 نہ پڑھتے اور مسلمانوں سے نماز پڑھتے کہ جو جب ہلام کی نفع ہوئی اور بیت المال میں مال جمع ہوا تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی
 قرعہ راز حضرت نے شاید اس واسطے نماز نہ پڑھتے تھے کہ لوگ فرض سے ڈریں اور جو کہ فضل ہوں ہی فرض ادا کرنے میں غفلت کریں
ہ ابوہریرہ سے روایت ہے کہ انا سید ولد آدم یوم القيمة واول من یتشقی عنہ القبر واول من تسقی مسلم یوم
 سے روایت ہے کہ حضرت فرمایا کہ میں آدم کی اولاد کا سردار ہوں قیامت کے دن اور قبر چھٹے والوں میں پہلا میں ہوں اور قبول شفاعت
 پہلا میں ہوں **ف** یعنی حشر میں قبر میں بیٹھ کر مرنے والے سے کہیں کہ سوا دلیری قبر چھٹے کی اولاد میں ہی شفاعت قبول ہوگی
 بعد اس کے ابوہریرہ کی روایت ہے کہ میں نے جیسا کہ ہمارے حضرت کی سرداری کی ہوں گویا ہی ہر ملک میں زیادہ گنتوں سے نہیں کرتا
 اس واسطے کہ اس جہان کا سردار آنا ہی نہیں ہے بعد خاتم الانبیاء آنا ہو وگو سب کچھ تعلیم کر گیا میری تعلیم کی حاجت نہیں اور یہ
 فرمایا کہ قیامت میں میں آدم کا سردار ہوں سو ہر چند حضرت دنیا اور آخرت دونوں عالم میں ہی آدم کے سردار اور افضل البشرین
 لیکن دنیا میں کا فرض کو ادا کیا قیامت میں اور قیامت میں جبکہ ماضیوں میں مصیبت میں بغیر ہوگی اور بغیر بھی خوف آتی سے غفلت
 نہ کر سکیں گے اور وقت ہے حضرت کی شفاعت قبول ہوگی تو ہر ایک مسلم اور کافر حضرت کی سرداری اور فضیلت صاف ظاہر ہو جائیگی
ح ابی اناس بنید علیہ لکھو لکھو یوم القيمة یعنی قتل احمدمسلمین جابر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں اپنے
 گواہوں کو قیامت کے دن بھی جنگ کے شہیدوں پر **وف** جنگ احمدمسلمین شریح صاحب شہید ہوئے حضرت دو دلاشوں کو لیا کہ ایک
 قبر میں نہ کہتے تھے اور فرماتے تھے کہ جو باوجود قرآن مجید اور اس کو قیلے کی طرف قدم نہ کرے وہ بھیرے حدیث فرمائی یعنی میں ان کی جگہ
 شہادت کا گواہ ہوں **ف** سحر سے آتا فی طکر علی الخوض بخاری اور مسلمین جابر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا
 کہ میں تمہارا پیشوا اور پیشرو ہوں جو جس کو شہر ابو موسیٰ انا محمد واکھمد والمقی والحقا بشر وینی الحق
 وینی المرحمة وینی اطراف اینی مسعود وینی القحمة وینی المرحمة وکرمید وینی الحق
 مسلمین ابو موسیٰ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں محمد ہوں اور احمد ہوں اور مقفی ہوں اور حاشر ہوں اور نبی التوبہ ہوں
 اور نبی الرحمة ہوں اور اطراف اینی مسعود میں ہوں وایت ہے کہ نبی الرحمة اور نبی المرحمة ہوں اور امین نبی التوبہ کی ذکر نہیں
ف حضرت نے اس حدیث میں اپنے نام اور اپنے صفات ذکر کیے محمد کے معنی بہت سرائے اور احمد کے معنی سب مخلوق سے
 زیادہ تر عزیز کے لائق اور مقفی کے معنی سب بغیر ہوں بعد آئے والا اور حاشر یعنی سب کا شہر آپ کے قدم پر ہوگا اور نبی التوبہ یعنی ایسا غمخیز
 کہ اس کے ماتھے پر بیجا لوگوں کو توبہ کی توجہ قبول ہو اور نبی الرحمة یعنی ایسا بغیر جس کی شریح کے احکام میں کچھ
 سختی اور تنگی نہیں ہے اور نبی المرحمة یعنی جنگ کا بغیر کہ لو اس سے دین کو عالم میں بھیلائے اطراف ابو مسعود ایک کتاب
 کا نام ہے جس کو ابابکر میں محمد و شعی کے کہ حدیث کے بڑے حافظ تھے تصنیف کیا انصار ہی ہند میں سہل ہوں براعت عرض کرتے ہیں

۱۳۶۲

حشر میں
 قبر میں
 بیٹھ کر
 مرنے والے
 سے کہیں
 کہ سوا
 دلیری
 قبر چھٹے
 کی اولاد
 میں ہی
 شفاعت
 قبول ہوگی

۱۳۶۳

۱۳۶۴

۱۳۶۵

حشر میں
 ابو موسیٰ سے
 روایت ہے
 کہ حضرت
 نے فرمایا
 کہ میں
 محمد ہوں
 اور احمد
 ہوں اور
 مقفی ہوں
 اور حاشر
 ہوں اور
 نبی التوبہ
 ہوں اور
 نبی الرحمة
 ہوں اور
 اطراف اینی
 مسعود میں
 ہوں وایت
 ہے کہ نبی
 الرحمة اور
 نبی المرحمة
 ہوں اور
 امین نبی
 التوبہ کی
 ذکر نہیں

کہ تمھارے پیغمبر نے تمھارے زور سے اسلام کو پھیلایا اور آدمیوں کو قتل کیا حالانکہ خونریزی درست نہیں کسی پیغمبر نے خونریزی نہیں کی مگر اس کا جواب یہ ہے کہ اتفاقاً غلام اور کفر نہایت بد چیز تھیں اور ایمان عمدہ چیز ہے جو بظہر ظالم اور کافر اپنے ظلم اور کفر کو بچھوٹے اور حق بات کو کسی طرح نہ سمجھے تو اس کا قتل کرنا عقل کے نزدیک ہے یہ نہیں تاکہ اور لوگ اس کی محبت سے مغرب ہو چنا تھا اگر آدمی کا ہاتھ مٹ جائے تو اس کا کٹ ڈالنا بہتر ہے تاکہ باقی اعضا ٹرنے سے بچیں مگر وہ اس کے قوریت اور زور کو نصاریٰ حق ملتے ہیں حالانکہ قوریت میں جہاد کا صاف حکم ہے جو حضرت موسیٰ اور حضرت یوشع اور حضرت داؤد کا جہاد عالم میں شہور ہے جس کو شک ہے قوریت میں کھڑے بلکہ زور کی جہاد حاصل ہے ہر حضرت کی بشارت میں ہے اور علیہ السلام نے یوں فرمایا کہ اگر پہلوان توجاہ و جلال سے اپنی توار حاصل کر کے ران پر رکھنا عدالت پر سوار ہو تو راستہ صحیح ہدایت مال کام دکھایا گیا اور زور میں ۲ فصل میں حضرت کے حق میں ایوں فرمایا کہ وہ سیر بندوں میں مداخلت سے حکم لگایا مگر ان کو بجا دیکھا خاموں کو کھڑے کھڑے کر دیا جب تک آفتاب باقی رہ گیا اور سکادین اور سہار کی اور اس کا نام باقی رہ گیا فظن ان دونوں لیلوں صاف معلوم ہوا کہ جہاد کا نام قائم تھا کہ پسندیدہ اور طے صاف کیوں اپنے ہوا جو نصاریٰ کہتے ہیں کہ یہ دونوں بشارتیں مسیحی حق میں ہیں جو صاف غلط ہے اس واسطے کہ عیسیٰ نے کہا کہ لو کہ میں اوس کا فر کا مارا اور پہر پہلوان اور مجاہد صادق نہیں آتا بلکہ یہ دونوں بشارتیں ہمارے حضرت کی نبوت پر صاف دلیل ہیں

۱۴۶۶ **مسئلہ** من سئل ان اکافل الیہ من کانتین فی الجنة و اشاک الیہ السباۃ و الوسطی مسلمین سئل بن سعد نے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں اور تیمم کا رو پرورش کرنے والا ہشت میں ایسے ہیں جیسے یہ دونوں دو گلیاں اور حضرت نے بشارت کیا کہ میں اوس کی طرف اوجھ کی طرف اوجھ یعنی تیمم کے پرورش کرنے والے اور اوس کے مال کی جانب کرنے والے کا ہشت میں اتنا درجہ بلند ہو کہ میرے درجے سے ایسا اتصال ہو جیسے آپس میں ان دو اونگھوں کو

۱۴۶۷ **فصل** اس فصل میں نو حدیثیں ہیں جس سے پراسر فعل برق عایشہ دو کھو یا نبی ارفدہ و قالہ یوم عند اللسوق دان و کانوا یلقون بالذرق و الحجاب بخاری اور مسلم میں حضرت عایشہ نے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا ابی اھمال اور جھینوں کو اس ارفدہ کی اولاد یہ حضرت نے زید کے دن جھینوں کہا اور وہ کھیل رہے تھے اھمال اور جھینوں

۱۴۶۸ **ف** ارفدہ حبش کے چکا نام پر جس کی دو سب اولاد ہیں روایت ہے کہ عید کے دن حضرت عایشہ نے گھر میں حضرت تھے اور حبشی مسجد صحن میں اھمال اور جھینوں کھڑے تھے حضرت نے یہ حدیث فرمائی حضرت نے اس کھیل کو اس واسطے دیکھا کہ یہ جلا کو سیکھ کر حبشی بھر گئے کہ کثرت خصوصاً ایسے سہامات کا عید کے دن کچھ مضائقہ نہیں کہ زید سرور کا سبب برق عایشہ علیہ السلام

۱۴۶۹ **فاتی** ارجوا ان یؤذن لی و قالہ لا ینکح فی کل الخ فی بخاری اور مسلم میں حضرت عایشہ نے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جلدی کو گھڑا اس واسطے کہ میں امیر رکھتا ہوں کہ کچھ بھی ہجرت کی اجازت ہو اچھا ہے یہی حضرت ابی بکر صدیق کا کہا ہجرت سے پہلے **ف** حضرت سے پہلے سب اصحاب سے کسی طرف ہجرت کرنے صدیق اکبر نے بھی حضرت سے ہجرت کی اجازت منگی تب حضرت نے حدیث فرمائی کہ صدیق اکبر حضرت کے ساتھ کہ لینے نظر ہے حضرت کو ہجرت کی اجازت ہوئی تو حضرت نے ہم کو لینے میں آگاہی میں سے نہایت فضیلت صدیق اکبر کی ثابت ہوئی تو حضرت نے اپنی رفاقت کے واسطے سوئے صدیق کے کہ سیکھو ٹھہرا یا **ق** صفیہ بنت حنی علیہ السلام انھا صفیہ بنت حنی بخاری اور مسلم میں حضرت صفیہ بنت حنی سے روایت ہے

بہارِ شریعت
جلد دوم
صفحہ ۳۳۰
مجلد ثانی
کتاب النکاح

بہت دعائیں مقبول ہوتی ہیں لیکن ان کے نزدیک یقینی مقبول دعا ایک ہی ہوتی ہو اور باقی میں امید ہوتی ہو یقیناً ہر شخص کے
 فرمایا کہ یقیناً یہی یقینی مقبول دعا کو اپنی اس کے واسطے رکھو جو کہ قیامت کے کٹھن میں ان کے کام آئے اس حدیث سے حضرت کی سچہ
 شفقت نبوی است ظاہر ہوتی ہے اسی مسئلہ ان کے ذکر و شکر خدا تھے پاپا مصطفیٰ سائیشوا دیکھو کیا تیرے تھارم مصطفیٰ
 ہوں مشترکہ بھی مسلمان کر گیا مخلوط لازم ہو اوسکی پیرائی دور کر دو بہتوں کی گمراہی **خ** مَعْنِ بْنِ زَيْدٍ اَنَّ
 مَا قَوِيْتُ يَا زَيْدٌ وَلَكَ مَا اخَذْتَ يَا مَعْنُ بَخَارِي مِّنْ مِّنْ بَنِي زَيْدٍ شَرَّ دَايَةٍ هُوَ كَضَرْتُمْ فَرَمَا يَكْجُو كَجُو كَجُو
 نیت کی ایسی زبردستی کہ وہ چکا جو تو نے پایا اس میں **ف** یزید کے زکوہ کا مال اپنے مکمل کو دیا کہ کسی محتاج کو دیوے کے دلیل نے
 نادانستہ یزید کے بیٹے معن کو نام کی میں واجب یزید کو یہ حال معلوم ہوا تب اپنے بیٹے کو حضرت پاس لیگیا اور یہ حال کسا
 تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی تیرے اوپر سے زکوہ دانا ہو گئی اور اوسکو لینا درست ہونا دانستی کے سبب اور یہی مذہب
 امام عظیم اور امام محمد کا اگر نام کی میں باطنی بیٹے کو زکوہ دیوے نادانستی سے تو زکوہ ادا ہوا جاتی ہو دوبارہ زکوہ نہ ضرور نہیں
خ عَالِيَةً لَّكِنَّ اَفْضَلَ الْجِهَادِ حَجٌّ مَّبْرُورٌ بَخَارِي مِّنْ حَضْرَةِ عَالِيَةٍ شَرَّ رَوَايَتِ هُوَ كَضَرْتُمْ فَرَمَا يَكْجُو كَجُو
 ہوا مقبول حج **و** بَخَارِي مِّنْ دَايَةٍ هُوَ كَضَرْتُمْ لِحَضْرَتِ سَہ كَم كَم بَارِ سَوَالِ اَم م م ہوا کہ افضل عبادت کی ہے
 اگر فرمائیے تو ہم بھی جہاد کریں حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی جو توں پر جہاد فرض نہیں ان کے حق میں قبول حج جہاد کے برابر قبول
 حج ہے جو میں گناہ میں **ق** اَبُو هُرَيْرَةَ لِّلْعَبْدِ الْمَمْلُوكِ الْمُسْلِمِ اَجْرَانِ بَخَارِي مِّنْ سَوَالِ اَم م م ہوا کہ روایت ہے کہ حضرت نے
 فرمایا کہ غلام کو کھانا اور ثواب میں **ف** یعنی ایک ثواب کی عبادت کا اور دوسرا ثواب مالک کی اطاعت کا **ا** هُوَ كَضَرْتُمْ
 لِّلْعَبْدِ كَضَرْتُمْ وَلَكِنَّهُ وَلَا يَمْلِكُ مِنَ الْعَلَلِ اَلَا مَا يَطِيقُ مُسْلِمٌ مِّنْ اَبُو هُرَيْرَةَ شَرَّ رَوَايَتِ هُوَ كَضَرْتُمْ فَرَمَا
 غلام کو کھانا اور کپڑا سیان پر واجب ہو اور اوس سے کام کرولے مگر معنی اوسکو عبادت ہو **ق** جَبْرِ بْنِ مَعْصُومٍ سَہ
 حَمْسَةَ اَسْمَاءَ اَنَا مُحَمَّدٌ وَ اَحْمَدُ اَنَا الْمَسَاحِي الَّذِي يَفْعَلُ اللَّهُ بِي الْكَفَرُ وَ اَنَا اَلْحَقُّ اَشِيرُ اَللَّهِ
 وَ بَحْسُ النَّاسِ كَلَفَ قَدَمِي وَ اَنَا الْعَاقِبُ بَخَارِي مِّنْ سَوَالِ اَم م م ہوا کہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میرے پیچھے نہیں آئیں گے ہوں تو ہوں
 اب میں آتی ہوں مگر میرے بعد نہ آئیں گے ہوں میرے بعد نہ آئیں گے ہوں میرے بعد نہ آئیں گے ہوں میرے بعد نہ آئیں گے ہوں
فصل اس فصل میں یہ حدیثیں ہیں جن کے حصے پر ہم باطنی ہر شخص کو حضرت نے فرمایا کہ میرے پیچھے نہیں آئیں گے ہوں تو ہوں
 قائل ہوں اَمَّا الْمَسْبُورَاتُ فَاَلَّا لَ اَللَّهِ وَ اَلَا الصَّاحِبَةُ بَخَارِي مِّنْ سَوَالِ اَم م م ہوا کہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ باقی ہر چیز سے
 سولے بشارت دینے والی چیزوں کے صاحب کے بشارت دینے والی چیزوں کو نہ ہوں حضرت نے فرمایا کہ اٹھک خواب **و** نوبت کا
 غیب آتا ہو سو فرمایا کہ غیب سے علم آئے کاسو اپنے خواب کے اب کوئی طریقہ نہ ملا سواسطے کہ نبوت ختم ہو گئی **ق** اَبُو هُرَيْرَةَ
 لَمَّا بَلَغَ فِي الْقَهْدِ اَلَا تَلْكُنَا عَلِيٌّ مِّنْ مَّكَرٍ يَدُ صَاحِبِ خَرْجٍ وَ بَيْنَا كَصِيْبِي مِّنْ مَّصْنُوعِ بَخَارِي مِّنْ سَوَالِ اَم م م
 ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اگر کما جومے اور گو دین بولاسو آئیں اگر کوئی ایک عیسیٰ بن مریم کو مگر میرے والد ابولکلا و میرے
 والد کا و سالت میں کہ وہ جہینا جاتا تھا **ف** یعنی شہر خولگی کی حالت میں ان تین مسوا کو فی بھی نہیں بولا حضرت عیسیٰ کا بولنا
 تو قرآن میں مذکور ہے کہ حضرت مریم کی بلکہ اسمی ان کے کلام سے ثابت ہوتی ہوں میرے والد کے والد کے کا قصد یہ کہ نبی اسرائیل میں میرے والد

۱۲۸۳

۱۲۸۴

۱۲۸۵

۱۲۸۶

مجلد ثانی
کتاب النکاح
صفحہ ۳۳۰
جلد دوم
بہارِ شریعت

۱۲۸۷

کتاب النکاح
جلد دوم
صفحہ ۳۳۰
بہارِ شریعت

عابد و تھا عبادت خانے میں نماز پڑھتا تھا کہ اوسکی ماں مان آئی اوستے جرج کو بچا راجر جج نماز کے سبب نہ بولا نماز میں غول با
اوسکی ماں لبت گئی دو سکران چلا اوسکی ماں اوسکے پاس آئی تو بھی وہ نماز میں تھا اوسکے بچا رے سے نہ بولا تو اوسکی ماں بولنے دعا کی
کہ اگلی یہ نمبر جس تک حرام کا سببوں کا موہ نہ دیکھ یوسے بنی اسرائیل میں جرج کی عبادت کا بہت جرجا ہوا ایک حرام کار ریز
تھی جج کا حسن مشہور تھا اوستے کہما کہ دیکھو میں جرج کو دنگا کی ہون اور اوسکا تقویٰ طہارت سب کھوئی ہون سو وہ عورت
بدکار اوسکے روبرو گئی اوستے اوسکی طرف کچھ دھیان بھی نکلیا تو وہ ایک چرلے والے پاس گئی جو جرج کے عبادت خانے پاس
چلا کر اگلا تھا اوستے اوستے بدکاری کی جبر کا پیدا ہوا تو اوس بدکار عورت نے کہما کہ جرج کا لڑکا ہی پھر تو سب بنی اسرائیل
جرج سے باعقاد ہو گئے اوسکو عبادت خانے سے نکال لئے اور عبادت خانہ گردایا اور اوپر پار پڑنے لگی جرج نے کہما کہ لڑکا ہوا جو
مکمل کرتے ہو لوگوں کو کھانے کی کسی سبب بدکاری کی ہی تیرا لڑکا جی جرج نے کہما وہ لڑکا کہاں ہی تو لوگ اوسکو سنا سنے لائے
جرج نے کہما کہ مجھ کو نماز پڑھنے دو پھر وہ نماز پڑھے لڑکے کے پاس آیا اور اوسکے بیٹے میں اوسکی لڑکا کہما کہ ای لڑکے بول کہ
تیرا باپ کون ہے لڑکا بولا کہ میرا باپ غلام چرلے والا ہے پھر تو سب لوگ جرج کو چوتے چاتے لگے اور کہما کہ ہم تیرا عبادت خانہ سونے کا
بنادیں جرج نے کہما کہ کچھ اسکی حاجت نہیں جیسا تم کی گناہا و سہامی بنا دو سو اوسی طرح بنادیا اور شیر خوار لڑکے کا قصہ محل یاد
کہ اوسکی ماں نے گھوڑے پر سوار ایک مرد کو دیکھا تو کہما کہ اگلی میرے لڑکے کو ایسا کرنا اوس لڑکے نے دودھ پینا چھوڑ دیا اور کہما اگلی کچھ
ایسا کرنا پھر اوسکی ماں نے ایک عورت کو دیکھا کہ اوسکو چوری اور حرام کاری کی علت میں ملے تھے اوستے کہما کہ اگلی میرے لڑکے کو ایسا کرنا
لڑکے نے دودھ پینا چھوڑ کے کہما کہ اگلی کچھ ایسا ہی کرنا پھر لڑکے نے کہما کہ وہ سوار ظالم تھا اور یہ عورت محض بے تصور ہی سواسٹے

تیرے خلاف دعا کی **ق اَبُو مُرَّةَ لَمْ يَكُنْ بَابًا هُمُ الشَّيْ قَطُّ لَكَ ثَلَاثُ كَذَبَاتٍ تَشْتَكِي فِي**
ذَاتِ اللَّهِ قُلْ لَآ اِنِّیْ سَفِيْهُوْا قُلْ لَہٗ بَلْ لَعَلَّہٗ کَیْنِ هُمْ هٰذَا وَ اَحَدٌ فِیْ تِلْکَ اَسْوَءِ بَخَارِیْ اور سلم
میں ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ابراہیم بغیر کبھی ایسی بات نہیں کہ جس کو حقیقت میں سچی ہو اور ظاہر میں جھوٹو ہو
سو کہ تین یا کے دو باتیں خدا مقدمہ میں ایک اور کھایا قول کہ میں بجا ہوں اور دوسرا یہ قول بلکہ انکے اس بڑے نے کیا اور ایک بات
سارے کے حق میں **ف** حضرت ابراہیم کی قوم ستارہ پرست اور بت پرست تھی سوا انکی عید کا جب نہ آیا تو انھوں نے چاہا
کہ حضرت ابراہیم کو لجاؤں حضرت ابراہیم نے ہر وجہ انکے اعتقاد کے اپنے بھلے کا حیلہ اٹھایا ستاروں کو دیکھ کر فرمایا کہ میں ہماروں
یعنی ہر وجہ تمھارے اعتقاد کے گردش آسمانی اسکو بچا ہتی ہر کہ میں ہمارے بھگیا دلی رنج کو بیماری کہما اور جیسا کہ قوم عید میں شہر کے
باہر گیا تو بھانے میں جاکر سب تون کو توڑا اور تہوڑا بڑے بے کچھ پر کھدیا جب قوم نے پوچھا کہ تون کو کس نے توڑا تو حضرت ابراہیم
کہما اس بڑے نے توڑا جو کہ ہے پھر توڑا کہ ہے جو توڑے مرند ہو اپنی بت پرستی کی حاققت پر تو لوگ بڑکت کی نہایت تعلیم اور عبادت
کرتے تھے ہی سبب حضرت ابراہیم نے بت شکنی کی تو گویا وہی بت توڑنے کا سبب ہوا سواسٹے حضرت ابراہیم نے اوسکی طرف توڑنے کی
نسبت کی اور حضرت ابراہیم نے ملک عراق سے ہجرت کر کے شام کے ملک میں گئے تو وہاں کے بادشاہ کا معمول تھا کہ خوبصورت
عورت کو جمن لیتا اور اسے خانہ کو گوارڈالتا اور راجائی ہوتا اوسکو نہانا تو حضرت ابراہیم نے اپنی بی بی سارہ کو جو نہایت خوبصورت
تھیں فرمایا کہ اگر بادشاہ کو ملک و راج کو بچھو تو یوں کیسے کہ یہ شخص میرا بھائی ہی یعنی بی بھائی ہی تو نہنوں باتیں حقیقت میں

میں سے
فرمان
تو میری
میں سے
میں سے
میں سے
میں سے
میں سے

سچ نہیں اور فرما میں جو محمد بن عبد کا بن لو کہیں لہو و متیل حب و کوکان کھو لکھا لکھو فیہ و یسوی
لا حول ملة حين دعا لهما إبراهيم عليه السلام مسمن بن عباس سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا
تھا اون پاس اون نون میں اناج اور اگر مہوتا اونے پاس تو دعا کرتے انکے لیے اوسین میں سے کسی کے کوکون کے لیے جسے حق تعالیٰ
اونکے لیے حضرت ابراہیم علیہ السلام نے ق تیسرے الوصول میں لکھا ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام نے حضرت اسماعیل علیہ السلام
کی نبی سے اونکی گذران کا حال پوچھا اونھوں نے کہا اچھی طرح ہم فراغت سے بہتے ہیں اور اسکا شکریا پھر فرمایا تمھارا لکھا نا کیا
کہا گوشت فرمایا تمھارا دینا کیا ہو یا نبی اپنے سے دعا کی اور اللہ برکت کے اونکے لیے گوشت و ربانی میں حضرت اسماعیل علیہ السلام
نے فرمایا کہ اون نون میں اون پاس اناج تھا اگر ہوتا تو اوسین بھی دعا کرتے **ق ابوہمیرہ ان یذخل احدکم عکما**
الجنة قالوا ولا انت یارسول الله قال ولا انکالا ان یتعبدن الله منه یفضل ورحمة بناری اوسلم
میں ابوہریرہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ سیدوشت میں اوسکا عمل نیک نہ اخل کرے گا اصحاب نے کہا اور نہ آپ کو بھی کال
حضرت نے فرمایا اور مجھ کو بھی بشت میں میرا عمل علیجا گیا مگر یہ کہ نہ اخلو اپنے فضل اور رحمت میں نہ اخل لیوسف یعنی نبیوں
انفضل الی کہ صرف نیک عمل بجا نہ کے واسطے کہ فی زمین حقیقت میں نہات کا سبب خدا کا فضل ہے اور عمل اوسکا اثر اور بہا کہ
فصل ان فصل میں یہ حدیثیں ہیں جنکے سر پر تھابہ **انفس لقا صق الله آدم فی الجنة ثم له ما شاء**
ان یترکہ فجعل الیلین طیفین و یظن لکھ فلما دارا احواف عرف انک خلق لا یمک الک
مسلم بن انس سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ جب بتلانا یا ضلے آدم کا بشت میں تو اوسکو بٹارنے دیا جتنی مدت تو سکا پر چلنا
چاہا تو شیطان نے اوسکے گرد و گھومنا اور اوسکی طرف دیکھنا شروع کیا پھر جب اوسکو خالی بیت دیکھا تو بھان گیا کہ یہ ایسا
مخلوق ہے کہ تمھیں نہ سکے گا یعنی جو کچھ میں بغیر مہیا یا کر گیا اپنے اختیار میں نہ رہیگا **ف** بعضی روایت میں آیا ہے کہ آدم کا بٹلا
دنیا میں نبی اللہ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ بشت میں نہا تو طالب یہ کہ نہ آدم کا دنیا میں تیار ہوا اور بتلا بشت میں اور
بعضے کہتے ہیں کہ وجہ بشت میں داخل ہونے اور بتلا دنیا میں نہانے اور طائف کے درمیان ایک باغ میں جالیس برس گزارنا
اس حدیث میں بہت سے معلوم ہوئے باغ میں خوشنوں کو علوم نہ تھا اسکا نام کیا ہے اور اسکے پیدا کرنے سے کیا غرض ہو سکی ایک حدیث
جب شیطان نے اپنے کو خوب سا دیکھا جمال تو خالی بیت ہونے سے دریافت کیا کہ جو کچھ میں اسکو نبی جان بڑی بونہر گیا اور یوں بولا اگر
خدا نے اسکو خلیفہ فی زمین اسکی تابعداری نہ کرونگا اور اگر مجھ کو سپر اختیار دیا تو اسکو بلا کر کرنا تو **حق جانی لکنا لک نبی**
و لیس فمت فی العجی فجعل الله لی بیت المقدس من فطعت احدیہم عن ایتاہ وانا انظر لکھ
بنامی اوسلم میں یہ حدیث سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ جب مجھ کو معراج کے قدرے میں قریش نے بٹھلایا تو میں طبع میں نظر اٹھا
سوں نے بیت المقدس کو دیکھ لیا تاکہ میں نے کو کو اسے بتے اور نشانوں سے خبر دینا شروع کیا اور میں اوسکی طرف نظر کرتا تھا
فصل ان فصل میں یہ حدیثیں ہیں جنکے سر پر تھابہ **ق فاطمة بنت قیس اما ابو جہر فلا یقع عکما**
عن عائکہ واما معاویہ فہو علو لا مال لہ العجی اسامة واما ابو جہر فلا یقع عکما
زوجہا ابو عمر بن حفص البتہ فخطبہا ابو جہر و معاویہ بن ابی سفیان

۱۲۹۰

۱۲۹۱

۱۲۹۲

۱۲۹۳

بن امیر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جو خوشتر ہے لگی ہو اسکو تو دھو ڈال تین بار اور بھیجے کہ تو کمال اٹھال بھر اپنے عمر بھر کی تو اپنے جین کر تا ہی حضرت نے اوس سے فرمایا جو حضرت باس جہان کے مقام میں آیا اور اسنے عمر کرنے کی نیت کی تھی اور اسکی واسطی اس سرک بال خوشبو سے زود تھے اور اسپہنہ تھا سو اسنے کہا کہ میں نے عمر کے کا احرام باندھا ہے تو ایسا ہوں جیسا آپ دیکھتے ہیں اپنی یہ حالت سے عموماً درست ہی یا نہیں **ف** راوی سے روایت ہے کہ میں نے عمر فاروق سے کہا کہ مجھکو کمال آرزو ہے کہ حضرت کی صورت دیکھ لو تیرے کے وقت دیکھوں جب حضرت جہان کی منزل میں چلے گئے کہ پاس ہی اور تیرے کو ایک شخص خوشبو لگا رہے تھے پنے حضرت پاس آیا اسنے ہو چکا کہ حاضر تھا اس شخص کو تو میں آپ کیا فرماتے ہیں جسنے عمر کے نیت کی ہو اور خوشبو لگا رہے تھے پنے ہو تو حضرت نے ایک سات اسکو دیکھا جب حضرت پہنچے تو انرا منہ دھو کر عمر فاروق کی میری طرف اشارہ کیا یعنی آپ کی حضرت کی صورت کو سونپنے حضرت نے کہا کہ وہی کی شمت سے حضرت کا چہرہ نہایت سرخ ہو گیا تھا جب وہی اور تیر کی مجلس میں فرمایا کہ شمس کمان ہی جسنے مجھے عمر کے کا حال دیکھا تو تو لوگو اسکو بلا لے کر حضرت نے حدیث فرمائی معلوم ہوا کہ جب عمر کے اور حج کی نیت کرے تو خوشبو لگانا اور سیا کٹا رہتا درست نہیں

ق حَبِیرٌ مِّنْ مَّطْعَمِہٖ اَمَّا اَنَا فَاَنْصُصُ عَلٰی رَاسِیْ نَکَلْتُ وَ قَالَ الْحَارِثُ ثَلَاثًا وَاَشَارَ سَیِّدٌ مِّنْ عَکَلِہٖمَا **قَالَ الْحَبِیْرُ** نَمَارَاتِی الْفُسْلُ عِنْدَہٗ فَقَالَ بَعْضُ النُّعْمِ اَمَّا اَنَا فَاَنْصُصُ عَلٰی رَاسِیْ یَذَلُّ اَوْ کَذَلُّ اَمَّا ہِیْ

ابو سلمہ بن حریز سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میری بانی ڈالنا ہوں اپنے سر میں کھنجر اور چاری سے کھامیں بارہ نور سے اپنے دونوں ہاتھوں اشارہ کیا یعنی سر پرانی ڈالنے کا یہ حضرت نے اوس وقت فرمایا جب کہ صحابہ نے حضرت کے غسل میں شکر دینا دیکھا سو بعض قوم نے کہا یہ تو اپنے سر پر کوفانی فلانی چیز سے دھوا ہوں **ف** اس حدیث سے معلوم ہوا کہ غسل میں زین پرانی ڈالنا عرب کے کفر نکات سے غسل کرتے تھے ہوا سے حضرت نے کھنجر کو ذکر کیا **ق** عَائِشَہُ اَمَّا اَنَا فَقَدْ عَافَانِی اللّٰہُ وَ کَرِهْتُ اَنْ اُتَیْرَ عَلَی التَّکْلِیسِ شُکْرًا اَعْمَی اوسلم بن جعفر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ مجھکو تھلا چکا کر یا اور مجھکو ہراگا کہ لوگوں پر خدا کا حمد **ف** البید بن مصعب ہدی نے حضرت پر جادو کیا تھا چنانچہ اسکو کھانچا بائوچن باب فیصل میں ہو چکا جب اسکو کھانا دکر نہایت ہوا تو حضرت عائشہ نے حضرت سے کہا کہ رسول اللہ آپ اس جادو کو کھنچے پھر حضرت نے یہ حدیث فرمائی ہر چیز جادو گر کی سزا قتل ہے لیکن حضرت خود صاحب حق تھے کہ حضرت کا قصور اسنے کیا تھا سو حضرت نے دفع شر کی صلیت سے اور اپنے مزید کرتے **ف** ابوالدرداء بن اسلم نے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ قیامت کی نشانیوں سے پہلی نشانی تو یہ ہے کہ آل کو لوگوں کو بے ریب سے ہر طرح کی طرف مانگ لیا جائیگی اور یہاں کھانا اسکو ہستی کھا دینگے سو مجھ کی کلج کی کلجی ہوگی اور جب کہ وہی نے عورت کی سنی پرست اور غلبہ کیا تو اسنے لڑکے کو اپنی صورت پر عید کیا اور جب عورت کی سنی پرست ہوگی تو غلبہ کیا تو عورت نے لڑکے کو اپنی صورت پر عید کیا جان قانون کا حضرت نے عبد اللہ بن سلام کو اوس وقت جواب دیا جب اسونھوں نے مسلمان ہونے سے پہلے انھوں قانون کو بچھا **ف** عبد اللہ بن سلام میں یہودیوں کے بڑے عالم تھے حضرت عید بن زید نے کہا کہ تو عبد اللہ

۱۴۹۷

۱۴۹۸

۱۴۹۹

مسلم نے کہا کہ میں حضرت سے دو سوال کرتا ہوں پہلا جواب سو سب سے غیر کے اور کوئی نہیں کہ سکتا سو فرمائیے تو قیامت کی پہلی
نشانی کون ہے اور ہر شے لوگ پہلا کھا نا کھا دینگے اور دیکھا جو ان باب سے شاہد ہوتا ہے اس کا کیا سبب ہے حضرت نے فرمایا
پھر عبد بن سلام نے فرمایا سیدنا اہل النبی الذین ہم اہلنا فافہمہم یومنون فیہا کہ کھینچتے
ولکن نکاس اصابعہم النار یدہم یومنون فیہا وقال یخطا یا ہم فاما انہم فاما نہ حتی اذا کالوا فحما
اذن بالشفاعۃ ففی ہضمتا فی ضبا فی قبلی اعلا اہل الجنة ثم قیل یا اہل الجنة فیضوا
علیکم فیکفون نجات الخبائہم نکون فی جہنم السبل مسلم بن ابی سعید رضی عنہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ
دو خارجی لوگ جو حقیقت میں دوزخ کے لائق ہیں سو وہ ابوسمن نہری کے بیٹے ہیں لیکن کچھ لوگ نہ ہونگے کہ ان کو دوزخ کی آگ لگی ہوگی
ان کے گناہوں کے سبب یا ان فرما کہ ان کی خطاؤں کے سبب سو ان کو گناہوں کے کم کر دیا یہاں تک کہ جب یہ جہنم کو لگے تو ان کو
تو شفاعت کا حکم ہوگا سو وہ لائے ہوں گے جہنم کے کھنڈ کے کھنڈ تو بہشت کی نہروں پر کھیرے جاویں گے پھر کہو گا یہ ہشتادویں ہائی لو
تو وہ ہم اوٹھیں گے جیسے جھگی غور و دراز ہستی بہاؤ کے کورے کرکٹ میں یعنی کافرو دوزخ کے لیے بنے ہوتے ان کو
موت ہوگی کہ عذاب سے خلاصی باوین نہ زندگی ایسی آج میں ہیں ہو کر گناہگار مسلمان دوزخ میں بڑے چند مدت مرہ
ہو جاویں گے یعنی ہشت عذاب سے ہوش ہو جائیں گے گویا مر گئے پھر نہر کے بعد بہشت میں داخل ہونگے ہر دین دار کو
آما بعد الا ایھا الناس فانما آنا بشر فی شک ان تابی بینی رسول ربی فارجب وانا تارک
فیکم التعللین او لھما کتاب اللہ فیہ التورۃ والہدی فخذوا بیکتاب اللہ واستمسکوا
بہ واهل بیئنی اذین کہ اللہ فی اہل بیئنی اذین کہ اللہ فی اہل بیئنی اذین کہ اللہ فی اہل بیئنی
وفی ردا یہ کتاب اللہ فیہ والہدی والتورۃ من استمسک بہ واخذ بہ کان علی الہدی ومن
اخطا ضل وفی ردا یہ ہوی جہنم اللہ من اشعۃ کان علی الہدی ومن تن کہ کان علی ضلالہ
مسلم بن زید بن ارقم رضی عنہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ صبرا و صلوۃ کے بعد اس بات کا دریافت کرنا ضرور ہو کہ
خبردار ہو جاؤ اور لوگو کہ میں آدمی ہوں غفیر ہے کہ میرے پاس میرے رب کا پیغام اللہ والا آوے تو میں اس کا کھانا کھاؤں
یعنی ملک الموت آوے اور میرا انتقال ہو اور میں تم میں سے بڑی بھاری عمدہ چیز میں چھوڑے جا تا ہوں او میں اول تو خدا کی
کتاب جو حسین خور اور ہدایت ہو سو خدا کی کتاب کو لو اور خوب سا او سک جو چٹ جائے یعنی او سپر عمل کرو اور دوسری بزرگ چیز میرے
اہل بیت یعنی کھر طہ ہیں میں تم کو خدا والا ہوں اپنے اہل بیت کے متعدد میں میں تم کو خدا والا ہوں اپنے اہل بیت کے متعدد میں
میں تم کو خدا والا ہوں اپنے اہل بیت کے متعدد میں اور ایک ہوں وایت ہے کہ خدا کی کتاب میں ہدایت اور نور ہے جو او سک جو چٹ گیا
اور جس نے او سک لیا وہ ہدایت ہے جو او جس نے او سک جو چٹا وہ گمراہ ہوا اور دوسری روایت میں یوں ہے کہ قرآن خدا کی ہستی ہے
یعنی او سک طے کا وسیلہ جو جس نے او سک پیروی کی وہ راہ پر ہوا اور جس نے او سک جو چٹا وہ راہ کو جو ہلاک روایت ہے کہ ہجری
نویں سال جب حضرت حمزہ الدواعی کے گھر سے اور مکہ کے مینے کے درمیان اوس مقام پر پہنچے گا غریخ نام پر تو حضرت نے
خطبہ پڑھا خدا کا حمد کیا اور نصیحت کی اور یہ حدیث فرمائی تمام رب کے گروہ حقہ الدواعی میں حضرت کے ساتھ تھے اور غریخ نام

۱۵۰۰

۱۵۰۱

نسخہ خطی
مکتبہ
مطہ

۱۵۰۴

سخر عمر بن الخطاب بعد ان قال الله اني اعطيت الرجل وادع الرجل والذني اذع احب الي
من الذني اعطيت ولكذني اعطيت اقول اما لهما اذني في قلوبهم من الجنح والهلكة واذك اقول
لاي ما جعل الله في قلوبهم من الغنى والسخرة فيهم عمر بن الخطاب بنار من عرو من ثلث روات
كه حضرت في فرمايكه حماد و صلوة كه بعد بات تو به هر كه ضاكي قسم كبر في تهايون اكبر و لو و حماد و تهايون دو سره موكو و حو
مين حماد و تهايون و مير نه زيك زاده پيدا هر اوسه جسكو مين تهايون ليكن مين تو چند قومون كو ديتا هون اوسه كمين
او كه و لون مين صبري اور حرم مين كيتا هون اور بعضي قومون كو اس پر حماد و تهايون كه درك في او كه و لون مين بے پرواي اور خيال او
او ضمن مين عرو من ثلث روات حضرت كه باس كچه مال آيا حضرت في بعضون كو ديا او بعضون كو نه ديا پر حضرت كه معلوم
كه بكيال نمين يا وى بخيده مين حضرت في يه حديث فرماي نمين مير نه دينه كو محبت و نه دينه كو رنج كاسبت سمجھو بلكه اكل
معاذ كه بے صبر لاجي كو لون كو ديتا هون اور قناعت الوون كو قناعت پر حماد و تهايون ق عايشة اما بعد

۱۵۰۵

يا عايشة فاته بلفني عنك كذا وكذا فان كنت بريئة فسيبر عاك الله وان كنت العمت
يذنب فاستغفرني الله وتوب اليه فان العبد اذا اعترف بذنبه ثم تاب تاب الله عليه عايشة بنار
او سلمين حضرت عايشة بنار روات هر كه حضرت في فرمايكه حماد و صلوة كه بعد بات تو به هر كه يه مايشه كيتوري اسي اسي بات فرماي
سو اكر كو كذا باس كو بوگي تو خاني يه باكي بيان كر كيا اور اكر كو كذا باس كو ده هوني هو تو حضرت لك خدا س اور او سلف طرف تو بركه
كه بيشه فجب بيشه كنه كا قرا كيا پر تو به كي تو خدا او سلف تو به قول كر تها يه او سپر رحمت متوجه هونا يه حضرت عايشه بنار
نعت هوني تر حضرت في يه حديث فرماي باقي باسكا پورا قصه بانجو مين باب مين هو چيكا سخر اوالد زكوا اما صاحبكم

۱۵۰۸

فقد عامر يعني ابا بكر رضي الله عنه بنار مين ابو در و ايشه روات هر كه حضرت في فرمايكه كنه صاب
تو قر اني همان كو شد مي الا و صاب مولا صدوق اكبر مين ف اسكا پورا قصه بويكه كصديق او فاروق سے کسی ہاتھ
رج بوگيا خاص مين اس او بھلا رج مين حضرت باس آي تر حضرت في يه حديث فرماي بھ فاروق بھي آي او صفائي ہو گئي ق كنه
بن مالاك اما كذا فقد صدق فقد حتى يقضي الله فيك قاله كنه بنار مين او سر سلمين كسب مين مالك بنار مين
روايت هر كه حضرت في فرمايكه كنه توالد رسيج كها سوا او كنه بيان كنه كذا تير نه مين كچه مكر كرسه حضرت كسب مين مالك بنار مين

۱۵۰۹

فرماي روات هر كه كسب جنگ تو بويج حضرت كسب ساهر نكله تھے حضرت همان سے ياد آي كو نوجا و الا و سب سبب چھا
منامون چھو شقي سمين كها حضرت كو راني كر كيا كسب چھو تويه سب سلسل مين انھون كها كيا حضرت مين سواي فريد كھي
اور سامان كو دست كيا تھان چھلتا هون كل حلتا هون يه كنه مين كنه مين كها كيا حقايق مين كوئي مانع تھان حضرت في يه حديث
فرماي او كسب سبب كو نه او سپر وكھا او فرمايكه كوني كسب بات تير نه كسب حق تعالى نے او كھي راستي كر كرسه چھان كسب بولا كھي تو
قول كھي او راي و تاري او حو بھ سھنا فھون كھي مين او راي تير او تير مين معلوم كھو اكر اسي كا انجام نيك بولا جيو انھون مين مولا

الباب الثامن

فصل اس فصل مين يه حديثين مين جنكه سرے پر عدد يه يه شاك او ظي

ابو ذر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تین شخص ہیں جن سے خدا کا نام نہ لے گا قیامت کے دن اور ان کی طرف نظر رحمت نہ کیجے گا اور
 ان کو گنہوں سے ہلکے کرے گا اور ان کو عذاب دردناک ہو اور نہ لے گا پھر حضرت نے فرمایا کہ تین بار بار ہوا بوزے کہ اگر بار ہونے کے بعد لوگ
 اور ان کو تو بار بار گنہوں میں وی لوگ یا رسول اللہ حضرت نے فرمایا ایک ازار کا لٹکانے والا یعنی جس کا باجہ باز ازار منحنے سے بچے رہے
 دوسرا نیز اس کے دل والا جو احسان و تواضع سے تیرا پیچھا والا جو اپنی چیز کی گرم بازاری سے محمودی قسم کھا کر قیامت میں اس کی مانند
 گھٹا آجر ان سے کہ اهل الکتاب امن بربیعہ وامن بعماد والعبد المکمل اذا اذاعی حق
 الله وحق مولیہ ورجل کان عندہ امة یطوہا فاذا بها فاحسن تاخیرہا وعلیہا فاحسن
 تعلیمہا ثم اعنفہا فتن وجماعہ فذلک اجمع ان بخاری اور مسلم میں ابو موسیٰ کا روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تین شخص ہیں
 جن کو دوسرے ہر ان کو ہر ایک سے دو تہاں کتاب یعنی ہودی اور نصرانی جو ایمان لیا اپنے پیغمبر کا اور ایمان لایا محمد کا دوسرے ملوک جن سے
 خدا کا حق اور اپنے مالکوں کا حق اور ایک تیسرے مرد جس کے پاس ایک لونڈی تھی جس سے محبت کرتا تھا پھر اس نے اس کو
 ادب سکھایا سو بہت اچھی طرح اس کو سکھایا اور اس کو شرع کے حکم بتائے سو اس کی اچھی طرح تعلیم کی پھر اس کو آزاد کیا بعد اس کے
 اس سے نکاح کر لیا تو اس کے واسطے وہ ثواب میں ایک ثواب تعلیم اور آزادی کا دوسرا ثواب نکاح کر لینے کا اور ثواب آزاد کرنے کا
 من کل شہر ورمضان لالی رمضان فہذا اصیام الذہر کلہ صیام یوم عرفہ احتسب
 علی اللہ ان یکفر السنۃ الی قبلہ والسنۃ الی بعدہ وصیام یوم عاشوراء احتسب علی اللہ
 ان ینکفر السنۃ الی قبلہ مسلم میں ابو قتادہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تین روزے ہر ایک مہینے سے اور
 رمضان کا روزہ دوسرے رمضان تک سو یہ تمام سال کا روزہ جو عرفے کے دن کا روزہ میں اسید رکھتا ہوں غنیمت یہ کہ گناہ ٹاویگا
 ایک برس پہلے کا اور ایک برس پچھلے کا اور محرم کی دسویں تاریخ کا روزہ میں غنیمت اسید رکھتا ہوں کہ پہلے برس کا گناہ ٹاویگا
 رمضان میں ابو قتادہ سے روایت ہے کہ عمر فاروق رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہر روزہ رکھنا کیسا جو حضرت نے فرمایا
 کہ سال بھر کا روزہ رکھنے والا نہ روزہ دار جو سب روزہ یعنی درست نمین پھر یہ حدیث فرمائی یعنی جس کو سال بھر روزہ رکھنے کا
 شوق ہو سو رمضان کا اور ہر مہینے میں تین روزہ رکھے اس کو سال بھر کے روزے کا ثواب ملے گا **ہر ایک مہینہ** ثلاث
 للثب وسبع للیکل سلم حضرت سلمہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تین مہینے جو عورت کو اور سات راتیں
 کواری عورت کو **ف** یعنی اگر وہ عورت سے نکاح کرے تو تین مہینے برابر اس کے پاس ہے اور کواری پاس سات مہینے ہو
 مذہب ہوا مہینہ **ق** انس ثلاث من کفر فیہ وجد حلاوة الايمان من کان اللہ ورسولہ احب
 الیہ ممتا سواہا وان یحب العز لا یحبہ الا للہ وان یکفر لا ینکفر فی الکفر یبذل ان انکذہ اللہ
 ونبیہ کا ان یفقد فی التاوی بخاری اور مسلم میں انس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تین جہتیں ہیں جو حسین
 دی ہوئی وہ ایمان کی نہ یہی کامرہ ہو گیا ایک وہ شخص جس کے نزدیک اسدا و اسکا رسول تمام عالم سے زیادہ محبوب ہو دوسرے
 یہ کہ محبت کرے دوسرے اس طرح کہ نجات ہو اس کو گمراہی کے واسطے یعنی محبت میں نہ نیا کچھ لگاؤ نہ دین میں تیسرے یہ کہ رجا جانے
 ان کو نہ جہت جانے کو بعد اس کے کہ نہ لے اس کو گرفتار نہ کالہ میں اس کے لگتا ہوا گال میں ڈالا جائے یعنی گرفتار نہ لے اس سے

۱۵۲۰

۱۵۲۱

۱۵۲۲

۱۵۲۳

فصل
 در بیان
 فضائل
 حضرت
 علی رضی اللہ عنہ

۱۵۲۴

عن ابی موسیٰ
ابو جابر
درین حدیث

۱۵۲۵

عن ابی موسیٰ
ابو جابر

۱۵۲۶

اگر سے ڈرنا ہو ف تمام عالم سے خدا اور رسول کو زیادہ چاہئے گا یہ ہو کہ خدا اور رسول کی رضا مندی کی کو سبکی رضا مندی کی
مقدم کے خلاف شرع کام میں سبکی رعایت نہ کرے خواہ یہ ہونہو آقا ہر ایک حال لاک لا شعریٰ اگر تع فی امتی میں
اگر انجا حدیث کہ لا یزکوہن الا حساب والطن فی الانساب والاسنیقہ والاسنیقہ
والنیحاحہ مسلم بن ابوالکاسم روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ کیا خصلتیں میری امت میں نہ تھیں کہ میں نے ان کو غیور بنایا
میں نے ان کو اپنے خاندانوں پر دوسری عیب لگا لگا لوگوں کے نسب میں میری عیب کو چاہنا سنا روئے یعنی کھت کی تاثیر سے میرے عیب کو سمجھنا
چشمہ توفیق فی تحقیق لغز کربین اس امت میں جاری ہیں تمام عوام اتفاقاً و نجوم اور نور صگری میں مگر فرمانبر اور
خاندان پر فخر کرنا اور غیوروں کے نسب میں طعن کرنا اکثر خواص میں بھی موجود ہے اللہ بناوین کی قیود اللہ بن مکر و ان کے
من فیہ کان منافقا لیساً ومن کان فیہ خصلة فھن کانک فیہ خصلة من التفاق
حتى ید عملاً اذا لم یکن خان ولا اذا حکایت کذب ولا اذا عاہد عذر ولا اذا خا صم فحی کما یلو
مسلم بن عبد اللہ بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا چار چیزیں ہیں کہ حسین دی جباروں ہو گئی وہ نرسانہی ہو اور حسین
ایک خصلت ہو گئی اور جباروں سے تو او میں ایک ہی اتفاق کی نوعی میان تک کہ او کو چھوڑ دے ایک تو کہ یکبارہ اسکے پاس نہ
رکھے تو وہ میں نہایت کدے دوسری ایک بات کہے تو چھوڑ دے تیسری یہ کہ جب قول اور قرار کرے تو اس کے خلاف کرے چوتھی کہ یہ
جنگلے گا اور محکوم کرے تو نافرمانی پر ہے اور بہتان پر ہے اسلاف و قسم میں ایک یہ کہ میں کہنہ مومن زبان سے اسلام کا
افرا کرے حضرت کے وقت میں چھ منافق تھے اسی طرح کے تھے دوسرے یہ کہ دل میں کہنہ نہیں بلکہ اسلام ہو لیکن سست عقدا و فرسوق
و فوج میں گرفتار ہو اس حدیث میں دوسری قسم کا اتفاق مراد ہو یعنی ایمان کے لائق تو یہ تھا کہ آدمی ان بد کاموں سے بچا پھر جباران
کاموں میں گرفتار نہ آئے تو اسلام کا اظہار حسین کیچہ ظاہر نہ ہو اس واسطے اس کو منافق فرمایا ق طلعہ بن عبد اللہ بن عبد اللہ
صلوات فی النعم واللیک و سالک لوجہ سالک عن الاسلام فقال هل علی غیرہ فقال لا لا ان نطق و ذکر
لا لا ان نطق قال وصیام شکر رمضان فقال هل علی غیرہ فقال لا لا ان نطق و ذکر
لا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الت کوة فقال هل علی غیرہ فقال لا لا ان نطق
فادب النجل وهو یقول واللہ لا یرید علی هذا ولا انقص منہ فقال رسول اللہ صلی
اللہ علیہ وسلم ان صدق و بزدی انکم و ایہو ان صدق او دخل الجنة و ایہو
ان صدق کما ہی اور مسلم بن طلحہ بن عبد اللہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ باجی نمازین ہیں ایک ان لوگوں میں جس نے ابوس
مہر سے کہتا ہے حضرت اسلام کے ارکان اوچے پھر اوپر مڑے کہ کیا میرے اوپر ان باجی کے سولے اور بھی نمازی تو حضرت نے فرمایا ان میں
مگر اس طرح کہ تو نفل نماز پڑھے تو درست ہو حضرت نے فرمایا اور رمضان کے مہینے کے روزے پھر اوپر سے کہ کیا میرے اوپر اس کے سبھی
روزہ ہو تو حضرت نے فرمایا ان میں سے کہ تو نفل روزہ رکھے اور حضرت نے اوپر سے کہ تو کد کر کہ کیا تو اوپر سے کہ کیا مجھ پر کد کے سولے بھی
دینا میں حضرت نے فرمایا کہ نہیں گریوں کہ تو بطور نفل ایسے پھر پڑھ چلا وہ مرد و کد کر کہ کیا تھا کہ قسم خدا کی کہ اس پر نہ بھاگا
اور نہ میں پھر گھٹا دھکا تو حضرت نے فرمایا کہ مرد و کد کر کہ کیا ہے سچا ہی اور دوسری روایت یوں ہے کہ مرد و کد کر کہ کیا

اوسکے باپ کی قسم اگر وہ سچا ہی بایوں نہ رہا یا کہ ہشت میں داخل ہوا اوسکے باپ کی قسم اگر وہ سچا ہی ہوں حضرت نے حج کا ذکر نہیں کیا اوسولے کے اوسکا سوال سب سلام کے ارکان سے تھا اور یہ جواب سننے کے بعد کہ میں نہ بڑھاؤنگا نہ گھٹاؤنگا یعنی ان فرض چاروں میں اپنی طرف سے زیادتی کی نہ کرونگا اور یہ طلب نہیں کہ فرض کے سولے سرف نفل نہ ادا کرونگا اور حضرت نے جو کہ باپ کی قسم کھانی تو عرب کی عادت کے موافق حضرت کی زبان سے نکل گئی تعلیم نظر نہ تھی یا غیر خدا کی قسم اسکے بعد منع ہوئی ق عایشہ عظمیٰ من الذوات کلہن کما یسوق یقتلن فی الحرم العراب والحد آخا والعقرب والفاکاء والکلب العقور ہجاری اوسلم میں حضرت عایشہ رضی عنہا سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ بائج جانور میں ہی سب ہی اور بھائی مار ڈالے جاویں جرم میں ایک تو کو اور دوسرے چل تیسرے بھجوجتھے چوہا یا چوہن کتا کتے والاف جب تلے میں اسیکا مار ڈالو نہ درست ہوا تو اور کچھ بطریق اولیٰ انکو قتل کرنا درست ہوں آجی میں کہ سبعة یطعمہم اللہ فی ظلمہ یوم لا ینال الا ظلمہ امام عادل و شاکب کشتانی عبادۃ اللہ و رجل قلبہ معلق فی المساجد و رجلان تھا تابی اللہ انجمعا علیہ و نفق قاعلیہ و رجل دعتہ امرأۃ ذات منصب و جمال فقال لانی اخا و اللہ و رجل یصدق یصدق قاعلیہ فاحفظا حالکما علی التکلم شمالہ ما تنفق ینبئہ و رجل ذکک اللہ خالدا ففانصت عینا کہ ہجاری اوسلم میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ سات شخص میں جنکو خدا اپنے سایہ میں رکھتا ہے اوسکے سایہ کے سولے رکھیں سایہ نہ ہوگا یعنی قیامت میں ایک کو نصف دار و دوسرے دو جوان جو اسکا جوانی سے خدا کی بندگی میں مشغول ہوا تیس کو مرد جسکا دل مسجدوں میں لگا رہتا ہے یعنی بار بار جاعت واسطے مسجد میں جاتا ہوا اور مسجد کے بناؤ جانا میں لگا رہتا ہے چوتھے وی دومرد جو خدا ہی کے واسطے آپس میں محبت رکھتے ہیں ملتے ہیں قیسی ہوا رہا ہوتے ہیں قیسی پر پاؤں وہ مرد جسکو الدار بعت خوبصورت عورت نے بلایا یعنی بدکاری کے واسطے سولے کما کہ میں نے فرمایا ہوں مرد جو تیرے خلیت کی قولو سکھو چھپا یا میان تک کہ نہیں جانتا اوسکا ایمان ہاتھ کے کیر خراج کی اسکو دینے والے نے ساتواں مرد جسے خدا کو یکایک مال کاں میں جاری ہو گئیں اوسکی دونوں آنکھیں بھی خوب تھیں سے روایہ عایشہ عشر من الفطر فی نفل الشارب و اعفاء الخبیۃ و السواک و استنشاق الماء و قص الاظفار و غسل الذکر اجموعہ تنق الایط و حلق العانک و انتقا ص الماء قال الن لاوی و لیسیت العائشہ ق لا ان تکلمن المصنۃ مسلم میں حضرت عایشہ رضی عنہا سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ دس چیزیں پیدایشی سنت ہیں ایک تو خوب و چھ کرنا دوسری داڑھی چھوڑنا بعد تیرے تیسری سواک کرنا چوتھی پانی سے ناک صاف کرنا پانچویں ناخن کاٹنا چھٹی اونگلیوں کے جوڑوں کو دھونا کہ سبیل دھیمہ سے شاتون نفل کے بال اونکھارنا آٹھویں نہر ان کے بال مونڈنا نوین مینا کے بعد پانی سے ہتھکرا نا دواوی نے کہا کہ میں سو میں چیز قبول کیا مگر یہ کھلی ہوئی خوب یا وہ نہیں لیکن قرینے سے معلوم ہوتا ہے کہ سو چیز شاید ہی کرنا راہ ہو مگر عبد اللہ بن عمر ذاکر بقول خصلۃ اعلیٰھا مینحہ العن ماکم عامل بعمل یحصلہ فیہما کرجاء قواہا و تصدق موعدا لہا کادخلہ اللہ فیہا الجنة ہجاری میں عبد اللہ بن عمر رضی عنہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ چالیس نعمتیں ہیں ان میں سے اعلیٰ اور عمدہ وغیرہ کبریٰ عاریت دینا جو لوگوں کا وہ دوسرے

۱۵۲۷

عائشہ رضی عنہا سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ بائج جانور میں ہی سب ہی اور بھائی مار ڈالے جاویں جرم میں ایک تو کو اور دوسرے چل تیسرے بھجوجتھے چوہا یا چوہن کتا کتے والاف جب تلے میں اسیکا مار ڈالو نہ درست ہوا تو اور کچھ بطریق اولیٰ انکو قتل کرنا درست ہوں آجی میں کہ سبعة یطعمہم اللہ فی ظلمہ یوم لا ینال الا ظلمہ امام عادل و شاکب کشتانی عبادۃ اللہ و رجل قلبہ معلق فی المساجد و رجلان تھا تابی اللہ انجمعا علیہ و نفق قاعلیہ و رجل دعتہ امرأۃ ذات منصب و جمال فقال لانی اخا و اللہ و رجل یصدق یصدق قاعلیہ فاحفظا حالکما علی التکلم شمالہ ما تنفق ینبئہ و رجل ذکک اللہ خالدا ففانصت عینا کہ ہجاری اوسلم میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ سات شخص میں جنکو خدا اپنے سایہ میں رکھتا ہے اوسکے سایہ کے سولے رکھیں سایہ نہ ہوگا یعنی قیامت میں ایک کو نصف دار و دوسرے دو جوان جو اسکا جوانی سے خدا کی بندگی میں مشغول ہوا تیس کو مرد جسکا دل مسجدوں میں لگا رہتا ہے یعنی بار بار جاعت واسطے مسجد میں جاتا ہوا اور مسجد کے بناؤ جانا میں لگا رہتا ہے چوتھے وی دومرد جو خدا ہی کے واسطے آپس میں محبت رکھتے ہیں ملتے ہیں قیسی ہوا رہا ہوتے ہیں قیسی پر پاؤں وہ مرد جسکو الدار بعت خوبصورت عورت نے بلایا یعنی بدکاری کے واسطے سولے کما کہ میں نے فرمایا ہوں مرد جو تیرے خلیت کی قولو سکھو چھپا یا میان تک کہ نہیں جانتا اوسکا ایمان ہاتھ کے کیر خراج کی اسکو دینے والے نے ساتواں مرد جسے خدا کو یکایک مال کاں میں جاری ہو گئیں اوسکی دونوں آنکھیں بھی خوب تھیں سے روایہ عایشہ عشر من الفطر فی نفل الشارب و اعفاء الخبیۃ و السواک و استنشاق الماء و قص الاظفار و غسل الذکر اجموعہ تنق الایط و حلق العانک و انتقا ص الماء قال الن لاوی و لیسیت العائشہ ق لا ان تکلمن المصنۃ مسلم میں حضرت عایشہ رضی عنہا سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ دس چیزیں پیدایشی سنت ہیں ایک تو خوب و چھ کرنا دوسری داڑھی چھوڑنا بعد تیرے تیسری سواک کرنا چوتھی پانی سے ناک صاف کرنا پانچویں ناخن کاٹنا چھٹی اونگلیوں کے جوڑوں کو دھونا کہ سبیل دھیمہ سے شاتون نفل کے بال اونکھارنا آٹھویں نہر ان کے بال مونڈنا نوین مینا کے بعد پانی سے ہتھکرا نا دواوی نے کہا کہ میں سو میں چیز قبول کیا مگر یہ کھلی ہوئی خوب یا وہ نہیں لیکن قرینے سے معلوم ہوتا ہے کہ سو چیز شاید ہی کرنا راہ ہو مگر عبد اللہ بن عمر ذاکر بقول خصلۃ اعلیٰھا مینحہ العن ماکم عامل بعمل یحصلہ فیہما کرجاء قواہا و تصدق موعدا لہا کادخلہ اللہ فیہا الجنة ہجاری میں عبد اللہ بن عمر رضی عنہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ چالیس نعمتیں ہیں ان میں سے اعلیٰ اور عمدہ وغیرہ کبریٰ عاریت دینا جو لوگوں کا وہ دوسرے

۱۵۲۸

عائشہ رضی عنہا سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ بائج جانور میں ہی سب ہی اور بھائی مار ڈالے جاویں جرم میں ایک تو کو اور دوسرے چل تیسرے بھجوجتھے چوہا یا چوہن کتا کتے والاف جب تلے میں اسیکا مار ڈالو نہ درست ہوا تو اور کچھ بطریق اولیٰ انکو قتل کرنا درست ہوں آجی میں کہ سبعة یطعمہم اللہ فی ظلمہ یوم لا ینال الا ظلمہ امام عادل و شاکب کشتانی عبادۃ اللہ و رجل قلبہ معلق فی المساجد و رجلان تھا تابی اللہ انجمعا علیہ و نفق قاعلیہ و رجل دعتہ امرأۃ ذات منصب و جمال فقال لانی اخا و اللہ و رجل یصدق یصدق قاعلیہ فاحفظا حالکما علی التکلم شمالہ ما تنفق ینبئہ و رجل ذکک اللہ خالدا ففانصت عینا کہ ہجاری اوسلم میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ سات شخص میں جنکو خدا اپنے سایہ میں رکھتا ہے اوسکے سایہ کے سولے رکھیں سایہ نہ ہوگا یعنی قیامت میں ایک کو نصف دار و دوسرے دو جوان جو اسکا جوانی سے خدا کی بندگی میں مشغول ہوا تیس کو مرد جسکا دل مسجدوں میں لگا رہتا ہے یعنی بار بار جاعت واسطے مسجد میں جاتا ہوا اور مسجد کے بناؤ جانا میں لگا رہتا ہے چوتھے وی دومرد جو خدا ہی کے واسطے آپس میں محبت رکھتے ہیں ملتے ہیں قیسی ہوا رہا ہوتے ہیں قیسی پر پاؤں وہ مرد جسکو الدار بعت خوبصورت عورت نے بلایا یعنی بدکاری کے واسطے سولے کما کہ میں نے فرمایا ہوں مرد جو تیرے خلیت کی قولو سکھو چھپا یا میان تک کہ نہیں جانتا اوسکا ایمان ہاتھ کے کیر خراج کی اسکو دینے والے نے ساتواں مرد جسے خدا کو یکایک مال کاں میں جاری ہو گئیں اوسکی دونوں آنکھیں بھی خوب تھیں سے روایہ عایشہ عشر من الفطر فی نفل الشارب و اعفاء الخبیۃ و السواک و استنشاق الماء و قص الاظفار و غسل الذکر اجموعہ تنق الایط و حلق العانک و انتقا ص الماء قال الن لاوی و لیسیت العائشہ ق لا ان تکلمن المصنۃ مسلم میں حضرت عایشہ رضی عنہا سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ دس چیزیں پیدایشی سنت ہیں ایک تو خوب و چھ کرنا دوسری داڑھی چھوڑنا بعد تیرے تیسری سواک کرنا چوتھی پانی سے ناک صاف کرنا پانچویں ناخن کاٹنا چھٹی اونگلیوں کے جوڑوں کو دھونا کہ سبیل دھیمہ سے شاتون نفل کے بال اونکھارنا آٹھویں نہر ان کے بال مونڈنا نوین مینا کے بعد پانی سے ہتھکرا نا دواوی نے کہا کہ میں سو میں چیز قبول کیا مگر یہ کھلی ہوئی خوب یا وہ نہیں لیکن قرینے سے معلوم ہوتا ہے کہ سو چیز شاید ہی کرنا راہ ہو مگر عبد اللہ بن عمر ذاکر بقول خصلۃ اعلیٰھا مینحہ العن ماکم عامل بعمل یحصلہ فیہما کرجاء قواہا و تصدق موعدا لہا کادخلہ اللہ فیہا الجنة ہجاری میں عبد اللہ بن عمر رضی عنہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ چالیس نعمتیں ہیں ان میں سے اعلیٰ اور عمدہ وغیرہ کبریٰ عاریت دینا جو لوگوں کا وہ دوسرے

۱۵۲۹

۱۵۳۰

اور مسلم بن انس سے روایت ہو کہ حضرت سہیلؓ نے فرمایا کہ قسم ہو اوسکی جسکے قابو میں میری جان ہو کہ البتہ تم لوگوں میں انصاری میرے نزدیک
 سب لوگوں سے زیادہ تر کیا ہے جو حضرت سہیلؓ کو براہ کسو فرمایا **خ** ابو سعیدؓ وقتاً ذیٰ القربان الثمان والذی نفسی بیدہ
 انھا تعدل ثلث القرآن یعنی سورۃ الاحقاص بخاری میں ابو سعیدؓ وقتاً ذیٰ القربان الثمان سے روایت ہو کہ
 حضرت سہیلؓ نے فرمایا کہ قسم ہو اوسکی جسکے قابو میں میری جان ہو کہ البتہ قل مولد احد بربر قرآن کی تمانی کے ہر اونی ذیٰ القربان
 نفسی بیدہ لا ینبئہ الا من عنک حجج السماء وکل کلمہ الا فی اللک المظلمۃ المصحیۃ
 انیۃ الجحۃ من شرب منها لم یقل اخر ما علیہ یتغیب فیہ وینزل ابان من الحجۃ ومن شرب
 منه لم یطعم عنہ وکے مثل طویلہ ما بین ثمان الی آئیلہ ما کوہ اسئل بیک صا من اللہن واحلہ
 من السئل **ک** کہ حین قال یا رسول اللہ ما انیۃ الحق من سلم بن ابو ذر سے روایت ہو کہ
 حضرت سہیلؓ نے فرمایا کہ قسم ہو اوسکی جسکے قابو میں میری جان ہو البتہ عرض کوثر کے برتن یا وہ ترین آسمان کے چھوٹے بڑے ستاروں
 کی گنتی سے بڑھوں کی گنت جان کہ جیسے ستاروں کی گنت ہوتی ہو اندھیری بے بدلی والی رات میں بہشت کے برتن جو ان سے پیہ
 پیا سار ہے آخر طرے تک یعنی ہیشہ جبکہ اس عرض میں بہشت کے دو پرے لے بہتے ہیں جو اس سے پیہ پیا سار ہے
 اوسکا جو راؤ لہا ولبا کے برابر جو جتنا فرق جو عمان سے آئیلہ تک بانی اوسکا زیادہ تر سفید رو دکھ اور شیرین تر شہد سے یہ حضرت
 ابو ذر سے فرمایا جبکہ ابو ذر نے کہا یا رسول اللہ عرض کوثر کے برتن کتنے ہیں **ف** عان اور ایک شہر میں شام میں **ق**
 ابو ہریرہؓ والذی نفسی بیدہ کا ذکر رکھا کہ کوثر کے کوثری کچھ اذ القربان کا بل علیٰ الحق
 بخاری اور مسلم بن ابو ہریرہؓ سے روایت ہو کہ حضرت سہیلؓ نے فرمایا اوسکی قسم جسکے قابو میں میری جان ہو کہ البتہ میں مانگو گا کچھ دون کو
 لینے عرض کوثر سے جیسے عرض پرے غیر کے اونٹ مانگے جاتے ہیں **ف** یعنی کفار اور منافقین اور مرد عرض کوثر سے برکت
 جابوئے ہر اونی ہر کورۃ والذی نفسی بیدہ کا ذکر رکھا کہ کوثر کے کوثری کچھ اذ القربان کا بل علیٰ الحق
 اولا ذکر علی شیء اذ اقلتمو کما بکتم افسوا السلام بیکم مسلم بن ابو ہریرہؓ سے روایت ہو کہ
 حضرت سہیلؓ نے فرمایا اوسکی قسم جسکے قابو میں میری جان ہو کہ بہشت میں نہاؤ گے جب تک ایمان نہ لاؤ گے اور پورے ایمان نہ نہو گے جب تک
 آپس میں محبت نہ نہاؤ گے کیا میں تجھ کو نہ لاؤں جو چیز کجا بسکلو تو آپس میں دوستدار بن جاؤ سلام علیک کرنا رنج اور دلپے
 مسلمان لوگوں میں **ف** یعنی بہشت کا ملنا ایمان پر موقوف ہو اور ایمان محبت پر موقوف تو معلوم ہوا کہ بہشت محبت پر
 موقوف ہو حضرت سہیلؓ نے محبت حاصل کرنے کا آسان طریقہ بتلایا یعنی اسلام علیک کرنا سلام سے اس واسطے محبت حاصل ہوتی ہو کہ دعا
 خیر ہو یعنی خدا کیجو ہر ملا سے سلام کے واسطے ہو کہ آدمی اپنے خیر خواہ دعا مانگنے والے کو اپنا دوست جانتا ہو آپ بھی اوسے محبت
 کرنا ہی چیز خیر خواہ اور احسان بھی محبت کا سبب ہو لیکن احسان اور سخاوت تمام عالم کے مسلمانوں سے نہیں ہو سکتی اور اسلام آسان
 بات ہو کہ ہر ایک کو ہو سکتا ہی اس واسطے حضرت نے اسی کو خاص کر کے بتلایا لیکن فہوس عجب واثرا نہ ہو گیا ہو کہ عجاوین اور غور کے
 سبب اپنے لوگ سلام علیک کرنے سے ناخوش ہوئیں اور عداوت پر کمر باندھتے ہیں محبت اور خیر خواہی کی چیز ان اولیوں کے
 نزدیک عداوت کا سبب ہو گئی **خ** ابو ہریرہؓ والذی نفسی بیدہ کا ذکر رکھا کہ کوثر کے کوثری کچھ اذ القربان کا بل علیٰ الحق

۱۵۳۵

۱۵۳۴

۱۵۳۷

۱۵۳۸

۱۵۳۹

بہشت کا بل علیٰ الحق

۱۵۵۳

فساد میں گوشت گیری اختیار کی تھی **ق** ابو محمد بن الساعدی سنیہ الدیکلہ رنج شدید فلا یفقر فیہا احدکم کان لہ یعیس فلیستہ عقالہ **و** قالہ یقو کہ بخاری اور مسلم بن ابی حمزہ ساعدی ہنسے روایت

۱۵۵۴

کہ حضرت نے فرمایا کہ ایک رات مغرب ہو کر ایک سخت آندھی پلے گی تو او میں نہ کوئی کھڑا رہے سو جسکے پاس اونٹ ہو تو چاہیے کہ اسکا زانو بند مضبوط باندھے حضرت نے قبول میں فرمایا **ف** نوین سال ہجری مکہ شام میں حضرت جنگ بول میں گئے سو وہاں ایک سال یہ حدیث فرمائی چنانچہ نہایت سخت آندھی اسی رات پلے ایک شخص کھڑا تھا اسکو آندھی نے اونٹ کر کے پہاڑ ڈال دیا

۱۵۵۵

اور یہ کہ کسی دنوں کی راہ **ق** علی بن سیف بن قحطم فی اخرا التومان حد ثاء الاستان شہداء الاخلاق یقولون من خیر قول الذی یقرؤ القرآن لا یجاء و ر ائما ہم صاخر من یقرؤ من الذین صاخر من الشہ من الرمیۃ فایکما لقیتموہم فاقولوہم فان فی قتلہما اجر لمن یتاکمہم

۱۵۵۶

عند اللہ یوم اعلیٰ علیہ بخاری اور مسلم بن علی مرتضیٰ ہنسے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا غریب ایک قوم یہ کہ ایک آنحضرت نے میں کہ عمر ناقص عقل کا دم رنگ بتر کو کون کا سا کلام پڑھینگے قرآن کو ایمان نہ اور تم کمال کے زخموں کے نیچے بیسی ایمان کا کچھ اثر ہو گا کل جاوینگے دین سے جسے تیر نکل جائے سکاری جانور سے سو جہان کہیں تم اون سے ملو تو کہو کہ

۱۵۵۷

سوالہ اور کہ قتل کرنے میں قتل کرنے والوں کو ثواب ہر قیامت میں خدا کے نزدیک **ف** اس قوم سے خارجی ہو کر کہوں جنکو علی مرتضیٰ نے قتل کیا ہوا تو میں سے سہلوں فی اخرا التومان حد ثاء الاستان شہداء الاخلاق یقولون من خیر قول الذی یقرؤ القرآن لا یجاء و ر ائما ہم صاخر من یقرؤ من الذین صاخر من الشہ من الرمیۃ فایکما لقیتموہم فاقولوہم فان فی قتلہما اجر لمن یتاکمہم

۱۵۵۸

و لا اباؤکم فایا کم و ایتاہم سلم بن ابی ہریرہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا غریب میری کچھلی است میں کچھ لوگ ہونگے جو نہ بین ظاہر کریں گے اور وہی بامین سے کہیں گے جنت اور تھارے باپ ادوں میں نہیں نہیں ہو دو رہا تو کم اون سے **ف** اس حدیث میں اہل بیت کا ذکر ہو جو اسلام کے مخالف نہ کاسون کو رائج کرتے ہیں برخلاف اجماع مسلمین کے خواہ

۱۵۵۹

جموٹی حدیث بنا کر خواہ اولیا اندکی طرف نسبت کر کے خواہ اماموں کی طرف اس حدیث سے صاف معلوم ہوا کہ یہ تحقیق کسی بات کو نا جائز ہے کہ اسمین دین بگڑا ہو اور اسی سبب سے ہزاروں بعثتیں عالم گیر ہو گئیں **فصل فی المضارع** اس فصل میں محدثین ہیں جسکے سرے پر مضارع کا صنف ہوا انس اب باب الحقیۃ

۱۵۶۰

یوم اعلیٰ علیہ فلیستہ عقالہ **و** قالہ یقو کہ بخاری اور مسلم بن ابی حمزہ ساعدی ہنسے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ ایک رات مغرب ہو کر ایک سخت آندھی پلے گی تو او میں نہ کوئی کھڑا رہے سو جسکے پاس اونٹ ہو تو چاہیے کہ اسکا زانو بند مضبوط باندھے حضرت نے قبول میں فرمایا **ف** نوین سال ہجری مکہ شام میں حضرت جنگ بول میں گئے سو وہاں ایک سال یہ حدیث فرمائی چنانچہ نہایت سخت آندھی اسی رات پلے ایک شخص کھڑا تھا اسکو آندھی نے اونٹ کر کے پہاڑ ڈال دیا

۱۵۶۱

اور یہ کہ کسی دنوں کی راہ **ق** علی بن سیف بن قحطم فی اخرا التومان حد ثاء الاستان شہداء الاخلاق یقولون من خیر قول الذی یقرؤ القرآن لا یجاء و ر ائما ہم صاخر من یقرؤ من الذین صاخر من الشہ من الرمیۃ فایکما لقیتموہم فاقولوہم فان فی قتلہما اجر لمن یتاکمہم

۱۵۶۲

عند اللہ یوم اعلیٰ علیہ بخاری اور مسلم بن علی مرتضیٰ ہنسے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا غریب ایک قوم یہ کہ ایک آنحضرت نے میں کہ عمر ناقص عقل کا دم رنگ بتر کو کون کا سا کلام پڑھینگے قرآن کو ایمان نہ اور تم کمال کے زخموں کے نیچے بیسی ایمان کا کچھ اثر ہو گا کل جاوینگے دین سے جسے تیر نکل جائے سکاری جانور سے سو جہان کہیں تم اون سے ملو تو کہو کہ سوالہ اور کہ قتل کرنے میں قتل کرنے والوں کو ثواب ہر قیامت میں خدا کے نزدیک **ف** اس قوم سے خارجی ہو کر کہوں جنکو علی مرتضیٰ نے قتل کیا ہوا تو میں سے سہلوں فی اخرا التومان حد ثاء الاستان شہداء الاخلاق یقولون من خیر قول الذی یقرؤ القرآن لا یجاء و ر ائما ہم صاخر من یقرؤ من الذین صاخر من الشہ من الرمیۃ فایکما لقیتموہم فاقولوہم فان فی قتلہما اجر لمن یتاکمہم

[illegible]

1542

154F

1547

1545

1544

1546

عن اس حدیث سے اویس قرنی کی عمر فاروق اور علی مرتضیٰ پر نسبت نہیں ثابت ہو سکتی ہو اسلئے کہ تابعی مصاب سے فصل
 نہیں ہو سکتا اور صرف عمار کے لئے یہ نسبت ثابت نہیں یعنی اس واسلئے کہ خود حضرت نے اپنے واسلئے بعض لوگوں سے دعا کروائی ہے
 بلکہ انھوں نے قت کی اذان میں تمام اس سے اپنے مقام کو کہہ کر اس واسلئے دعا کرنے کو فرمایا ہے **وہ جابر یا اکل اهل الجنة**
فيما وليس عون ولا يعقظون ولا يمتطون ولا يبقون ولكن طعنا مهن هذا لك جشأ ودر شح
 کی شیخ **السكك يا همون التسيب والحمد كما يا همون النفس** مسلم میں جابر سے روایت ہے کہ حضرت
 فرمایا کہ اگر ایک بھتیجہ لوگ بہشت میں اور ایک بھتیجہ غریب جو ایک کے نزدیک جمائے گئے اور نہ شتاب کرے گئے لیکن انجا کی گمان
 ڈکا ہو جو ایک جیسے مشک کی تراوت کو نکالو اہم ہو اگر کسی تسبیح اور خدا کی ستایش جیسا ان کو سانس کا اہم ہو یا ہر
 بہشت عالم پاک جو ان کے کھانے کا فضل اس عالم کی طرح نہیں بلکہ وہ ان کا فضل جو کار و خوشبودار سپنا ہو کر نکل جائے گا
 اور جیسے اس عالم کی زندگی ہو جیسے اور سانس لینے پر وقوف ہی اس طرح اس عالم پاک میں جہان اللہ اور کھانا نہ مانتا ہے
 قائم تمام ہو کر روح راحت فرماوگا **هو اوسع عظمة بن عمر ولا كصاري يوم القوم افي وكم**
ليكناب الله فان كان في القرآن سواة فاعلموا بالشتا فان كان في الشنت سواة فاعلموا
بحج و كان كان في الشنت سواة فاعلموا بالشتا فان كان في الشنت سواة فاعلموا
في بيتهم على تكلمت الا ياخذ به مسلم ابن مسعود انصاری سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ
 امامت کس قوم کی جو ان میں قرآن کا بڑا قاری ہو سو اگر وہ لوگ قرآن میں برابر ہوں جو جو بڑا عالم حدیث اور فقہ کا ہو سو امامت کس
 اور اگر بیشاد و فقیہ میں بھی برابر ہوں تو امامت کس جیسے ان میں سے اول حیرت کی ہو سو اگر حیرت میں سب برابر ہوں تو ان میں
 بری عمر والا امامت کس کے اور امامت کس کے ایک مرد و دوسرے مد کی حکوت کے مقام میں اور نہ شتے ایک گھر میں او سکی سند پر ہو
 او سکی اجازت کے **ف** فقہین لکھا ہے کہ امامت میں فضل عالم ہی او سکی بد قاری او سکی بد قاری او سکی بد قاری او سکی بد قاری
 اس حدیث میں قاری کو عالم پر فضل فرمایا اس واسلئے کہ حضرت نے وقت میں جو قاری ہوتا تھا سو عالم ہی ہوتا تھا اور پچھلے زمانے
 میں اکثر لوگ فارسی ہوتے تھے اور عالم نہیں ہوتے اس واسلئے فقہ میں عالم کو قاری پر مقدم رکھا اور حیرت کا ثواب صحابہ خیرم ہوا
 اس واسلئے فقہ میں رہنے والی کو حیرت کا ثواب مقدم کیا **هو انش عتيق من الجحيم ما شاء الله ان يبعثي فمريش الله**
له كلفا و ما آتينا مسلم ابن مسعود سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ باقی رہے گا بعضا مکان بہشت کا جس مدت کہ
 خدا او سکی باقی رہنے کو چاہے گا پھر خدا او سکی واسلئے ایک خلق کو پیدا کرے گا جس قسم سے کہ چاہے گا **ف** یعنی بہشت ایسا وسیع
 مقام ہو کہ باوجود بہشتیہ کے داخل ہونے کے کچھ مکان خالی رہا و چھ چند مدت کے بعد خدا او سکو بھی کسی مخلوق سے باہر کرے گا
هو انش يبعثي الله كمال من هو و اصبهان سمعون الفاعليكم العيا لیس مسلم میں ابن مسعود
 روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ دجال کے تابع ہونے کے بعد انھوں نے ستر ہزار یودی اور پیر سیاہ بدین ہو گئی **ف** انش یبعثي
 السميت كلفا و ما آتينا مسلم **هو انش يبعثي الله كمال من هو و اصبهان سمعون الفاعليكم العيا لیس** مسلم میں ابن مسعود
 بخاری اور مسلم میں ابن مسعود سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ چھ لکھ عانی ہونے کے بعد جہیزین او سکی قزاق ہو گا اور مال او سکی

۱۵۸۳

۱۵۸۴

۱۵۸۵

۱۵۸۶

۱۵۸۷

عن ابن مسعود

۱۵۹۲

قَالَ رُبُّ عِبَادِي يَكْفُرُ مِنْ الرِّضَا عَمَّا يَكْفُرُ مِنْ النَّسَبِ بِنَارِي أَوْ سَلَمَ مِنْ عَمَلِ سَلَمِ بْنِ عَبَّاسٍ نَحْنُ رَوَيْتُ بِرِ

۱۵۹۳

كَهْزَتِ لَمْ يَزَلْ كَلَامُ حَرَامٍ بَوَاحٍ وَدِهِيْنِي سَهْوًا كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

۱۵۹۵

الْكَلْبَةِ دُوَا الشَّوَقَيْنِ مِنْ الْحَبْسَةِ بِنَارِي أَوْ سَلَمَ مِنْ الْعَبْرَةِ بِرِ رَوَيْتُ بِرِ كَهْزَتِ لَمْ يَزَلْ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ

۱۵۹۶

مَشِي جَوْرِي بِنْدِي الْاِفْتِصَامِ كَقَبْرٍ بِرِ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

خَرَبَ بَوَا كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

كَهْزَتِ لَمْ يَزَلْ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

دَفْعَ مِنْ بَرِيْنِ بَرِيْنِ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

يَكْفُرُ مِنْ النَّسَبِ قَالِ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

مِنْ النَّسَبِ قَالِ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

قَالِ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

ثُمَّ لِيَعْلَمَ مَكَانَ حَرَامٍ أَوْ سَلَمَ مِنْ الْعَبْرَةِ بِرِ رَوَيْتُ بِرِ كَهْزَتِ لَمْ يَزَلْ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ

۱۵۹۷

أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

۱۵۹۸

كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

كَلَامُ حَرَامٍ يَرْتَدُّ أَسْبَغُ فَيُنْفِي جَيْسَةَ سَلَامٍ أَوْ بَرِيْنِ أَوْ زَالِ أَوْ بَرِيْنِ

549

اور انھے کے اشارے سے جگہ جاتی ہیں ق اَبُو مُرَّةَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ اَمْتِي رُمْزُ كَاهِنٍ سَبْعُونَ اَلْفًا
نَبِيٌّ رُجُوْهُمُ اِمَامَةٌ اَلْقَدَرُ لِكَلَّةِ الْبَدْرِ بخاری اور مسلم میں ابو ہریرہؓ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اہل ہنگام
بہشت زبان ہری است سحابا گودار و سرسبز را ہونے روشن ہوئے اور ان کے ہونے طیب ہے حاندروشن ہو جائے اور جو زمین رات کو ہر

140

اَوْ هُمْ يَنْتَظِرُونَ اَمْ يَنْتَظِرُونَ الْفَرَادِمَ لَا وَكَا حَيْثُ هُمْ عَلَى صَوَادِ الْقَمَرِ سَلَامٌ لِّاُولٰٓئِكَ
روایت میں حضرت علیؓ کے داخل ہونے پر بہشت میں ہری است سے تیز راوی ایک ہی گروہ میں ہری است سے جاننا کہ بہشت
ف متقی اور مکمل لوگ مراد ہیں جو بر محل میں خدا پر نظر رکھتے ہیں۔ حساباً ظاہری کے گرفتار نہیں جتنا بچہ اور حدیث میں یہ یقین

1401

صاف یا ہرق ابن عمرؓ رضی اللہ عنہما اہل الجنتۃ الجنتۃ وأهل النار النار التارک لشیئکم معنی دُن بیکمہم
فیقول یا اہل الجنتۃ لا موت دیا اہل النار لا موت کُل حال دنیا کا موفیہ بخاری اور مسلم عبد اللہ بن عمرؓ سے روایت ہے کہ حضرت
فرمایا کہ د اہل کریمہ ہشتین کو بہشتین اور دوزخیوں کو دوزخ میں پھرا دیکھا گیا ایک پکارنے والا اونسے دس یاں میں پھر پکارا گیا

1402

انہی سنیو اب کلموت میں اور ی دور حروب کلموت میں ہر ایک شخص ہمیشہ رشتے والا جس مکان میں کہیں ہو گیا معلوم ہوا کہ کشتیوں اور دروخیوں کی کبھی فنانہیں بن جھانج باسور یا لیکن یا آواز فہرسلان انہنگاروں کے دروغ سے بھٹکنے کے ہوگی تاکہ ابشتی کے کشتیوں میں رہیں اور دروخی ایسی آسم کے طین الہی ترے غصے بنا ہوا کہ اٹھ کرے یک حل من اٹھو الجنتہ سبغون الفا بقر حسب اس سلمہ اور میر سے روایت کہ حضرت یوسف نے فرمایا کہ اگر خدا تعالیٰ ہمت میرے سے نہ فرما دے

1404

حساب کے لئے اور کہ نامہ اعمال صرف ان لوگوں کے لئے ہے جو بیشک زیادہ گفت و شنید میں لگے۔ خزانہ عتبات میں جو حَمُّ اللہ اُمِّ الشَّعِیْبِ کو لکھا کہ رَضَمٌ اَقَالَ لَوْ کَرِهْتَ مِنْ رَضَمٍ لَکَانَ ذَکْرُ مُمْ عِیْنًا قَدِیْمًا بِنَاہِی مِّنْ عِبَادِہِ بن عباسؓ روایت ہے کہ حضرتؓ فرمایا کہ خدا رحمت کرے اسمعیلؑ کی ماں یعنی ہاجرہؑ کو جو حضرتؑ زفر کہہ کر مالور فرمایا کہ اگر تیرے لئے

14.00

نہزم سے تو نہزم ایک ہماری چشمہ ہو جاتا ہے حضرت ابراہیم علیہ السلام حضرت ہاجرہ اور حضرت اسماعیل کو خدا کی مرضی سے کہنے پاس چھوڑ گئے وہ ان کے کچھ ابدی بھی نہ دانہ پانی حضرت جبرئیل نے وہاں زمین پر اپنا پیر مارا تو زم کا پانی زمین سے بھوت نکلا حضرت ہاجرہ نے اوس پانی سے کر کے دیتھوں کی مینڈ بنائی تاکہ بانی نہ بھاوے اور طوطہ بھر بھر لبیا شروع کیا اس صحرے سے فرمایا اگر اسماعیل

کیا ان کو سزا کو تین روزہ تک دیا ہو جائے اس کے لئے کفر یا غیبی سے جاری ہو اس حقائق اِنْ مَسَّوْهُ بِرُكُومٍ مِّنْ مَّوْءٍ مِّنْهُ

موسیٰ برادری و دوستی کا سبھی زیادہ تر ایذا دیا گیا تھا۔ ہر دوست نے صبر کیا یہ حضرت علیؑ اور سوت فرمایا جب ایک مرد کو سنا کہ کتبہ بنی کے در کے کنارے کتبہ کے قتل کی خبر سنی تو اس نے کچھ اوصاف نہوا اور اسے کچھ خدا کی رضا مندی مقصود ہوئی **ف** جنگ حنین بن ہبہت ال غنیمت میں آیا تھا حضرت علیؑ کے نو مسلموں کو بہت سال دیا کہ دنیا کی کیا ان کی قدر سمجھیں تو ایک مرد نے اپنے جھکا دی انھوں نے فریاد کیا

حضرت یحییٰ علیہ السلام نے حضرت موسیٰ پر بہت مبنی کی تھی کہ جو حق اپنے بھائی ہارون کو مارا اور کسی کے سب سے اعلیٰ دوستوں میں سے ایک تھا۔

اسلام کیا کہ ہارون کو اولاد نہ کھلا دیوین کنکر ہوئے زخم لاش نکلیا اور ناپاک شرمندہ ہو چکا العفت کرے بدگمانوں پر نیز پیغمبروں کو

۱۴۳۳

۱۴۳۴

۱۴۳۵

۱۴۳۶

منهج داری
توضیح داری
تفسیر داری

مسلم بن عبد اللہ بن عوف سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تم میں سے ہر ایک شخص کمال اور غرر تقیامت کے دن گمازہ ہو گا
ف وہ مال مراد ہے جس کی نگرہ و نین اور ہونی ہر ایک کی یکنون فی اشیائے حلیۃ و یغنی المساک حلیۃ لا یعدلہ عند اسلم
 میں جاہ ہے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہر گویا سیری است میں ایک خلیفہ جو مال کو اپنے آپ بھر کے دیو گیا و کو گونگے کا شاعر کر کے
ف اس حدیث میں نسخ اسلام اور نزلت ال کی خبر ہو گا کہ غرر و غرر مراد ہیں کہ جب یران کا خزانہ یا تو انھوں نے ہاتھوں سے
 لپ بھر کر شہر بار بار لیا کہ نام ہمدانی مراد ہوں اسد اعظم **ع** عبد اللہ بن سلام بن محمد بن عبد اللہ بن سلام کو وہو اخذ
 بالغرر و قیہ القوی بخاری اور مسلم بن عبد اللہ بن سلام سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہر گویا عبد اللہ بن سلام مراد ہے کہ اسلام
 کی مضبوطی پر ہے ہو گا **ف** یعنی مسلمان مر گویا حضرت نے عبد اللہ بن سلام کے خواب کی تعبیر کی باقی خواب کا قصہ آگے ہو گا
و ابوہریرہؓ ینادی منادی ان لکھو ان یصحوا فلا یسقموا ابداً و ان لکھو ان یصحوا فلا یسقموا ابداً و ان لکھو ان یصحوا فلا یسقموا ابداً
 ان لکھو ان یصحوا فلا یسقموا ابداً و ان لکھو ان یصحوا فلا یسقموا ابداً و ان لکھو ان یصحوا فلا یسقموا ابداً و ان لکھو ان یصحوا فلا یسقموا ابداً
 بچلے والا کہ غرر تھلے واسطے یہ خبر ہے کہ چنگ رہو گے سو کبھی نہ بچار پڑو گے اور غرر تر زندہ رہو گے سو کبھی نہ مر گے اور غرر تم جو ان
 بنے ہو گے سو کبھی بے نہ ہو گے اور غرر تم پیش او میں ہیں ہر گے سو کبھی نہ غم و محنتی ہو گی سو ہی مطلب ہے جس نے قول کا لکھ لیا
 بہشت پہاڑے جاوے گا کہ یہ تھار ہی بہشت ہے جسے تم وارث ہوئے اس بہشت کے تم ایک کام کا یہ کہ **ف** فرشتہ بہشت میں یہ بیکار
 بہشتیوں کو سزا ہو گا کہ وہ غرر ہو جائیں **ق** حذیفۃ ینام الرجل النومة فتقبض الایمانہ من قلبہ فیکمل
 انہما مثل الولاۃ فتقبض الایمانہ من قلبہ فیکمل انہما مثل الولاۃ فتقبض الایمانہ من قلبہ فیکمل
 دھر جتہ علی رجاہک فیکمل انہما مثل الولاۃ فتقبض الایمانہ من قلبہ فیکمل انہما مثل الولاۃ فتقبض الایمانہ من قلبہ فیکمل
 احدی فی ذی الامانۃ حتی یقال لان فی بنی فلان رجلاً امیناً حتی یقال لان رجل ما اخلدک ما
 اظرفہ ما اغلطہ و ما فی قلبہ و مثقال حنفی من خذل من دایمان بخاری اور مسلم بن عبد اللہ بن سلام سے روایت ہے کہ حضرت
 نے فرمایا کہ سو گویا کہ ایک نندہ سو اوٹھالی جاوے گی امانت اور دیانت اوسکے دل سے تو ہو جاوے گا اوسکا نشان جیسے اکھ کا آبلہ یعنی
 توجہ داغ ہو جاوے گا ایک نندہ تو اوٹھالی جاوے گی امانت اور دیانت اوسکے دل سے تو ہو جاوے گا اوسکا نشان لٹے کی طرح جیسے تو
 چنگاری کو پٹنے پر ہر دھکے سے سولا سیر لپڑ پڑے سودہ بھجیو بھلا دیکھو بھجیو حال انکے اوسمیں کچھ نہیں بھر لو کہ خیر فرخت کرے کہ نہیں
 لگنا کہ لگنی بھی امانت کو کہ اوسے بیان تک کہ کہا جاوے گا کہ فلا نے کی اولاد میں ایک امانت اور دہری بیان تک نوبت نہ بھیگی کہ گمانا
 آدمی کے حق میں کہ غدا شخص کیا خوب دلاور ہو گیا عظیم و عظیم ہو گیا خوب غفلت ہو گیا اور حال انکے اوسکے دل میں ایک رائی کے
 دلے کے برابر بھی ایمان نہیں یعنی امانت داری نہیں **ف** خلاصہ مطلب حدیث کلید ہے کہ امانت داری وہی ہے کہ تم کو تو باقی انکے حال
 ہو جاوے گا کہ نامی اوسو شو لوگ کوئی کہ تم نہیں کرے کہ اوکلی بھی نیت بل جاوے گی کچھ امانت داری اوسکے دل میں نہیں کسی حذیفہ سے روایت ہے
 کہ حضرت سے منجھو ہا میں نہیں ہوا کہ یوں نہ کہ چکا اور دوسری بات کا منظر ہوں پہلی بات تو یہ ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ امانت داری
 وہی ہے کہ نامی اوسو شو لوگ کوئی کہ تم نہیں کرے کہ اوکلی بھی نیت بل جاوے گی کچھ امانت داری اوسکے دل میں نہیں کسی حذیفہ سے روایت ہے

أَمَلُ الشَّامِ مِنَ الْخَصَّةِ وَيُحِلُّ أَهْلَ الْبَحْرِ مِنْ كَرْنِ بَحَارِي أَوْ سَلَمَ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَرْسَةَ رَوَيْتُ بَرَكَةَ مَسْجُودٍ فَرَاكَ أَوَّلَ مَرَّةٍ
 مِنْهُ لَوْ لَوْ كَلِمَةً سَوَاءً وَنَزِيدًا وَتَوَسَّلَ فِي يَدَيْهِ جَبَّ جَوَّ عَرْسَةَ كَيْ تَسْتَأْذِنَ بِيَوْمٍ مَرِيحٍ نَوَافِلَ أَوَّلَ مَرَّةٍ
فَصَلِّ فِي مَا كَلِمَةً فَاعِلُهُ اس صل من و جہتین میں جسکے سبب مضارع مجزوع ہو لوق **ابن عمر** آرائی
 فِي الْمَنَامِ اسْتَوَى لَوَيْسُو الْوَحْدَانِ فِي رَجُلَانِ أَحَدُهُمَا الْكَبِيرُ مِنَ الْأَخَرِ قَتَلَا وَلَهُمَا الْأَصْفَرُ مِمَّا قَتَلَا
 فِي كَثَرٍ قَدْ قَتَلَا إِلَى الْكَبِيرِ مِنْهُمَا بَحَارِي أَوْ سَلَمَ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَرْسَةَ رَوَيْتُ بَرَكَةَ مَسْجُودٍ فَرَاكَ أَوَّلَ مَرَّةٍ
 معلوم ہوا کہ میں ایک سو اکر تباہوں پر دو شخص آئے ایک اون میں سے دوسرے سے بڑا ہی سو مینے وہ سو اکر چھوٹے کو دی تجسے
 کہا کہ اگر بڑے کو توفیق دے سو اکر بڑے کو دی **ف** اس عیش سے بڑی عرش کی تعظیم اور تعذیب ثابت ہوئی **ق** ابن عمر
 أَرَانِي لَيْلَةً عِنْدَ الْكَلْبَةِ فَرَأَيْتُ رَجُلًا أَدَمَ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَأَيْتَ مِنْ أَدَمِ الرِّجَالِ لَهُ لَمَامَةٌ كَالْحَسَنِ
 مَا أَنْتَ رَأَيْتَ مِنَ الْمَمَرِ قَدْ رَجَلَهَا فَهِيَ تَقَطُّ مَاءً امْتَلَأَتْ عَلَى رَجُلَانِ أَوْ عَلَى عَوَاتِقِ رَجُلَيْنِ يَطُوفُ
 بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُ مَنْ هَذَا أَفْقِيلُ هَذَا الْمَسِيحُ بْنُ مَرْكَبٍ ثُمَّ إِذَا أَنَا بِرَجُلٍ جَدِيدٍ فَطَلَبْتُ أَهْلَ الْبَيْتِ
 كَأَنَّهُمَا عَتَبَةٌ طَارِفَةٌ فَسَأَلْتُ مَنْ هَذَا أَفْقِيلُ هَذَا الْمَسِيحُ بْنُ الدَّجَالِ بَحَارِي أَوْ سَلَمَ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ
 سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ مجھ کو غائب میں ایک رات معلوم ہوا کہ کعبہ کے پاس ہوں تو مینے ایک مرد دیکھا گیسواں رنگ
 جیسے کہ تو نے بہت اچھے گیسواں رنگ میں دیکھے ہوں اور کعبہ کے اندھون تک بال میں جیسے کہ تو نے بہت اچھے گیسواں رنگ
 بال دیکھے ہوں سو اس مرد نے اون لون میں رنگی کی جو تو اونسے بانی مکتبا ہی وہ مرد دون پر کھینچے یا یوں فرمایا کہ وہ مرد وہ
 کندھوں پر کھینچے وہی شخص بیت المقدس کا وہاں ہر سو مینے پوچھا کہ یہ کون شخص ہے تو کہنے لگا کہ یہ مسیح ہے مگر کہا میں نے کبھی
 ایک اور مرد دیکھا نہایت گھٹن لال بال والا وہی آنکھ کا کا اوسکی کان اچھے جیسے مجھ کو لا انکو ہر سو مینے پوچھا کہ یہ کون شخص ہے تو کہنے لگا
 یہ مسیح ہے **ف** حضرت عیسیٰ کا لقب اس واسطے مسیح ہوا کہ خون نے گھر نہیں بنایا البتہ شکل میں پھر اگرستے تھے
 انکے ہاتھ لگانے سے بجا چکے ہوتے تھے اور جمال کا لقب اس واسطے مسیح ہوا کہ وہ پائیسوں میں تمام عالم کو پھیر دیتا تھی
 علیہ السلام اور تباہ قیامت کے قریب آویگئے حضرت نے اون دونوں سیحون کی نشانیاں بتا دیں کہ مسلمان چہاں ہوں
 وہو کھا کھا وین مرا المقدس و تَدْرِي السَّمْسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ هِيَ الْخَلْقُ حَتَّى تَكُونَ عِنْدَهُمْ قَدَارِ مِائَةِ فَيَكُونُ
 الدَّاسُ عَلَى قَدَرِ الرِّجَالِ فِي الْعَرَقِ فَيَمْتَهُمْ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ وَفِيهِمْ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ وَفِيهِمْ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ وَفِيهِمْ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ
مَصْحُودٌ مَن يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ وَفِيهِمْ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ وَفِيهِمْ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ وَفِيهِمْ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ
 نے فرمایا کہ متصل کیا جاوے گا آفتاب قیامت کے دن خلق سے یہاں تک کہ اونسے پہل برابر ہو جاوے گا تو لوگ بقدر پہنچا لے
 کہ پسینہ میں ہو گئے سو انہیں بچنا تھا لیا ہو گا کہ اوسکے دونوں ٹخنوں تک پسینا ہو گا اور انہیں سے بعض کے دونوں ٹخنوں
 تک ہو گا اور انہیں سے بعض کے کمر تک ہو گا اور انہیں سے بعض لوگوں کو پسینا اگام ہو گا یعنی ہر زمین میں ہر ایک **ف**
 نزل سے مراد ایک کوس یا ہر گاہ کے سالی ہر حد بقدر بقدر لَعْنَتُهُ عَلَى الْفُلُوبِ كَأَحْسَنِ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ
 فَاكْبُرْ قَلْبُ الشَّيْءِ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ سَوَاءً وَأَمَّا قَلْبُ الْكَلْبِ هَا كَلِمَةً فِيهِ لَعْنَتُهُ كَأَحْسَنِ مَرَّ يَكُونُ لِي لَعْنَتُهُ

۱۶۳۳

۱۶۳۵

۱۶۳۶

۱۶۳۷

[illegible]

475

1484

1486

147A

1479

۱۶۸۰

اور جو بیات حاصل نہیں ہو سکا ایمان کے لئے سے غیر نہیں خر اکتس ذہب المعطرون البیوم یا کجہ بخاری میں ہے
روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ آج روزہ کھولنے والے ثواب کیلئے **ف** مصباح میں ہے انس سے روایت ہے کہ ہم حضرت کے ساتھ سفر
میں تھے جو بعض اصحاب کو روزہ رکھنے اور بعض بے روزہ رکھنے کو حکم دیا کہ آج صبح نماز پڑھو تو روزہ دار لوگ گڑھے اور بے روزہ
لوگوں نے نیچے قائم کیے اور انہوں نے کہا کہ اب آج صبح نماز پڑھو تو روزہ دار لوگ گڑھے اور بے روزہ لوگوں نے نیچے قائم کیے

۱۶۸۱

ق ابوہریرہ کا راوی عیسیٰ بن مریم کے بعد کہلا کر کہے فقال لہ انکسر قلبی فقال لہ لا الہ الاکھو
فقال عیسیٰ امننت باللہ وکذبت عینی بخاری اور مسلم میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ دیکھا عیسیٰ بن مریم
کیا کہ دو چوری کرتے تو اوس کے ہاتھ لگا کر کہتا ہے چوری کی سوا سے کیا نہیں صاحب میں تم کھانا ہوں اور کسی جسے سو گویا معبود نہیں ہے
کہا کہ میں اسکا ایمان لایا اور اپنی آنکھ کو کھینے جو تھا جانا **ف** یعنی واقعی ایسا درجہ نہیں کرتا میری آنکھ کے خطا کی سزا اسد
حسن میں کے یعنی میں ایک لوگ میں بدوں دیکھتے تھے کہ میں اور غل بجاتے ہیں اور ایک یہ کہ لوگوں نے انکھ سے دیکھ کر بھی
جگہ میں نہیں پہنچا اوسنے خدا کی قسم کھا کر چوری کی آنکھ کی تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے مجھے بتایا کہ شاید اس میں اسکا کچھ حق ہوگا
یاد رکھو بعضی کے اسنے لیا جو آخر کو خیال مالک کو دیو کا پانیت فرض لیا ہوگا فرض کو ادا کیا گناہوں کے حسن میں کے واسطے بہت سے املا

۱۶۸۲

مکن میں اور اسی طرح جگہ کے واسطے بھی سلمان کو بھی مناسب ہو کہ حسن میں کیا کرے اور بدگمانی سے بچے ہر اچھے چیز کے لئے
اَنْفُ تَوَدَّ غَيْرَ اَنْفٍ تَوَدَّ غَيْرَ اَنْفٍ مَنْ اَذْرَاکَ اَبُو یَعْقُوبَ الذَّکِیْرَ اَحَدُھُمَا اَوْ کِلَیْھُمَا اَلَمْ یَرَ کُلَّ حَاجَةٍ
مسلم میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ خاک میں ملا پھر خاک میں ملا جسے اپنے مان باپ کو بعضی اور
بوجھا ہے میں بابا ایک کو یاد و نون کو سو بہشت میں داخل ہوا **ف** یعنی وہ شخص بڑے نصیب پر جو ضعیف مان باپ کی خدمت
بہشت میں داخل کرے اسے بہشت سے معلوم ہوا کہ ان باپ کی خدمت میں کافر ہو سید ہو اور کو تکلیف دہانی اور بہشت میں توجہ کا

۱۶۸۳

سبب **و** خر اوٹن کے رَا اَذَاکَ اللہ جِزْءًا وَاَلَا تَعْدُ قَالَا لہ بخاری میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ
تیری حرص کو زیادہ کرے اور یہ کام بھر کر نایہ حضرت نے ابوہریرہ سے فرمایا **ف** حضرت روع میں تھے ابوہریرہ اس خیال سے کہ کوئی کا
ثواب جاتا ہے جلدی سے صحت کیچے نیت کے روع میں شریک ہو گئے جو حضرت کو یہ حال معلوم ہوا تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی کہ
عبادت کی حرص عمدہ بات ہے نہ زیادہ کرے لیکن بھاری جلدی نہ کر کہ نصف میں ملنا افضل ہو اور صحت کیچے کھڑے ہونا مکروہ ہو اور یہی
مذہب ہر امام غلام شافعی اور امام مالک کا نصف کیچے نماز پڑھنا مکروہ ہے لیکن نماز نہیں باطل ہوتی اور اگر نماز باطل ہوتی تو حضرت

۱۶۸۴

بھر پڑھنے کو فائدہ ہے ہر کہ سیمہ عمود مدینہ جانب منہا فی الدین وجانب منہا فی النجیۃ والاولیٰ علیہ السلام
اللہ قال لا تعلم النساء حتی یغزوہا سبعون النائمین بقی النحی وَاَدَا جَاوُہَا نَزَلَ اَنَامَ وَتَا لَوِیْلَہِ السَّلَاحِ
وَاَلَمْ یَرَوْا یَسْہَرُ قَالُوا لَا لَہِ اَلَا اللہ واللہ اکبر فَنَسَقَطُ اَحَدُ جَانِبِھَا الَّذِیْ فِی الْبُکْرِ فَنُفَعُوْهُنَ الثَّانِیَۃَ
لَا لَہِ اَلَا اللہ واللہ اکبر فَنَسَقَطُ جَانِبِھَا الْاُخْرٰی فَنُفَعُوْهُنَ الثَّالِثَۃَ لَا لَہِ اَلَا اللہ واللہ اکبر فَنُفَعُوْهُنَ الرَّابِعَۃَ
کَھْدَمَیْلَ حَتّٰی تَاْتِیَ عَمُّوْنَ فَبَیْنَھُمْ ہُمْ یَقْسِمُوْنَ الْمَعَالِیْہِ اُدْجَا ہُمْ الْقَرِیْبُ فَقَالَ رَانَ الذَّجَالُ
فَاَنْخَرَجَ فَبَیْنَ کُلِّ کَوْنٍ وَرَیْجُوْنَ مُسْلِمٌ میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ سناؤ

لکنے لگی کہ تیرے ہی بیٹے کو بھیج یا لیگیا اور دوسری عورت نے کہا کہ تیرے ہی بیٹے کو بھیج یا لیگیا سووی دونوں اور دیکھا جس نے فیصلہ کر لیا
 کہ تو آج سو لوں انھوں نے وہ درکار بڑی عورت کو دیا سووی دونوں نکلیں لیماں بن اود پاس آئیں اور بیٹے یہ حال کہا تو لیماں نے کہا کہ اگر
 مجھ کو دو تو کہ میں اس لڑکے کو آدھا آدھا کران و نون عورتوں کو دونوں تو بھیجی عورت نے کہا خدا مجھے بھرہ ہے یہ نہ کہ وہ لڑکا تو میں
 عورت کا بیوی یا بن عوی نہیں کرتی دوسری کو بھیجے تو لیماں نے وہ لڑکا چھوٹی عورت کو دیا **ف** حضرت لیماں نے چھوٹی عورت
 اس واسطے دلا یا کہ اس کو درو آیا اس نے لڑکے کا کاشا گوارا لکھا تو معلوم ہوا کہ وہ لڑکا اوی کا تھا اور اگر بڑی عورت کا لڑکا ہوتا تو وہ
 اس کے کاشے پر اسی بنوئی اس حدیث سے معلوم ہوا کہ جب گواہ بنوں گا کہ کو لازم ہو کہ قرآن اور قیاس پر عمل کرے **ہ** اؤ سعید کانیت
 امر اے یحییٰ بنی اسرائیل قصیدہ کہ کنی مع امرائیکم یلکثین فاحذث ریحلتک من خشب و خاتماتک
 ذہب مطبقا و حشنة و سکا و ہما اطلیب الطیب فمات بہن المرأتکین فامر فوہا فقلک یدہا
 ہکذا و فقص شعبہ یدک اسلم بن اوسیمیشے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ بنی اسرائیل کہ قوم میں ایک تمہی عورت تھی بلکہ تمہی
 وہ یعنی عورتوں کے ساتھ سواوستے لکڑی کی دو کھڑاؤں بنا کر یہی اور سونے کی خوالی اور گولہ می بنائی پھر اوس کو شک سے بھر اور معلوم ہو
 خوش ہو کر سبیل و عورتوں کے درمیان لوگوں نے اوس کو نہ پہچانا سواوستے اپنے ہاتھ سے یوں اشارہ کیا اس حدیث کے ایک اور جی نے
 جس کا شعبہ نام ہے اوستے پہچانا ہاتھ بڑا یعنی اوس عورت کے اشارہ کرنے کی مثال **ف** عورت نے کھڑاؤں اس واسطے بنائی کہ انہی کو
 پور شک کو اس واسطے لوگوں کی طرف جھڑا کہ خوشی سے لوگا و سکی طرف تو یہ ہوں ہیں میں بن اشارہ ہو کہ جب باطن فرمائی تو ظاہر بناؤ
 کہ حقیقت میں خراؤ مفر ہے کہ کانیت بنو اسرائیل نسو سواوہا لکثیا کلما ہلک بنی خلقک بنی و انہ لا یخ
 بکلی و سیکون حلفاء فیکثرون قالوا اما تا مونا قال فابیعہ الا ذل فالذل اعطوہم حقیقہم
 فان الله سألہم عما اشرعناھم بناری من ابورہوہو روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تم بنی اسرائیل کہ انہوں کی حکومت و سربراہی
 کرتے تھے بغیر یہ کیا بغیر وفات یا تھا وہ اسرائیل کے مقام پر قائم ہوا تھا اور یہ بعد کو بنی بغیر نہیں اور غریب بنی عیسا اور اہلہ جو
 تو بہت ہو گئے محبت کے گما ہو کہ کیا حکم کرتے ہیں حضرت نے فرمایا کہ قول پورا کرو ان کا کہ تم بعد دوسرے سے ان کا حق اور کو مقرر نہ کرو
 پوچھنے والا ایسا بنی عیسا کی حالت **ف** یعنی انتظام اور اصلاح عالم بدون جا کے نہیں ہو سکتی اگلی مرتبہ تو بغیر قرآن انتظام ہوتا تھا
 اس بہت میں ظیفوس ہو گا اس واسطے او کی اطاعت سب ملانوں پر واجب ہوئی اگر تاکہ چھ حدیث کے حق قصور کر گناہوں سے نہ سمجھ لیگا
ق ابورہوہ کہ کانیت بنو اسرائیل یقتیلون کما یتظہر بعضہم الی سواۃ بعض و کان موسیٰ یقتیل
 وحدہ فقال اولیٰ الله ما یجمع موسیٰ ان یقتیل ممنا لک انہ اذ قال فذہب من یقتیل یوضع
 نوہ علی حجر فحق الحجر یوقہ قال فجمع موسیٰ علیہ السلام بانہ یقول لو بنی حجر لو بنی حجر حتی یقتل
 بنو اسرائیل الی سواۃ موسیٰ فقالوا واللہ ما یجمع موسیٰ من بانس فقام الحجر حتی نظر الی یوفتال
 فاخذ قکۃ قطع فی الحجر وضربا بناری اور سلم میں ابورہوہ شے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تم بنی اسرائیل کہ
 ننگہ نہ لے تھے ایک دوسرے کے گاہ دیکھتا تھا اور موسیٰ تمنا نہ لے تھے تو بنی اسرائیل نے کہا کہ موسیٰ ہا سے ساتھ ہواستے نہیں لیا
 اوس کا یہ دیکھنے کی بناری ہے حضرت نے فرمایا تو موسیٰ الیہا رہا لے لو گئے تو اپنے پیڑے پھر کہے تو لے جا تا پھر لکے پھر کہے تو موسیٰ الیہا السلام آوے

اس حدیث سے معلوم ہوا کہ جب گواہ بنوں گا کہ کو لازم ہو کہ قرآن اور قیاس پر عمل کرے

۱۷۳

۱۷۴

میں نے یہ حدیث دیکھی ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تم بنی اسرائیل کہ انہوں کی حکومت و سربراہی کرتے تھے بغیر یہ کیا بغیر وفات یا تھا وہ اسرائیل کے مقام پر قائم ہوا تھا اور یہ بعد کو بنی بغیر نہیں اور غریب بنی عیسا اور اہلہ جو تو بہت ہو گئے محبت کے گما ہو کہ کیا حکم کرتے ہیں حضرت نے فرمایا کہ قول پورا کرو ان کا کہ تم بعد دوسرے سے ان کا حق اور کو مقرر نہ کرو پوچھنے والا ایسا بنی عیسا کی حالت

ای رب میری مان پارتی تو اور میں نماز میں ہوں سو وہ نمازی میں مقید نا تو او سکی مان پلٹ آئی جب سچا میں پہا تو او سکے پاس پہچا آئی سو
 او سنے چکا کہ اگر جو جع تو او سنے کہا کہ ای رب میری مان پارتی تو اور میں نماز میں ہوں سو وہ اپنی نماز میں مقید نا تو او سکی مان پلٹ آئی
 یوں کہ کہا کہ الہی اے سکوت مارو جب تک کہ یہ کار عذر تو ان کا سو نہ دیکھ لیو سو ہی اسرا ئیل جرج کے اور او سکی عبادت کے
 آپس میں لڑ کر نہ لگے اور ایک بدکار عورت تھی جسکی جو بصورتی ضرب المثل تھی سو او سنے بنی اسرا ئیل سے کہا کہ اگر تم جاہو تو میں
 جوج کو بلا میں تمھاری خاطر سے کہ نہ کہ کہ دو ان سو وہ عورت کو سکے سانسے آئی تو جوج سے لے او سکی طرف کچھ التفات بھیما تو وہ لڑکھا
 پاس آئی اور وہ او سکے عبادت خانے بارٹ ٹھہرا تھا سو او سنے عہدت سے لے سکوا پنی ذات بقا دیکھا سو او سنے اس سے صحبت کی تو او سکے
 پیٹ رہ گیا سو وہ جب جینی تو او سن عورت سے کہ کہا کہ یہ لڑکا جرج کا ہی تو لوگ او سکے پاس آئے اور او سکوا او سکے عہدت خانے سے
 اوتا اور او سکے عبادت خانہ ڈھا دیا اور او سکوا مارنے لگے سو جوج سے کہ کہا کہ کیا حال ہے تمھارا یعنی کیوں دھمے مارتے ہو سو او سکوا
 کہا کہ تو اس سے بدکار سے نہ لگا یہ سو وہ تیرے لطف سے لڑکا جینی تو او سنے کہا وہ لڑکا کہا ان ہی سو او سکوا دیے لے لے تو جوج سے کہ کہا
 دھمے چھوڑو نا کہ میں نماز پڑھ لوں پھر جرج نماز پڑھ چکا وہی لڑکا سانسے لایا گیا سو جوج سے کہ او سکے پیٹ میں ٹھوکا دیا اور کہا
 ایڑے تیرے کون باب ہر لڑکے سے کہ کہا کہ فلا نا پھر لے لا لایا رباب ہی حضرت نے فرمایا پھر تو لوگ جرج پھینکے نا او سکوا چہ پتے چاہتے
 اور کہا کہ جرج سے واسطے تیرے عبادت خانہ سو نے سے بناوینگے جرج سے کہ کہا کہ نہیں اسی طرح کا قی سے بناوینگے لگے تنہا سو
 او غصوں سے بنا دیا تو کسی نے من ایک لڑکا اپنی مان کا دودھ پیتا تھا تو ایک مرد نکلا احمد دسوی پر تھری پوشاں کہ الا سو او سکی
 دن سے کہ کہا کہ اسی میرے بیٹے کو اس دے کہ برابر دیکھو تو لڑکے نے چھاتی چھوڑ دی اور اس مرد کی طرف متوجہ ہو سو او سکوا دیکھا
 تو یوں کہ کہا کہ الہی مجھ کو ایسا بھیج چھ اپنی مان کی چھاتی پر بھیج کا سو وہ دھ پینے لگا ابو ہر روٹے کہ کہا کہ گویا میں حضرت کو دیکھ رہا ہوں اور
 حضرت اوس لڑکے کے دودھ پینے کی نقل کہتے تھے اس طرح کہ کہنے کی او گلی اپنے مومندین ہال کے چہ ستے تھے حضرت نے فرمایا اور لوگ
 ایک لونڈی کو لے کر آئے اور او سکوا مارے تھے اور کہتے تھے تو نے حرام کیا تو بی چوری کی اور وہ کہتی تھی کہ مجھ کو لغایت کرنا ہے اور وہی اچھا
 وکیل ہے تو اوس لڑکے کی مان سے کہ کہا کہ الہی میرے بیٹے کو اس لونڈی کے برابر بھیج سو او س لڑکے سے دودھ پینا چھوڑا اور او سکی
 طرف دیکھا تو کہ کہا کہ الہی مجھ کو ایسا ہی بھیج تو اوسی جگہ مان اور بیٹے میں گفتگو ہوئی تو او سکی سر نوٹدی مان سے کہ کہا کہ اچھی صورت کا ایک مرد
 سو سینے کا کہ الہی میرے بیٹے کو ایسا کرتے سو تو نے کہا کہ الہی مجھ کو ایسا کرنا اور لوگ ایک لونڈی کو لے کر آئے اور او سکوا مارے تھے اور
 کہتے تھے تو نے حرام کیا چوری کی تو سینے کا کہ الہی میرے بیٹے کو ایسا بھیج سو تو نے کہا کہ الہی مجھ کو ایسا ہی بھیج لڑکے سے کہ کہا کہ تیرے
 مرد خدا تمھارا سینے کا کہ الہی مجھ کو ایسا کرنا اور البتہ اس لونڈی کو کہتے ہیں کہ تو نے حرام کیا اور حال نہ کہ او سنے حرام نہیں کیا اور کہتے
 کہ تو نے چوری کی اور حال نہ کہ او سنے چوری نہیں کی تو او سا سطرے سینے کا کہ الہی مجھ کو ایسا ہی کرنا **ف** ابو ہر روٹے سے روایت ہے
 کہ حضرت نے فرمایا کہ رسول تین لڑکوں کے کوئی لڑکا گویا میں نہیں بولا ایک عیسیٰ بن مریم بھیجید حضرت فرمائی اور دو لڑکوں کا ذکر نہ فرمایا
 تو میں نے ان دونوں کا رد کیا ثابت ہوا **ف** سلمۃ بن اکوع کا کہ خیر تر سائنا لیو کم ابی قتادہ وخیر رجاء الیتنا
 سلمۃ قالہ من خیر فی بنی نجار ی اور سلم بن سلم بن کی سلمۃ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ ہمارا
 سوا حق میں بہتر سوا آج ہوتا وہ ہمارے پیادوں میں سے ہے سلم بن سلم بن کی سلمۃ نے فرمادے کہ تو نے فرمایا

الفصل الخامس عشر أو قال اللهم هل كان أمر الزاهب أحب إليك من أمر الساجد فأنزل هذيه والكتابة
 حتى ينجي الناس وما لها ففعلها ومعنى الناس فأتى الزاهب فأخبره فقال له أنت أحب أمي يعني
 أنت النبي أم أنصلي يعني قد نزع من أمرك ما أدركت سبيلك فإن أنزلت فلا تدرك علي وسكان
 الغلام يعني الأكمة والأرض ويدأوى الناس سائر الأذواء فتجسس حليلس للمليكات كان تدركي
 فأتاه هذيه أي الكبرية فقال ما ههنا لك أجمع إن أنت شفتني قال إني لا أشفي أحدا إنما يشفي الله وإن
 أمنت بالله دعوتك الله فشفعك فأمّن بالله فشفعه الله فأتى الملك فجلس إليه كما كان يجلس فقال له
 الملك من رذك عليك بصرك قال ربي قال وأنت ربك غيري قال ربي وربك الله فأخذه فأمّر
 يده حتى دل على الغلام يعني يا غلام فقال له الملك أي بني قد بلغ من حزنك ما نبتني الأكمة
 والأرض وتعل وتعل قال فقال إني لا أشفي أحدا إنما يشفي الله فأخذه فلم ير له سبيل فجلس له على الخ
 حتى يأمره به ففعل له أجمع عن دينك فأنزله على المنشار فوضع المنشار في مفرق رأسه فشقّه
 حتى رفع شقاه ثم جئني يا غلام ففعل أجمع عن دينك فأتى قد فعلة إلى نفر من أصحابه فقال
 انقبوا إليه إن جبل كذا وكذا فاصعدوا به الجبل فإذا بلغت ذروة فأنزع عن دينه وإلا
 فاصعدوه فذهبوا به فصعدوا به الجبل فقال اللهم ألقني به حر يمشيت فرجف بهم الجبل فسقطوا
 به كسرة من الماء فقال له الملك ما فعل أصحابك قال كفانيهم الله قد فعلة إلى نفر من أصحابه
 فقال اذهبوا به وأحيموه في ثور ففعلوا به الجحر فأنزع عن دينه وإلا فادخلوه
 فذهبوا به فقال اللهم ألقني به حر يمشيت فأنكفأت بهم الشفينة ففعلوا به وجاء يشفي إلى
 الملك فقال له الملك ما فعل أصحابك قال كفانيهم الله فقال للملك إنك لست بقاتل جنة
 فعل ما أمر الله به قال وما هو قال تجمع الناس في صعيد واحد وتصلبني على جودج ثم أخذ سهمًا
 من كنانتي ثم وضع سهمي في اليد القوس ثم قل بسم الله رب الغلام ثم أثارني فأتاك إن فعلت ذلك فتلقى
 تجمع الناس في صعيد واحد وصلبه على جودج ثم أخذ سهمًا من كنانته ثم وضع السهم
 في كبد القوس ثم قال بسم الله رب الغلام ثم رماه فوضع السهم في صدغه فوضع يده
 في صدغه في موضع السهم فمات فقال الناس أمّا يرب الغلام أمّا يرب الغلام أمّا يرب
 الغلام فأتى الملك ففعل له أريت ما كنت تحذر فذو الله نزل بك حذر لو قد آمن الناس أمر
 بالأخذ ويا نوايا الشكاك تحذرت وأضرمت النيران وقال من لم يرجع عن دينه فالحقموه بها أو
 قيل له انزع ففعلوا حتى جاءت أمراة ومعها صبي لها فقفا عست أن تقع فيهما فقال له الغلام
 يا أمته أصبري فأتاني على الحق سليم بن سبب روايت مرة فرفعت فرفعا لك تسلكها ياك بادشا وتما داروكا
 أيتا دوتا ساسا بة بها جوكا او سنا سنا سنا كمين بها جوكا هون سويره پاس ايك لوكا هيج لوكا سنا سنا سنا

فعل مکلفی
مکلف و مکلف
مکلف و مکلف
مکلف و مکلف

تو بادشاہ نے اوسکے پاس ایک لڑکا بھیجا کہ اوسکو وہ جادو سکھاتا تھا تو اوس لڑکے کی آمد رفت کی راہ میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے درویش کی طرف
درویش تھا تو وہ لڑکا اوسکے پاس بیٹھا اور اوسکا کام سننا سواوسکو بھلا معلوم ہوتا سو جب جادو گر پاس جاتا تو درویش کی طرف
ہو کر نکلتا اور اوسکے پاس بیٹھا پھر جب جادو گر پاس جاتا تو جادو گر اوسکو مارنا سوا لڑکے نے جادو گر کے مارنے کا درویش سے کہا کہ
تو درویش نے کہا کہ جب نے جادو گر سے خوف کھاوے تو کہا کہ میرے گھر والوں نے مجھ کو روکا تھا اور جب تو اپنے گھر والوں سے ڈرتے تو کہا کہ
جادو گر نے مجھ کو روکا سو اسی حال میں درکار کرتا تھا کہ نگاہ وہ ایک بڑے قد اور جانور پر گزرا کہ اوسنے لوگوں کو آمد نہ فرماتے روکا تھا سو لڑکے
کہا کہ آج میں دریافت کرتا ہوں کہ جادو گر افضل ہی یا درویش افضل ہی سو اوسنے ایک چمکھلایا اور کہا الٹی اگر درویش کا طریقہ تیرے نزدیک ہے تو
جادو گر کے طریقے سے تو اس جانور کو قتل کرنا کہ لوگ بلیں بھریں پھر لو سکھو مارا سو اوسکو قتل کیا اور لوگ بلیں بھرنے لگے پھر وہ لڑکا درویش
پاس آیا اور اوسکو یہ حال بھلا یا تو درویش نے اوس سے کہا ایسا بیٹا تو مجھے فضول ہی تفریح تیرے بیان تک پہنچا کہ مجھ کو نظر ڈال اور مقررہ شغریہ
تو آ کر آیا جاوے گا سو لڑکا تو آ کر آیا جانے تو مجھ کو نہ بتلایا سو اوس لڑکے کا یہ حال تھا کہ اندھے اور کوڑھی کو چنگا کرنا تھا اور لوگوں کے
علاج کرتا تھا تفریق میں ہمارے سے تو یہ حال بادشاہ کے ایک صاحب نے سنا اور وہ ماہد ہو گیا تھا تو اوسکے پاس پہنچے تھے لایا اور کہا کہ
جو مال کہ ہمارے ہر وہ صاحب نے واسطے ہی کر تو مجھ کو چنگا کر دیسے لڑکے نے کہا کہ میں کیسے چنگا نہیں کرتا چنگا کرنا تو خدا ہی کا کام ہی سو اگر تو خدا
کا ایمان ملائے تو میں خدا سے دعا کروں کہ تجھ کو چنگا کر دیو گیا سو وہ صاحب خدا کا ایمان لایا تو خدا نے اوسکو چنگا کر دیا پھر وہ صاحب باٹھا
پس گیا اور اوسکے پاس بیٹھا جیسا کہ چٹھا کرتا تھا تو اوس سے بادشاہ نے کہا کہ کسے تیری آنکھ روشن کر دی مصاحب نے کہا کہ میرے مالک نے
بادشاہ کے پاس گیا سو بھی کوئی تیرا مالک ہی صاحب نے کہا میرا مالک تو میرا مالک خدا ہی سو بادشاہ نے اوسکو پکڑا سو ہمیشہ اوسکو مارا کرتا تھا
زمانہ تک کہ اوسنے لڑکے کو بٹھا یا سو وہ لڑکا بلا لیا تو بادشاہ نے اوس سے کہا ایسا بیٹا تیرے جادو کا یہ دتہ ہو چکا کہ تو اندھے اور کوڑھی کو
چنگا کرے لگا اور تو ایسا کرتا ہی اور ایسا کرتا ہی حضرت نے فرمایا سو اوس لڑکے نے کہا کہ میں کیسے چنگا نہیں کرتا چنگا تو خدا ہی کرتا ہی سو باٹھا
لے اوس لڑکے کو لڑکا اور جو شہر اوسکو مارا کرتا تھا یہاں تک کہ اوسنے درویش کو بٹھا یا سو وہ درویش پکڑا اور اوس لڑکے کو بٹھا یا
دینے سو اوسنے انکار کیا تو بادشاہ نے ایک لڑکے کو بٹھا یا اور درویش کی چاند پر رکھا اور اوسکو چیر ڈالا یہاں تک کہ وہ بکڑے ہو کر پڑا
پھر بادشاہ کا صاحب بلا لیا گیا اور اوس سے کہا کہ اپنے دین سے پھر جا سو اوسنے نما سو اوسکی چاند پر پڑا رکھا اور اوسکو چیر ڈالا
کہ وہ بکڑے ہو کر پڑا پھر وہ لڑکا بلا لیا تو اوس نے کہا کہ اپنے دین سے پلٹ جا سو اوسنے نما سو بادشاہ نے اوسکو اپنے چند مصاحبوں
دیا اور کہا کہ اسکو تھلائے فلائے پہاڑ کی طرف لے جاؤ اور اوسکو پہاڑ پر چڑھاؤ پھر جب تم پہاڑ کی چوٹی پر پہنچو اگر یہ لڑکا اپنے دین سے پھر جاوے
تو بہتر ہو ورنہ فی اوسکو ٹھکھیل دو دیو اوسکو لیگئے اور پہاڑ پر اوسکو چڑھا یا تو لڑکے نے کہا کہ الٹی مجھ کو اسکے شر سے بچا جس طرح سے
کہ تو چاہے ہو پہاڑ نے اوسکو خوب ہلا دیو لڑکا لوگ گڑبڑے اور وہ لڑکا بادشاہ پاس چلا آیا سو بادشاہ نے اوس سے کہا کہ کیا حال ہے
ساتھیوں کا اوسنے کہا خدا نے مجھ کو اسکے شر سے بچا سو بادشاہ نے اوسکو اپنے چند مصاحبوں کے ساتھ لے لیا اور کہا اوسکو لے جاؤ اور اوسکو
ناؤ پر بٹھاؤ اور اوسکو دریا کے اندر لے جاؤ سو اگر یہ اپنے دین سے پھر جائے تو خوب ہی اور نہیں تو اسکو دریا میں ڈال دو سو وہ لوگ اوسکو لیگئے
پھر لڑکے نے کہا کہ الٹی مجھ کو اسکے شر سے بچا جس طرح سے کہ تو چاہے سو اوسکو لڑکا ناؤ اندھی ہو گئی تو وہ لوگ ڈوب گئے اور وہ لڑکا بادشاہ
پاس چلا آیا تو بادشاہ نے اوس سے کہا کہ تیرے ساتھیوں کا کیا حال ہے اوسنے کہا خدا نے مجھ کو اسکے شر سے بچا پھر لڑکے نے بادشاہ سے کہا

حضرت فرمایا کہ اس کو مارا اور ہلکا کر کے مارا جائے بل میں گھر گیا تب حضرت نے یہ فرمایا میں نے یہ سیکھنا چاہا کہ اس کا کیا حال ہوگا

۱۷۲۵

فصل فیما کہ یسمی قاعلہ فصل میں میں وہ شخصین میں جن کے سر سے قیل انہی جہول ہرق عاکسۃ اور بیک
فی السماء ثلاث لکال کمالی جاء فی بیک الملائک فی سر قاعلہ من حریر کفوف لہ ذلک و امر انک فاکشف عن
کعبۃ جاک فاذا انتہی و اقول ان بیک من عند اللہ بخلاف ہمارے اور مسلم میں حضرت عاکسہ شہ سے روایت ہے کہ حضرت
محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس کو مارا جائے بل میں گھر گیا تب حضرت نے یہ فرمایا میں نے یہ سیکھنا چاہا کہ اس کا کیا حال ہوگا

۱۷۲۶

فصل فیما کہ یسمی قاعلہ فصل میں میں وہ شخصین میں جن کے سر سے قیل انہی جہول ہرق عاکسۃ اور بیک
فی السماء ثلاث لکال کمالی جاء فی بیک الملائک فی سر قاعلہ من حریر کفوف لہ ذلک و امر انک فاکشف عن
کعبۃ جاک فاذا انتہی و اقول ان بیک من عند اللہ بخلاف ہمارے اور مسلم میں حضرت عاکسہ شہ سے روایت ہے کہ حضرت
محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس کو مارا جائے بل میں گھر گیا تب حضرت نے یہ فرمایا میں نے یہ سیکھنا چاہا کہ اس کا کیا حال ہوگا

۱۷۲۷

فصل فیما کہ یسمی قاعلہ فصل میں میں وہ شخصین میں جن کے سر سے قیل انہی جہول ہرق عاکسۃ اور بیک
فی السماء ثلاث لکال کمالی جاء فی بیک الملائک فی سر قاعلہ من حریر کفوف لہ ذلک و امر انک فاکشف عن
کعبۃ جاک فاذا انتہی و اقول ان بیک من عند اللہ بخلاف ہمارے اور مسلم میں حضرت عاکسہ شہ سے روایت ہے کہ حضرت
محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس کو مارا جائے بل میں گھر گیا تب حضرت نے یہ فرمایا میں نے یہ سیکھنا چاہا کہ اس کا کیا حال ہوگا

۱۷۲۸

فصل فیما کہ یسمی قاعلہ فصل میں میں وہ شخصین میں جن کے سر سے قیل انہی جہول ہرق عاکسۃ اور بیک
فی السماء ثلاث لکال کمالی جاء فی بیک الملائک فی سر قاعلہ من حریر کفوف لہ ذلک و امر انک فاکشف عن
کعبۃ جاک فاذا انتہی و اقول ان بیک من عند اللہ بخلاف ہمارے اور مسلم میں حضرت عاکسہ شہ سے روایت ہے کہ حضرت
محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس کو مارا جائے بل میں گھر گیا تب حضرت نے یہ فرمایا میں نے یہ سیکھنا چاہا کہ اس کا کیا حال ہوگا

۱۷۲۹

فصل فیما کہ یسمی قاعلہ فصل میں میں وہ شخصین میں جن کے سر سے قیل انہی جہول ہرق عاکسۃ اور بیک
فی السماء ثلاث لکال کمالی جاء فی بیک الملائک فی سر قاعلہ من حریر کفوف لہ ذلک و امر انک فاکشف عن
کعبۃ جاک فاذا انتہی و اقول ان بیک من عند اللہ بخلاف ہمارے اور مسلم میں حضرت عاکسہ شہ سے روایت ہے کہ حضرت
محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس کو مارا جائے بل میں گھر گیا تب حضرت نے یہ فرمایا میں نے یہ سیکھنا چاہا کہ اس کا کیا حال ہوگا

بِرُّمَعَهُ اُنْفَرَتْ وَ الشَّيْءُ بِرُّمَعِهِ اُنْفَرَتْ وَ الشَّيْءُ بِرُّمَعِهِ اُنْفَرَتْ وَ الشَّيْءُ بِرُّمَعِهِ اُنْفَرَتْ
 يَا جَبْرِئِلُ هُوَ لَا يَمُوتُ قَالَ لَا وَلَكِنْ اَنْظُرْ اِلَى الْاَفْنِ فَتَنْظُرُ فَاِذَا سَوَادٌ كَبِيرٌ قَالَ هُوَ لَا يَمُوتُ
 هُوَ لَا يَمُوتُ اَلَا فَاِنَّهُمْ لَا يَمُوتُونَ عَلَيْهِمْ وَلَا عَذَابُ قُلْتُ وَلَمْ قَالَ كَافُوْا اَلَا يَكْتُوْنُ وَلَا
 يَسْتَمُتُوْنَ وَلَا يَتَكَلَّمُوْنَ وَ عَلَى رِجْلَيْهِمَا كَتُوْنُ الْخَدِيْثُ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَ السَّيَّانُ لِلْمَحَارِبِ بِمَحَارِبِ
 مِّنْ عَبْدِ السَّيِّدِ عَاسِ سَيِّدِ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنٌ اَكْلٌ مِّنْ تَوَالِيْكَ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 بِاَنْجُوْا مَعِيْ تَمَّ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 كَمَا نَدِيْنُ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ
 مِّنْ نَّوَالِيْكَ سَبَبٌ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 يَلِيْنَةُ تَمَّ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 بَعْدَ لَوْ كَسِبَ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 مَعْلُوْمٌ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ تَوَالِيْكَ لِيْكَ لِيْكَ
 فَاِذَا اَمْسَى فَتَرَى اِلَيْهِ جَالٍ كَاَنَّهٗ مِنْ رِجَالِ شَوْقٍ اَوْ رَايَتْ عِيْسَى مِّنْ رُّمَعِهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَاِذَا اَقْرَبَ
 مِّنْ رَّاَيْتَ يَهْ شَبَّاهُ مَعْرُوْدٌ وَ رَاَيْتَ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَاِذَا اَقْرَبَ مِّنْ رَّاَيْتَ يَهْ شَبَّاهُ
 صَلْبُهُ كَلْبِيْنِيْ نَفْسُهُ وَ رَاَيْتَ جَبْرِئِلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَاِذَا اَقْرَبَ مِّنْ رَّاَيْتَ يَهْ شَبَّاهُ دَحِيَّةٌ مِّنْ خَلِيْفَةٍ
 مَسْلُوْمٌ بِاَبْرِشَةٍ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنَةٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 يَلِيْنَةُ عِيْسَى مِّنْ رُّمَعِهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَوْنُ مَسْلُوْمٌ مِّنْ عِيْسَى مِّنْ رُّمَعِهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَوْنُ مَسْلُوْمٌ
 مَسْلُوْمٌ مِّنْ رُّمَعِهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَوْنُ مَسْلُوْمٌ مِّنْ عِيْسَى مِّنْ رُّمَعِهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَوْنُ مَسْلُوْمٌ
 لَوْ كَوْنُ مِّنْ جَبْرِئِلَ مِّنْ رُّمَعِهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَوْنُ مَسْلُوْمٌ مِّنْ عِيْسَى مِّنْ رُّمَعِهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ
 وَ نَصْرَتُ بِالرُّعْبِ وَ اَحْلَتْ لِيْ لِقَاءُ نَارٍ وَ حُلَّتْ لِيْ الْاَرْضُ طَهْرًا وَ اَسْبَغْتُ اَوْ اُرْسِلْتُ اِلَى
 الْخَلْقِ كَاَنَّهٗ وَ حُجِّمَ لِيْ التَّيْمُوْنَ سَلْمٌ اَوْ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنَةٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 بِمَجِيْزَةٍ مِّنْ سَبَبٍ مَّجْمُوْعٍ اَوْ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنَةٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 تَامَمَ مِّنْ اِلَى اَوْ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنَةٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 جَمِيْعٌ مَّجْمُوْعٌ لَفْظًا اَوْ مَطْلُبٌ مِّنْ جَمِيْعٍ اَوْ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنَةٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 اَوْ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنَةٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 اَوْ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنَةٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً
 اَوْ رَايَتْ بِرُّمَعِهِ سَلْسَلَةٌ كَلْبِيْنَةٍ اَوْ رَايَتْ بِغَيْرِ جِلْدٍ اَوْ رَايَتْ سَلْسَلَةً كَلْبِيْنَةً

۱۷۴۵

۱۷۴۶

۱۷۴۷

۱۴۵۵

اگرے کی خوبی بارگاہی **ف** غرض یہ کہ سوال غفلت و سستی نہ ہو سوال کی عادت بلالوق جابر جبار و زرت یحییٰ اشہرا
 نلما قضیت جوارینی نزلت فاستبطنت بطن الوادی فتودیت فظفرت اماکی وخلقنی وعن قیس
 وعن یحییٰ فلم ار احد الشمر تودیت فظفرت فلم ار احد الشمر تودیت فظفرت رأینی فاذا هو علی
 العرش فی الهواء یعنی جبرئیل فاحدثنی رخصه شدیدہ فانیک خدیجہ فقلت دیر وونی قدر وونی
 فصبا علی ماء فانزل الله یا اھما المذکر ثم فاخذ بجاری اور مسلم بن جابر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اگر
 ہمارے میں ایک عینہ ایک حکمت کا عینہ بن اپنا حکمت پورا کر دیکھا تو میں ناس کے اندر اور تو مجھ کو کہنے بکارا تو میں نے اپنے
 اور پیچھے ہانپنے اور بائیں دیکھا تو میں نے کیل نہ پایا پھر مجھ کو کہنے بکارا تو میں نے کہنے لگا سو میں نے دیکھا پھر مجھ کو کہنے بکارا تو میں نے اپنا
 سر اٹھایا تو وہی فرشتہ یعنی جبرئیل ہوا میں تخت پر بیٹھا اور مجھ کو سخت کہی نے لیا تو میں نے خدیجہ باس آیا سو میں نے کہا مجھ کو اور ہاوا تو مجھ
 کو ہوا دھایا اور مجھ کو باری جبرئیل کا پھر نہ سورہ مدثر اور انبی انہ حضرت مارنے والے اور کون کو خدا بلال سے ہی خود **لاف**

۱۴۵۶

حضرت ہرول قرآلی سورت و نری پھر میں ہر جی بند ہی او کے بعد سورہ مدثر و زراق السوسی بن مخرمہ خبات
 هذا الک خبات هذا الک و **تالہ** لا یتہ فہی مہ یعنی قباہ من دینا کج ہر زکرا بالذہب بخاری
 مسلم بن حمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ قباہ میں تیرے واسطے چپا رکھی قباہ میں تیرے واسطے چپا رکھی حضرت نے

۱۴۵۷

میں نے کہ یہ مخرمہ سے فرمایا اور شیمی ہا جی میں سو کا کھر کا تھا **ف** جب حضرت نے یہ حدیث فرمائی اور قباہی اور وقت کہ شیمی
 کہ ہر آدمی انہا اس واسطے دیا ہو کہ سو کج یعنی ہر انسان دخلت انجہ فسمعت خشفہ فقلت من هذا قال
 هذه العیصاء بنت ملحان أم انس بن مالک مسلم بن انس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں بہشت میں داخل ہوا

۱۴۵۸

تو میں نے جی کہ چپے میں پوجا کیوں فرشتوں نے کہا کہ یہ عیصاء بنت ملحان کی بیٹی انس بن مالک کی بیٹی تھیں کہ آیت اللیلۃ
 رجاہن اتیان صعدا ابی النجیہ فا دخلانی دارا ہی احسن و افضل لہا ارقا احسن و ہما کا لا
 اتا ہذا الذکر ان الشہداء بخاری میں ہر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں نے آج کی رات دو درودوں کو دیکھا سو

۱۴۵۹

مجھ کو ایک نر پھر ہا لیکھ پھر مجھ کو انھوں نے ایک گھمراہ داخل کیا کہ بت اچھا اور تیرے تھامنے اور اس بستر کھی نہیں دیکھا اور انہوں نے دو
 کہا کہ گھر تو شہد من گھر **ف** حضرت نے خواب میں دیکھا **خر** ابن عمر را یت امرأۃ سوداء ثائرة قال انس
 خر جت من المذنبۃ حتی نزلت مہبۃ فانا و لہا ان و بآء المذنبۃ فقل لال مہبۃ بخاری میں ہر سے

۱۴۶۰

برہم سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں نے خواب میں دیکھا کہ ایک باعورت جس کے سر کے بال پریشان تھے میں نے علی ہان تک کہ میرے سر کے
 اور جی میں نے اوکے پیر کی کہ میں نے کہا و با مہبۃ من الی **ف** مہبۃ جھکا کا مہ جھینے سے جھکوس یو ہاں یہود ہتے تھے دینے
 میں انہو باری تھی جسے کہ حضرت نے دعا کی اور یحییٰ دیکھا تو وہاں سے و با جاتی رہی اور حضرت میں جازی **خر** عائشہ را یت جھاکر
 یحکمہ بعضہا بعضا کو را یت عمر و یحییٰ فصبہ و هو اکل من سبب الشواکب بخاری میں ہر حضرت عائشہ سے
 روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں نے دو رخ کو دیکھا کہ ایک کا نصف اور نصف کے سر کو کچھ ڈالت تھا اور دوسرے کو کچھ اپنی آویان گھسیٹ
 پیرتا تھا اور انہی اول ماہر جموئے کی کہ رحم خالی **ف** عمر بن عمر حضرت سے میں برس لگے تھا جو کہ نام پر سادہ جموئے کی اور میں

۱۷۹۱

رسول کا یہی واسطہ ایسے سخت غلاب میں گرفتار ہوا کہ اس نے کہا اے اللہ تعالیٰ میری حالت کو دیکھ کر کیا فرما
 دے عقیقہ بن داغے فائینا برطیٹھن و طیب ابن طاب فَاوَلَتْ الرَّفِیْعَةُ لَنَا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فِي
 الْآخِرَةِ وَآقَاتِنَا فَاذْكُرْ طاب طاب سلم بن انس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں نے ایک کتہ کو کچھ سال تک سوتا ہوا
 دیکھا ہوا کہ جیسے ہم عقبہ بن رافع کے گھڑ میں بیٹھا ہوا کہ تر پٹھانے لگے اُس کے کہ جس قسم کا ابن طاب نام ہو تو سینے اسی نمبر کی کہ
 فوت یعنی کچھ لمبی ہو گیا میں اور نیک انجام ہو آخرت میں اور البتہ ہمارا دین بہتر اور عمدہ ہو حضرت نے یہ تعبیر لفظوں سے
 نکالی کہ فوت رافع سے اور واقعت تھمت سے اور بہتری طاب سے معلوم ہوا کہ تعبیر کا یہ بھی ایک طریقہ ہے کہ مرنے والے کے بطور فال کے
 مطلب سمجھے ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں نے عمرو بن عامر غزالی کو کچھ کھانے کی اجازت دی کہ وہ اپنے گھوڑے پر بیٹھ کر

۱۷۹۲

اویس کے سامنے دکان چھوڑا اور اہل کمال تھا کہ ابو موسیٰ نے روایت فرمائی کہ میں نے ایک کتہ کو کچھ سال تک سوتا ہوا
 دیکھا ہوا کہ جیسے ہم عقبہ بن رافع کے گھڑ میں بیٹھا ہوا کہ تر پٹھانے لگے اُس کے کہ جس قسم کا ابن طاب نام ہو تو سینے اسی نمبر کی کہ
 فوت یعنی کچھ لمبی ہو گیا میں اور نیک انجام ہو آخرت میں اور البتہ ہمارا دین بہتر اور عمدہ ہو حضرت نے یہ تعبیر لفظوں سے
 نکالی کہ فوت رافع سے اور واقعت تھمت سے اور بہتری طاب سے معلوم ہوا کہ تعبیر کا یہ بھی ایک طریقہ ہے کہ مرنے والے کے بطور فال کے

۱۷۹۳

نخل قد هب و هب الى انك اياما اوهج فاذا هي المدينة يذرب ورايت في رؤياي هذه
 اني هزئت سيقا فقطع صدر فاذا اهو ما اصاب من المؤمنين يوم احد ثم هزئت انا احب
 فماد احسن ما كان فاذا اهو ما جاء الله به من الفتح واجتماع المؤمنين اسدده مسدده وعلقه بالبحر
 بخاری اور سلم بن ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں نے ایک کتہ کو کچھ سال تک سوتا ہوا
 دیکھا ہوا کہ جیسے ہم عقبہ بن رافع کے گھڑ میں بیٹھا ہوا کہ تر پٹھانے لگے اُس کے کہ جس قسم کا ابن طاب نام ہو تو سینے اسی نمبر کی کہ
 فوت یعنی کچھ لمبی ہو گیا میں اور نیک انجام ہو آخرت میں اور البتہ ہمارا دین بہتر اور عمدہ ہو حضرت نے یہ تعبیر لفظوں سے
 نکالی کہ فوت رافع سے اور واقعت تھمت سے اور بہتری طاب سے معلوم ہوا کہ تعبیر کا یہ بھی ایک طریقہ ہے کہ مرنے والے کے بطور فال کے

۱۷۹۴

خواب میں کہ میں نے ایک کتہ کو کچھ سال تک سوتا ہوا دیکھا ہوا کہ جیسے ہم عقبہ بن رافع کے گھڑ میں بیٹھا ہوا کہ تر پٹھانے لگے اُس کے کہ جس قسم کا ابن طاب نام ہو تو سینے اسی نمبر کی کہ
 فوت یعنی کچھ لمبی ہو گیا میں اور نیک انجام ہو آخرت میں اور البتہ ہمارا دین بہتر اور عمدہ ہو حضرت نے یہ تعبیر لفظوں سے نکالی کہ فوت رافع سے اور واقعت تھمت سے اور بہتری طاب سے معلوم ہوا کہ تعبیر کا یہ بھی ایک طریقہ ہے کہ مرنے والے کے بطور فال کے

۱۷۹۵

اولیائی خواب کو رکشت اکثری ہوا یہ کہ میں نے ایک کتہ کو کچھ سال تک سوتا ہوا دیکھا ہوا کہ جیسے ہم عقبہ بن رافع کے گھڑ میں بیٹھا ہوا کہ تر پٹھانے لگے اُس کے کہ جس قسم کا ابن طاب نام ہو تو سینے اسی نمبر کی کہ
 فوت یعنی کچھ لمبی ہو گیا میں اور نیک انجام ہو آخرت میں اور البتہ ہمارا دین بہتر اور عمدہ ہو حضرت نے یہ تعبیر لفظوں سے نکالی کہ فوت رافع سے اور واقعت تھمت سے اور بہتری طاب سے معلوم ہوا کہ تعبیر کا یہ بھی ایک طریقہ ہے کہ مرنے والے کے بطور فال کے

۱۷۹۶

فقلت من هذا فقال هذا ليل ورايت قصرا يفناهم جارية فقلت لمن هذا فقالوا العنبري
 فارذت ان ادخله فانظر اليه فذكرت غير تات فقلت مديرا فبكى عمر وقال عليك
 اعادوا رسول الله بخاری اور سلم بن ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ میں نے ایک کتہ کو کچھ سال تک سوتا ہوا
 دیکھا ہوا کہ جیسے ہم عقبہ بن رافع کے گھڑ میں بیٹھا ہوا کہ تر پٹھانے لگے اُس کے کہ جس قسم کا ابن طاب نام ہو تو سینے اسی نمبر کی کہ
 فوت یعنی کچھ لمبی ہو گیا میں اور نیک انجام ہو آخرت میں اور البتہ ہمارا دین بہتر اور عمدہ ہو حضرت نے یہ تعبیر لفظوں سے نکالی کہ فوت رافع سے اور واقعت تھمت سے اور بہتری طاب سے معلوم ہوا کہ تعبیر کا یہ بھی ایک طریقہ ہے کہ مرنے والے کے بطور فال کے

۱۷۹۷

خواب میں کہ میں نے ایک کتہ کو کچھ سال تک سوتا ہوا دیکھا ہوا کہ جیسے ہم عقبہ بن رافع کے گھڑ میں بیٹھا ہوا کہ تر پٹھانے لگے اُس کے کہ جس قسم کا ابن طاب نام ہو تو سینے اسی نمبر کی کہ
 فوت یعنی کچھ لمبی ہو گیا میں اور نیک انجام ہو آخرت میں اور البتہ ہمارا دین بہتر اور عمدہ ہو حضرت نے یہ تعبیر لفظوں سے نکالی کہ فوت رافع سے اور واقعت تھمت سے اور بہتری طاب سے معلوم ہوا کہ تعبیر کا یہ بھی ایک طریقہ ہے کہ مرنے والے کے بطور فال کے

۱۷۹۸

خواب میں کہ میں نے ایک کتہ کو کچھ سال تک سوتا ہوا دیکھا ہوا کہ جیسے ہم عقبہ بن رافع کے گھڑ میں بیٹھا ہوا کہ تر پٹھانے لگے اُس کے کہ جس قسم کا ابن طاب نام ہو تو سینے اسی نمبر کی کہ
 فوت یعنی کچھ لمبی ہو گیا میں اور نیک انجام ہو آخرت میں اور البتہ ہمارا دین بہتر اور عمدہ ہو حضرت نے یہ تعبیر لفظوں سے نکالی کہ فوت رافع سے اور واقعت تھمت سے اور بہتری طاب سے معلوم ہوا کہ تعبیر کا یہ بھی ایک طریقہ ہے کہ مرنے والے کے بطور فال کے

و انزل من انكا و كان ربيضا ابو طلحة بن عوف و انظر في اور سينه جوتي كي چي پني تو سينه كها كيون ي تو فرشته كها كيه بلال تو
 ابو ايك سينه مثل كها كيو اسكے سينه ميں ايك عورت جي تو سينه كها كيه كيسا محل جي فرشتوں كے كها ميل عربن كها كيو سوينه
 جايا كيو اسكے اندر جاؤن تو او كيو كيون چو كيو تير شك يا ديكر ايسو سوينه بچو يا بابت ديكر تو عمر فاروق روئے اور عرض كي كه
 يا رسول الله مين كيا آپ پر شك كرا ف اس حديث ميں ائم كليم جن كا ربيضا اور ربيضا القاب جي اور بلال اور عمر فاروق رو كيو
 بشت كي بشارت بر ه سدد بن ابى وقاص سالت ربي ثلثا فاعطاني الثلثين ومنعني واحد فاسالت
 ربي اى ايهك اقميتي بالسنه فاعطانيها وسالته اى ايهك اقميتي بالفرق فاعطانيها وسالته
 اى ايهك اقميتي بالسنه فاعطانيها وسالته اى ايهك اقميتي بالفرق فاعطانيها وسالته اى ايهك اقميتي بالسنه فاعطانيها وسالته
 سوال كيا سو دو سوال تو پير قبول كيو ايك بكونه كيا ايسو سوال قبول كيو يه ربه كيا كيه ميرى است كو خط سے نہ ہلكر كے سوا و كيو
 قبول كيا اور دوسر سوال مينه كيا كيه ميرى است كو نہ باديوے سوا و كيو بھي قبول كيا اور تيسر سوال مينه كيا كيه ايك اسے تپہ بلال
 اور خوزري زولے سوال سے بھونك كيا ف خط اور عرق است محمد ميں ايسا نوا ابو اور بونگا كہ تمام است بكار كى
 بلال بوجائے جيسے اگلى امين بلال بكونن كين بلال فقال تعددين بوجائے ربا و اور ربهگا هر بن عمر عجب كہا
 فحسب لها اواب السماء يعني قول رجل دخل معمر في القتل فقال الله اكبر كبريا و الحمد لله
 كبريا و سبحان الله بكرة و اصيله قال بن عمر كما تركتم من منذ سمعتم رسول الله صلى الله عليه
 وسلم يقول ذلك مسلم بن عبد الله بن عمر سے روایت ہو كہ حضرت نے فرمايا كہ مكو اس سے تعجب كيا كيو اسے واسطے آسمان
 كے دروازے كھولے گئے اوس ميں كوكا قول مروى و مكو كے ساتھ نماز ميں اخل ہوا پھر بولے اللہ اكبر كبريا و الحمد لله كبريا و سبحان
 اللہ و اصيله كہ ابا ابن عمر نے كہا كين ان كلمات كو بھي نہيں بھوڑا جب كہ سينه حضرت كيو كہ كتنے مناف يميني يكلامند كوايسا
 بسند اچھو كے واسطے آسمان كے دروازے كھولے گئے ق سدد بن ابى وقاص عجب ميں كھو كھو اللہ اكبر كبريا و الحمد لله كبريا و سبحان
 اللہ اسے معمر كہا كين ان كلمات كے خطاب رضى الله عنه بخارى اور مسلم ميں ايسو حديث ميں
 سے روایت ہو كہ حضرت نے فرمايا كہ مكو تعجب يا لعون عرقن سے جو ميرے پاس تھيں ہوا و تھيں نے جب تيرى آواز سنى تو بولے ميں
 بكونن حضرت نے عمر فاروق سے فرمايا ف اسكا فضل قصه اٹھويں باب ميں كذا كہ چو تيرين خراجك باس اتين كر ميں تھيں
 جب عمر فاروق كے آئے تو كتنے خوب چھپكين حضرت نے عرض فرماي ق اسما مة من زدي فقت على باب الحجة فكان عاتق
 من حاكلها المساكين و اطفال النج و محبوسون غير ان اطفال النج قد افرصهم الى الكار و فمروا على
 باب النج و اذ اعانتهم من حاكلها اليسا بخارى اور مسلم ميں اسامہ بن زيد سے روایت ہو كہ حضرت نے فرمايا كين كرا ايفت
 دروازے پر سوا كے اكثر داخل ہونے والے محتاج لوگ تھے اور و تہند عيش و ايسے كے داخل ہونے سے رو كے گئے ميں كرو و زج كے
 لوگوں كو و زج كي طرف بلانے كا كھو اور ميں و زج كے دروازے پر كھڑا ہوا تو اكثر اسكي داخل ہونے والى عورتين تھيں ف
 وہ قصد الرجا ہما اندامون كين محتاجون كے بعد بشت ميں اخل ہونے صاب كے واسطے بشت كے دروازے پر رو كے جاويكے
 ق عاتقہ كنت ابي كاني ربي عاتقہ ربي قال كذا و خبر ابى ربي فاحككت عاتقہ رضى الله عنه

۱۶۶۶

۱۶۶۷

۱۶۶۸

۱۶۶۹

۱۶۷۰

غلام ہوگا جو ان کے اعتقاد کے موافق ہو سو فرما دیا کہ میں تمہارا رب ہوں تو مسلمان کہہ دینے لگاں تو ہمارا رب ہوسکا اتنا عکس کر گئے اور
دو رخ کی پشت پر بل ہوا رکھا اور گویا تو میں اور میری امت سب پہلے مجھ کو کہنے اور سوچنے سے پہلے کہیں اوس دن کو نبیوں کی گناہوں کو
قول و سن میں ہو گیا کہ ان کی بنا پر ہمارا دو رخ میں آنکھ سے ہر جسے سعدان کے کھاتے سعدان ایک تھا کہ نام پر اوس کے کھاتے سرخ
ہوئے ہر حضرت نے فرمایا کہ کھاتے سعدان کے کھاتے دیکھ میں اصحاب نے کہا ہاں یا رسول اللہ حضرت نے فرمایا تو وہی دو رخ کے آنکھ سے بھی
سعدان کے کانٹوں کی طرح ہیں مگر یہ کہ سو خدا کو کوئی نہیں جاننا کہ کھاتے کھاتے ہر جسے ہر فرشتے ان آنکھوں سے گویا کہ دو رخ کے اندر
بل صراط سے کچھ لپیٹے ان کے اعمال کے سبب سے سو بعض آدمی تو اپنے عمل سے ہلاک ہو جاوے گا اور بعض آدمی نجات پائے گا
یہاں تک کہ جب حق تعالیٰ بندوں کے فیصلے سے فراغت کرے گا اور جاہلیہ کے کھاتے دو رخ والوں میں اپنی رحمت جس کو کہ چاہے تو فرشتے
ملا کر کھانے دو رخ سے اوس کو کالیں جسے خدا کے ساتھ کچھ ترک نہ کیا ہو جس نے رحمت کا ارادہ کیا ہو جو کہ لا الہ الا اللہ کہتا ہو تو فرشتے ان کو
دو رخ میں پہچانیں گے ان کو ہر سہ کے نشان سے پہچانیں گے اگر آدمی کو جلاؤ الیگ مگر جس کے نشان کو جسے دو رخ پر سجدہ کا حکم ملے
حرام لیا ہو تو دو رخ سے نکالے جائیں گے یہ بھی پھر ان پر کھاتے چھڑکا جاوے گا تو اوسے ویسے اور چھینے جیسے پانی کے ہمو کے کوئے پر خرچ در
دانہم اور ٹھٹھا پر پھر حق تعالیٰ بندوں کا فیصلہ کرے گا اور ایک دہائی رہا ہوگا دو رخ کا سامنا کرنے ہوئے اور وہ اہل بہشت میں سے
پہلے بہشت میں آئے ہوں گا تو وہ امریکا اور میرے ہر اوسند دو رخ کی طرف سے پھر کہ لاو کی برہنہ ہو جائے گا کر دیا اور اوسکی لپٹ نے محلو
جلاؤ الا سو خدا کا کیا کرے گا ہاں تک کہ خدا اوس کا دعا کرے گا پھر حق تعالیٰ فرماوے گا کہ اگر میں یہ تیرا سوال پورا کروں تو اسے سو
تو کچھ بھی سوال کرے گا سو وہ شخص کہ میں اسے سوچوں نہ مانگوں گا سو اپنے سے مانگنے کے قول فرما کرے گا جس طرح کہ خدا چاہے گا تو
خدا اسے کوئی دوزخ کی طرف سے نہیں دے گا سو جب کہ بہشت کا سامنا کرے گا اور اوس کو دیکھ جائے گا کہ خدا چاہے گا پھر کہ اگر میرے بچوں
آئے رہے بہشت کے دروازے پر حق تعالیٰ اوسے فرماوے گا کہ کیا تو قول قرار نہیں کر چکا ہے سو جسے سوال کرے گا وہی سوال کرے گا تو
اور آدمی کو کیا ہی دغا باز ہو تو وہ کہے گا اور میرے وعدے کا مانگے گا یہاں تک کہ حق تعالیٰ اوسے فرماوے گا کہ میں یہ اپنے بندوں کے لئے
اوسے سوال کرے گا تو وہ کچھ بھی مانگے گا تو وہ کہے گا کہ میری عزت کی قسم کہ نہ مانگوں گا سو پھر سے مانگنے کے قول فرما کرے گا تو خدا اوس کو بہشت کے
دروازے پر کرے گا سو جب بہشت کے دروازے پر گھڑا ہوگا تو تمام بہشت و سپر نمود ہو جائے گی ہوا سکو نظر آوے گا جو کچھ اور سینہ منور و فرحت سے
تو چہ ہوگا جس کا خدا چاہے گا پھر کہ اگر میرے بچوں کو بہشت میں داخل کر دے تو حق تعالیٰ اوسے فرماوے گا کہ کیا تو قول قرار نہیں کر چکا ہے کہ میں
نہ مانگوں گا تو وہی آدمی کہی ہی تو خدا ہر تو وہ کہے گا اور میرے بچوں کی عزت کی قسم کہ نہ مانگوں گا سو ہمیشہ دعا کرے گا کہ یہاں تک
کہ خدا اوسے رضی ہوگا جو اس کو سب کہ خدا رضی ہوگا تو فرماوے گا کہ جا بہشت میں سو جب کہ بہشت میں جاوے گا تو حق تعالیٰ اوسے فرماوے گا
کہ کسی چیز کی آرزو نہ کر تو وہ کہے گا کہ میں سب اور منافق ہر کرے گا یہاں تک کہ اس پر کرم ہوگا کہ حق تعالیٰ اوس کو دلاوے گا کہ کوئی کھانا
اور فلانی چیز مانگ یہاں تک کہ جب اوسکی سب ہوس اور خوشی ہو جائے گی حق تعالیٰ فرماوے گا کہ میرے یہ سوال پورا ہوئے اور اوسے
ساتھ دنا اور بھی اس میں سے تفصیل تمام رویت الہی قیامت میں ثابت ہوئی اور یہی مذہب ہر اہل سنت و جماعت کا
جس کو کون کی قسمت میں نہتیدار نہیں اس کا حکم کرتے ہیں لیکن یہ اعتقاد ضرور کرنا چاہیے کہ حق تعالیٰ مشکل اور جسم سے پاک ہے
وہ ہر کی کیفیت کہوں نہیں معلوم جس طرح حق سبحانہ کو دیکھنا ہی اور حقیقت کا عقیدہ نہیں اسی طرح اپنے بے حجت کھلانے پر بھی قادر

اوتھتا ہوا اور کہیں سوچتا ہوا و سکول لازم کی کہ و ترکو عشا کے وقت پڑھ لیا کرے لیکن حضرت کے فعل سے ثابت ہو کہ ترک بعد کویت
 بجھ کر مرنے سے **ق** ان غم احبوا اھل الذوق اذ اذ عینکم لھا بھاری اور سلم بن عبداللہ بن مرثدہ
 کہ حضرت نے فرمایا کہ ان موت کو قبول کیا کہ جب کہ اس کے واسطے بلائے **ب** اوف یعنی شادی کا کیا تا قبول کرنا ضروری ہو جو عمر و
 بن الزبیر بن عوف اباسعیان عند حطہ الجبل حتی یظفر لک المسلمین **ق** اللفظ بن عبد اللطیف
 یوم الفجر کذا وقع مرسل و هو من حدیث عکسۃ عن النبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم جاری بن
 بن یزید سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ وہ کہ جو بوسنیان کو ہمارے لئے کو لباس یا گھوڑوں کے از دام پاس تاکہ مسلمانوں کے لشکر کو کھچے
 حضرت نے عباس بن عبد المطلب سے فرمایا فتح کے دن یہ روایت کو اس طرح مرسل ہے یعنی خود تابعی کے بدون صحابی کے نام سے حدیث
 روایت کی کہ کج حقیقت میں یہ روایت حضرت عاصمہ سے ہے **و** باقی متصل حدیث کا اسی باب میں ہے کہ حضرت ابو عبد اللہ اذ احبوا فی
 وجوہ الصد احبوا الثراب سلم بن قداش سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تعزیر کرنے والوں کے مومنوں میں نکال دینا یا کھینچنے
ف یعنی صبح اور تقریباً کتر ہالند و جھوٹے سے غالی نہیں ہوتی تو او کو کچھ موت و تاکہ دوبارہ جھوٹو ہو جائے کا قصد کریں اور تاکہ تم غریب
 لشکر وغیرہ کو لوگوں کی کھانے حضرت نے اپنے ترحون کو انعام دیا ہے اسکا جواب ہے کہ حضرت کی جو مع تھی سوسب سے تھی اور وہ میں نے ان کا
 مختلف اور ان کی مع کے ہرگز نہ مانے سے خالی نہیں اس حدیث میں اس طرح کی خدمت سے جسے مداحی کو اپنی روزی کا پیشہ قرار دیا
 اور اگر کوئی شخص کسی پیدا کرخص کی بھی مدح بطبع دنیا کے لئے تو درست ہے تاکہ اور لوگ مدوح کے کیا عمل میں اقتدار کریں نہ کہ یہی
 درست نہیں میں مع دنیا ہو یا جھوٹے **ہ** اؤ ہریرہ **ق** اخشل فاقا فی ساقرا علیکم ثلث القرآن فحشاہ و حشد
 فخرج نفر اقل هو اللہ احد سلم بن ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تم لوگ ایک جاہلوک میں اب قرآن کی تمنا کی
 بڑھو جو صبح ہو جسکو جمع ہوا تھا پھر حضرت کمر سے نکلے پھر قل ہوا صداح پڑھا **ق** اخط علیک میضا فاک
 فسکون لھا **ق** الہ سحر لیکلہ القرآن سلم بن ابوقداش سے روایت ہے کہ حضرت نے مجھے فرمایا کہ کھانے و
 اپنے دشمن کے برتن کو اسکا بھال ادا ہر ہوا ہی حضرت نے اس کی صبح کے وقت فرمایا جس ات کے پھیلے وقت تمام ہوا **ف**
 صبح کو حضرت نے یہ فرمایا اور دن کو لباس غالب یعنی اور بانی تھا اسی برتن سے بانی او بیٹے لگا اور وقت اہ بلائے لگے یہاں تک کہ نماز
 نکلا آسودہ ہو گیا اس حدیث و حدیث ثابت ہے کہ بانی کا جو شکر کرنا و شکر آئین کی خبر دینا **خ** جابر اخبر ذالک ان الخطاب
ق الہ لھا ابر لھا آخبر لہ یقتضی دینہ بھاری میں جابر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اسل خبر سے خطاب کے بیٹے میں
 غم فاروق کو پھر حضرت نے جابر سے فرمایا جب کہ جابر نے اپنے قرض ادا ہو گیا کی حضرت کو خبری **و** جابر کے باپ جنگ مدینہ میں شہید ہو
 انور بہت قرض تھا نہ سنا فرما او کے باغ میں مرجع الاھل میں جا کہ قرض خواہوں کو دین قرض بہت تھا اور خواہوں کو قبول کیا جابر حضرت سے
 سفارش کروانی قرض غماہ ہو رہا تھا انھوں نے نہا حضرت نے جابر سے فرمایا کہ تو ہر قسم کے غم کو کہ علم و علم و ذہیر رب جابر ذہیر لکے تو
 حضرت ایک بڑے ذہیر کے گرد گھومے اور اس کے اوپر جا کر بیٹھے پھر جابر سے فرمایا کہ قرض ملوں کو تو ان کو مل کے دینا شروع کر جا رہے دینا شروع کیا
 یہاں تک کہ سب قرض ادا ہو گیا جابر سے روایت ہے کہ او جو ایک قرض ادا ہوا لیکن وہ ذہیر سب اس طرح تھا کہ کسی اور میں نہیں تھا کیا حضرت
 سب قرض ادا ہو چکا ہے حضرت نے فرمایا یعنی غم فاروق کو اس حال کی خبر کر دے ہوا سب کے غم فاروق کو جابر کے قرض ادا ہو گیا کہ جی کو بھی

۱۸۱۷

۱۸۱۸

۱۸۱۹

۱۸۲۰

۱۸۲۱

۱۸۲۲

۱۸۴۳

جب بارے نے فاروق کو خبر دی اونھوں نے کہا کہ جس طرح قرین لیکھتے تھے اسی وقت میں جاں لیا تھا کہ بارے ویرت ہوگی عاقبت
 اذنی الی ابابکر ابابو و احاد حتی اکتب لکنا باؤاکی احاف ان یتمی ممکن و یقول قائل انا اولی و
 یائی اللہ و العو صون الا ابابکر بنی امی اسلم میں حضرت عائشہ رضی روایت کردہ حضرت فریاد کہ ابابکر بارے باپ ابوبکر اور بنے
 بجائی کہ وہ میں انکو نوشتہ لکھد میں یعنی خلافت نامہ اس واسطے کہ میں غم نہ کر تا ہوں کہ آرزو کرے کوئی آرزو کرنے والا لکھنے کوئی کہنے
 کہ میں اللہ تر میں خلافت کا اور نہ کاغذہ اور سلطان کو لگوں ابوبکر کو **کوف** اول حضرت عباس علیہ السلام تھا کہ صدیق اکبر کو مخالف نام لکھد میں تاکہ
 دوسرے کو دعوی نہ ہو پھر تقدیر اور جامع مؤمنین چھوڑا یعنی اقتدر میں تھی کہ صدیق اکبر خلیفہ ہو گیا اور جامع مؤمنین بھی اؤ زمین کی

145

خلافت پر ہو گا پھر کہنا کیا ضرورت اس میں ہے منافق معلوم ہوا کہ سو محمد بن ابی بکر کے کسی خلاف حضرت کا منظور تھی قی عایشہؓ
 اذ کذبوا انتھما اسم اللہ وکلفا بنی اوسلم میں حضرت عائشہؓ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ تم ذکر لکریا کرو خدا کے نام کو اور
 کہا یا کرو ف حضرت عائشہؓ نے کہا کہ یا رسول اللہ صبح تو ہم بہت کہ تازہ ایمان لئے ہیں جہاں باس گوشت لائے ہیں ہم نہیں جانتے کہ
 فیج کے وقت خدا کا نام لینے ہیں نہیں تیرے بعد حضرت فرمائی یعنی اہل اسلام پر خبر گمان کیا جائیے ویو لوگ خدا کے نام کو فیج کے وقت تترک
 کہتے تھے تو تم پر منع شیے کے واسطے خدا کا نام لے لیا کرو اور یہ بطل نہیں کہ اگر جو انھوں نے فیج کے وقت خدا کا نام نہ لیا ہو تو بھی تمھاری
 بسم اللہ کرنے سے بال ہو جاوے گا اواسط کے بسم اللہ کو نہ فیج کے وقت شرط ہو کہ اُنْشُ اذ کذبوا اسم اللہ وکلفا بنی اوسلم میں حضرت عائشہؓ سے
 روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ کھانے کے وقت بسم اللہ کہا کرو اور با پیہ کے شخص اپنی قریب ہوتے

1A7B

۱۰۰
 ۱۰۱
 ۱۰۲
 ۱۰۳
 ۱۰۴
 ۱۰۵
 ۱۰۶
 ۱۰۷
 ۱۰۸
 ۱۰۹
 ۱۱۰
 ۱۱۱
 ۱۱۲
 ۱۱۳
 ۱۱۴
 ۱۱۵
 ۱۱۶
 ۱۱۷
 ۱۱۸
 ۱۱۹
 ۱۲۰
 ۱۲۱
 ۱۲۲
 ۱۲۳
 ۱۲۴
 ۱۲۵
 ۱۲۶
 ۱۲۷
 ۱۲۸
 ۱۲۹
 ۱۳۰
 ۱۳۱
 ۱۳۲
 ۱۳۳
 ۱۳۴
 ۱۳۵
 ۱۳۶
 ۱۳۷
 ۱۳۸
 ۱۳۹
 ۱۴۰
 ۱۴۱
 ۱۴۲
 ۱۴۳
 ۱۴۴
 ۱۴۵
 ۱۴۶
 ۱۴۷
 ۱۴۸
 ۱۴۹
 ۱۵۰
 ۱۵۱
 ۱۵۲
 ۱۵۳
 ۱۵۴
 ۱۵۵
 ۱۵۶
 ۱۵۷
 ۱۵۸
 ۱۵۹
 ۱۶۰
 ۱۶۱
 ۱۶۲
 ۱۶۳
 ۱۶۴
 ۱۶۵
 ۱۶۶
 ۱۶۷
 ۱۶۸
 ۱۶۹
 ۱۷۰
 ۱۷۱
 ۱۷۲
 ۱۷۳
 ۱۷۴
 ۱۷۵
 ۱۷۶
 ۱۷۷
 ۱۷۸
 ۱۷۹
 ۱۸۰
 ۱۸۱
 ۱۸۲
 ۱۸۳
 ۱۸۴
 ۱۸۵
 ۱۸۶
 ۱۸۷
 ۱۸۸
 ۱۸۹
 ۱۹۰
 ۱۹۱
 ۱۹۲
 ۱۹۳
 ۱۹۴
 ۱۹۵
 ۱۹۶
 ۱۹۷
 ۱۹۸
 ۱۹۹
 ۲۰۰

مستوفی

حضرت کیا اس سے نوحہ کری اور یہاں کرنے کی حرمت بتا کیے تا مابعد جو بی بی ق ابی مہر کی فرما کہ اذہبنا قطعہ اہلک یعنی
عراقینہ و مکر قالہ لکن فی اصحاب اہلک فی رمضان بخاری اور مسلم میں ابویہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا
جاہل ابیہ سے کفر ہا لون کو کھلا یعنی لون مجبورون کو جو ٹوکے میں حسین حضرت نے اس میں سے فرمایا جس نے اپنی جوڑ سے رمضان میں
جنت کی نصی ف ایک روایا اسنے کہا کہ یا حضرت میں ہلاک ہوا حضرت نے فرمایا کیا ہوا او سے کہا کہ میں نے رمضان میں اپنی جوڑ سے
جنت کی اور میں زور دیا تھا حضرت نے فرمایا خدا کا ذکر او سے کہا کہ جو مقد و زینب حضرت نے فرمایا تو دو مہینے برابر روزے رکھا او سے کہا
بلکہ وہاقت نہیں حضرت نے فرمایا تو سنا تھے محتاجون کو کھانا نہ او سے کہا کہ کہ جو مقد و زینب حضرت نے فرمایا تو بیچہ باچہ محمودی کے بعد

LATE

سنوینے سوار کے قول کو غمزدہ و غمزدہ دار و زمین اوس سے زیادہ تر غیرت دار ہون اور خدا مجھے بھی زیادہ تر غیرت دار ہو کر دے گا کہ وہ
 بنیاد و **ف** سید بن علیہ السلام کو کون سہرا تھے اور مضمون حضرت سے کہا یا رسول اللہ اگر میں اپنی جو رو کے پاس جہنمی ہو کو باؤن کو کو
 جھوٹے جاگوں تھلاش کر لاؤں حضرت نے فرمایا کہ میں اپنی زنا کا دعویٰ اسی وقت ثابت ہوگا جب کہ وہ ہون سکے گا کیونکہ یہ قسم کھا ہون
 اوس بات بال کی جسے تجھ کو دین حق پر ہے اگر اوس حالت میں میں حق کو تواری ہماروں تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی یہ قول غیرت سے
 اور غیرت خدا اور رسول کو پسند ہے اس حدیث سے معلوم ہوا کہ یہ کھاری کے وقت قتل کرنے سے خدا لڑنا نہیں لکھتا لیکن اگر گواہ ہو سکے تو ان کو قصاص لکھ
هو ان لم یحضر معکم او اذ لم یحضر معکم فاعلموا و علیکم ما حکموا و علیکم ما حکموا قال لا یسلم من یزید الحفیظ
 مسلم بن اہل بن جبر سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ کہنا سنو اور اطاعت کرو اپنے بادشاہوں کی اس واسطے کہ وہ غیر فرض ہو کر نہ ہو
 اور غیرت اور غیر فرض ہو کر نہ ہو جو یہ حضرت نے سلمہ بن زید سے فرمایا **سلمہ** نے کہا کہ یا حضرت اگر ہمارے ایسے مرد ہوں
 کہ جسے اپنی اطاعت لیون اور ہمارا حق نہ دیوں تو اوس وقت میں ہم کیا کریں تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی اگر یہ وہی فکرم کہ تو مجھ
 تر اطاعت واجب ہو اگر وہ عدالت نہ کر سکے تو خدا اوسے مجھ لگا **قال انما اخصصن اسمعوا و اطیعوا و ان اسئلکم**
علیکم عند حبشی کا ق **رأسه** **ذی بیه** بخاری اور مسلم میں ام حصین سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ کہنا
 اور اطاعت کرو اگر کسی حبشی غلام تم پر سردار ہووے گو کہ اس کا سر سیاہ یعنی **ف** غلام حبشی کا خلیفہ اور بادشاہ ہونا درست نہیں
 تو اس میں یث میں باسست جزی کے مراد یعنی اگر حبشی تمھارا جمدار یا صوبدار ہو تو اوس کی بھی اطاعت ضرور ہو اگر یہ بد ظاہر ہو کہ یا بد
 اس واسطے کہ اوس کی اطاعت درحقیقت خلیفہ کی اطاعت ہے جسے اوس کو سردار بنایا **قال علیکما اشتریکما فاعلموا انما**
الو کا لیمن اعق بخاری اور مسلم میں حضرت عایشہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ تو اوس لوٹری کو مول لے بھر
 اوس کو آکر آکر لے اس واسطے کہ آکر لوٹری غلام کے مال کا وہی وارث ہو تاہم جو آزاد کرے **ف** ایک لوٹری کو حضرت عایشہ نے
 جا یا کہ مول لیون اور لوٹری کر کے مالکوں نے کہا کہ ہم اس شرط پر بیعت کرتے ہیں کہ اس کی رات کا حق تمہارے تر حضرت نے یہ حدیث
 فرمائی یعنی وراثت کا حق آزاد کرنے والے کو جانتے اس کے مالک ناحی شرط کرنے میں **قال انموئسی اشتریکما فاعلموا**
علی و حوہما و حق و حقا و انما اشتریکما یعنی **من و حوہما** **بعدهما مع فیہ قال لا یؤ**
و یلا بخاری اور مسلم میں ابو موسیٰ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ تم دونوں اس پانی کو پو اور اپنے موند اور سینوں پر ڈالو
 اور خوش ہو یعنی اوس پانی کا بانی حبیب حضرت نے ماتمہ دھوئے اور کئی الی تھی حضرت نے ابو موسیٰ اور بلال سے فرمایا **ف**
 حضرت کے احباب سے بانی تبرک ہو گیا تھے نعمت ابو موسیٰ اور بلال کی جنسیت میں گیا **خ** **ابو موسیٰ اشتریکما فاعلموا** بخاری میں
 ابو موسیٰ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ سفارش کیا کرو لوگوں کی ثواب پانے **ف** یعنی سعی سفارش سے اہل حاجت کا کام
 نکان بناؤا کی وجہ **قال ان عمر و ابن مسعود و اشهد و اشهد و او مروی اللہما اشهدت**
 عند اشفاق القم بخاری اور مسلم میں عبداللہ بن عمر اور عبداللہ بن مسعود سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ لوگوں سے گواہی مانو کہ
 اور وہ یہی روایت ہون پر کہ انھی گواہ یہی حضرت نے چاند کے چمکنے کے وقت فرمایا **ف** عبداللہ بن مسعود سے روایت ہو کہ یہی
 میں نے جب کعبہ کے چاند کے چمکنا ایک کلمہ اچھا بھلا ہوتا تھا اور وہ ہمارے نیچے میرے نیچے سے فرمایا کہ کعبہ اور شاہر ہوا ہوا

۱۸۴۵

۱۸۴۶

۱۸۴۷

۱۸۴۸

۱۸۴۹

۱۸۵۰

ہماری میں انس سے روایت ہے کہ گناہ کر کے حضرت سے معجزہ ہوا تو حضرت نے او کو شوق فرما دیا یا غاضبی عیاض کی شفا میں ان سے خود کو
روایت ہے کہ گناہ کر لینے کے گناہ کے بعد حضرت سے معجزہ ہوا تو حضرت نے او کو شوق فرما دیا یا غاضبی عیاض کی شفا میں ان سے خود کو
تو نہیں پھر کیا ہو گا یہ ہر وقت کسما فرود سے دریافت کیا سب گواہی اور ابوہل نے ہر طرف آدمی تحقیق کے واسطے بھیجے سو ہر طرف
یہ ثابت ہوا تو قریش نے کہا یہ عمر بنی شقی فرکی حدیث نہایت مشہور ہے بہت صحابہ اسکی روایت ثابت ہیں چنانچہ عبد اللہ بن مسعود
اور عبد اللہ بن عمر اور علی رضی اور عبد اللہ بن عباس اور انس اور جابر بن مطعم وغیرہ سے حدیث کی کتابوں میں کثرت وایت
اور قرآن میں بھی اسکی خبر جو چنانچہ سورہ قمر میں جو تعالیٰ نے فرمایا اَفَرَبَّيْتِ السَّاعَةَ وَالسَّاعَةُ الْقَوْمُ ۝ وَلَنْ يَزِيدَ الْاِثْمَ قُلُوبًا
وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝ یعنی یاس آگلی قیامت اور دو گھڑے ہو گیا چاند اور اگر دیکھیں گناہ کر کے معجزہ تو مال جاویں اور میں
یہ مضبوط دانی حادہ جو حق تعالیٰ نے نشی القم کی خبر بلفظ غاضبی یعنی یہ عمر ہو چکا اگر تینہ دھال کی خبر جو تو کو گناہ اسکو جا دیکھتے چنانچہ جو
مفسرین کا اس اتفاق پر بعضے جاہل بے دین اور نصاریٰ اعتراض کرتے ہیں کہ اگر شوق القم ہو اہو تو انہیں اہل زمین پر غرضی نہ رہتا اس واسطے کہ گناہ
حال سبک میں نظر ہو جاتا اور عقل غائبان انسان کی پہلی چیز ہو اسکا جواب یہ کہ اہل زمین سے پہلی چیز غول زمین کو اس کو سب کے گناہ دیکھتے
او کہنے نہ دیکھا اور اگر یہ منقول بھی ہوتا تو بھی خبر نہ ہوتا اس واسطے کہ تمام زمین پر قمر حال کسان زمین پر بعضے ملک میں طلوع ہوتا ہے
بعض ملک میں غریب سے بعد اس واسطے کہ سطح زمین برابر نہیں بلکہ کئی کئی اونچی گول صورت ہے سب زمین پر ایک وقت میں طلوع نہ ہوتا
ہو سکے اور یہ بھی ہوتا ہے کہ بعضے وقت بعضے ملک میں ابر اور ہوا حال ہو جاتا ہے زمین جو کس کسوں اور خوف مختلف محسوس ہے زمین
ملک میں جو کس جن میں معلوم ہوتا ہے کسی ملک میں کئی اور زمین میں کئی اور اہل زمین کا حال ہوا تو اگر انہیں شوق القم غرضی رہا ہو تو کچھ
تعب نہیں آتا کہ کسوں اور خوف قمری چیزیں ہیں اور اہل بہات اور اہل نجوم کے نزدیک اونکے وقت ٹھہرے ہوئے ہیں بخلاف القم کے کہ اسکا
وقت کوئی خاص نہیں زمین سے کس کسوں کے اندر نظر پڑتا ہے اور دیکھا کرتے اور چونکہ شوق القم غرضی علوات اور زلازل اور کچھ سینے دیکھا گیا اگر اس
کو کسی ملک میں کسی شخص نے اتفاقاً دیکھا بھی ہو گا تو اپنی غلط فہمی سے دیکھا پھر ہی سمجھا کہ اسے کئے اور لکھنے کو اس مناسب سمجھا ہو گا تو اسے شوق
رات واقف ہوا تھا اور تھوڑی دیر ہوا تھا اور رات سو اور ارم کا وقت ہوا کہ لکھ لکھ لکھ لکھ اندر رہتے ہیں ایسے وقت میں آسمانی خالق ان کے
غافل نہ بنا کچھ عیب نہیں ان کو اکثر ہوتا ہے کہ مستعمل جاہل آسمانی ہو بعضے وقت دیکھتے ہیں جیسے ظہور انوار اور شہادت ثابت غیر کائنات ہوا
حال ان کو اکثر عالم ہونے غافل رہتے ہیں غرض کہ شوق القم سے حضرت کا معجزہ عظیم الشان ہے قرآن اور حدیث و اہل لوگوں کی روایت جو اس وقت
میں ملے تھے انہیں خود دیکھ چکے تھے نہایت ثابت و حافل کہ ہر کمال شاک اور تردید نہیں بعضے غامض حکم کہتے ہیں کہ چاند کا دو گھڑے ہونا ہماری عقل میں
نہیں آتا اسکا جواب یہ کہ تم کیا اور تمہارا عقل کیا صریح آیا تو چہ غرضی و کلمات بر وبال است تمام دنیا کے معجزات کا یہی حال ہے کہ عقل نہیں
باہرین عصا کا اڑنا ہوا جو نامہ سحر کا زہد ہوا نہایت آسانی کا ٹھکانا تھا ہمارے عقل غلام میں آتا ہے جو شوق القم میں تردد ہو بلکہ تحقیق میں معجزہ
اوی کا نام ہے جو ان عقل حیلان ہوتا ہے انفع الدین ہوا یہ حمد اللہ علیہ نے شوق القم اور دفع شہادت سنگین میں عیب رسالہ لکھا جسکو اس سے
زادہ تحقیق کا شوق ہو وہاں کو تلاش کر کے دیکھ شرم المسوق بن حرمہ و مکران بن الحکیم ایشیہ زوالہا ایشیہ التماس
عَلَيْكَ اَنْ تَنْتَهِىَ اِلَى عِيَالِكَ وَ تَدْرِي هَلْ لَكَ اَلَا الَّذِي يَنْزِلُ دُونَ اَنْ يَصْلُدَ دَا عَنِ الْبَيْتِ دَا عَنِ الْاَنْفَا
كَانَ الْمَصْدَقُ قَطْعَ عَقْلًا مِنَ الْمُسْرِ كَالْهَنْزِ وَالْاَلَا تَرَكُّهُمْ فَكَّرُوا يَنْ بِنَاجِي مِّنْ سَوْرَةٍ مِّنْ جَزْمٍ مِّنْ

نہایت شوق

۱۸۸۱

نَابَالٌ بُولِيَقٌ كَتَبَ مِنْ مَالِكٍ أَمْسَاكَ عَلَيْكَ بَعْضُ مَالِكٍ تَعَوَّ خَيْرُكَ لَكَ قَالَهُ لَهُ بِنَارِي أَوْ سَبِين

کسب بن مالک سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ رکھ لے اپنے تھوڑے مال کو یہ تیرے حق میں بہتر ہے حضرت نے کسب سے فرمایا

۱۸۸۲

ف کسب جہنم ہو کہ میں حضرت کے ساتھ ٹٹنے تھے خدا اور رسول کا اونیہ جاس و نہایت عتاب ہا جبکہ انکی توبہ قبول ہوئی تو

خوشی کے مارے انھوں نے پالاک اپنا نام خیرات کرین تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ

كَاتِرًا لِمَصَاوِينُ كَأَنَّهُ يَنْفَعُ فِي صَلَاتِهِ بَعْدَ صَلَاتِهِ بَعْدَ صَلَاتِهِ بَعْدَ صَلَاتِهِ بَعْدَ صَلَاتِهِ بَعْدَ صَلَاتِهِ بَعْدَ صَلَاتِهِ بَعْدَ صَلَاتِهِ

۱۸۸۳

اگے سے ہوا سے لے کر او کی تصویر میں ہمیشہ میرے سامنے آکر تھی میں نماز میں حضرت عالیہ نے زنگین پر جو جیسے تصویر میں تھیں گھر

میں لٹکا ہوا تھا تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی هَذَا صَبِيغٌ نَعْلَيْكَ يَا زَيْنُ دَهْمَا تَعْرِضُ لَكَ عَلَى صَفْحَتَيْهَا

وَكُلَا تَأْكُلُ مِنْهَا كَأَنَّكَ أَحَدُ أَهْلِ رَفَقَتِكَ يَعْنِي مَا أَبْدَعَ مِنَ الْبُذْنِ سَلَمٌ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

سے روایت ہے کہ جعفر بن ابی ہاشم نے کہا کہ میں نے حضرت سے سنا ہے کہ اس کے حق میں حضرت نے فرمایا کہ اس کو

فوج کچھ روکے خون میں جیوتوں کو رنگ بھرا دے اس کو اونٹ کے گوبان پر رکھ دے اور تو اس کا گوشت کھا اور نہ کوئی تیرے ساتھ ہو

۱۸۸۴

سے کھائے حضرت جب حج کو چلے سولہ اونٹ قربانی کے ایک شخص کو چلے گئے کہ ہاں چلے اس کے ہاں یا حضرت

اگر کوئی اونٹ راہ میں ماندہ ہو جاوے اور چل سکے تو میں کیا کروں تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یہ تیرے حضرت نے اس کو

بتائی کہ مالہ لوگ اس کو قربانی جان کے کچھ دین اور محتاج لوگ کھائیں هَذَا بَرٌّ لِرَبِّكَ عَوَّ ابْنِي خَبْرًا لِمَطْلَبٍ فَأَوْفَى

۱۸۸۵

أَنْ تَعْلَمَ لَكَ عَلَى سَقَايَتِكَ لَنْ تَعْتَمَعَ مَعَكَ سَلَمٌ جَابِرٌ سَے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ بانی کھینچو اور

عبد المطلب کی اولاد کو اگر بکھو یہ خون نہو کہ لوگ تمھاری آپ کشی پر غلبہ اور جو کہ کہتے تو میں بھی تمھارے ساتھ بانی نکالتا

۱۸۸۶

ف حضرت نے زمزم کی سبیل حضرت عباس سے فرمایا سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ

رَجُلًا يَأْتِي رَسُولَ اللَّهِ أَتَمُّهُ إِذَا كَانَ مَظْلُومًا أَوْ أَتَمَّتْ أَنْ كَانَ ظَالِمًا كَيْفَ أَتَمُّهُ قَالَ فَالْحَجَّجَةُ

أَوْ قَصْعَةٌ مِنَ الظَّلْمِ فَإِنَّ ذَلِكَ نَفْسُهَا بِنَارِي سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ

کی ظالموں پر غلامی نہ کر دے نہ کیا یا رسول اللہ اس کی مدد کرو نکاح جب کہ وہ ظالم ہو گا بھلا یہ تو بتلائے کہ اگر وہ ظالم ہو تو کیا کرنا ہوگی

۱۸۸۷

مدد کرو یا حضرت نے فرمایا کہ اس کو ظلم سے روک دینی ہوگی مدد کرو یا رسول اللہ اس کی مدد کرو نکاح جب کہ وہ ظالم ہو گا بھلا یہ تو بتلائے کہ اگر وہ ظالم ہو تو کیا کرنا ہوگی

اللہ علیکم قَالَهُ وَكَانَ بَيْنَهُمَا سَلَمٌ مِنْ هَذِيحَةِ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ سَمِعْتُ

کافروں سے قول کہ لو اگر میں نے اور اونیہ فتح پاؤں کی خدا سے مدد مانگیں یہ حضرت نے حذیفہ اور ان کے باپ سے فرمایا ف حذیفہ

سے روایت ہے کہ کفر قریش نے حضرت سے دس برس کی صلہ ہوئی تھی اویسی مدین میں اور میرا باپ کے سے تھے کہ لو کہ کافروں نے

جہم کیا اور بچھا کہ تم کمان جاتے ہو پھر تم کمان سے جہم میں کافروں نے کہا کہ تم ہماری صلہ کو توڑا یا جاتے ہو تو ہم سے خدا کا نوا کر

روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ جلدی کرو نیک عمل کو چھپنے سے پہلے ایک قبیل دو چھپے وہو ان تھرتے زمین کا جانور جو چھپتا تھا
 کا بچہ سے نکلنا پانچویں قیامت جو سارے عالم کو گھیر کر چھپنے اپنی موت باقی ذات کو ناس ہو جی میں اتنا قیامت تو ایسی موت سے
 پہلے ہوا کہ سو کرو قیامت سے پہلے سارے عالم میں ہوان ظاہر ہو گا۔ زمین سے ایک غیبی شکل کا جانور نکلے گا ہوا جو ذرا نیچا نکلا زمین
 کی زمین طہور ہم یقیناً من جنو یحضر ویکل ترن قیل افاقا فھم یخرج من جہاں مرق ویر ووی یسیر
 انکار زمین بر صنف یحیی علیہ فی ناز جھکے کیوں منع علی حکمتہ نذکی احدہم حلی یحیی من نقص
 کیونکہ وہ وضع علی نقص کیونکہ حلی یحیی من حکمتہ نذکیہ یکنزل اسلم من ابو ذر سے روایت ہو کہ حضرت نے
 فرمایا کہ کشتا سے مال جس کو کھنے والوں کو داغنے کی اوکی پٹھون میں داغنا جاوگا پسلیوں سے کھ جاو اوکی کیوں کی
 طور سے داغنا جاوگا انکے پٹھون سے نکلے گا تمہاری اوپر سلم میں دوسری روایت یوں کہ بشارت نے مال جمع رکھنے والوں
 کو جہ کیوں دوزخ کی اگرچہ بگم کیا جاوگا پھر مالدار کی چھائی کی لوگ پر رکھا جاوگا بیان تک کہ مونہ کے کی اوپر والی ہڈی
 سے نکل جاوگا اور مالدار کہ مونہ کے کی اوپر والی ہڈی پر رکھا جاوگا بیان تک کہ او سکی دونوں چھائیوں کی نوک سے
 نکل جاوگا و خیل تھر تھر اوگا ف یہ مذاب لد رخیل زکوۃ دینے والے پر ہو گا ضم عبد اللہ بن عمر بن مسلم یلیق عینی
 ووا انہ وھدوا اعن نبی اسر ائیل ولا کھج ہماری میں عبد اللہ بن عمر سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا
 کہ ہونچا لوگوں کو میری طرف سے اگرچہ ایک ہی آیت ہو اور نبی اسر ائیل سے باتیں نہ کر نکل کر واسمین کچھ مضایفہ میں ف
 یعنی لوگوں کو شریعت محمدی سکھانا واجب ہو اگر کچھ زیادہ ہو تو ایک قرآن کی آیت ہی تعلیم کرے ابتدائے اسلام میں نبی ہر ائیل
 کی کتابوں کے کھنے سے حضرت نے منع کیا تھا اس واسطے کہ لوگ اپنی روایات پر اعتماد میں ملوا تو سلموں کے اعتقاد دیگر جانیں پھر
 دلوں میں اسلام کا عقیدہ مضبوط ہو گیا اور دین حق پر یقین کامل حاصل ہو چکا تو نبی اسر ائیل کی روایات نکل کر نے کی اجازت دی
 گویا حق بات کی اور تائید ہوئی لیکن یہ بات ضرور ہو کہ جو روایات نبی ہر ائیل کے عقائد اسلام کے مخالف ہوں انکو مخرافات یا آفات
 ہون عمر یحییٰ فی التکاة القدر فی السبع الا و آخر سلم میں عبد اللہ بن عمر سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ تلاش کرو
 شعبہ کیچھا یا اتون میں ف یعنی رمضان کے عشرہ اخیرہ میں ہر ایک شبہ و التکاة القدر فی العشر الا و آخر
 میں قہمکان سلم میں حضرت عایشہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ تلاش کرو شبہ کو رمضان کی چھٹی میں اس اتون میں
 ف یعنی طاق اتون میں ہر ایک شبہ و التکاة القدر فی العشر الا و آخر او قال فی السبع الا و آخر
 سلم میں عبد اللہ بن عمر سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ طلب کرو شبہ کو چھٹی میں اس اتون میں یا یوں نہ کہ چھٹی
 سات اتون میں ف این مستعود یحییٰ و انا فی السبع و برکۃ ہماری اوپر سلم میں عبد اللہ بن عمر سے روایت ہو کہ حضرت نے
 فرمایا کہ سعی کیا کرو اس واسطے کہ سو کھائے میں بکرت یعنی نویاب و بقرت صومق حارث
 بن وھب یحییٰ صدق فی ائیل شات الن حل یسیر یصد فیہ فیقول الی نبی اعطیہا کو چھٹنا یہا
 بالانمس قیلہا فاما الان فلا حلاجلہا یہا فلا یجد من یقبلہا ہماری اوپر سلم میں عایشہ سے روایت ہو کہ حضرت نے
 فرمایا کہ صدقہ واو غیرات کرو غریب ہو کہ وہ اپنا صدقہ لیاوگا تو غریب ہو گیا کہ اگر تو اسکو مل لا تا تو میں

۱۸۹۳

۱۸۹۴

۱۸۹۵

۱۸۹۶

۱۸۹۷

۱۸۹۸

۱۸۹۹

تسے ہو سکیں ہوا اسکے خدا نواب دینے سے نہیں اور اس میں ناجائز تک عمل کرنے سے ناودا میں **ف** یعنی عبادت وہی بہتر ہے

۱۹۱۷ ہو سکے جس سے دل اور اس میں **ق** **رَبُّدُنْ خَالِدٍ خُذْهَا فَاكْمَلْهَا** لَكَ اَوْ لَا خِيَّتُكَ اَوْ لَدَلَّ شَيْبَ يَكْنِي مَالَهُ الْعَمَلُ

بخاری اور مسلم میں یہ سننا کہ حضرت نے بھولی بھٹکی کبریٰ کے حق میں فرمایا کہ اے ابوسلمہ سو دیر سے واسطے جو

یاسی اور تہبہ بھائی کے واسطے ہو یا بھیرے کے واسطے **ف** یعنی اگر تیرا بھیرے کا لگا تو اور کوئی آدمی یوگیا اور اگر کوئی

۱۹۱۸ نہ یوگیا تو میرے لگا جاوے گا **ق** **جَاوَزْ حُلَّ يَكْبَارُ وَتَصُبُّ عَلَيْهِ وَفَلَّ يَسْرُحُ** اَللّٰهُ يَكْنِي مَاءَ كَانٍ فِي عَرَضٍ لَّاءِ

یا نصدا کہ **ق** بخاری اور مسلم میں ماہر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے ابو جابر بانی مال مجھ پر وسیع اسکے مراد وہیانی ہو

۱۹۱۹ انصاری کی بھولی بھٹکی میں **ق** **عَلَيْتُ خُدْيَ فَمِنْ مَسْأَلَةٍ وَبُرْذَى مُشْكَلَةٍ فَتَطْعَمُنِي بِهَا** بخاری اور مسلم

میں حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے عمر اگر میرے کا مشک سے اوروہ پھر اسے بالی حاکم **ق** ایک عورت چڑھا

کہ حضرت جبریل کے بلکہ طرح لہرات کیا کہ وہ حضرت نے فرمایا کہ غسل کے بعد تھے میں نے مشک لگا کر کھلایا کہ کہنی تاکہ خون کی بلود نفع ہو

۱۹۲۰ **ق** **عَلَيْتُ خُدْيَ مِنْ مَقَالِمِ الْعَمْرِ وَفَ مَا يَكْفِيكَ دِيْكُنِي وَكَدَاكَ وَبُرْذَى خُدْيَ مَا يَكْفِيكَ** وَوَلَدَكَ

بِالْعَمْرِ وَفَ قَالَتْ لَهْنِي بِنْتِ عُنْتِهَ اَمَّا اَبِي سَعْيَانَ بخاری اور مسلم میں حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ حضرت

نے فرمایا ہے لیکر خاوند کے مال سے دستور کے موافق جتنا چھوگا و تیری اولاد کو کفایت کرے یہ حضرت نے فرزند و عنبہ کی بیٹی سفیان

کی جو بدست کہاف بہنہ کے کہ کیا حضرت سفیان پر نہیں ہوتا خارج نہیں ہوتا جو چھوگا و تیری اولاد کو کفایت کرے کہ یہ ہو سکتا ہے

کہ اوہ کی نادرہ شنگی میں بقدر حاجت ملے لون یعنی اس طرح دلینا درست ہے انہیں تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی معلوم ہوگا کہ عورت

خاوند کے مال سے اگر بقدر حاجت ضروری کے بدون اس کی اجازت سلیم ہے تو درست ہے اس واسطے کہ اس کا حق خاوند پر ہے جس پر

۱۹۲۱ **ق** **ابْنُ عَبَّاسٍ دَعَا نِي فَالْتَمَسْتُ اَنْ يَفْعَلَ عَمَلًا وَابْنُ عَبَّاسٍ كَرِهَتْ اَخْرَاجَ اَمْسِرَ لَكِنْ مِنْ حِرْزَةِ الْعَرَبِ**

وَاجْزَالِ الْوَلَدِ يَخْرُجُ مَا كُنْتُ اَحْبُزْهُمْ قَالَ وَسَكَتَ عَنْ الدَّيْلَةِ اَوْ قَالَ لَهَا قَالَتْ لَهَا هَذَا مِنْ تَقْوَلِ

مسلم کہ ابن ابی مسعود بخاری اور مسلم میں عبد اللہ بن عباس سے روایت ہے کہ حدیث میں فرمایا کہ یہ چھوڑ دو چھوڑ حسین کہ میں ہوں بہتر ہے

اور میں نکوتوں میں خیر کی حیثیت کرنا ہوں کہ نکال دینے تو شرکین کو ہے تاہم سے اور ان نام دیا کہ ان میں جو جس میں ان کو انعام دینا

راوی نے کہا کہ تیری چیز سے حضرت سکوت کیا کہ اس کو فرمایا اگر میں یہ بول گیا تو بول پر سلمان ابن ابی سلمہ کا جو اس حدیث کا راوی ہے

۱۹۲۲ **ف** اس کا پورا قصہ یہ تھا کہ ابن ابی سلمہ نے کہا کہ اے ابی سلمہ یہاں سے اے ابی سلمہ یہاں سے اے ابی سلمہ یہاں سے اے ابی سلمہ یہاں سے

ق **فَلَمْ يَكُنْ سَوَاءً لَّهُمْ وَانْخَلَعُوا عَنْ اَتْلُفَا حَوْضًا اَذْأَمَّحَتْ عَنْ شَيْءٍ فَاجْتَنَبُوا اَوْ اَذْأَمَّحَتْ كَمَا مَرَّ فَاَتُوا**

وَنَهَ مَا اسْتَطَعُوا بخاری میں ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جسے سوال کیا کہ چھوڑ دو جب تک کہ نکوتوں میں ہوں اور

نہ ہوں تو اسے اگلی امتوں کو بتا دے کہ سوال اور اختلاف ہی نے غارت کیا کہ اپنے پیغمبروں پر اختلاف کرتے تھے جو جب کہیں تکو کی چیز

منع نہ ہوں تو اس پر بجا اور جب تک کہ یہی چیز نہ ہو کہ اس کا کرم نہ ہو تو کو کیا کر دیتا کہ جسے ہو سکے **ف** حضرت نے خطبہ پڑھا اور فرمایا کہ

اے لوگو تمہیں جو چیزیں اس میں حج اور وادہ کی شخص نے کہا کہ یہاں کیا ہر حال حج فرض ہے حضرت چپ سے یہاں نہ کہ اسے تین دن یا چار پھر

حضرت نے فرمایا کہ اگر میں ہاں کہتا تو یہ ہر سال حج کا فرض ہو جاتا اور جسے کبھی نہ ہو سکتا پھر یہ حدیث فرمائی یعنی یہود و سوال کیا کرو

۱۹۲۳

جو تمہارے حق میں بہرہ اور سکون میں جہان کو دیتا ہوں نکالتی کاوش کرنا یا ضرور حق جابر دعوہا فانھا ممتنعۃ یعنی
 دَعَوٰی الْحَاۤجَّۃِ لِیَ اَمَّا فَاُولَ الْاَصْحَابِ حَتَّی کَسَعَهُ الْمَہَاجِرِیُّ بِالْاَصْحَابِ عَمَّارِی اور سلطان ہمارے روایت
 کہ حضرت نے فرمایا کہ جھوڑا واس بات کہ وہ بات کو گندی ہوں حضرت نے فرمایا کہ انصاری تھے ایک انصاری اور مہاجرین کچھ نکلتا ہو گا
 نے انصاری کے جو تر بلات ماری انصاری نے بیچ ماری کہ ای انصاری دوڑو اور مہاجر نے اسی طرح مہاجرین کو بلایا وہ دونوں نے کول
 جمع ہو گئے حضرت نے بیٹھ کر فرمایا کہ یہ کہہ کر اتوں کو بلایا کہ اس واسطے ہوا اصحابے انون و توین شخصوں کا حال عرض کرنا حضرت نے
 یہ حدیث فرمائی **خبر انکھڑی دَعَوٰہُ وَاَقْبُوْا عَلَیْکُمْ بِوَلَّہِ سَیْخِلَہِمْ مَّکَاۤءُ اَذُوْا فَاَبَیْہِمْ مَّکَاۤءُ فَاَتَمَّعَا بَعِیْثَہُمُ مِّنْ**
وَلَّہُ تَبَعُوْا اَمَّعَیْہِمْ عمار بن ہمارے میں ابوہریرہ کہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ جھوڑا واسکو اور اس کے پیٹاب پر چھوڑا ان کا
 یا ہر اول باقی کا ہمارا واسو اس کے تم کو بھیجے گئے آسانی کرے و لا اور زمین بھیجے گئے سختی کرے و لا **ف** ایک گنوار نے
 حضرت کی مسجد میں پیشاب کر دیا اصحاب نے اس کو بلایا کہ اتب حضرت نے یہ حدیث فرمائی پھر حضرت نے اس کو بلایا کہ مسجد عبادت کا مقام
 یہاں میں بلایا کہ نامناسب نہیں ہوتا کہ ان کے قصور پر غمی کرنا چاہیے اور ثابت ہو کہ زمین کی نجاست باقی اٹلے اور خشک ہے وہ وہاں
قَالَ اَبَیْہِمْ دَعُوْا فَاَنَّا اَحْیَاءُ مِّنْ اُولَیْہِمْ اَمَّا قَالَہُ لِحُلَّی کَانَ یَبِیْضُ اَحَاۤءُ فِی الْحَیَآءِ عَمَّارِی اور سلطان عبد
 بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اس واسطے کہ تم تو ایمان کی نشانی پر حضرت نے اس میں سے فرمایا چلنے بھائی سے
 نصیحت کرتا تھا کہ زیادہ شرم کیا کہ **ر** یعنی حیصفت بھائی سے ہر حالت میں بہرہ اور بیجا کی ہر طرح مہیوب حق **اَبُو سَعِیْدٍ**
دَعُوْا فَاَنَّا اَحْیَاءُ اَبَیْہِمْ اَحَدُہُمْ صَلَاتُہُ مَعَ صَلَاتِہُمْ وَصِیَامُہُ مَعَ صِیَامِہُمْ یَقْرَءُ الْقُرْآنَ
لَا یُحِیْزُہُ ذُرَّۃٌ مِّنْہُمْ یَعْرِضُوْنَ مِّنْہُمْ اِلَیْہِ سَلَامٌ کَمَا یُرِی الْقَصْحُ مِّنَ السَّمِیۃِ یَنْظُرُ اِلَی نَصِیۃِہِ فَلَا یُحِیْ جَدُّ
فِیۡہِ شَیْءٌ ثُمَّ یَنْظُرُ اِلَی رِصَافِہِ فَلَا یُحِیْ جَدُّ فِیۡہِ شَیْءٌ ثُمَّ یَنْظُرُ اِلَی نَصِیۃِہِ فَلَا یُحِیْ جَدُّ فِیۡہِ شَیْءٌ ثُمَّ یَنْظُرُ
اِلَی قُدُوْہِ فَلَا یُحِیْ جَدُّ فِیۡہِ شَیْءٌ سَبَّوْا الْعُرَّثَ وَالْذِّمَّ اَیُّہُمْ رَجُلٌ اَسُوْا ذُرَّۃً اَحَدُہِ عَصْدِیۡہِ وَمِثْلُ
تَذِی الْمَکَاۤءِ اَوْ مِثْلُ الْبُصْعَةِ تَذَرُ ذُرَّۃً یُّخْرِجُوْنَ عَلٰی خَیْرِ فِرْقَۃٍ مِّنَ النَّاسِ وَ یُرِی عَلٰی حَبْنٍ فِرْقَۃً عَمَّارِی
 اور سلطان ابو سعید کہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اس کو جھوڑا اور وہ کر سو مقرر اس کے چند ساتھی ہو گئے کہ تم میں سے ہر ایک آدمی اپنی نماز کو
 ایک نماز کے ساتھ خیر جانے اور اپنے روزے کو اپنے روزے کے ساتھ خیر جانے بھیجے کہ وہ لوگ قرآن پڑھیں گے ان کے گلے کی منسلکوں سے
 خیر نادر نکالے یعنی قرآن کا کچھ اترے گا وہ لوگ اسلام سے نکل جائیں گے جیسے بانہ کے تیرے یا ہوتا ہوا اس کی گانسی کو دیکھ تو کچھ
 خون کا اثر بنائے پھر اس کی ماہ کو دیکھ تو کچھ اتر بنائے پھر اس کی لاری کو دیکھ تو کچھ اتر بنائے پھر تیرے کہ دیکھے تو کچھ اتر بنائے تیرے بار
 نکل گیا یہ کہ لوگوں کو غصہ یعنی جیسے یا ہوتا ہے یا ہوتا ہے کہ کچھ اتر نہیں لگا رہتا اسی طرح اور تو میں سلام کا کچھ اتر باقی رہ گیا
 تو تم کہی جان یہ جو لوگوں میں ایک سب اور ہو گا جس کی ایک بازو جیسے عورت کی چھاتی یا جیسے گوشت کا ٹوٹا کہ جنبش کیا کرے گا
 اور جو کہ عمدہ تر وہ پر غرور کرے گئے یعنی علی تعاضی سے باغی ہو گئے اور دوسری روایت میں ہے کہ وہ لوگ اختلاف و جھوٹ کے
 پہلے میں بیٹھے **ف** حضرت نے فرمایا کہ اے تیسرے کیا کہ تم نے جب کا ڈالو تو یہ نام تھا اون سے خیر ہے کہ انصاف ہے تفسیر کہ عمر فاروق
 کہ حضرت نے فرمایا کہ ان کو جو تو میں اس کا کرنا مار ڈالوں تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی اور خارجی تو کہی کہ نبی علی رضی اللہ عنہ تو قتل کیا اس حدیث میں

۱۹۲۴

۱۹۲۵

۱۹۲۶

۱۹۲۷

[illegible]

۱۹۳۳

فصل امر
کتاب الاموال
کتاب الزکوة

۱۹۳۴

۱۹۳۵

فصل امر
کتاب الزکوة

۱۹۳۶

۱۹۳۷

مسلم ہو کر کر کوئی ادب سکھانا سنت ہر حق اس سے سبق ایا سنتی و لا تکلف الیک شیئ من جاری اور مسلم بن انس سے روایت ہے کہ
حضرت زنا کا نام رکھا کرو سہ نام پر اور نہایت رکھو میری کثرت کہ ف کثرت و سکوت کثرت میں جس پر اب کی افغان ہو جیسے ابو القاسم
ابو حسن حضرت کی کثرت ابو القاسم سمجھی ہو فرمایا کہ اپنی دلاؤ کا محمد نام رکھو ابو القاسم نہ لکھو نہ تصحیح میں روایت ہے کہ حضرت ہزار چوبیس
ایک شخص نے بکار لیا ابابا القاسم حضرت و سل طرف توجہ ہوئے او شے کہا کہ حضرت میں ابابا کہ نہیں بکار لیا نے شخص کو بکار لیا تھا حضرت نے
یہ حدیث فرمائی حضرت کے نام کو نہایت شخص میں علم کے بہت قول میں کہ میں سمجھتا ہوں ہی کہ حضرت کا نام کو نا تو درست و نیک نہ ہو سکا ابو القاسم
کہنا بہترین چنانچہ اس کا متصل بیان صحیح السعداء میں موجود ہے **قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصْفُو ذَكَرُوا أَنَّ لِسُوءَةِ الشُّعُوبِ مِنْ تَعَامُّ**
الضَّلَاقَةِ عَمَارِيٍّ أَوْ سَلَمِينَ النَّبِيِّ رَوَيْتُ عَنْكَ حَضْرَتُكَ فِي فَرَمَا يَأْبُرُ كَرَامِيٍّ صُغُونَ كَوَا سَوَاسِطِ كَرَمُونَ كَوَا بَرَكْرَامَا زَكَا
كَالِ يَوْمَ الْيَوْمِ هُوَ يَزِيدُ سَيَرُوْهُ هَذَا أَجْدَانِ سَبَقَ الْمُفْرَدُونَ قَالُوا وَمَا الْمُفْرَدُونَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ
الَّذِينَ كَرُمَ اللَّهُ كَثِيرًا أَذْكَاءُ كَاتِبَاتِ سَلَمِينَ أَوْ بَرَكْرَامِيٍّ رَوَيْتُ عَنْكَ حَضْرَتُكَ فِي فَرَمَا يَأْبُرُ كَرَامِيٍّ صُغُونَ كَوَا سَوَاسِطِ كَرَمُونَ كَوَا بَرَكْرَامَا زَكَا
کہا حضرت کے کون میں حضرت نے فرمایا کہ خدا کی بہت یاد کرنے والے اور عزیزین **ف** حضرت کے کون میں چل جاتے تھے وہ ان
ایک ہزار تھوہوا جس کا ہمدان نام ہی حضرت نے یہ حدیث فرمائی اوس بہا کے پاس کوئی ہزار نہیں مگر جیسے یہ ہزار تھا ہر اسی طرح
خدا کی یاد کرنے والے بھی او کی یاد میں تھائی دوست گوئی کہ یہ بہت بہت تہذیب میں ہیں ایت کی حضرت نے فرمایا کہ اسے لوگ ہی نہیں خدا کی یاد پر
حاصل رہا میں یاد اسی آئے گا کہ جو بچہ کو دانا لے کر گئی ہو نہ فرمایا میں نے بچہ لے کر آئے **عَلَيْكَ شَفَعَةُ خُشْيَا ابْنِ الْقَاسِمِ**
يَعْنِي ثَوْبَ حَزْرِيٍّ هَذَا رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكْبَرُ دُورَةً قَالَهُ لَهُ وَالْفَقْرُ أَطْمَرُ
يَصُدُّهُمُ وَالْأَمْلَةُ أَلْوَنُ هَذَا وَالثَّانِيَةُ فَاطِمَةُ بِنْتُ أَسَدٍ أُمُّ عَلِيٍّ وَالثَّلَاثَةُ فَاطِمَةُ بِنْتُ حُجْرٍ فَاسْمُ سَلَمِينَ عَلِيٍّ
سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اوس شیشی کہ ہے کو بچہ اور او ہمدان بکاروں اور تونوں میں تقسیم کر کے فاطمہ نام میں قرار دے
ریشی کہ ہے جو گیلے کے بوزوں کے بادشاہ کے حضرت کو تحفہ بھیجی تھا یہ حضرت نے علی رضی سے فرمایا اور فاطمہ کے نام کی میں تین تین
ایک قوی غریبہ بڑا اور دوسری غریبہ بنت اسد علی رضی کی ان تیسری فاطمہ بہت بڑی بیٹی **ف** برجنہ ریشی بڑا اور کو حرام کی لیکن اگر
کوئی تحفہ نہ تو قبول کرے اور غریبوں کو حاکم کرے کہ ان کو مال دے کہ عمر و بن عباسہ صل صلوٰۃ اللہ علیہما و آلہما و سلم
الضَّلَاقَةُ حِينَ تَضَاعُ الشَّمْسُ حَتَّى تَوَقَّعَ فَانَهَا تَطْلُعُ حِينَ تَطْلُعُ بَيْنَ تَوَكُّبِ الشَّيْطَانِ وَحِينَ يَنْتَحِلُ لَهَا
الْكُفَّارُ تَحْمِلُ فَإِنَّ الضَّلَاقَةَ مَشْهُودَةٌ فَكَيْفَ تَحْمِلُ لَا حَتَّى يَسْقُطَ الطَّلُ بِالنَّارِ فَحِينَ تَذْهَبُ عَنِ الضَّلَاقَةِ
فَإِنَّهَا حِينَ تَذْهَبُ تَذْهَبُ حَتَّى تَوَقَّعَ فَانَهَا تَطْلُعُ حِينَ تَطْلُعُ بَيْنَ تَوَكُّبِ الشَّيْطَانِ وَحِينَ يَنْتَحِلُ لَهَا الْكُفَّارُ
تَذْهَبُ عَنِ الضَّلَاقَةِ حَتَّى تَعْرُبَ الشَّمْسُ فَانَهَا تَعْرُبُ بَيْنَ تَوَكُّبِ الشَّيْطَانِ وَحِينَ يَنْتَحِلُ لَهَا الْكُفَّارُ
مسلم بن ہزین نے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ صبح کی نماز پڑھ کر نماز کو موقوف کرے کہ آفتاب نکلے یہاں تک کہ لڑاؤ ہو جا
اوسانے کہ آفتاب جب کہ نکلتا ہو تو شیطان کے دونوں سینکوں کے اندر نکلتا ہو اور اوس وقت کا آفتاب کو سجدہ کرے میں تجھ
آفتاب بلند ہو تو نماز پڑھ اوسانے کہ اوس وقت نماز میں عبادت کے لئے لاہو و اور عبادت ہوئے ہیں یہاں تک کہ سایہ نہرے کے ساتھ قائم
ہو جاوے یعنی دوپہر اور زین پر سایہ نہرے پھر اوس وقت نماز کو موقوف کرے کہ اوس وقت نماز پڑھ کر نماز کو موقوف کرے کہ آفتاب نکلے یہاں تک کہ لڑاؤ ہو جا
اوسانے کہ آفتاب جب کہ نکلتا ہو تو شیطان کے دونوں سینکوں کے اندر نکلتا ہو اور اوس وقت کا آفتاب کو سجدہ کرے میں تجھ

اور پڑھ چلے تو نماز پڑھ اس واسطے کہ اس وقت عبادت والے نماز میں موجود اور حاضر ہوتے ہیں بیان تک کہ عصر کی نماز سے تو فرغت پا کر
 پھر نماز کو تو فرغت کر بیان تک کہ آفتاب جڑے اس واسطے کہ آفتاب شیطاں کے دو لون سنگوں کے اندر ڈوبتا ہے اور اس وقت آفتاب کو
 کا فر سمجھ کر قرین **ف** عمر و بن عباس رضی اللہ عنہ روایت ہے کہ حضرت عیسیٰ بن مریم علیہ السلام نے نماز کے وقت پوچھے تبصر فرماتے
 یہ حدیث فرمائی کہ یہی ہر وقت نماز پڑھنا درست ہے لیکن تین وقت درست نہیں بلکہ عروق کے وقت تو اس واسطے منع ہے کہ اس وقت آفتاب کو
 کا فر سمجھ کر تے ہیں تو مسلمانوں کو اس کی مشابہت نہ چاہیے اور وہ کہہ کر دوزخ میں ڈال دیا جائے اور اس کا وقت ہے **خ** عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ
 صل فاعلم فان لم تستطع فاعدا فان لم تستطع فاعدا **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ روایت ہے کہ
 حضرت نے فرمایا کہ نماز پڑھ کر اور اگر کچھ نہ ہو سکے تو بیٹھ کے پڑھ سو اگر بیٹھ کے بھی نہ ہو سکے تو ایسے کہ پڑھ کر حضرت نے **عمر بن الخطاب** رضی اللہ عنہ
 روایت ہے کہ کہہ کر اس کی پیروی کی جائے عیسیٰ عیسیٰ حضرت سے اس کا مسلک پوچھا تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی ہر ایک کو طرح نماز پڑھنا درست ہے
 خواہ شہر سے خواہ شہر سے غرض **ق** عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ صلوا قبل صلوة المغرب صلوا قبل صلوة المغرب **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ
قال فی التکلیف فہو شائع ان اھیة ان یتخذھا الناس سنیۃ بخاری اور مسلم میں عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ روایت ہے
 کہ حضرت نے فرمایا کہ نماز پڑھو مغرب سے پہلے نماز پڑھو مغرب سے پہلے حضرت نے تیسری بار میں فرمایا کہ جو پہلے یہ نماز پڑھے یہ اس خوف سے
 فرمایا کہ لوگ اس کو سنت نہ کہہ جائیں **ف** گوگوئی پوچھا کہ مغرب کے پہلے نماز درست ہے یا نہیں تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی
 ہر چند مغرب پہلے نماز درست ہے لیکن تاکید اور التزم نہ چاہیے کہ اسے فرض میں ناخیز ہو **ق** عطاء بن ابی رباح رضی اللہ عنہ حدیث ضعیفہا
معاً ایل راسہ و اجعلوا علی رجلین من الاذخر یعنی مصعب بن عمیر رضی اللہ عنہ استشہدک احدی بخاری اور مسلم
 میں عطاء بن ابی رباح رضی اللہ عنہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اس کی طرف سے ہر طرف ڈالو اور اس کے دونوں بائوں پر گھاس کھول دینی
 مصعب بن عمیر کے جب کہ وہ جنگ اُمد میں شہید ہو **ف** جب مصعب شہید ہو تو سو ایک کالی کے کفن میں لپیٹ دیا اور کالی بھی
 جموں کی کالی اگر سر پر لٹے تھے تو بائوں لٹے تھے اور اگر بائوں پر لٹے تھے تو سر کھلتا تھا تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی معلوم ہوا کہ
 جب کچھ میرے لئے کفن میں ایک ہی کالی لگائیے کہ یہ **مسعود بن ابی وقاص** رضی اللہ عنہ حدیث ضعیفہا **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ
یعنی سیف اللہ استحق حبة من الفنا رضی اللہ عنہ مسلم میں حدیث میں ابی وقاص رضی اللہ عنہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اس کو کھڑے جہان سے
 تو نے لوگوں کو لیا ہے **ف** غنیمت کے مال سے سبعین ابی وقاص نے ایک تلوار اٹھائی اور حضرت سے اگلی تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی
 یعنی غنیمت کے مال میں سب ازبوں کا حق ہے تب تیسرے حکم کو کر کے **عمر بن ابی وقاص** رضی اللہ عنہ حدیث ضعیفہا **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ
جسدہ وقل لیسہ للہ لثنا وقل سبع مرات **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ حدیث ضعیفہا **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ
 مسلم میں عثمان بن ابی العاص رضی اللہ عنہ روایت ہے کہ حضرت نے مجھے فرمایا کہ وہاں اپنا ماتمہ کھجوان تیرے بدن میں ہوتا ہوا اور مسلم میں عثمان بن
 کہہ اور سات بار کہہ **عمر بن ابی العاص** رضی اللہ عنہ حدیث ضعیفہا **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ حدیث ضعیفہا **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ
 جس کا حکم جو عروق ہے **ف** مصباح میں عثمان بن ابی العاص رضی اللہ عنہ روایت ہے کہ میرے پسندیدہ اور بیماری کی حضرت سے کتاب کی
 تھ حضرت نے یہ دعا فرمائی میںنا ویر علی کیا مجھ کو شفا حاصل ہو **ق** اُسکلمہ طویق من وراء الناس و انت رکبۃ
قال کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ حدیث ضعیفہا **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ حدیث ضعیفہا **قال** کہ بھلائی میں عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ

۱۹۳۸

۱۹۳۹

۱۹۴۰

۱۹۴۱

۱۹۴۲

۱۹۴۳

منہج

۱۹۵۴

ہمارے پاس خبر ہے آیہ حضرت نے جنگ خندق کی رات فرمایا **حَدَّثَنَا عَنْهُ قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَدِينَةُ مَا لَكَ مَلِكًا** میں نے خندق سے روایت کی کہ حضرت نے فرمایا کہ اے مدینہ اوسو تو یہ حضرت نے خندق سے فرمایا جنگ خندق کی شہر کو فتنہ میں نہ آئے کی دن تک نہ گنہگار ایک ات نہایت سرد ہو اہلی لوگ بدحواس ہو گئے تب حضرت نے خندق کو خبر کے واسطے بھیجا پھر حضرت کو اپنا کمال اور ہایا اور کھنڈ خندق کی گئی تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی باقی مفضل قصہ جو ہے اب میں گذر اسرار ابو سعید

۱۹۵۵

قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ وَاذْكُرْ سُلُوكَ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ بخاری میں ابو سعید سے روایت کی کہ حضرت نے فرمایا کہ یوں ہو پڑھو

۱۹۵۸

کہ اتنی اتنی ہر گھر جو تیرا بندہ اور تیرا پیغمبر جو جیسے تو نے براہیم پر ہر کی اور برکت کر محمد پر اور محمد کی آل پر جیسے تو نے برکت کی ابراہیم اور براہیم کی آل پر **قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ** وَاذْكُرْ سُلُوكَ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ

۱۹۵۹

حضرت محمد بن بخاری اور مسلم میں ابو سعید سے روایت کی کہ حضرت نے فرمایا کہ درود کو یوں کہہ کر کہ اتنی اتنی ہر گھر جو تیرا بندہ اور تیرا پیغمبر جو جیسے تو نے براہیم پر ہر کی اور برکت کر محمد پر اور محمد کی آل پر جیسے تو نے برکت کی ابراہیم اور براہیم کی آل پر **قُولُوا اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِأَهْلِي وَأَعِزَّنِي بِعَهْدِ عَفْوِي حَسَنَةً قَالَ**

۱۹۶۰

ہا آجین مَاتَ أَبُو سَلَمَةَ مُسْلِمٌ مِنْ حَضْرَتِ امِّ سَلَمَةَ سے روایت کی کہ حضرت نے فرمایا کہ یوں کہہ کر کہ اتنی اتنی ہر گھر جو تیرا بندہ اور تیرا پیغمبر جو جیسے تو نے براہیم پر ہر کی اور برکت کر محمد پر اور محمد کی آل پر جیسے تو نے برکت کی ابراہیم اور براہیم کی آل پر **قُولُوا اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِأَهْلِي وَأَعِزَّنِي بِعَهْدِ عَفْوِي حَسَنَةً قَالَ**

ہا آجین مَاتَ أَبُو سَلَمَةَ مُسْلِمٌ مِنْ حَضْرَتِ امِّ سَلَمَةَ سے روایت کی کہ حضرت نے فرمایا کہ یوں کہہ کر کہ اتنی اتنی ہر گھر جو تیرا بندہ اور تیرا پیغمبر جو جیسے تو نے براہیم پر ہر کی اور برکت کر محمد پر اور محمد کی آل پر جیسے تو نے برکت کی ابراہیم اور براہیم کی آل پر **قُولُوا اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِأَهْلِي وَأَعِزَّنِي بِعَهْدِ عَفْوِي حَسَنَةً قَالَ**

ہا آجین مَاتَ أَبُو سَلَمَةَ مُسْلِمٌ مِنْ حَضْرَتِ امِّ سَلَمَةَ سے روایت کی کہ حضرت نے فرمایا کہ یوں کہہ کر کہ اتنی اتنی ہر گھر جو تیرا بندہ اور تیرا پیغمبر جو جیسے تو نے براہیم پر ہر کی اور برکت کر محمد پر اور محمد کی آل پر جیسے تو نے برکت کی ابراہیم اور براہیم کی آل پر **قُولُوا اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِأَهْلِي وَأَعِزَّنِي بِعَهْدِ عَفْوِي حَسَنَةً قَالَ**

۱۹۶۱

ہا آجین مَاتَ أَبُو سَلَمَةَ مُسْلِمٌ مِنْ حَضْرَتِ امِّ سَلَمَةَ سے روایت کی کہ حضرت نے فرمایا کہ یوں کہہ کر کہ اتنی اتنی ہر گھر جو تیرا بندہ اور تیرا پیغمبر جو جیسے تو نے براہیم پر ہر کی اور برکت کر محمد پر اور محمد کی آل پر جیسے تو نے برکت کی ابراہیم اور براہیم کی آل پر **قُولُوا اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِأَهْلِي وَأَعِزَّنِي بِعَهْدِ عَفْوِي حَسَنَةً قَالَ**

ہا آجین مَاتَ أَبُو سَلَمَةَ مُسْلِمٌ مِنْ حَضْرَتِ امِّ سَلَمَةَ سے روایت کی کہ حضرت نے فرمایا کہ یوں کہہ کر کہ اتنی اتنی ہر گھر جو تیرا بندہ اور تیرا پیغمبر جو جیسے تو نے براہیم پر ہر کی اور برکت کر محمد پر اور محمد کی آل پر جیسے تو نے برکت کی ابراہیم اور براہیم کی آل پر **قُولُوا اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِأَهْلِي وَأَعِزَّنِي بِعَهْدِ عَفْوِي حَسَنَةً قَالَ**

- ۱۹۴۲ قل کرنا بشید ہونا ہر طرح ہر کس کو سکا عمن شبت ہرق ابن عکاس فی مؤامعتی ولا یستغنی عنی علی التنازع
وہو ذی عند یقی تنازع بخاری اور سلم بن عبدالہ بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اور محمد بن عباس سے اور
الان بنیدین سے اس جگہ اگر اور دوسری روایت ہوں جو کہ بنی ہاس جگہ مناسب نہیں ہے حضرت نے یہ روایت فرمائی کہ ان تملکھا
بعضوں نے کہا انہوں نے کہا کہ محمد بن زید کہ حضرت کو کہا ہے میں نے تکلیف ہوگی جس سے یہ حدیث فرمائی باقی اس کا تھکا سی یا نہیں
ہو کا قیاب ابو ہریرہ کا قیاب کہ انہوں نے کہا اما علمت انکالہ الصدقة و یودی لا یحل لنا الصدقة
۱۹۴۳ قالہ الحسن بن علی زعمی اللہ عنہما حدیث اخذت عنہ من الصدقة فجعلنا فی فیہ ہار
سلم بن ہریرہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا بھی بھی ایک جگہ کہ کیا تو نہیں جانتا کہ ہر کوئی تو نہیں کہتا ہے اور دوسری روایت ہوں کہ
ہو کہ کو حلال نہیں حضرت نے اس میں سے فرمایا جب کہ اوپر کی مجاہدین سے ایک مجاہد اور بنی ہار سے ایک ہار
۱۹۴۴ حضرت ام حسن او بن ہار سے اس میں سے فرمایا جب کہ اوپر کی مجاہدین سے ایک مجاہد اور بنی ہار سے ایک ہار
من لا تملک فی التمام المطبوع قالہ ابن جریث عن اصحابہ بخاری اور سلم بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت
نے فرمایا کہ تو کہا اس واسطے کہ میں کا ناچوس کرنا ہوں اس میں سے تو کا ناچوس نہیں کرتا حضرت کے دروہو کا سال آیا
او بن ہار کی روایت حضرت نے فرمایا کہ کسی صحابی سے فرمایا کہ تو کہا صحابی نے دیکھا کہ حضرت نہیں کہاتے تو بنی ہار سے بھی ہار
تہ حضرت نے یہ حدیث فرمائی کہ اس جگہ کہ ناچوس کرنا ہوں اس میں سے تو کا ناچوس نہیں کرتا حضرت کے دروہو کا سال آیا
اور او کو اس لیے سے حضرت ہرق ابن عس کلوا فانہ حلال ولکنہ لیس من طعامی یغنی القصد بخاری اور سلم
۱۹۴۵ میں عبدالہ بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ کھاؤ اس واسطے کہ سو سار یعنی گوہ حلال ہو لیکن یہ ہار کی ہار کا نہیں ہے
حضرت ایک مجلس میں تھے سو سار کا گوشت بخانہ آیا کہ کھاؤ یا حضرت یہ سو سار کا گوشت ہے تو حضرت نے یہ حدیث فرمائی کہ بنی ہار
یہ حلال ہو لیکن قریشی لوگ اس کو نہیں کھاتے یعنی شرعی کراہت ہے امام شافعی اور امام مالک کے نزدیک سو سار
۱۹۴۶ حلال ہے اور یہی حدیث ان کی دلیل ہے اور امام عطاء کے نزدیک حلال نہیں ان کے نزدیک یہ حکم ابتدائے اسلام میں تھا قیاب ابن عمر
کلوا من الاضاحی ثلثا هذا احادیث متشوخ و عا ذکرنا من قبل بخاری اور سلم بن عبدالہ بن عمر سے
روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ قریشی کا گوشت تین دن تک کھاؤ اس کتاب کے صنف کے کہا کہ یہ حدیث منسوخ ہے یا ناجی اس کا ذکر
ہم لگے کہ جبکہ ہرق ابن عس کہ فی الذنیا کا تات غریب و کا تات عار یسیر و وعد نفسک فی اصحاب القبول
۱۹۴۷ بخاری اور سلم بن عبدالہ بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ دنیا میں ہر سافر کی طرح یا کہ جیسے راہ چلتا اور اپنی جان کو توہر
مردوں میں گن کہ عبدالہ بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ دو دن ہوئے ہوں کہ کو پھر پھر یہ حدیث فرمائی اور عبدالہ
بن عمر نے کہا کہ تھے کہ جب تو صبح کرے تو شام کا سنظر تہ اور جب شام ہو تو صبح کی توقع مت رکھ اور صحت کی حالت میں
جاری کے خیال سے جو کراہ ہو سو کرے یعنی صحت کی کیفیت حال بخاری میں کہچہ نہیں ہو سکتا اور زندگی میں صحت کا سامان کہ حدیث میں ہے
فرمایا کہ سافر وہ راہ چلتے والے کی طرح گذران کر یعنی جیسے سافر میں زیادہ کھینچا نہیں کرتا اور ہر دم چا وطن یا کو کے زاور کی
فامین ہوتا ہے ہر طرح ہوس کہ کو لارم کہ دنیا کو ہر حال میں ہو وہ عرصہ کو مار لینے صلی و صلی غافل نہ ہو ہر دم وطن کا سامان کرتا رہے

اور جو فرمایا کہ تم مژدوں میں شمار کر یعنی پریشانی اور تشویش دنیا کا سبب موت کی غفلت ہو اور جب موت یاد رکھو تو شب و روز اس کے
 شکر چاہئے کہ فتنہ کن جان پاک چہ چرخ متون چہ سر و خاک چہ حدیث زہد اور نہ روشنی کی جڑ ہو اندھاری اس کھین کھولے اور
 اس پر عمل نصیب کرے آمین خ ائو ائو کتب کتبوا اطعوا مکمل کیا کہ لکھو دینے بجاری میں ابو اوبہ ذکر روایت کر حضرت نے
 فرمایا کہ تو لا روایتے الحاج کو تمہارے لیے او تمین برکت ہوگی ف یعنی موالیکہ تو لانا چاہیے اگر کم ہو تو طلب کیجیے اور اگر زیادہ ہو تو
 بیجا کاغذ پھر بیجا اور ہر روز نماز کر گھر میں خرچ کرنا بھی حکمت سے خالی نہیں کہ حساب خرچ ہو ضرورت سے زیادہ ہو نہ کم مر ائو سعید یقیناً
 مونا کا لہ لہ الا لہ اللہ سلم بن ابی سعید سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ سکھلا دینے مزدون کو لا لہ الا اللہ ف
 یعنی مرنے کے وقت لا لہ الا اللہ بجا کرے کہ وہ ناکھڑے والا بھی نہ سکے کہ اور یوں اس کو کنا چاہیے کہ لا لہ الا اللہ کہ کہ شاید جو اس سے
 انکار کرے مر ائو فخر بن قریب لیاخذ کل رجل برأس راحلته فان هذا من لخص نافية الشيطان قالہ
 خدا اے کیکلہ التفریق نہیں سلم بن ابی ہریرہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا چاہیے کہ کہلے سے ہے ہر ایک مرد اپنے اونٹ کے
 سر کو سو مقررین منزل ہو کہ اسمین ہا سے باس سلطان آیا یہ حضرت نے لیتا التفریق کی فخر کو فرمایا ف جنگ خیر سے ملتے آخر شب
 حضرت اور تمام لوگ سوئے فخر کی نماز تضا ہو گئی تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی یہ کان پریشان کا ایسا سو کہ شیطان کیلکنا وٹ کو
 بھگا دیکہ تو ہوشیار کرنا چاہیے ق علامتہ لیسئل احدکم ساطة فاداکسل او فکرفعد و یودی فکیفعد
 بخاری ابو سلمہ صرح حضرت عایشہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا چاہیے کہ نماز پڑھا کر ہے ہر ایک شخص جب تک خوش حال اور چست ہو پھر
 سب کے بل پست ہو تو بیٹھتے اور دوسری روایت یوں ہے کہ او کو بیٹھ کر بنالیتے ف التفریق روایت ہو کہ حضرت نے سبجین
 شعیب بنی یحییٰ کو بھیجا کیا ہو لوگوں سے کہا کہ حضرت زینب کا دستور یہ ہے کہ جب تہجد کی نماز میں سست ہو جائی تو ہنسی کو کھانجہ لیتے ہیں
 تب حضرت نے یہ حدیث فرمائی امی سستی میں بغل نماز پڑھنا بے لطف ہو حار لیسئل من شاء منکم فی راحلہ و قالہ
 فی جویم فیکفیر فی سع سلم بن ابی ہریرہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا چاہیے کہ نماز پڑھ لیوے جو شخص کہ تم میں سے چاہے بچہ
 بستر نہ بیٹھتے نہ منہ پر ہستے کہ نہ سفر میں فرمایا ف معلوم ہوا کہ میندہ کے مدرسے جماعت میں نہ حاضر ہونا درست
 مر ائو مسعود بن حذیفہ عنکما اولوا الا حکلام واللی لعل الذین یلو یھمذتم الذین یلو یھمذوا تاکم
 و حکایت الا حواقی سلم بن عبد اللہ بن سعید سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا چاہیے کہ میں سے عقل مند اور ہوشیار لوگ میرے
 و پیو ہو کہ میں پھر اٹکے بعد وہ لوگ جو اکرین جو ان سے میل رکھتے ہوں پھر وہ لوگ جو ان سے میل رکھتے ہوں اور تم پھر بازاروں کی پاک بکت
 یعنی مسجد اور جماعت میں بازار کا طرح شور اور جو کمزور ف عبد اللہ بن سعید سے روایت ہو کہ حضرت کا دستور تھا کہ جماعت فوت
 ہمارے وہ دن ہوں کہ مانتے تھے اور فلیتے تھے کہ برابر ہو جانا اور قیام میں مختلف نہ ہونے تھے دلوں میں اختلاف نہ جانا پھر حضرت
 حدیث فرماتے تھے اس سے بیش سے علم ہو کہ انہم کے قریب یا بل علم اور عقل کھڑے ہوں تاکہ مسائل کو سیکھیں اور اگر امام کو سہو واقع ہو تو
 اس کو خبردار کریں اور علم کے بل دھبہ بربلوگ کھٹ مین کھڑے ہوں ابو بکر صدیق رض کا دستور تھا کہ نماز میں حضرت کے پیچھے برابر
 کھڑے ہوتے تھے اوس مگر دوسرے شخص میں کہہ رہا تھا مر ائو سعید لیسئل من کل رجلین احدهما والاخر فیکہما
 یعنی فی المحاکات لہ لبی یحیا کان حین بعث الیھم بعدت مسلم بن ابی سعید سے روایت ہو کہ

۱۹۵۸
۱۹۵۹
۱۹۶۰

۱۹۶۱

۱۹۶۲

۱۹۶۳

۱۹۶۴

طاسی ہو و نصاری کے قدم بقدم ہو گئے بلکہ تعزیر دارون اور پرستون نے ایسے اختراعات نکالے ہیں کہ یود اور نصاری کو بھی
 ہر زمین سے حق الثمن ان کی زمین میں لٹو کے معنی کو کہہ کر اور ایسا لفظ اللہ بین نیکو بخاری اور سلم بن نمان
 بن غیر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ بابر اور حاجی سفون کو زمین تو خدا پرستوں کا مال دیکھا تھا کہ دونوں میں ف یعنی جماعت علی
 برابر ہوئے کا یہ اثر ہو کہ ایسین نشان پر بنا دیا گیا اور تزار ہوگی تو بیچ ہوگا قل ان مسعودی کہ لہ آف ح بیق ہا عکبر و المؤمنین
 من اجل نزل فی ارض دویہ فہلکوا معہ راحلہ علیہا طعامہ و شرابہ فوضع رأسہ فقام
 نوکما و استنقظ و قد ذہبت راحلہ فطکھا حقی اذا اشتد علیہ الحقد و العطش او ما شاء اللہ
 قال انزع الی مکان الذی کنت فیہ فانام حقی اموت فی صبح رأسہ علی ساعد بلیم من تحت سنیہ فط
 فاذا راحلہ عندہ علیہا کاد و شرابہ فہلکوا معہ اشد فرحاً و قیاماً علی العبد المؤمن من مرہذا راحلہ
 و کادہ بخاری اور سلم بن عبد اللہ بن جوشد روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ حق تعالیٰ اپنا یادگار بندے کے کو قبر کرنے سے
 اس میں سے نبی زیادہ تر فرحت ناک ہوتا ہے جو جبلت میدان ہلکی کے مکان میں اور تزار ہو سکے ساتھ سواری تھی اور سپر و سکاٹا اور بانی تھا
 سواوس نے اپنے سر کو زمین میں رکھا پھر ایک بندہ سوکر اس محل میں جگا کہ اسکی سواری بچا لکھی تھی سواوس نے اسکی تلاش کی یہاں تک کہ
 جب سپر گرمی اور پیاس وغیرہ کی شدت ہوئی تو اسے کما ول بلٹ محل اوسی مکان میں جہاں میں تھا سو وہاں سو رہا تھا اسے
 مر جان سواوس نے اپنا سر اسی کلائی پر رکھا تاکہ مر جائے پھر جاگ پڑا تو کیا دیکھتا ہے کہ اسکی سواری موجود ہے اور سپر و سکاٹا اور
 اور بانی جو قوس تعالیٰ اپنے مومن بندے کی توبہ کے سبب اس میں سے بھی زیادہ تر خوش ہوتا ہے جو بانی سواری اور زادہ و بار خوش ہو گیا
 ف یعنی مومن کی توبہ سے کمال رسانا اسی محل ہوئی جو اس واسطے کہ توبہ سے گناہت جلتے ہیں بندہ عذاب سے بچا جائے
 خر ابو ہریرہ کہ لیتین علی التائس زماناً لا ینالی المرء و حقاً اخذ العال امن حلالی ام قریض کعب
 بخاری میں ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ مقرر گوگون پر ایسا زمانہ آجیگا کہ آدمی کچھ پروا نہ کرے گا کہ اسے کمال مال کو یا
 حلال سے یا حرام سے ف یعنی یہی تاریخ ہوگی مال حاصل کرنے میں شدت حرص و ضعف ایمان کے سبب سے حلال اور حرام کی
 کچھ تیز رفتاری نہ ہوگی خود شہوت سے خواہ آدمی سے خواہ غریب خواہ خودی خواہ غلام خواہ دغا بازی سے چنانچہ اس شانے کا حال ہے کہ
 جس طرح بچنے میں جیتے ہیں گویا موت اور قیامت کے خیزن ہیں ہاؤ ہریرہ کہ لیتین علی التائس زماناً لا ینالی المرء و حقاً اخذ العال امن حلالی ام قریض کعب
 فی آتی شقیہ فقتل ولا المقنول علی آتی شقیہ فقتل روایت ہے کہ مسلم بن ابو ہریرہ سے کہ حضرت نے فرمایا کہ مقرر گوگون پر ایک
 زمانہ آجیگا کہ دنیا بھیا قاتل کرکس بات میں اسے قتل کیا اور مقتول جا بیگا کس بات پر مارا گیا ف یعنی ایسا زمانہ آجیگا کہ بلاشبہ
 اور جہت خود بیزی ہوگی ایسا بزرگانہ گوگون کو آسان علوم ہوگا چنانچہ خانہ جنگی اکثر بے سبب مہم جاتی ہے وہی لوگوں کے ہاتھوں میں
 صفا گنہ گار نے ہر تلوار جیتی ہو آدمی کی جان کو چھوٹی برابری زمین جانتے گویا ہوں انسان کو ہوتا ہے ہن جو ناحی حلال کر کے لے لیں
 خر ابن مسعود لکھن البیکت و لکھن البیکت بعد من فوج یا فوج و ما فوج بخاری میں ابو سعید سے روایت ہے کہ حضرت
 نے فرمایا کہ مقرر کتب کا جو عزم ہوگا کہ بجا بجا جو ج کے کھنڈے کے بعد ف معلوم ہوگا کہ بجا بجا جو ج کی ہلاکی کے بعد اسلام
 قائم ہوگا ج اور عزم اور ادب کا جو کتب سے علمائے کما ہوا کہ انکے ہلاک ہونے کے بعد پیش برس تک آدمیوں کا قیام ہوگا والد اعلم

۱۹۹۳

۱۹۹۴

۱۹۹۵

۱۹۹۶

۱۹۹۷

۱۹۹۸

قَسَمَ لِيَنَّ سَعْدُ بْنُ سَعْدٍ لَنَحْنُ الْجَنَّةُ مِنْ أَتَمِّ سَبْعُونَ أَلْفًا وَسَبْعُ مِائَةِ أَلْفٍ الشَّكَّ مِنْ أَبِي حَالِمٍ
ثُمَّ يَسْكُونُ أَحَدٌ بَعْضُهُمْ بَعْضًا لَا يَدْخُلُ أَوْ لَهُمْ حَقٌّ يَدْخُلُ آخِرُهُمْ وَجُوهُهُمْ عَلَى صُلُوقِ الْقَسْرِ

۱۹۹۹

الْبَيْتُ الْبَدْرُ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ مِنْ بَنِي بَنِي سَعْدٍ رَوَيْتُ عَنْ أَبِي حَالِمٍ عَنْ أَبِي حَالِمٍ عَنْ أَبِي حَالِمٍ
يَا بَنِي بَدْرٍ مَا كُنْتُمْ لَكُمْ شَيْءٌ إِلَّا بَوَاحُزٌ تَابَعِي كَوْنِي فِي هَذَا مَدِينَةٍ كَأَنَّكَ نَادِي بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ مِنْ بَنِي بَدْرٍ
أَيُّكُمْ مَسْكُورٌ تَحْتَ أَهْلِهِ لَمْ يَدْخُلْ بُوَيْسُكَ جَبَّكَ لَمْ يَكُنْ يَحْجَلُ دَاخِلٌ بُوَيْسُكَ يَعْنِي أَنَّكَ تَقَارِبُكَ بِرَأْسِكَ بَارِكِي بَارِكِي أَمَّا وَبَنِي بَدْرٍ
بِهِمْ سَبْعُ مِائَةٍ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ كَمَا نَدَى بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ قَالُوا مَسْتَعْمِلٌ لَكُمْ فَمَنْ لَكُمْ رَجُلٌ لَمْ يَكُنْ حَقًّا إِذَا أَمَرْتُمْ بِالْهَيْمِ
لَا تَأْوِلُهُمْ خَيْلُكُمْ ذُو قَوْا قَوْلُ أَبِي رَبِّتٍ أَحْمَدُ قَالَ لَيْسَ لَكَ لَا تَكْذِبِي مَا أَخَذُوا مِنْكَ بَدْرُكَ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ

۲۰۰۰

مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعْدٍ رَوَيْتُ عَنْ أَبِي حَالِمٍ عَنْ أَبِي حَالِمٍ عَنْ أَبِي حَالِمٍ عَنْ أَبِي حَالِمٍ عَنْ أَبِي حَالِمٍ
مِنْ بَنِي بَدْرٍ كَمَا نَدَى بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ قَالُوا مَسْتَعْمِلٌ لَكُمْ فَمَنْ لَكُمْ رَجُلٌ لَمْ يَكُنْ حَقًّا إِذَا أَمَرْتُمْ بِالْهَيْمِ
لَا تَأْوِلُهُمْ خَيْلُكُمْ ذُو قَوْا قَوْلُ أَبِي رَبِّتٍ أَحْمَدُ قَالَ لَيْسَ لَكَ لَا تَكْذِبِي مَا أَخَذُوا مِنْكَ بَدْرُكَ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ

۲۰۰۱

كَمَا نَدَى بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ قَالُوا مَسْتَعْمِلٌ لَكُمْ فَمَنْ لَكُمْ رَجُلٌ لَمْ يَكُنْ حَقًّا إِذَا أَمَرْتُمْ بِالْهَيْمِ
لَا تَأْوِلُهُمْ خَيْلُكُمْ ذُو قَوْا قَوْلُ أَبِي رَبِّتٍ أَحْمَدُ قَالَ لَيْسَ لَكَ لَا تَكْذِبِي مَا أَخَذُوا مِنْكَ بَدْرُكَ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ

۲۰۰۲

لَا تَأْوِلُهُمْ خَيْلُكُمْ ذُو قَوْا قَوْلُ أَبِي رَبِّتٍ أَحْمَدُ قَالَ لَيْسَ لَكَ لَا تَكْذِبِي مَا أَخَذُوا مِنْكَ بَدْرُكَ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ

۲۰۰۳

لَا تَأْوِلُهُمْ خَيْلُكُمْ ذُو قَوْا قَوْلُ أَبِي رَبِّتٍ أَحْمَدُ قَالَ لَيْسَ لَكَ لَا تَكْذِبِي مَا أَخَذُوا مِنْكَ بَدْرُكَ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ

۲۰۰۴

لَا تَأْوِلُهُمْ خَيْلُكُمْ ذُو قَوْا قَوْلُ أَبِي رَبِّتٍ أَحْمَدُ قَالَ لَيْسَ لَكَ لَا تَكْذِبِي مَا أَخَذُوا مِنْكَ بَدْرُكَ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ

لَا تَأْوِلُهُمْ خَيْلُكُمْ ذُو قَوْا قَوْلُ أَبِي رَبِّتٍ أَحْمَدُ قَالَ لَيْسَ لَكَ لَا تَكْذِبِي مَا أَخَذُوا مِنْكَ بَدْرُكَ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ

لَا تَأْوِلُهُمْ خَيْلُكُمْ ذُو قَوْا قَوْلُ أَبِي رَبِّتٍ أَحْمَدُ قَالَ لَيْسَ لَكَ لَا تَكْذِبِي مَا أَخَذُوا مِنْكَ بَدْرُكَ بِنَارِي أَوْ سَلَمٌ

بَابُ التَّلَكِ

اوتھنے پاس ہوتا تھا گھوڑے کے جھڑکنے سے ڈرنے کے کہ عین ہکا بکا کیل جاتے قرآن پڑھنا سوتوں کیلے یہی غالب گئی صحیح کو یہ
 حال حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے یہ حدیث فرمائی معلوم ہو گا کہ ان کے منہ کو فرشتے حاضر ہوئے ہیں کہ یہ نظر نہیں کیے **عَاشَةُ زَنَاتِ**
الْكَلْبَةِ اَمْحُطُ بِهَا لِحْيَتِي فَقَدْ لَهَا اَذُنٌ وَلَيْسَ فِيْهَا نِدٌ فِيْهَا مَاءٌ كَذَبَةٍ قَالَهُ لَهَا حَتَّى كَلَّمَ
اِنَّ الْكَلْبَانَ كَانُوْا يَجْعَلُوْنَ شَيْئًا لِّتَفِيْعٍ مُّحَقَّقًا مسلم میں حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کلاس بیچ
 بات کو فرشتوں سے جسے بھاگتا ہے سوا و سکولینے دو سٹک کان میں ڈال دیتا ہے تو وہ اوسمیں اور سوجھوٹھ زیادہ کرتا ہے یہ حضرت نے
 حضرت عایشہ سے کہا جب کہ انھوں نے کہا کہ ہر گول ہلکسی چیز کی خریدتے تھے تو اسکو ہم بیچ پاتے تھے **ف** عرب میں جب لوگ
 تھے بڑے تھے وہ کہتے تھے اوسے دریافت کر کے آئندہ خبریں لوگوں کو بتلاتے تھے دین اسلام میں حکموا کسوا شیکہ کی غیبت کی مذہب جانتا
 کا ہر محوئے اور یہ حقیقت ہیں اوسنے حال دریافت کرنا درست نہیں حضرت عایشہ نے پوچھا کہ پھر ت اگر کا ہر محوئے ہر بیچ اسکا کیا بدلتے
 کہ ان کو بات بھی ہوتی تھی حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی جو اس عالم میں ہوا ہر اسکو حکم فرشتوں کو ہوتا ہے فرشتے اول آسمان پر آپس میں اوسکی
 گفتگو کرتے ہیں شیطان اور جن مان جیکر سُن آتے ہیں اور اپنے پوتے والے دوستوں کو بتلاتے ہیں ہر گول ایک بیچ کے ساتھ سوجھوٹھ مل کر
 لوگوں کہتے ہیں یہی ایک بات تو بیچ ہوتی ہے اور باقی اداسیات نادان لوگ اوسکی ایک بیچ بات کو دلیل کیلے مستعد ہوتے ہیں اور انکی
 اکثر عجمی باتوں کو اپنی نادانی اور حماقت سے یاد نہیں کہتے **هَؤُلَاءِ مَسْغُوفٌ زَنَاتٌ فَحَصِّلْ اِلَيْمَانٍ** یعنی اَللّٰهُ سَوَّاهُ
قَالَ هِیْنَ سَمِعْتُ عَنْهَا وَهِيَ مَا يَجِدُ الْاِنْسَانُ فِيْ نَفْسِهِ مَا يَقْطَعُ اَنْ يَّجْعَلَ وَزُوْدِيْ ذٰلِكَ صَحِيْحٌ
اَلَا هَا كُنْ رَوَاهُ اَبُوْهُمُ اَبُوْهُ نَعَزْ كَذِبُهُ مُسْتَلْزِمًا اَيْضًا مسلم میں عبداللہ بن مسعود سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کلاس بیچ
 کو بدجانا تو محض ایمان ہی حضرت نے اوس وقت فرمایا جب کہ وسوسے کا حضرت سے سوال ہوا تو وسوسہ کو کہتے ہیں جن کا خیال
 آدمی اپنے دل میں پاتا ہے اور اوسکے کہنے کو بڑا جانتا ہے اور دوسری روایت ابوہریرہ سے ہے کہ یہ تو صریح ایمان ہی اس حدیث کو بھی حضرت
 مسلم نے روایت کیا **ف** مشکوٰۃ میں ابوہریرہ سے روایت ہے کہ چند اصحاب نے حضرت پاس آکر پوچھا کہ حضرت ہمارے دو لوگوں
 نہایت بُرے بُرے خیال آتے ہیں کہ ہم انکو زبان پر لانا بڑا گناہ جانتے ہیں حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی بُرے خیال کو بُرا جانا اور
 زبان پر نہ لانا اعلان کی نشانی ہے اگر دل میں ایمان نہ ہو تا کو کو اور نہ تو یہ طلب نہیں کہ بُرے خیالات آنا صریح ایمان ہی چنانچہ ابوہریرہ
 عبداللہ بن عباس سے روایت ہے کہ ایک مرتب نے حضرت سے کہا کہ میرے دل میں بعضا ایسا بُرا خیال آتا ہے کہ اگر میں جل کے کوٹا ہو جاؤں
 تو مجھے ہان سے نکالوں حضرت نے فرمایا شک نہ کہ اوسنے شیطان کا کام دھوسا ہے برائے یعنی شیطان کا دھوسا تو شر اور بت پرستی کروانا ہے
 لیکن جو من پر ہوا بُرے خیال آئے کہ اسکا کچھ رو نہیں جلتا وسوسے کا علاج یہ ہے کہ اوسکی طرف خیال نہ کرے اور اتھارے بنا
 ملنے لگا لول پڑے اور لا الہ الا اللہ کی گنت کرے کہ اسکو **وَهُ رَافِعٌ بُنْ حَلِیْفٌ لِّمَنْ اَتَّكَلِبُ خَبِيْثٌ وَهَکْ اَلْبَیْ حَبِيْثٌ**
فَکَسَبَ الْحَقَامَ خَبِيْثٌ مسلم میں رفع بن یزید سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ قیمت کئے کی حرام ہے اور خرجی حرام کا
 عورت کی حرام ہے اور بچنے لگانے والے کا کسب بلیہ ہے **و** امام شافعی کے نزدیک جو جاس حدیث کے کئے کی قیمت ملال ہیں
 اور امام ظہر کے نزدیک حلال ہے تو انکو نزدیک حدیث کا یہ طلب ہے کہ اگر گناہ شکاری اور حفاظت کے واسطے نہ ہو تا تو اسکی قیمت حرام ہے
 اور خرجی بالاتفاق حرام ہے اور بچنے لگانے کا کسب جب اس حدیث کے امام احمد کے نزدیک حرام ہے اور امام حنفی کے نزدیک حرام نہیں کہ لوگ

۳۰۳۶

۳۰۳۷

فہرست
مکتوبات
مکتوبات

۳۰۳۸

۲۰۳۹

نہایت سے خالی نہیں رخ انس حُبَات رَاکَاہَا اَدْخَلَکَ الْجَنَّةَ یَعْنِی سَفَاةَ الْاِخْلَاصِ بِنَارِی مِّنَ السَّرِّ وَرَیَکَ
کہ حضرت نے فرمایا کہ سورۃ اخلاص کی محبت تجکو بہشت میں داخل کرے گی **ف** ایک شخص نے حضرت سے کہا کہ یا حضرت میں

۲۰۴۰

سورۃ اخلاص یعنی قل ہو اللہ ایک بہت محبت رکھتا ہوں نہ حضرت نے یہ حدیث فرمائی **مَنْ رَزَقَهُ رَبُّهُ الْاَحْصِیْبُ حُرْمَةً یُسَاءَلُ**
الْعِبَادُ عَنْ عَلٰی الْفَاعِدِیْنَ کَحُمَمَ اَمَامَ تَوَحُّدِ مَا مِنْ رَجُلٍ مِّنَ الْفَاعِدِیْنَ یَخْلُفُ رَجُلًا مِّنَ

الْعِبَادِ یَنْفِیْ اَخْلَیْہِ یَعْنِیْ نَفِیْہِمُ لَہٗ وَفِیْہِ لَہٗ یَوْمَ الْقِیَامَةِ فَاِذَا حُدِّثَ مِنْ عَمَلِہٖ مَا شَاءَ تَوَلَّی النَّفْسَ
الْبَشَرَا رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ فَقَالَ فَمَا ظَنُّکُمْ مُّسْلِمٌ مِّنْ بَرِیْدِ بْنِ حَبِیْبٍ روایت ہے کہ حضرت نے

فرمایا کہ غازیوں کی بیبیوں کی حرمت غازی نشین لوگوں پر ایسی ہے جیسے اونکی ماؤں کی حرمت ہے اور جو غازی نشین مرد ہوں وہیں ہر گز
گھر بار کے کام نہ خدمت میں رہے پھر ان میں غیبت کرے تو قہر سے کہن کر اٹھ جائے گا پھر ہر ماہ اس کے نیک عمل سے جو بارے گا لوگا

۲۰۴۱

پھر حضرت ہم اصحاب کو لڑتے ہوئے ہوئے اور فرمایا کہ تمہارا کیا گمان ہے **ف** یعنی اس کو حق جانتے ہو یا کچھ نہ دیکھو **قَالَ ابْنُ عَسَمٍ**
حَسْبَ الْجَنَّةِ عَلٰی اللّٰہِ اَحَدًا کَاذِبًا لَا یَسْبِیْلَ لَکَ عَلَیْہِ مَا قَالُوْا لِلْمُتَلَاذِعِیْنَ غَزَاوِی اَوْ سَلَمٌ مِّنْ عَبْدِ اللّٰہِ

سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تم دونوں کا حساب ہے اگر تم دونوں میں ایک تو جو تمہاری ہر گز اور دوسرے کا تو جو میں نے
ایک شخص نے اپنی جو روکو بیکاری کا عیب لگایا اس نے انکار کوئی نہ ہونے پر میں کہم کہ جھوٹے کو بد دعا کر کے بجا ہو گئے نہ حضرت نے فرمایا

یعنی دوسرے کا یہ کہ جھوٹا ہے اگر شرع میں کسی جھوٹے ثابت ہو لیکن قیامت میں نبی اس کا ایک بار پھر فرمایا مال کا جو رکو بد دعا
حضرت نے فرمایا کہ اس کے ذوال برقا کو اور انصاف میں اگر تو سمجھا تو مال صحبت لاری کے بڑے گنا اور عورت بھی ہو تو مال کا لینا اور بیت

۲۰۴۲

بے عیور **قَالَ حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ رَّذُ السَّلَامِ وَعِيَادَةُ الْعَرِیْضِ وَالتَّسَامُعُ الْجَدَارِ وَاجَابَةُ**
الدَّعْوِیِّ وَالتَّشْتِیْتُ الْفَاعِلِیْنَ بخاری اور بیہرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا مسلمان کے حق دوسرے مسلمان کے

پانچ ہیں سلام جواب دینا تو کیا کو پوچھنا اور جواب دینا کے پیچھے چلنا اور دعوت کو قبول کرنا اور جو چھوٹے والے کو دعا دینا یعنی ہر جگہ سکھانا
اور جو بڑے کو حق **قَالَ حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتٌّ قِیْلَ وَمَا هُنَّ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ قَالَ اِذَا الْعِدَّةُ فَسَلَّمَتْ عَلَیْکَ**

۲۰۴۳

وَ اِذَا دَعَاکَ فَاجِبْہُ وَ اِذَا اسْتَعْتَقَکَ فَانْصَحْ لَہٗ وَ اِذَا احْلَسَ فَحَمْدُ اللّٰہِ فَتَحْمِنَہُ وَ اِذَا اَمْرٌ مِّنْ قَدْرَہٗ وَ اِذَا
مَاتَ فَاتَّبِعْہُ مسلمان ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا اگر کسی مسلمان کے مسلمان پر غصہ ہیں تو لوگوں سے پوچھا کہ حق کو میں

یا رسول اللہ حضرت نے فرمایا کہ جب تو اس سے ملے تو اس کو سلام کر اور جب مجھ کو بلائے اور دعوت کرے تو قبول کر اور جب تجھے کسی کا مرن
نصیحت سمجھا تو اس کو نیک نصیحت دے اور جب کدو چھینے اور انھ کو سکھائے تو اس کا جواب دے یعنی ہر جگہ سکھانا اور جب کدو بجا دے تو اس کو

جا کر پوچھو کہ جب کدو تو لوگوں سے جتنا کہ کے ساتھ مل **ف** پہلی حدیث میں باج حق فرماتے اور اس میں تھو تو طلبتے کہ باج بھی تھیں
نصیحتیں بلکہ سلام کے حق بہت ہیں اگر جس کی زیادہ ضرورت تھی اس کو فرمادے باج بھی تھیں کچھ کہم کہ زیادہ شرح ابو ہریرہ سے **قَالَ حَقُّ اللّٰہِ**

۲۰۴۴

عَلٰی كُلِّ مُسْلِمٍ اَنْ یَّتَسَلَّلَ فِیْ كُلِّ سَبْعَةِ اَیَّامٍ یَّتَسَلَّلُ رَأْسَہٗ وَجَسَدَہٗ وَیُرْوِیْ اللّٰہُ عَلٰی اَجْلِ مُسْلِمٍ
حَقٌّ اَنْ یَّتَسَلَّلَ فِیْ كُلِّ سَبْعَةِ اَیَّامٍ یُّقِیْ مَا یَجَارِی مِّنْ ابُو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ خدا کا حق ہر مسلمان سے ہے

کہ ہر ہفتے میں غسل کرے اپنے سر اور ہاتھوں کو جو دھوئے اور دوسری روایت یوں ہے کہ ہر ہفتہ ہر مسلمان پر خدا کا حق ہے کہ ہر ہفتے میں غسل کرے ایک بار

٢٠٥٢

داخل ہوا اس نے عکس سید لا استغفار کہے ہیں **ق** ابوبکرؓ کہ ۴۰ شہر کا عید لایا نقصان رمضان و ذوالحجہ کا ہی اور سلم
 بن ابوبکرؓ روایت ہے کہ حضرت علیؓ فرمایا اگر دو مہینے عید کے گزریں تو رمضان اور ذی الحجہ **ف** امام احمد نے اس حدیث کا

مطلب یہ کہ اگر ایک سال عین بد و خون منہجی کا نہیں ہو کر ایک دو تین دن کا ہو گا تو دوسرا تیس دن کا ہو گا اور اس خی نے کہا کہ ان دنوں

میںوں کا نواب کہ نہیں بن سکتا اور اسناد ہی اگرچہ دونوں شاہزادین کے مہر پر ہی تو لکھی ہوئی ہے اور اس کے علم ہر شخص صدقہ صدقہ اللہ
 پہا علیکم فاقبلوا صدقہ یعنی القصص فی السقی مع الامین عمر فاروق سے روایت ہے کہ حضرت سقر علیہ السلام

نار کا قمر صدقہ کو کہ خطے نہ پر تصدق کیا ہو سو اس کے ساتھ قبول کر دیں یعنی ان کی حالت میں بھی نار کا قمر سفر میں جاتی ہے

سفرین بپارفت کار خود در دست برتے کا نام پڑھائی کرتے حقیقت اور درست ہو کہ مسابہ بین محمدی حضرت
نفسی اور پوری پر ہے اور ہی سب ہوا نام غلو کہ سفرین پوری نماز پڑھنا درست نہیں ہر ذنب از او صلاۃ الہی

سُورَةُ الْفَصَالِ اسلم زید بن ارفضہ سے روایت ہے کہ حضرت عمرؓ فرمایا کہ صلوة الاذان میں اس وقت یہ جب کہ اونٹ کے بچوں کے ٹوسے جلتے لگیں یعنی بائیس وقت پہلے گرم ہوئی ہو بچوں کے ٹوسے جلتے جلتے ہوں یہ اوقات حاکم کے اونٹوں کے گرد

ہو جائے یہ بیشعور غلوں کے برخلاف ہے۔ حضرت نماز کو صلوٰۃ الاولیاء میں کہتے ہیں کہ میں نے یہ معلوم ہوا کہ صلوٰۃ اُمّی اور غایت شاکہ نام صلوٰۃ الاولیاء میں

[illegible]

فليس الفصل برحمن عمر وأبو سعيد صلوة الجماعة افضل صلوة الفرد الخمسة وعشر برون هذا
ورواية ابني سيد في رواية ابن عم كسيع وعشرين بن كاري من عبد الله بن محمد او ابو سعيد روايت بن كسيع في رواية

ق اَلْاُمُّ رِيَّةٌ صَلَوَةُ الرَّجُلِ فِي حِمَاةٍ زَيْدٌ عَلَى صَلَاتِهِ فِي بَيْتِهِ وَصَلَاتُهُ فِي سُوقِهِ يَصْنَعُ اَوْ عَشْرِينَ دَرَجَةً

وَقَالَ إِنْ أَحَدُهُمْ إِذَا أَوْضَأَ بَحْسَ الرُّسُومِ قَامَ إِلَى الْمَسْجِدِ لَا يَهْدِيهِ إِلَّا الصَّلَاةُ لَوْ خِطَّ خَطْوُهُ إِلَّا رَفَعَهُ اللَّهُ لَهُمَا دَرَجَةً بِهَا نَحْبُهَا فَخَصَّ بِدُخُلِ الْمَسْجِدِ فَإِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ كَانَ فِي الصَّلَاةِ مَا كَانَ

صَلَاةُ الْخَمِيسَةِ وَالْمَلَائِكَةُ يُصَلُّونَ عَلَيْكَ كُلَّمَا دَامَ فِي مَجْلِسِهِ الَّذِي صَلَّيْهِ يَقُولُونَ اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ

[illegible]

خوفی بھر سیدی میں آیا اس نے اس کے ہمارے اوکھی جنبش کا کوئی سبب نہ دیکھا۔ شخص نے کہا کہ چنپہ گنگوڑا کا خدا اور اس کے سب سے بڑا بھائی ہے۔

ایں ہی صورت نماز کے انتظام میں گندھوگی اہل نماز میں شمار ہوگی نماز پڑھنے کے برابر نماز کا ثواب ملے گا اور فرشتے اس کو دعا مانگ رہے ہیں جب تک

۱۔ اوس کان میں ہمارا یہ جیسٹین کہ بڑھ چکا کرتے تھے ہین اسی اور پھر حکم لایا اوسکی معصرت لایا اوسکی نو بچوں ارادہ سپر پرست

فصل اول در اصول و قواعد

۲۰۶۵
کتابخانه جماعت
مسجد مکی داره

مَحْدُوفٌ فِيهِ
سُورَاتُ ١٣

[illegible]

منافع فصولی
پور و پور و پور
یعنی "پور"

٢٠٤٥

٢٠٦٤

٢٠٤٤

P. 6A

٢٠٤٩

٢٠٩٠

يَا رَسُولَ اللَّهِ فَإِنَّكَ الْيَوْمَ الَّذِي كَسَنِيَا تَكْلِمَتَا فِيهِ صَلَوَةُ يَوْمٍ قَالَ لَا تَذَرُوا اللَّهَ فَإِنَّهُ تَكْلِمَتَا يَارَسُولَ اللَّهِ
وَمَا لَمْ تَرَ عَهْدِي فِي الْأَرْضِ قَالَ كَأَنَّمَا نَشِئْتُ اسْتَدْبَرْتُهُ الرَّجُلُ فَإِنِّي عَلَى الْقَوْمِ فَيَذَعُوهُمْ فَيَقُولُونَ بِهِ
وَيَكْفِيهِمْ أَنَّهُ قِيَامُ السَّمَاءِ فَيَقْطُرُونَ الْأَرْضَ فَتَنْثِيَتْ فَتَرْوَحُ عَلَيْهِمْ سَارِحَتُهَا أَطْوَلَ مَا كَانَتْ
فَدَسَّ قَاسِبُهُ صُرْفَةً عَاوًا مَدًّا حَوَاصِرُهَا فِي الْقَوْمِ فَيَذَعُوهُمْ فَيَذَرُونَ عَلَيْهِ قَوْلَهُ فَيَقْبَلُونَ
عَنْهُمْ فَيُصْحَوْنَ مُجْذِبِينَ لَيْسَ بِأَيِّدِهِمْ شَيْءٌ مِنْ أَمْوَالِهِمْ وَبِهِمْ بِالْحَرْبِ يَقُولُ لَهَا أَخْرِجِي
كُلَّ رَاوٍ فَتَنْتَبِعُهُ كَنُوزُ مَا كَيْسِبُ الْعَقْلُ ثُمَّ يَذَعُوهُمَا رَجُلًا مُسْتَلِيمًا شَبَابًا فَضْرِبُهُ بِالسَّيْفِ فَيَقْطَعُهُ
جُرْلَتَيْنِ رَمِيَّةَ الْفَرَسِ ثُمَّ يَذَعُوهُ يَقْبَلُ بِهَلَالٍ وَجْهَهُ وَيَقْبَحُ قَبِيلَهُمَا هُوَذَا ذَلِكَ إِذْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ
بَنِ مَرْيَمَ فَيَرْزُلُ عِنْدَ الْمَنَارَةِ الْبَيْضَاءِ شَرْقِيٍّ وَمَشْقِيٍّ بَيْنَ هَرَمُودَ وَبَيْنَ وَاصِعًا كَتَبَ عَلَى أَجْنِحَتِهِ
الْمَلَكُ إِذَا طَافَ أَرَأْسَهُ فَطَرَّ وَإِذَا رَفَعَهُ تَحَدَّرَ رَوْنُهُ جَمَانًا كَالْقُلُوبِ فَلَا يَحِلُّ لَكَ أَنْ تَجِدَ رَجُلًا نَفْسِهِ
إِلَّا مَاتَ وَنَفْسُهُ يَنْتَبِئُ حَيْثُ يَنْتَبِئُ طَرَفُهُ فَيَطْلُبُهُ حَتَّى يَذَرَكَهُ بِبَابٍ لَدَى فَيَقْتُلُهُ ثُمَّ يَأْتِي عِيْسَى بِرُوحِهِ
قَوْمٌ فَذَعُوهُمْ اللَّهُ مِنْهُ فَيَقْسِمُ عَنْ وَجْهِهِمْ وَيَجِدُ نَفْسَهُ بِدَجَاحِهِمْ فِي الْجَنَّةِ قَبِيلَهُمَا هُوَذَا ذَلِكَ إِذْ
أَوْحَى اللَّهُ إِلَى عِيْسَى أَنِّي قَدْ أَخْرَجْتُ عِبَادِي لَا يَدَانِ لَا حِلَّ يَفْقَهُنَّ لِهَرَمُودَ عِيَادِي إِلَى الطَّوَرِ وَبَيَّنْتُ
لِلَّهِ يَا جُوجَ وَمَاجُوجَ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ فَيَمُرُّ أَوَّالُهُمْ عَلَى طَبَقَةٍ فَتَقْرَأُ فَيَسْتَرْبُونَ
مَا فِيهَا وَيَمُرُّ آخِرُهُمْ يَقُولُ لَعْدُ كَانَ يَهْدِيهِمْ مِنْ بَابٍ ثُمَّ يَسِيرُونَ حَتَّى يَنْتَهَوْا إِلَى جَبَلٍ فَخَرَّ
وَهُوَ جَبَلُ بَيْتِ الْمُقَدَّسِ يَقُولُونَ لَعْدُ قَتَلْنَا مَنْ فِي الْأَرْضِ هَلُمَّ فَلْنَعْمَلْ مَنْ فِي السَّمَاءِ فَيَرْمُونَ
بِنَشَائِهِمْ إِلَى السَّمَاءِ فَيَذَرُهُمُ اللَّهُ نَشَائِهِمْ مُخْضَبَةً وَيُخَصِّرُ نَبِيَّ اللَّهِ عِيْسَى وَأَصْحَابَهُ حَتَّى يَكُونَ رَأْسُ
النُّورِ أَحَدَهُمْ خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَحَدَهُمُ الْيَوْمَ فَيَرْغَبُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيْسَى وَأَصْحَابَهُ فَيُرْسِلُ اللَّهُ
عَلَيْهِمُ النَّعْفَ فِي رِقَابِهِمْ فَيُصْبِعُونَ فَرَسِي كَمَوْتِ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ يَهْطِلُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيْسَى وَأَصْحَابُهُ
إِلَى الْأَرْضِ وَلَا يَجِدُونَ فِي الْأَرْضِ مَوْضِعَ شَيْءٍ إِلَّا مَلَأَهُ رُحْمُهُمْ وَنَهْمُهُمْ فَيَرْغَبُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيْسَى وَأَصْحَابُهُ
إِلَى اللَّهِ فَيُرْسِلُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ طَيْرًا كَأَعْنَاقِ الْبَعِثِ فَتَحْمِلُهُمْ فَتَقْطُرُهُمْ حَيْثُ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ
مَطَرًا لَا يَكُنْ مِنْهُ بَيْتٌ مَدِيرٌ وَلَا وَبَرٌ فَيَغْشِي الْأَرْضَ حَتَّى يَرُوكَهَا كَالْقَلْبَةِ ثُمَّ يَقَالُ لِلْأَرْضِ أَنْتِ
تَمُوتِينَ وَرُدِّي بَرَكَاتِي فَيَوْمَئِذٍ تَأْكُلُ الْوَصَابَةُ مِنَ الْمَاءِ وَتَسْتَظِلُّونَ بِفُحْفُهَا وَيَبَارِكُ لِي فِي الرِّسْلِ
حَتَّى أَنَّ اللَّحْمَ مِنَ الْأَيْلِ لَتَكُنِيَ الْفَتَامُ مِنَ النَّاسِ وَاللَّحْمَةُ مِنَ الْبَقَرِ لَتَكُنِيَ الْغَيْبِلَةُ مِنَ النَّاسِ
وَاللَّحْمَةُ مِنَ الْغَنَمِ لَتَكُنِيَ الْفَذَمُ مِنَ النَّاسِ فَيَبْنِي هُمْ ذَلِكَ إِذْ مَنَّ اللَّهُ رَحْمَةً طَائِفَةً وَأَخَذَهُمْ
تَحْتَ أَبَابِهِمْ فَتَقْبَلُ رُوحَ كُلِّ مُؤْمِنٍ وَكُلِّ مُسْلِمٍ وَتَقْبَلُ شِرَارَ النَّاسِ يَتَمَرَّجُونَ فِيهَا هَمَّارًا
فَيُحْمِلُهُمْ نَفْسُ النَّاسِ مِنْ مُسْلِمِينَ وَنَاسٍ مِنْ مُشْرِكِينَ وَرَوَيْتُ عَنْ رَجُلٍ قَالَ كُنْتُ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ وَكَانُوا يَكُونُونَ
يَكُونُونَ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَانُوا يَكُونُونَ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَانُوا يَكُونُونَ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَانُوا يَكُونُونَ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ

غیر در حال
نویز و دوی

محمد بن ابی
رسول خدا صلی
علیه و آله
و سلم

میں اسکو الزام دوں گا اور اسکو شہر سے بھاڑ گا اور اگر وہ نکلا اور میں تم لوگوں میں وجود نہ تو ہر مسلمان اپنی طرف سے اسکو الزام
 اور قتالی پر خلیفہ و گھمان ہر مسلمان پر آئندہ قتال تو جو ان ہنگامے بالوں لایا ہو اسکی اسکی میں ٹیٹ ہو گا میں اسکی منہ سے
 دیا ہوں عبدالعزیز بن قطن کے ساتھ عبدالعزیز ایک کافر تھا سوچو شخص کہ تم میں سے کسکو پوچھا جائیے کہ سورہ کلمت کسکی آیتیں
 اور سیر پر مقررہ کھلیگا شام و صراف کے دریاں کی رو سے تو خرابی ڈالیکا ملتے اور فساد اٹھا جائیگا بائیں کی حد کے اندر ایمان نہ پائے
 اصحاب کو یا رسول اللہ اور قس راہ کو زمین پر درنگی اور اقامت ہوگی حضرت نے فرمایا چالیس دن اور پچیس ایک فی سال کے برابر اور دوسرا
 بیسے مہینا اور تیسرا دن جیسے ہفتہ اور باقی دن جیسے کہے تھے اس دن میں اصحاب کو یا رسول اللہ سورہ دن جو سال کے برابر ہو گا کیا ہو
 ایک ہی کی نازک فیت کی حضرت نے فرمایا کہ نہیں تم اندازہ کر لینا اس دن میں بعد راہ کو یعنی یقینی یکے بعد لڑون میں نماز پڑھنے
 اوسی طرح اس دن بھی اصل کر کے پڑھو اصحاب کو یا رسول اللہ راہ کو شتاب نہی زمین میں کیونکہ ہوگی حضرت نے فرمایا جیسے وہ پڑھیں جو
 پچیس سے وراق ہو سورہ ایک قوم باس اور کیا تو انکو کفر کی طرف بلاو گا سووی اسکا ایمان لاوینگے اور اسکی بات مانینگے تو اسان کو کم
 از کیا سورہ مانی پڑھاو گا اور زمین کو کھڑکھاو گا سورہ گھاس اور راج جاو گی تو شام کو انکے موشی آویگے منہ سے ایک دراز کو مان ہو کر
 اور کشادہ منہ کر لو کہ کہیں عرب تن کر لینی سوتے تھے ہو جاوینگے پھر حال دوسری قوم باس اور کیا تو انکو کفر کی طرف بلاو گا تو وہی اسکو
 قول کو دوسرہ کرینگے یعنی اسکی بات مانینگے تو انکی طرف سے بہت جاوگا تو اوپر خط اور خشکی پڑگی انکے ماتھوں میں انکے مالوں میں
 کچھ نہاتی رہیگا اور حال ایران میں پڑھیکا تو اسکو کہیگا کہ ای زمین اپنے خزانے کمال تو دیکھ مال اور خزانے ظاہر ہو کر اسکو پنا
 مع ہو جاوینگے جیسے شہد کی گھمان بڑی کھی کے گرد جو ہم کرتی ہیں پھر حال ایک جوان مرد کو بلاو گا تو اسکو تورا سے مارے گا سو پو
 قتل کر کے دو کمرے کر ڈالیکا جیسا نشانہ دو لوگ ہو جائیے پھر اسکو زندہ کر کے بلاو گا سو سورہ جو ان ملنے اسکا پھر دھکتا ہوا اوچھنستا
 سو وہاں اسی حال میں چمکا کہ آگاہ حق تعالیٰ عیسیٰ بن مریم کو بھیجے گا تو عیسیٰ اور بیگے سفید سینا ریاس شہر مشرق کے شرق کی طرف نکلیں
 جوڑ اپنے اپنے دونوں ماتھے دونوں کے بیرون پر کے سوتے تو جب کہ عیسیٰ اپنا سر جھکاوینگے تو پسینا پکڑے گا جب کہ اپنا سر اٹھاوینگے
 تو سوتے سے بوند بہین جسوں کافر باس عیسیٰ اور بیگے اور اسکو انکے دم کی چھاپ لگی گی سورہ دیاوے گا اور اسکو دم پوچھیکا جان نہ کر لگی
 پوچھیکا پھر عیسیٰ حال کو تلاش کرینگے یہاں تک کہ اسکو باب لڈ باس باوینگے لڈ شام میں ایک پہاڑ کا نام ہے سو اسکو قتل کرینگے پھر عیسیٰ
 نین پر باس ہوگا انکے جلنے والے جہاں سے بچا یا شوق سے انکے چرون کو سلاوینگے اور انکو انکے ہوش کے درجات کی خبر دینگے
 اسو اسی حال میں ہونگے کہ آگاہ حق تعالیٰ عیسیٰ کو حکم کرے گا کہ اپنے اپنے اپنے سے کھلے میں کہ کسی کو اپنے لئے کی طاقت نہ ہو پناہ نہ
 سیر مسلمان بندوں کو پھر کی طرف و خدا بھیجے گا انھیں اور انھیں کو پورے بریک ملندے سے کھل پڑینگے تو انکے پہلے لوگ برستان کے
 دیا پڑینگے تو پناہ دینگے بتنا بانی راو میں جو گا اور انکے پھلے لوگ جبہ مان آوینگے تو کہیں گے کسی ان بائیں جو پناہ تھا پھر چلینگے
 یہاں تک کہ اسکو پہلے تک پوچھینگے جہاں دشمن کی کثرت ہے یعنی یہاں مقدس کا پہاڑ تو کو کہیں گے البتہ ہم زمینوں کو تو قتل کیلئے آواب
 آسمانوں کو قتل کر پناہ تیروں کو آسمان پر اپنے سوا خدا انکے تیروں کو خون اودہ کر کے ڈالیکا اور خدا کا سفیر عیسیٰ اور انکے ہما
 گھر سے بیگے یہاں تک کہ انکے نزدیک پہلے کا فضل ہو گا تو اشرفی سے آج تھے سے نزدیک یعنی کھانے کی نہایت نگی ہو گی پھر
 خدا کا رسول عیسیٰ اور اسکو اصحاب عاکرے کو خدا انوں باجوج ماجوج پڑھا بھیجے گا انکی گردنوں میں کڑا پید ہو گا تو معجک مرے دینگے

ایک جان کا سامان پھر خدا کا رسول عیسیٰ اور اسکے اصحاب زمین پر اتر گئے تو زمین میں ایک ہشت براب جہاد کی شہادت ہو گئی
 سے خالی نہ رہا یعنی تمام زمین پر ایک شری لاشیں بڑی ہو گئی پھر خدا کا رسول عیسیٰ اور اسکے اصحاب سے دعا کر گئے تو قبلی
 یا حج حاجج برتر یا حج حج سے بڑے اونٹوں کی گردنیں جو وی اونٹوں اور اونٹوں پھینک دی گئی جہان خدا کو نظر نہ
 پھر خدا ایسا پانی برسا دیا کہ کوئی گھڑی کا اور اونٹوں کا اوس پانی سے باقی نہ رہ گیا سونڈ زمین کے دھواڑ لگا یہاں تک کہ زمین کو
 مثل حوض یا باغ یا صاف عورت کی طرح کر دیا پھر زمین کو حکم ہوا کہ اپنے پھل جھاو اپنی برکت کو بھیر دو اوس دن ایک نار کا ایک
 گروہ کا ہوا اور اسکے چھلکے کو بھنگ دیا سنا کر اوس کے سارے میں پھینکے اور دو دھمین برکت ہو گئی یہاں تک کہ دو دھار اترتی ہوئیں
 کے بڑے گروہ کو لغایت کر گئی اور دو دھار لگے ایک برادر کی لوگوں کو لغایت کر گئی اور دو دھار بکری ایک جہدی لوگوں کو لغایت کر
 سوا سی حالت میں لوگوں کو لگے کہ کیا حق تعالیٰ ایک پاک ہوا پھر پھر لگوں کی اغواں کے نیچے لگی اور اتر کر جاوے گی تو ہر مومن اور ہر سنی کی
 کو بغیر کر گئی اور بڑے بدعات لوگ باقی رہ جاوے گئے آپس میں پھرتے گئے کہ مومن کی طرح سوا پھر قیامت قائم ہو گئی ایک نصیر
 جہال کا بہت کر گئی اصحاب کو اوس کا بہت خوف غالب ہوا حضرت کا حال معلوم ہوا تب یہ حدیث فرمائی اصحاب کو تسکین دی کہ اگر میری
 زندگی میں جہال یا مومن کو لغایت کرنا ہوں اور زمین پر خدا میرا خلیفہ ہی اہل ایمان کو بچا دیا پھر اوس کی نشان دہانی بتا دین اور سورہ کوف کا
 پڑھنا ارشاد کیا سورہ کوف کے پہلے دس آیتوں میں دفع شر جہال کی تائید ہو جہال کا تمام قصد اور حضرت عیسیٰ کا نزول اور اوس کا
 حضرت عیسیٰ کے ہوتے قتل ہونا اوس کے بعد یا حج حاجج کا کھانا اور اوس کی شہادت و شہادت کے بعد یا حج حاجج کا کھانا اور اوس کے وقت
 قیامت کا قائم ہونا ارشاد کیا اور یا حج حاجج کو خدا اتنی طاقت دے گا کہ اہل ایمان کے ساتھ اہل ایمان کے واسطے لوگوں اوس کے داوین آجی او
 کون ایمان نہ رہا ہی اہل ایمان کو لازم ہو کہ یہ کسی کا فر یا خلافت شرع فقیر سے خرق عادت دیکھے تو اوس کا ہرگز اعتقاد کرے اور کو جہال
 کا نائب سب اہل ایمان اور قوی پر نظر رکھے شعبہ بازی پر خیال نہ کرے کلمات اوس کا نام ہی جو ولی یعنی متقی ہوں سے ہوا ہر کافر نے دینی سے
 ہوا کو مستراح کہتے ہیں **ق** حَذِيقَةُ وَفَنَةُ لِّلْجَلِّ فِيْ اَهْلِهِ وَ مَالِهِ وَ نَفْسِهِ وَ وَلَدِهِ وَ جَارِهِ يَكْفُرُهَا
 الصِّيَامُ وَالصَّلَاةُ وَالزَّكَاةُ وَالْمَعْرُوفُ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ بخاری اور مسلم میں خلیفہ سے روایت ہے کہ
 حضرت فرمایا کہ سورہ کا اوس کے گھر والوں کے حق میں اور اوس کے مال اور جان اور لرزے اور ہمسایہ میں اوس کو روزہ اور نماز اور صدقہ اور
 نیکیات بلکہ ان اور بڑے کام سے روکنا اور ذکر و التاہی **ق** یعنی اگر آدمی سے جان مال و جوڑے کے ہمسایہ کے حق میں کچھ قصور یا ناہنسی
 ہو ہوگی تو ان بابت تو جس معاف ہو جاوے گی **ع** عَنِ اللّٰهِ تَعَالٰی وَ فَرَأَسَ لِّلْجَلِّ وَ فَرَأَسَ لِّلْجَلِّ وَ فَرَأَسَ لِّلْجَلِّ وَ فَرَأَسَ لِّلْجَلِّ
 وَ التَّائِبُ إِلَى اللَّهِ كَانَ عِندَ اللَّهِ مَكْرُومًا وَ فَرَأَسَ لِّلْجَلِّ وَ فَرَأَسَ لِّلْجَلِّ وَ فَرَأَسَ لِّلْجَلِّ وَ فَرَأَسَ لِّلْجَلِّ
 اور تائیب الی اللہ تھا ان کا اور تائیب الی اللہ تھا ان کا اور تائیب الی اللہ تھا ان کا اور تائیب الی اللہ تھا ان کا اور تائیب الی اللہ تھا ان کا
 اوس کے واسطے چار یا چار سے زیادہ فرش لگے تو درست ہی منع دی ہو جہ حاجت ہو **ع** اَوْ مَوْتُهُ وَ اَنْتَ فَضْلٌ عَاطِيَةٌ
 عَلَى الْاِنْسَاءِ لِكُفْلِ الْاَثْرِ بِكَ لَسَا ثَرُ الْعَالَمِ مسلم میں ابو موسیٰ اور انس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ عاٹیشہ فضیلت
 عورتوں پر میرے نزدیک فضیلت باقی تھا ان پر **ق** فرمایا اوس کھائے کہتے ہیں کہ وہی کو شہر سے لے گیا یا جو عکب کو یہ کھانا
 نہایت پسند تھا سب کھا لوں زیادہ حضرت عاٹیشہ سے علم اور آداب حضرت سے نسبت اور عورتوں کے زیادہ مستحق تھے ہوا اسے ان کی بابت

۲۰۸۱

۲۰۸۲

۲۰۸۳

- اس حدیث سے معلوم ہوا کہ وضو کرنا نماز کے واسطے واجب ہو کھانے کے واسطے واجب نہیں ہر چند کھانے سے پہلے ہاتھ دھونا مستحب ہے
 لیکن حضرت سے پہلے ہاتھ نہ دھوئے تاکہ لوگوں کو معلوم ہو جائے کہ اگر ہاتھ پاکی ہو تو نہ دھو نہ اجنبی میں **ق** اِنَّ عُكَّاسَ لَوْ كُنَّ
 لَهْمٌ فِي مَيْدَانٍ حَتَّى ذُكِرَ لَوْ كَانَتْ لَهُمْ لَدَا لَهْمٌ فِيهِ لَيَقْنِي لَاهِلٌ مَلَكَةٌ حِينَ دَعَا لَهْمًا اَبَاهُ عَلَيْهِ السَّلَامُ
 بخاری اوسلم میں عبداللہ بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ واللہ میں اس دن نے میں نے باغ تھا اور اگر باغ ہوتا تو ہزار
 علیہ السلام آتے اس واسطے باغ میں بھی عالمی **ف** حضرت ابراہیم علیہ السلام نے اپنے والدین کے واسطے شربت میوہ جات کی مکہ
 اوس وقت میں ان رات تھی اگر موتی تو اس کی بھی دعا کرتے **ق** عَلَيَّشَةُ لَيْتَ رَجُلًا صَاحِبًا مِّنْ اصْحَابِي يَخْرُجُ مِثْلِي
 اللّٰكِيَّةَ بخاری اوسلم میں حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ کاش کوئی نیک مرد میرے سمابے آج کی رات میری نگہبانی
 کر سکتے یہ حضرت نے لیلۃ القدر میں فرمایا پھر سعد بن ابی وقاص تمہارا بندہ کے لئے حضرت نے جو چاہا تو کیوں آیا یہ سنا کہ کما کہ حضرت
 میں آپ کی محافظت کے واسطے آیا ہوں پھر حضرت نے ان کے حق میں دعا فرمائی کہ علم ہو کہ محافظت اور نگہبانی کرنا توکل کے خلاف نہیں
 هَلْ يُوْقَدُ اَوْ مَتَى كَانَ هَذَا مَسِيرَةً لِّمَوْفِقٍ **قَالَ** لَا يَنْفَادُ سَحَرٌ لِّكَ اَلَمْ تَعْرِفِ حِينَ دَعَمَكَ اَلْاَلَمَ
 سلم میں ابوقنادہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اگر سے یہ تیری جہاں سیر کرتے تھے حضرت نے ابوقنادہ سے لیلۃ القدر میں کی
 فجر کو فرمایا جب کہ اوسے تیسری بار حضرت کو تمام **ب** حضرت رات بھر منزل کی فیند کے غلیبے سے جھلنے لگے ابوقنادہ تین بار
 حضرت کو تمام لیا تیسری بار حضرت مجاہد سے تب یہ حدیث فرمائی جب کہ ابوقنادہ سے یہ حال معلوم ہوا تو حضرت نے ابوقنادہ کو کہیں
 ہوں علی کہ خدا تیری محافظت کرے جسے فنی اپنے پیغمبر کی محافظت کی **ق** اِنَّ عُكَّاسَ مَرَّحًا بِالْقَوْمِ اَوْ بِالْوَفْدِ
 عَزَّيْزًا اَوْ لَا كَذَا **قَالَ** لَوْ دُعِيَ الْعَلِيْسُ حِينَ قَالَ لَهْمٌ مِّنَ الْقَوْمِ اَوْ مِّنَ الْوَفْدِ فَقَالَ اَرَبَيْعَةً
 بخاری اوسلم میں عبداللہ بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ خوشحال قوم یا ہوں خوشحال الجلیان یا ہوں بدین شہر
 حضرت نے عبداللہ بن عباس سے فرمایا جب کہ اوسے جو چاہا کہ تم کو قوم یا ہوں یا ہوں تو انھوں نے جواب دیا کہ ہم یہ کہ قوم سے ہیں
ف عبداللہ بن عباس کی قوم سے کہ وہ کا نام بھی حضرت کی خدمت میں مسلمان ہونے کے بعد حضرت نے یہ حدیث سن کر اونی نویر کی
ق اَبُو قَتَادَةَ اَخْبَارَتْ بَنَ رَنْبِيٍّ مُّسْتَرْجِعٍ وَمُسْتَرْجِعٌ مِّنْهُ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا الْمُسْتَرْجِعُ وَالْمُسْتَرْجِعُ
 مِنْهُ فَقَالَ الْعَبْدُ الْمَوْفُوعُ يَسْتَرْجِعُ مِّنْ تَغْصِبِ الدُّنْيَا وَالْعَبْدُ الْفَاجِرُ يَسْتَرْجِعُ مِنْهُ الْعِبَادُ وَالْوِلْدَانُ
 وَالشُّجْعُوْنَ وَالْاَوْدَابُ بخاری اوسلم میں ابوقنادہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ یہ مرد اور اس کے
 والا ہی یا آرم بنے والا صاحب کیا یا رسول اللہ آرم پانے والا اور آرم دینے والا کیسا تو حضرت نے فرمایا کہ ایسا نہ دیکھا جو صاحب
 آرم یا ہوا اور ظالم فاسق جس سے آدمی اور یتیمان اور یتیم اور جوانو آرم پاتے ہیں **ف** حضرت کے سامنے ایک جنازہ نکلا تب
 حضرت نے یہ حدیث فرمائی یعنی جو مرنے کے حق میں دنیا قید خانہ ہو جانے والا مگر کیا عذاب ہے چھوٹا ایمان اور عبادت کی برکت سے قبر بھی سے
 بہشت کی لذت کا نونہ بننے لگا اور ظالم فاسق بے قید ہونا ہوا ایک مخلوق کو ناحق تکلیف دینا جو کوئی موت سے عالم کو آرم ہو
ق اَبُو هُرَيْرَةَ مَطْلُ الْعَبْدِ ظُلْمٌ وَاِذَا اُنْبِغَ اَحَدٌ كُنَّ عَلَى مَلَكَةٍ فَلَيْسَتْ بخاری اوسلم میں ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ
 حضرت نے فرمایا کہ مالدار کا مالدار نام نہ ہو اور جبکہ قرضدار تھا تو قرض کسی لدار پر داتا کہ تو مال دینا چاہتا ہے یعنی مالدار ہو کر

۲۱۰۳

۲۱۰۴

۲۱۰۵

۲۱۰۶

۲۱۰۷

۲۱۰۸

کر کجای الضیف منها صفا ذکر منها کما ذکر یحییٰ الیقین سلم من خدیجہ سے روایت ہو کہ حضرت خدیجہ نے شاد اور خوشی کے درمیان
 کا وہ ستر تین فتنے ایسے ہیں کہ نہیں لگا کر کچھ بھی جوڑیں اور ان سے ایسے فتنے جیسے گرمی کی آندھیاں کہ بعضی لوگ میں سے جموٹی میں اور
 بعضی بڑی فتنے میں نہ سوتا تو اگر گرمی کے اور باقی مختلف کوئی گرم کوئی زیادہ معلوم نہیں کہ تین سو دو سو کوں سادہ مرد اور بعض
 کہتے ہیں کہ ایک سادہ قوم ترک خود غریزی یعنی جلیقہ خان اور بلا کے وقت کا قتل عام دوسرے قتال کا ٹھکانا جیسے بار ساجہ کا کھانا چھوٹا
 ق ابوہریرہؓ کہ ناکر کھجور سے سب سے بڑا حصہ میں نکال دھتھر کا لہو واللہ یا رسول اللہ ان کا کشت لہو لہو قال
 فانتھا فقلت علیکم بشتعة و سبتین جزء کھا مثل جزء ادا الفکار ہی ناکر کھو ہوا والی یوسف ابن ادم
 بخاری اور مسلم میں ابوہریرہ سے روایت ہو کہ حضرت فرمایا کہ تمہاری اگ ایک حصہ بیرون رخ کی اگ کے ستر سے اسے اٹھا کر تمہاری اگ کے
 جلا کر کوئی اگ نکالتی رہی تھی حضرت فرمایا کہ اللہ بیرون رخ کی اگ نکالی اگوں کے ستر سے زیادتی رکھتی ہو یہاں تک کہ گرمی اس کی اگ کے
 برابر ہو جائے اتنی روایت زیادہ کی کہ بخاری میں جلا تا جو ایک حصہ بیرون رخ کی اگ کے ستر سے بیرون رخ کی اگ کے
 روہ و دیبا کی اگ کی گرمی نہایت کم ہے جس کی اگ کی گرمی کی آدمی کو تاب تھو بیرون رخ کا کیا حال ہوگا خدا کی پناہ ق اتم حرام بنت ملحان
 تاس من امی غرضوا علی عذرا فی سبیل اللہ ترکون تبعہ هذا الخیر ملئ کاعنک الا مبرۃ او میل اللہ لولک
 علی الا یہ بنی بخاری اور مسلم میں ام حرام بنت ملحان سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ چند لوگ میری سب سے سارے گئے روتے
 خدا کی روئے اس سمنہ کے اندر سو بار شد بے تخون پر یا جیسے بادشاہ خنوں پر ف ام عمار سے روایت ہو کہ حضرت سیدہ کمر بنی
 بنی سے بیگمے کھلا رسول اللہ کیون بنیستہ میں حضرت نے یہ حدیث فرمائی خدا نے خواب میں کھلا دیا کہ تیری ہمت کی ایسی ترقی ہوگی کہ جہاں
 سوا ہو کہ جہاں کہے بادشاہوں کی طرح اتم حرام نے کہا کہ یا حضرت میرے واسطے دعا کیجئے کہ جو کچھ بھی لوں غازیوں میں ترک کہ حضرت
 نے دعا کی جہاں چھوڑ دینے میں جہاں پر ہوا ہو کہ جو اتم حرام بھی غازیوں میں انھیں صدمہ جہاں ہوا تر کے سوا کسی گرمی پر اور کہیں
 ق ابوہریرہؓ عن اخی بالشافین انراہما عذرا ذاک قال رب ارنی کیف عخی المعانی قال اذک تو من
 قال بل و لکن لطمعت قلبی و رحم اللہ لوطا لقد کان یا و حی الی ذن شد ید و لو کینت فی السحبین
 طول لکینت یوسف لکینت الداعی بخاری اور مسلم میں ابوہریرہ سے روایت ہو کہ حضرت فرمایا کہ براہیم سے زیادہ تر ختم کر کے
 لائق ہیں جبکہ براہیم نے کہا کہ اے رب مجھ کو کھلائے کہ تو مردوں کو کیوں کر زندہ کر تا ہے خدا نے فرمایا کہ کیا تجھ کو اسکا یقین نہیں براہیم نے کہا
 یقین ہوئی نہیں لیکن تیرا واسطے ہو کہ میرے دل کو اطمینان ہو جاوے اور خدا رحم کرے لوط پر اسنے آرزو کی تھی کہ ضبط اسکان میں پنا
 پکے اور اگر مجھ کو قید نہ لیں بے لگی بقدر رازی درنگی یوسف کے تو میں ہلے والے کی بات مان لیتا یعنی اگر ناکر او کے ساتھ جلا تا
 ف حضرت نے حضرت براہیم کا ذکر کر کے ایشہ بن مہزیار سے کہی کہ حضرت براہیم کو مرد و جلائے میں شک تھی اسلئے اسلئے کہنے کی
 درخواست کی اور یہاں تک کہ بھی ایسی درخواست نہیں کی سو حضرت نے یہ شبہ اس طرح دفع کیا کہ مجھ کو زندہ ہونے میں کچھ تردد اور شک
 تو براہیم کو بطریق اولیٰ تھی اور اگر انکو شک ہوئی تو مجھ کو بھی البتہ جوئی اور حضرت لوط کا قصہ یہ ہو کہ جب کافروں نے حضرت لوط کے
 ہمانوں کی بے عزتی چاہی تو حضرت لوط نہایت گھبرائے اور یہ مٹا اوس وقت کہ کاش کہو کہ خدا کا روز ہو تا ہائے کہ وہ
 کوئی محفوظ اسکان ملتا حضرت نے اس قصہ کی طرف اشارہ کیا کہ خدا لوط پر رحم کرے کہ غیر ذلک راہی محفوظ اسکان کی تمنا کرنا نشان

۲۱۱۹

۲۱۲۰

۲۱۲۱

الْأَعْرَاضُ قَدْ لَحِقَتْ هَذَا أَوَانُ لَحِقَتْ هَذَا أَلَمْ تَرَ هَذَا قَدْ لَحِقَ حَقَّ حَقًّا
 مَرَّجًا وَحَقَّ حَقًّا فِي الْوَسْطِ حَقًّا وَحَقَّ حَقًّا أَلَمْ تَرَ هَذَا الَّذِي فِي الْوَسْطِ مَرَّجًا مَرَّجًا
 مِنْ مَرَّجَاتِهِ رَوَيْتَ بِكَ حَقَّ حَقًّا فِي الْوَسْطِ مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 تَسْمَا بِكَ مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 غَدَا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 كَلِمَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 أَوْ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 حَقَّ حَقًّا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 قَاسَمْتُ هَذَا لِحَقِّكَ لِحَقِّكَ لِحَقِّكَ لِحَقِّكَ لِحَقِّكَ لِحَقِّكَ لِحَقِّكَ لِحَقِّكَ
 مَسْجِدِي مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 بِكَ مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 كَاسَاسِي مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 الْمَرْبُوعُ قَالَ حَقَّ حَقًّا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 بِمَا تَوَجَّهْتُ مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 أَوْ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 جَمَانِ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 كَوْرَانِ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 حَقَّ حَقًّا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 بِمَا تَوَجَّهْتُ مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا مَرَّجًا
 بَاقِي السَّكَنِ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 مَسْلُومٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 طَرَانِ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 كَلِمَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 فَلَمَّا أَشْرَفَ عَلَيْنَا مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 أَيْضًا مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ
 فَرَانِ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ مَرَّجَةٍ



۲۸۳۳

۲۸۳۴

۲۸۳۵

۲۸۳۶

۲۸۳۷

ق
والتوفيق

۲۱۵۳

بیان کیا قرآن کا چھوٹا ہے وضو درست نہیں اور حدیث قدسی کا چھوٹا درست ہے خر انسؑ اِذَا ابْتَلَيْتُ عَبْدِيْ بِغَيْبٍ بَسْتِيْهِ
ثُمَّ صَدَقْتُ عَنْهُ مَعَهَا الْجَنَّةُ بِنَمَارِيْ مِنَ الْمَنِيِّ رَوَيْتُ ہر کہ حضرت نے فرمایا کہ خدا فرماتا ہے کہ جب میں اپنے بند کو اسکی
دوبارہ جی جیڑوں میں مبتلا کیا یعنی وہ نون اکھنڈ اور اسکی ہانی میں پھر اوستے صبر کیا تو انکے عوض اسکو میں بہشت و گناہ دونوں

۲۱۵۴

اکھنڈ آدمی کو بہشت بیاری میں اور گناہ چھوٹا یا انکی روشنی کا کم ہونا اور سپر نہایت شاق ہے جب اوستے ایسی سخت مصیبت صبر کیا اپنے
مالک کا شکوہ نہ کیا تو اسواسطے اسکا بلا بہشت کو مقرر کیا خر ابوہریرہؓ اِذَا أَحْبَبْتُ الْعَبْدَ لِقَائِيْ أَحْبَبْتُ لِقَاءَهُ وَإِذَا
كَرِهْتُ لِقَائِيْ كَرِهْتُ لِقَاءَهُ بِنَمَارِيْ ہر کہ حضرت نے فرمایا خدا فرماتا ہے کہ جب میں نے اپنے بند کو پسند کر لیا تو میں اسکی

۲۱۵۵

اوستے ملنا دوست رکھتا ہوں اور جب اسکو میں پسند نہ کر لیا تو میں اسکا ملنا برا لگتا ہوں یعنی یا ان را کہ میں نے دوستی و محبت کی بشارت
ہوتی ہے تو وہ موت کا اور نہ انکی حضور ہی کا شتاق ہوتا ہے اور کا فر کو میں نے وقت عذاب نظر آتا ہے تو وہ موت اور انکی حضور ہی کے مجاہد
خر ابوہریرہؓ اِذَا انْتَقَانِيْ عَبْدِيْ بِيَسْتِيْ تَلَقَّيْتُهُ بِذَنَاجٍ اِذَا انْتَقَانِيْ بِذَنَاجٍ تَلَقَّيْتُهُ بِسَاجٍ اِذَا انْتَقَانِيْ بِسَاجٍ
جَنَّتُهُ بِأَسْرَجٍ بِنَمَارِيْ ہر کہ حضرت نے فرمایا خدا فرماتا ہے کہ جب میرا بند میرے آگے بہشت بھر بڑھتا ہے تو میں اسکو آگے

۲۱۵۶

باتھوں بڑھتا ہوں اور جب میرے آگے باتھ بھر بڑھتا ہے تو میں اسکو آگے باتھوں بھلا اور برابر بڑھتا ہوں اور جب میرے آگے دلو
باتھوں بھلا اور برابر بڑھتا ہے تو میں اسکو پس اس میں بادیہ جلدی بڑھتا ہوں یعنی جتنا بندہ خدا کی طرف متوجہ ہوتا ہے
اوستے کا دوچار لگتا ہے جتنا سید پر متوجہ ہوتا ہے اوستے کا مددگار ہو کر دین کے شکل کام اور سپر آسان کر دیتا ہے اس حدیث میں نیک کاموں کی طرف
بہتے خدا کی نزدیکی حاصل ہوتی ہے ہر ابوہریرہؓ اِذَا أَهَمُّ عَبْدِيْ بِسَيِّئَةٍ فَلَا تَكْتُبُهَا عَلَيَّ فَإِنْ عَمِلَهَا فَالْكَتُوبُهَا
سَيِّئَةٌ وَإِذَا أَهَمُّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا فَالْكَتُوبُهَا حَسَنَةٌ وَإِنْ عَمِلَهَا فَلَا تَكْتُوبُهَا عَشْرًا اسلم میں ابوہریرہؓ

۲۱۵۷

روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا خدا فرشتوں سے فرمایا کہ جب میرا بندہ بدی کا قصد کرے تو اسکو اور بہشت لکھو اور اگر اوستے اسن کام کام کیا
تو ایک لکھو اور جب اوستے نیک کا قصد کیا اور سپر عمل کیا تو ایک نیک لکھو اور اگر اوستے نیک کام کیا تو دس نیکیاں لکھو ف
سبحان اللہ کیا اسکی رحمت اپنے بندوں پر بے حساب ہے کہ بد کام کے قصد کو نہ لکھائے اور نیک کام کے قصد کو بدوں کے لکھاؤ اور بدی
ایک ہی کلمے اور نیک کو دس لکھائے لیکن اسکو دریافت کیا جاسیے کہ بدی کا قصد البتہ نہیں لکھا جائے اگر بدی کا قصد بزرگم کہ ہو گیا
یعنی اوستے کا رابے تر و خوش حال میں نہیں گیا ہو تو اسکی دھوڑ میں دین ایک ہے کہ بعد بزرگم مصمم ہوئے اوستے کام کا خوف اوستے عمل میں لایا

۲۱۵۸

اور اوپر بزرگم نہ ہو تو ایک نیک لکھی جاوے گی سو اسطے کہ اوستے خدا کے واسطے اپنی خوش نشی فضا کی گوارا دوسری صورت یہ کہ بدی کا عزم
مصمم ہو خوف اوستے کی کسی اور سبب ظاہر نہ ہوے یا با تو میں اسکا ایک گناہ لکھا جاوے گا جیسے کہ میں نے رات کو اپنے دل میں عزم مصمم کیا کہ میں
فائدے کو قتل کروں گا یا فلاں کی عورت کو قتل کروں گا اور اسی رات کو وہ گریبا وہ عورت گری تو اوپر قصد قتل اور حرام کا گناہ ثابت ہوا چنانچہ
یہ طلب اور بدی میں یہاں مذکور ہے قرآن اَبُوہریرہؓ اِذَا عَدَدْتُ لِعِبَادِي الصَّلَاةَ لِحَيْثُ مَا كَانُوا عَيْنُ رَأَتْ وَلَا أُذُنُ

۲۱۵۹

تَسْمَعُ وَلَا خَلْفَ عُنُقٍ قَلْبِيْ يَسْمَعُ بِنَمَارِيْ ہر کہ حضرت نے فرمایا خدا فرماتا ہے کہ میں نے تیار کر رکھا ہے اپنے
نیک بندوں کے لیے جس کی آنکھ نہ دیکھا اور نہ کسی کان نے سنی اور نہ کسی آدمی کے دل میں خیال نہ لاف یعنی بہشت میں تین دن کے واسطے
ایسی عمدہ نعمتیں ہیں کہ اوستے مانند دنیا میں کوئی چیز نہیں جسکو مثال دینیے صریح چہ نسبت خاک را باطلہ مال

۲۱۶۰

نه تمسكوا بالبدن الا فكل ما يشي من غير ثلثه او اربعه حرام كما جئنا من غير طلال او تها او شيطان
او كونا بالكمير مع شريك غير شريك من جنس من او نرى ف يعني ان شيطان او كفار سكونه نه كانه
توهر احيى بلينه بيد ايشي دين برهتا يعني شرک نكرنا اور طلال حيزو بدون حكم ابي كس عرام نه عابنا كفار عرب كا ممول تمكارتون
كس نهم بر سائير جھوٹے اور اسكا احرام جاتے سو فرمايكه يه شيطاني بات يوكه طلال كو حرام كته هين اس حديث سے معلوم يوكه
نذر نياز كس كھانے وكسكو عورتين اچھو كھانتي هين بدون انا حيزو نه كھانا يا حضرت فاطمہ كس فاطمہ كس كھانے كو مودون كو نذر نياز
درست نمين يه شيطاني بات يوكه شرع مين اسكا حكم نمين هرا كوهي يركه كاسمعي لعبد لي ويزوي لعبد لي اني لعبد لي
انا خير من يونس بن مئتي مسلمين او پھر يه روايت يوكه حضرت فرمايكه انا يوكه يه بنده كو لا انا نمين يوكه كسنا كسنا
بن شعي بهتريون ف حضرت يولوش بدون حكم انا يه قوم سے نكل گئے سو اكر كوئي كو مودون صبر جان كر اپنه تين بهتريه
نمبر كز درست نمين او اسے كس نمبر كز كوئي بهتريه نمين سو كھان يه كھان ما انعمت على عبادي من غير اكل
اصبح فرني و نهم عا كز فرني يوقون انكوكك ويا لكوكك كس مسلم مين او پھر يه روايت يوكه حضرت فرمايكه انا يوكه
مين اچنه بدون يوكه يه نعمت نمين تا حيسك بعضه يه مكر نموتے هين كته دين فلاست سلسلے نه باني رسا يا اور كھانا كس
سبب باني رساف يعني ميندو خدا رسا يا اور نادان لوگ اسكو تارس اور كھت كي تاثير سے جانك خدا كا شكر نمين كرسے
سخر ابو هرا يركه ما زال عدي يوقون باللق اولي حتى احبته فكنتم سمعه الذي يجمع به و بصرة
الذي ينجو به و يدك التي يطمش بها و رجله التي يمشي بها كذا لسان كس كس اعطيتك و ان اسعدك
لا عيذ بك بخماري مين او پھر يه روايت يوكه حضرت فرمايكه انا يوكه يه بنده بهتريه يوكه نعل عبادتوك واسطے سے جانك انا
يمان كس مين اسكو جانك لگتا جو ان لو مين اسكا كان بوجا نا بون جس سنا يه اور اسكي اچھو جانا بون جس سے دجھتا يه اور
اسكا انا بوجا نا بون جس كز نا يه اور اسكا پاؤن بوجا نا بون جس چلتا يه اور اگر جسے وچه ملگے تو قهر مين اسكو دون اولگر
مجھے پناه ملگے تو البتہ اسكو پناه مين كھون ف اس حديث مين او مقام كا بيان يوكه علم مولك مين خفاي الله اور بقا باصه
كته مين اس يه معلوم يوكه جب بنده كثر عبادت سے مقبول يوا تو خدا اسك دل اور جوار كاسيني اكله كان ماتھ پاؤن كا فظ
هوجا نا يوكه انا بون اسكو ركتا يه اور بعضه كته هين كس دلانے يه مقبول كي حاجت والي براو سكا كان اور اكله اور انا بون يه
زياده تر متوجو نا يوكه نكس مطلب يوكه كس محبت اتي نه بيد بر سايه والا او اسكو خدا سو كس يه خبر سے تعلق اور لوستي نمين ستي
اور جو ركتا اتي كس كوئي آرزو ترسنا اسكو دل مين نمين غل باني نو كوئي كا تم سمين اكي مرضي هواوس نمين سكا اكله كان
پاؤن مرضي خدا كس ناليع بوجا نه هين يه اسكو مرضي كس يه خبر و كيه نكوئي بات كو سته سو ايسه وچه حاصل كرسے كا ظريق اس يه
مين انا يه فرمايكه دوام نوافل سے حاصل يوا يه يه يه جب بنده نه جانك قربا اتي اور خدا كي نزديكي كا بدون عبادت كس طرقي نمين
اسواسطے وده عبادت بكرم بارها يه اور عبادت دو سمر يه فرض اور نفل مكر فرض عبادت تو بر وقت ميده نمين يوكه اسكو وقت نفل
هين مشتاق يه كس او نفل مين جو فرض خالي هين شغل اور خالي نمين باجا اسواسطے او نالي فونون كس نفل عبادت سموم
كھتا يه يه چند مدت كمال شوق اور طوحي اس طرقي نوافل پرستند ما تو بوجو بنده كس مقبول درگاهه صدي او محبوب ابي يوكه

۲۱۹۹

۲۱۶۰

۲۱۶۱

وقت میں لاکھوں لاکھ کروڑوں مسلمان قتل ہوئے لیکن بالکل نیست اور نابود نہیں ہوئے ان یہ اللہ ہی کی اس
است میں آپس کا اختلاف اور شرف و فساد اور غارت گری اور قتل موقوف ہوگا چنانچہ تاریخ کی کت بون میں حال ہر

در حدیث
در حدیث

الباب الثانی عشر فی جوامع الادعیۃ

بلاہوین بابین حضرت کی دعائیں ہیں جو ہر ایک طلب کی جامع ہیں افضل بھی ہر حضرت کی دعائیں یاد کر کے عمل میں لاکو
اس واسطے کہ اول تو یہ کہ کوئی ایسا مطلب دینی یا دنیاوی نہ دیکھ سکے حضرت نے یہ عمل مفصل عالمی ہو دیا ہے کیونکہ دعا حضرت کی
زبان مبارکہ پر گزری ہاں تک بکری اور قبول ہو تو جو حضرت کی دعاوں کے کیا خور کر اور دعاوں کو سیکھ کر عایشہؓ اذہن اللہ
رَبِّ النَّاسِ وَأَشْفَعُ أَنْتَ الشَّافِعُ الْأَشْفَعُ أَفْشَاءُ وَكَشَفَاءُ لَا يَفْشَاءُ دُسْتَمَا كَانَ إِذَا اشْتَكَى الْإِنْسَانُ
مُسْتَعِذًا بِكَ شَمَّ قَالَ بخاری اور مسلم میں حضرت عایشہؓ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ تم کو ایسا یاد کرو کہ تم کو اپنے لئے لا محنت
تو ثانی جو محنت نہیں بہرین جو محنت ایسی شفاء ہے جو بیماری کو خیر ہوئے حضرت کا مہول تھا کہ جس کوئی آدمی بیمار ہو یا کو مریض ہو
ہاتھ سے سلامت سے بھر دے دعاؤں سے مستفاد کہ اس اَلْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْقَذَنَا مِنَ النَّارِ قَالَ عِنْدَ
إِسْلَامِ غُلَامٍ قِيْلَ دِي عِنْدَ مَوْتِهِ وَكَانَ يَخْدُمُهُ بخاری میں اس روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ شکر ادا کرنے
اکو اور دفع سے بچا یا حضرت یہودی بڑے کے وقت کہ مسلمان سپہ فرمایا اور وہ کہ حضرت کی خدمت کیا کرتا تھا وہ ایک
یہودی بڑا کہ حضرت کا خادم تھا جب وہ بیمار ہوا تو حضرت اس کے دیکھنے کو گئے اور اس کے سر پر ہاتھ رکھے اور فرمایا کہ مسلمان ہو جاؤ
اپنے باپ کی طرف بھیجی اس کے باپ نے کہا کہ ابوالقاسم کا گمان ہے کہ مسلمان ہو گیا ہے حضرت نے اس طرح شکر کیا اس سے یہ معلوم ہوا کہ
کافر سے خدمت لینا درست ہے اور کافر کی عبادت جائز ہے اور مرض الموت میں مسلمان ہونا قبول ہے شریک آخرت کا عذاب سزا نہ لگایا ہو
سُحِرَ أَبُو أُمَامَةَ اَلْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرٌ كَلْبًا مُبَارَكًا كَافٍ فِي غَيْرِ مَكْفِيٍّ وَلَا مَوْكِبٌ وَلَا مُسْتَفْتَى عَنْهُ رَبَّنَا
كَانَ يَقُولُ إِذَا رَفَعَ مَائِدَتَهُ بخاری میں ابوامامہؓ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اگر کوئی شکر ہو بہر ستمہا ہر شکر
نہاں اس کو جو کچھ لکھا ہے کہ اسے اور بھروسہ دیا جائے اور اس کی کچھ حاجت نہ رہے یہاں تک کہ وہ یہودی جس کے لائق ہو حضرت دعا کرتے تھے کہ اے
دستور خان اوٹھا یا جاننا تمہاری کھانے کے بعد دعا سنت یہود بن عُمَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ
هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا لَآرَبُّنَا الْمُغْضِيُّونَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا اشْكُوكَ فِي سَقَرٍ نَاهِدَا الدِّعْوَةَ وَالتَّقْوَى وَدِينِ
الْعَمَلِ مَا تَرْضَى اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَقَرَنَا هَذَا وَاطْوِعْنَا عَبْدَكَ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي الشَّقَى وَالْخَائِفِ
فِي الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ دَعَائِ الشَّعْرِ وَكَابَةِ الْمَنْظَرِ وَسَوْءِ الْمُتَغَلِّبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ
وَرَوْءِ عَبْدِ اللَّهِ مِنْ سَرَّحِينَ اَيْضًا وَرَادَا الْحَوْرِيَّ بَكَدِ الْكُورِ وَدَعْوَةَ الْمُظْلُومِ سلم میں عبدالمبینؓ عمرؓ
روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ خدا سے بڑا خدا ہے بڑا خدا ہے بڑا پائانت جیسے اس دعا کو ہمارا ابا دعا کر دیا اور ہم کو
قابو میں کر سکتے اور ہم حال میں بخیر رہی کی طرف رجوع لانے میں اے اے تمہارے سپاس میں نیکو کاری اور پرہیز گاری جیسے مانگتے ہیں
اور یہ کہ چاہتے ہیں جہنم میں رہی راضی ہو جائے اے ہر اس کو آسان کر دے اور اس کی پوری پوری اور رازی کو جسے پیٹ ڈال یعنی جلدی
سے سوز کر دے اے اے تو مفرق میں سامعی ہر اور ہر بار کا خیر ہو یعنی گنہگار اے اے میں تیری سپاہ مانگتا ہوں مفرق سختی اور بد شکر سے

۲۱۸۰

۲۱۸۱

۲۱۸۲

۲۱۸۳

۲۱۸۴

۲۱۸۵

۲۱۸۶

۲۱۸۷

۲۱۸۸

اور مال اور گھر بار کی بری اولاد بٹ سے اور عبدالمعین بن جریج بھی ایسی ہی روایت کی اور انہی زیادہ روایت کی جو کہ الہی تیری زیادہ
 ٹوٹے سے جو فارس کے بعد ابو طلحہ کی مدد سے یہ دعا حضرت سقر کے وقت فرمائی کہ **اِنَّ مَعْ وَ اِذَا جَعَلَ قَالَهُنَّ**
وَرَاكَ دَفِئَتْ اَشْبُوْنَ تَاكْشُوْنَ عَابِدُوْنَ سَاجِدُوْنَ لِرَبِّكَ اَحْمَدُوْنَ صَدَقَ اللّٰهُ وَعَدَهُ وَ نَصَرَ عَبْدَهُ
وَهَنَمَ الْاَخْرَابَ وَ حَلَّ عِمَارَتِیْ اور سلم بن عبدالمعین بن جریج سے روایت ہے اور جب حضرت سفر سے بیٹے تو اس اگلے
 سفر کی دعا کو پڑھتے اور اوسے دعا میں اتنا اور بڑھاتے کہ ہم سفر سے بچے تو بے بندگی سجدہ کرنے کے ہم اپنے رب کے شکر گزار ہیں خدا
 اپنا وعدہ سچا کیا اور اپنے بندے کی ہر حاجت کی مدد کی اور کفار کے گروہوں کو شکست دی یعنی جھگڑا تہنا اور سچی فہم شانہ
 جنگ خندق کے قصے کی طرف عرب کفار نے مدینہ گھیر لیا تھا پھر بے طلب حال گئے تھے کہ **اِنَّ اللّٰهَ اَتٰنَا مِنَ الدُّنْيَا**
حَسَنَةً وَ فِی الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقَدْ اَعْزَابَ لَنَا اِنْ كُنَّا هَذَا اَلَا كُنَّا ذٰلِكَ عَالِمًا بخاری اور مسلم میں اس سے روایت ہے کہ
 حضرت فرمایا کہ الہی ہم کو دنیا میں بہتری اور بھلائی دے اور آخرت میں بہتری اور بھلائی اور جب یہ کہو دروغ کے غدا ہے اس کا حضرت سقر
 کیا کرتے تھے دنیا کی بہتری صحت اور بقدر حاجت دوزی اور ایمان اور نیک عمل کی توفیق اور سب کمزوریاں سے بڑھاتا اور آخرت کی بہتری
 تو بے ترتیبی درجات اور دیر الہی علی رضی سے روایت ہے کہ دنیا کی بہتری بیعت عورت اور آخرت کی بہتری حور و دروغ کے غدا ہے
 کہ بیعت عورت یا اس عابدین بن ہر دنیا کے سب بھلائی ہیں اس واسطے حضرت اس ملک اور انوارات پر تھاکر تھے **اَوْ اَمْ لَمْ يَزِدْ**
اَللّٰهُمَّ اَنْتَ تَقْوَاهَا وَ كَرِهْتَ اَنْتَ خَيْرٌ مِنْ رِجَالِهَا وَ اَنْتَ وَلِيُّهَا وَ مَوْلَاهَا اس میں ابو ہریرہ سے روایت ہے
 کہ حضرت فرمایا کہ الہی میری جان کو اوس کی پرہیزگاری اور اوس کو گناہ اور بد خو سے پاک صاف کر ڈال تو ہی اوس کا تہنہ پاک کرنے والا اور
 اور تو ہی اوس کا کامیاب ساز اور ہر گاہ **اَوْ** جو چیز آخرت میں ضرر کرے اوس سے بچنے کا نام تو ہی اور پرہیزگاری ہی باطن کی صفائی ہے تو ہی
 ممکن میں اس واسطے حضرت نے اول تو ہی کی دعا پھر صفائی کی **خَرِّدْ نَبِيَّكَ اَزْهَقْ اَللّٰهُمَّ اَجْعَلْ اَتْبَاعَهُمْ مِّنْهُمْ كَيْفَ اَرَادَ**
 بخاری میں زین ابو شیبہ سے روایت ہے کہ حضرت نے انصار کے حق میں نکالی کہ الہی ان کے تابعداروں کو انھیں میں کرنے و انصاف
 نے کہ کیا حضرت دعا کیجے کہ ہمارے تابعدار لوگ بھی ہمارے مسلمان ہو جائیں تب حضرت نے یہ دعا کی تابعدار سے مراد جو روایت کے اور ابو ہریرہ
 غلام ہمارے آشنا دوست **اِنَّ اللّٰهَ اَجْعَلْ بِالْعَدِيَّةِ ضَعْفِي مَا جَعَلْتَ مِمَّا كُنَّا مِنَ الْبَنِي كُنَّا** بخاری اور مسلم میں
 اس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی میں پرکرت کر اوس کی دینی جو تو نے میں پرکرت کی ہے **اَوْ** حضرت براہیم سے
 ملے کے واسطے دعا کی اور حضرت نے میں کے واسطے برکت سے مراد کشائش نزق یا باطنی فیض ہر **اَوْ اَمْ لَمْ يَزِدْ اَللّٰهُمَّ اَجْعَلْ**
رِزْقَ اَلِي مُحَمَّدٍ مِّنْ مَّا كُنَّا بخاری اور سلم میں ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی محمد کے اہلبیت کی مدد کی اور بقدر
اَوْ یعنی انہی روزی جو حسین جیات کی رقی باقی سے مال کی بنیاد نہ ہو اس واسطے کہ کشائش نزق میں کفر غفلت ہو تو ہی اور سب کو تہنہ
 جمل میں تو تہنہ جو حضرت کی جیات میں ایسا ہی حال ناو حضرت کے بعد حضرت کی بیعتوں کی اولاد بھی اختیار ہی فقر کو لیے رہنا تو
 میں حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ حضرت کے انتقال کے بعد حضرت کے اہلبیت کا جو کی روٹی سے دور و زبیر پر بیت نہیں پھر انوار و سب کی کتاب
 میں عبدالمعین بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت اور حضرت کی بیعتوں دو تہنہ میں ان سورت تھے رات کا کھانا میسر نہ ہوتا تھا اور
 اوس کتاب میں حضرت عایشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے زمین پر کھانے میں دونوں وقت روٹی نہ کھائی اور نہ کبھی دونوں وقت کھانے کا

۲۱۸۶
 علی بن ابی
 ہریرہ

۲۱۸۵

۲۱۸۶

۲۱۸۷

۲۱۸۸

۲۱۸۹

دعا کی
 حضرت
 علی بن ابی
 ہریرہ سے
 روایت ہے

۲۲۰۳

۲۲۰۴

۲۲۰۵

و دعا کی تھی کہ
میں حضورؐ کے
موت پر غم نہ کرے

۲۲۰۶

ف ابو موسیٰ شہرے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا ابو عامر کے ساتھ جنگ و طاس میں بھیجا تو ابو عامر کے زوال میں نہ رہا اسی زخم
 و میرے سینے میں چال حضرت سے بیان کیا اور میں نے کہا کہ یا حضرت ابو عامر نے مجھے کہا تھا کہ حضرت میری مغرت کی دعا کر میں حضرت
 نے یہ دعا کی پھر ابو موسیٰ نے واسطے دعا کر والی ابو موسیٰ ہی کا نام عبدالمقبرین ہے **ق** زید بن ارقم **ا** اللہم اغفر
ل الانصار ولا تبناؤا الانصار ولا تبناؤا الانصار بخاری اور مسلم میں یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ
 الہی مغفرت انصار کی اور انصار کے بیٹوں کی اور انصار کے بیٹوں کی **ق** ابی ہریرہ **ا** اللہم اغفر للمخلفین قالوا رسول اللہ
و للمقصرین قال اللہم اغفر للمخلفین قال رسول اللہ و للمقصرین قال اللہم اغفر للمخلفین قالوا
 یا رسول اللہ و للمقصرین قال و للمقصرین بخاری اور مسلم میں یہ روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی مغفرت کر میرے لئے ازل
 کی صحت میں کیا رسول اور مال کے لئے والوں کے واسطے بھی حضرت نے فرمایا الہی مغفرت کر میرے لئے والوں کی صحت میں کیا رسول
 اور میرے لئے والوں کے لئے بھی حضرت نے فرمایا الہی مغفرت کر میرے لئے والوں کی صحت میں کیا رسول
 نے فرمایا الہی تیرے لئے والوں کی بھی مغفرت **ف** عجمۃ الدواہی میں ہے کہ ساتھ قربانی تھی اور اکثر اسی کے ساتھ قربانی تھی جب حضرت
 کے میں پونچھ تو اسی سے فرمایا کہ جس کے ساتھ قربانی ہو وہ اپنا احرام کھول لے اور اپنا سر منڈا کر جب حج کا وقت آئے تو پھر احرام باندھ
 حج کرے اور حضرت نے خود اپنا سر بدون قربانی کیے ہوئے منڈایا تو جس کے ساتھ قربانی تھی اونہیں بعضوں نے بوجہ جنگ کے اپنے سر منڈا دیا
 اور بعضوں نے اپنے سر نہ توڑا تو جو بال تیرے سر منڈا دیے سمجھے کہ بدون حج کیے ہو گئے سر منڈا دینے حضرت کو یہ بات پسند نہ آئی کہ
 حکم تھا کہ چون تامل کیا اس واسطے میں ہر بار منڈا لے والوں کی واسطے دعا کی اور تیرے لئے والوں کے واسطے دعا کی اور تیرے لئے والوں کے واسطے دعا کی
 جو سر منڈا تیرے لئے والوں کی بھی مغفرت کی عمارتیں مل کر کیا معلوم ہوا کہ حج میں سر منڈا بال تیرے لئے افضل ہے **و** عوف بن مالک **ا** لا تجع
ا اللہم اغفر لہ و ارحمہ و عافہ و عاف عنہ و اکریم نالہ و وضع منخلہ و اغسلہ بالماء و الثلج و اللبنة
و قہ من الخطایا تکبیر اللہ ابیض من الدنس و ابدلہ دار احب الین دارہ و اهلک خیارا
ق ابن اخیارہ و زجاج خیارین زوجہ و ارحمہ الخیرة و اعدہ من عذاب القبر اقر من عذاب النار
ک الہی صلی علی محمد و آلہ و سلم میں عوف بن مالک سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی او سکون بخش اور او پر رحم کر
 اور او کو عافیت اور آرام دے اور او کو گناہ و معاصی سے روک اور او کی عزت سہا کر اور او کے مقصد کے تمام کو شہادت دے کہ نبیؐ قبر کو اور او کو
 جہنم سے اور برکت اور شہادت دے کہ نبیؐ او کو پاک کر طرح طرح کے کرم سے اور او کو صاف کر ڈال گناہوں سے جیسے تو سفید کپڑے کو میل سے
 چھانسی ہو اور بل دے او کو مگر اسے گھر سے بہتر اور علاقہ دار لوگ اسے علاقہ دار لوگ سے بہتر اور جو رہا بل دے او کی جود سے بہتر اور
 ذال جو ہو کو بہشت میں اور جہنم کو او کو قبر کے عذاب سے یا یوں فرمایا کہ و فرخ کے عذاب سے حضرت نے دعا کی جب جنازے کی نماز پڑھی
ف اس میں یہ دعا کی کہ یا رب حضرت نے اس میں سے واسطے اس تفصیل سے دعا کی تو مجھ کو تمنا ہوئی کہ کاش میں اس
 اس میں سے ہوتا **ق** ابی موسیٰ **ا** اللہم اغفر لی خطیئتی و خطیئتی و خطیئتی و استرانی فی امری و ما اکت اعلم و یستغفر
ا اللہم اغفر لی کما فی و حدیثی و خطیئتی و عذبتی و کل ذلک عندی بخاری اور مسلم میں ابو موسیٰ سے روایت ہے کہ
 کہ حضرت نے فرمایا الہی بخش دے میری چھلک میری نادانی کو اور میری زیادتی کو جو مجھے اپنے حال میں ہی ہوا و بخش دے او میں جہنم کو

وَجَعَلْتُ وَجْهِي وَإِذَا نَكَمَ قَالَ اللَّهُ لَكَ رَكْعَتٌ وَبِكَ آمَنْتُ وَبِكَ اسْلَمْتُ خَشَعْتَ لَكَ تَعْبِي وَبَصَرِي رُحْمِي وَعَظْمِي وَعَصْبِي فَأَذَرَعُ رَأْسَهُ قَالَ رَبِّمَا لَكَ انْصَعَدُ مِنْ السَّمَوَاتِ وَمِنْ الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمِمَّا شَيْتَ مِنْ نَفْسِي بَعْدَ إِذَا اسْجَدَ قَالَ اللَّهُ لَكَ سَجْدَةٌ وَبِكَ آمَنْتُ وَبِكَ اسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِي لِلْأَرْضِ خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ وَسَوَّى سَمْعَهُ وَبَصَرَ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ثُمَّ كَوْنُ مِنْ آخِرِ مَا يَقُولُ بَيْنَ الشَّهَادَةِ وَالسَّلَامَةِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدْ آمَنْتُ وَمَا أَحْسَنْتُ وَمَا اسْلَمْتُ وَمَا أَفْلَحْتُ وَمَا اسْرَفْتُ وَمَا أَكْتَرْتُ أَخْلَعُ بِهِ وَجْهِي أَنْتَ الْمَقْدُومُ وَأَنْتَ الْمُؤَخَّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سَلِمَ مِنْ تَعْبِي

سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے نبی! تو اے شاہ جو کوئی بندگی کے لائق نہیں جو تیرے نویر لرب میں برابر نہ ہوں میں نے نادانی اپنی جان پر اور بیگانہ کا اقرار کیا سو سیر گیا ہوں کہ بخش ہے نہ بدیشتا گیا ہوں کو سوا تیرے اور ہدایت کو محکو بہتوں میں نہیں کیا بہت خوف کو سوا تیرے اور مٹا ہے مجھے بُری خوون کو نہیں مٹا بُری خوون کو سوا تیرے بار بار تیری خدمت میں حاضر ہوں اور نیکی بھل تیرے ماحون میں اور میری تیری طرف نہیں میں تجھے قائم ہوں اور تیری طرف پھرنے والا ہوں تیری برکت الہی اور سب سے اچھے سفر گیا ہوں اور تیرے حضور میں نہ کر تا ہوں اس کا کہ حضرت بعد و جنت و جہنم کے بڑھتے تھے یعنی اللہ العزیز الیک تمنا کو جب حضرت کوئی کرنے تھے تو اس کا کو بڑھتے تھے اللہ سے تعبیبی تاکہ نبی الہی تیری اسلے سینے کو کیا نبی جھکا اور تیرا میں احوال با اور تیرا میں بعد ہو گیا جھک کر میرے لیے میرے کان اور اکھ اور میرا گرد اور میری ہڈی اور میرا تجا چہ حضرت کو جس سے سرواٹھتے تھے تو اس دعا کو بتاتا ہے نہ شیطان بعد تک بڑھتے تھے یعنی ای ہمارے سیر کی اسلے حرا و شکر ہی آسمان کو برابر اور زمین پر اور آسمان پر کہ اندر ہو سکے برابر اور سکے جو چیز تیری خواہش میں ہو سکے برابر چہ حضرت سجدہ کرتے تھے تو اس کا اللہ سے جس کے الخالقیں کہہ دیتے تھے یعنی الہی میں نے تیرا سجدہ کیا اور تیرا میں تابعدا ہو گیا سجدہ کیا سیر چہ سے لے و سکے جسے او سکے پیدا اور او کی صورت بنائی اور او سکے کان اور او کچھری خدا پر برکت الہی سب بنا والو ان سے بہتر چہ نماز میں اخیر دعا یہ ہوتی تھی کہ حضرت التعمیات اور اللہ پھیرنے کے درمیان اللہ سے اللہ انک فرماتے تھے یعنی الہی بخش دے میرے لیے جو میں نے لگے کیا اور جو تجھے والا اور جو میں نے چھپا یا اور جو کھولا اور جو میں نے زیادتی کی اور او سکے بخش جسکو تو مجھے زیادہ تر دانا ہو تو لگے کرنا ہو جسکو چاہے اور تجھے ڈالتا ہو جسکو چاہتا ہو میرے سولے کوئی بندگی کے لائق نہیں

ف یہ جو فرمایا کہ میری تیری طرف نہیں یعنی یہ کام سے تیری نزدیکی حاصل نہیں ہوتی یا یہ طلب ہے چہ چیز نیکی اور میری کا خلق خدا پر ہو کہ بندگی کا ادب یہ کہ بدی کو او کی طرف نسبت کیا جائے جیسے عا میں با حاقی شہر الخالق و انفریز نہیں لے اور حال ان کے خالق ذہری جو خفی مذہب میں یہ دعا میں نفل نماز میں کہ سے زفرض میں ہر اثنی عشر اللہ انک خلقت تعبیبی و انت تو قالہا لک مما ہما وحمایا ہا لک انہما فاحققھا و ان انہما فاعفھا اللہ اللہ اسلک العافیۃ آمین یہ رجلا ان یغفر لہ اذا اخذ مجتبعہ مسلم من عبد اسد بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے نبی! تو میری جان کو پیدا اور نبی او سکے بار یکا تیرے ہی اسلے او کی زندگی اور موت ہو اگر تو نے او سکے زندہ رکھا تو او سکے نبی ان میں رکھا اور اگر او سکے مرنے او سکے بخش بھیجہ تو میں تجھے عافیت موت لگتا ہوں جو دعا حضرت نے ایک دفعہ کو بتائی کہ جب لیا کہ سے تو او سکے بھارے **ق** ابو ہریرۃ اللہ انک لولید بن لولید و سید بن ہشام و عیاش بن ابی ریعۃ

کہ الہی میں تیری پناہ مانگتا ہوں تجھ سے اور پناہ مانگتا ہوں بزدلی اور نامردی سے اور پناہ مانگتا ہوں بُری اور گھٹی ریس سے اور
 پناہ مانگتا ہوں جہال کے فتنے فساد سے اور پناہ مانگتا ہوں تیرے عذاب سے کئی عربی پیری سے اس واسطے پناہ مانگی کہ اور سنت
 آدمی کے ہاتھ پاؤں کے میں ہوتے نہیں نھنل ٹھکانے نہ تھی تو گویا آدمی دیوار میں جاتا ہوتا کہ **اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ**
مِنَ الْجُبْنِ وَالتَّخَالُثِ وَالتَّحَايُثِ **اِذَا دَخَلَ الْخَلَاءُ** ہماری اور مسلمان انسان سے روایت ہے کہ حضرت
 نے فرمایا کہ الہی میں تیری پناہ مانگتا ہوں جو بھوت اور مجھوتیوں کے شر سے یہ دعا حضرت باخانہ میں داخل ہو کر فرمائی کہ **ف**
 باخانہ نے میں خدا کا نام نہ کر نہیں ہوتا اس واسطے شیطان مان رہتے ہیں اس سبب حضرت نے یہ دعا کہ **اَبُو سَعِیْدٍ اَللّٰهُمَّ**
اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَرَمِ وَالْحَرَمِ وَالْعَجْزِ وَالْكُسَلِ وَالْجُلْنِ وَصَلْعِ الْكَلْبَنِ وَغَلْبَةِ الرَّجَالِ
 بخاری اور مسلم میں ابوسعید اور انس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی میں تیری پناہ مانگتا ہوں قسوش اور غم سے اور جان کی مانگی اور
 جان کا کالی سے اور کجی اور زبردستی اور قرض کے بوجھ اور مردوں کے غلبے سے **ف** مردوں کا غلبہ کہ بادشاہ ظالم ہو یا باہون سا بڑے یا کہ
 شہوت پرستی مردوں پر غلبہ **هَلْ نَحْنُ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ ذَوَالِ نَمَیْثٍ وَتَحْوِلَ عَاقِبَتِكَ وَتُجَاوِزَ نَمَیْثِكَ**
 وجميع سنیوں مسلم بن عبد اللہ بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی میں تیری پناہ مانگتا ہوں تیری رحمت کے نزال سے اور تیری
 دی عافیت اور آرام کے غلبے سے اور ناگمانی تیرے عذاب اور سبب غلبہ کا کہ **اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ**
مِنَ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ وَالتَّجَالِ وَاعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْعَمِيَا وَالْمَسَاكِ اَللّٰهُمَّ
اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمَأْخِذِ وَالْمَقْعَمِ مسلم بن حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی میں تیری پناہ مانگتا ہوں تیرے
 عذاب اور پناہ مانگتا ہوں سبب جہال کے فتنے فساد سے اور تیری پناہ مانگتا ہوں تنگی اور بوسے فتنے سے الہی میں تیری پناہ مانگتا ہوں نہ
 اوڑا بھڑے **ف** زندگی کا فتنہ بیماری اور مال اور اولاد کا نقصان یا کثرت مال کی جو حد سے غافل کرے یا کفر و کفر کی اور موت کا فتنہ
 اس وقت کی شدت اور دشت یا سادہ یا غامض ہو یا **اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ مَتْنٍ مَا عَمَلْتُ وَفِيْمَنْ شَرِّ لَمْ اَمْكُلْ**
 صحیح مسلم بن حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا یا اللہ میں نے کیا بیان کر سکا ہے کسی اور کسی جو میں نے کیا اور یہی سے تو کسی جو میں نے نہیں کیا
هَرَسَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ وَكَلْبٍ لَا يَنْفَعُ وَوَدْعٍ لَا يَنْفَعُ وَنَفْسٍ لَا تَنْفَعُ مسلم بن انس سے
 روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی میں تیری پناہ مانگتا ہوں اوس علم سے جو فائدہ نہ کرے اور اوس ل سے جو ضرر میں نہ لگے اور اوس سے جو نفع میں نہ لگے
 قبول اور اوس سے جس کا کوئی نفع نہ ہو یا قبول قیامت کرے **ف** علم نہیں یعنی علم ہیلا اور کسی شے میں اجازت نہیں ہے اور جو مال اور
 جو چیز اور جو شخص یا کوئی شے یا کوئی ملک یا علم یا علم یا نفع وہ جو دنیا میں یا آخرت میں یا دونوں میں فائدہ نہ کرے صرف دنیا کا فائدہ علم
 اور علم حساب میں اور صرف فائدہ علم معرفت اور علم سکول اور علم اخلاق میں اور دنیا اور آخرت دونوں کا فائدہ نہ کرے علم ہیلا جو علم کہ نفع کرے
 غیر میں سے حاجت زیادہ علم حساب علم غفلت میں نہ لگے یا وہ پکارا **اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَعَذَابِ النَّارِ**
وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الْفَقْرِ وَفِتْنَةِ الْمَسِيْحِ وَالتَّجَالِ مسلم بن
 حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ الہی میں تیری پناہ مانگتا ہوں فتنے اور دوزخ عذاب سے اور تیرے عذاب سے اور پناہ مانگتا ہوں
 مال کی فتنے کی بُرائی سے اور محتاجی فتنے کی بُرائی سے اور تیری پناہ مانگتا ہوں سبب جہال کے فتنے کی بُرائی **ف** مالدار کی کا فتنہ غفلت اور غور

۲۲۲۵

۲۲۲۶

۲۲۲۷

۲۲۲۸

۲۲۲۹

۲۲۳۰

فاطمہ ہرگز جب یہ سنا تو گھبرا کر حضرت کی پیٹھ سے اوسکو اوتار کر حضرت نے اونکو یہ دعا دی اولیٰ کہ تیری دعا کے لئے ہرگز ہرگز
موجود نہ ہو نہ فصل نہ لیا چنانچہ وہ لوگ جنگ بدر میں گئے اور کوہین میں ڈالے گئے لیکن امیر بنی نضیر حضرت کے ہاتھ سے زخمی ہو کر کئے میں
جا کر گویا اور جو مصنف نے کہا کہ اساتذہ خاص عمار بن عبدلہ یہ بات خوب نہیں مبنی اسواسلے کہ کئے میں عمارہ کی موت حبش کے
ملک میں تھی واللہ اعلم ابن عباس کہ اللہم فقیہ فی الدین زاد ابو مسعود وعلیہ السلام وعلیہ السلام
لہ کما وضع لہ وصوفی کا ہماری اوسلم بن عبدلہ بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے امی اوسکو بدر میں ہم لوہو بچھ کر
ابوسعود حضرت نے انہی روایت اور زیادہ کہ اور اوسکو قرآن اور حدیث کا یہ بیکہ سکھائے یہ دعا حضرت نے عبداللہ بن عباس کے واسطے
جبکہ اونھوں نے حضرت کے واسطے وضو کرنے کا بانی رکھ دیا اسی دعا کی برکت سے عبداللہ بن عباس نے جو کچھ پانچ سو قرآن کی تفسیر کی
انہی میں سے روایت ہے ابوسعود اور حضرت کا نام ہے جسے سند کہ کتاب جامع ق اس کے اللہم کل عیش ولا عیش ولا عیش
فانعم بالانصار والمہاجر بنی امی اوسلم میں نہیں ہے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے امی جو زندگی میں نہ گئی ہو
بغیر انصار و مہاجر بن کوف جنگ خندق میں مہاجرین اور انصارینے کے گرد خندق کھودنے تھے دیکھتے تھے فحق الذین
اباؤا محمد علیہ السلام ما یقینا آبد آینی جہنم سے جہنم کی جہاد پر پیشہ جب تک ہم زندہ رہیں گے جسے حضرت نے اونکو جہان
یہ دعا فرمائی یعنی یا کی زندگی کچھ حقیقت نہیں مگر یہ آخرت کی تو انہی انکی مغفرت کر تو وہ ان کی زندگی کا لطف دیکھا وہیں ہر عبد اللہ بن عباس
اللہم صرنا القلوب صرنا قلوبنا علی طاعتک وسلم بن عبدلہ بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے امی
ایو لو کہ میرے لئے ہر جس کے لئے دلوں کو اپنی طاعت پر عبد اللہ بن عباس نے آؤ فی اللہم منزل النکاح بتریع النکاح
اھرم الاخراب اللہم اھرمھم وذلک لھم وذلک علیہ علی الاخراب ہماری اوسلم بن عبدلہ بن عباس سے روایت ہے
روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے امی لو کہ تارے والے کتاب کے اوپر حساب کرنے والے بھگوانے کفار کے گرد وہوں کو اے امی انکو شکست دے
اور اونکو ہار دے یہ دعا حضرت نے انا کے گرد وہوں کی وف جنگ خندق اور جنگ خیبر میں کفار کے گرد نگھیر لیا تھا حضرت کی دعا
نہایت سزا دہ اور بلی کن گھبرا گئے ہر ایک کے اللہم من فی من امر اھمینی شیئا فشق علیک ودا شفق علیک
ومن فی من امر اھمینی شیئا فاق بھم فان فی ہم مسلم حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے امی جو کچھ میری
است پر کسی کام کا یہ پھر بخشنے والے تو اوپر تو سختی ڈال اور جو کچھ میری است پر کسی کام سے پھر اونے نرمی کرے تو انہی تو بھی اوپر نرمی
ف مسلما تو جسے مال و لازم کے لئے کڑے تنگ کرے حضرت کی اس دعا سے جسے ملا اسانی اور نرمی کرے تو خدا اوس پر نرمی کرے
ھجاء اللہم ولیدیدھا فاعفی عنی جلاء من دوس ھاجر مع الطغلی بن عمرو والذین علی الھدیۃ
فانجو اھا فاحذر مشاکص فاعطی ھما کھات مسلم بن عباس سے روایت ہے کہ حضرت نے فرمایا کہ اے امی اور اس کے دونوں
ہاتھوں کو جو بچھلے یعنی اس میں کوئی مغفرت جو دوس کی قوم سے تھا طفیل بن عمرو والدوس کے ساتھ بیٹے میں ہجرت کر آیا تھا سو
وہ ان کی ہوا اوسکو ناجوانی پڑی تو اسے چھوڑی کاسیو بن ابی اوکلیو کے درمیان والے ہرگز کاٹے اوسود مگر کیا ف صاحب بن
جابر سے روایت ہے کہ جب حضرت نے بیٹے کی طرف ہجرت کی تو طفیل کے ساتھ اپنے لئے بھی ہجرت کی شینہ میں نہایت بڑا گویا اسی طرح
ابنی اوکلیو کے جو کھاتے انھوں نے ہوا اوسی صاحب سے وہ مگر یا تو طفیل نے اوکو خواب میں بھیجا کہ سارا بدن اوسکا اچھا ہے مگر یا تو اسکی

۲۲۵۳

بفتح اے
آؤ صومرا

۲۲۵۴

۲۲۵۵

۲۲۵۶

۲۲۵۷

۲۲۵۸

التي تترى بنامها اوجسوا ويرى كبرياى من التي تترى بنامها ملكا بون منغ كى مذاب او قمر كى مذاب حضرت
 فرات تھے شام کے وقت اور صبح ہوتی تھی تو جی اوی طرح فرماتے تھے مگر اسیدنا واسی الملک کے مقام پر کہنا و انصوح الملک اللہ
 فرات تھے منی جسے صبح کی اورند کے ملک نے صبح کی عایشۃ بنیم اللہ اللہ تعالیٰ نے من محمد و آل محمد و من امة محمد
 قالہ عند الذبح مسلم بن حضرت عایشہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ خدا کے نام سے نوح کرنا ہوں الہی اسکو بعد اوردی کہ حضرت
 اور محمد کی آل کی عزت اور محمد کی است کی طرف سے یہ دعا حضرت قربانی ذبح کرنے کے وقت فرماتے حضرت عایشہ سے روایت ہو
 کہ حضرت ایک سترھا سینک لاکھ ہونہ اور تھہ بانوں سیاہ تھے منگو یا پھر فرمایا کہ عایشہ بخیر لاوا اور سکر تیر کہ حضرت نے بخیر
 لیکو اور کون بخیر اور یہ ایاق عایشۃ بنیم اللہ ثوبۃ انصنا بریقا بعضنا تشفی سقیمنا یا ذین ربنا کان
 اذا اشکل انسان النفی منہ او کان تہ وہ فوحۃ اوجرح قال یستأبہ بالارضین تقر دفعہا بخاری اور سلم
 بن حضرت عایشہ سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا بسم اللہ یہی ہو ہماری زمین کی لیں ہو ہاں بھسے کے لعاب ہن سے چھکا کرتی ہو ہاں
 بجا کہ ہمارے رب کے حکم سے حضرت کا معمول تھا کہ جب کوئی حضرت سے بیماری کی شکایت کرتا یا اس کے ریم کا زخم ہوتا یا کین لگا ہوتا تو
 حضرت زمین پر ملے کی لکھی لگاتے پھر اوجھلایا اور یہ فرماتے لعاب ہن اور خاک سے شفا ہوا من حضرت کی عاک پرکت تھا
 اسی اسطے مینے کی مٹی کو خاک شفا تھ من ق ان عکاس لالہ لالہ لالہ العلی العظیم الخلیفۃ لالہ لالہ لالہ رب
 العرش العظیم لالہ لالہ لالہ رب السموات والارض رب العرش الکرم کان یقول عند الکرم
 ہندی اور سلم بن عبد اللہ بن عباس سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ زمین کوئی ہندگی کے لائق سو اچھ کے جو اونچا بڑائی والا صاحب علم ہو زمین
 عباد کے لائق سو اچھ کے جو بے عرش کا ملک ہو زمین کوئی پیش کے لائق سو اچھ کے جو آسمانوں اور زمین کا رب ہو عزت و
 عرش کا رب حضرت سب سے بڑا اور کمال غنی میں فرماتے تحق المفیدۃ بن شعبة لالہ لالہ لالہ وحدۃ لا شریک لہ
 لہ الملک ولہ الحمد وهو علی کل شیء قدير اللہ لا مانع لما أعطیت ولا معطى لما مننت ولا یقع
 الخیال منک انجد کان یقولہ فی ذکر کل صلوة بخاری اور سلم بن عمر بن شعبة سے روایت ہو کہ حضرت نے
 فرمایا کہ زمین کی معبود درج سو اچھ کے وہ اکیلا ہو کوئی اسکا شریک نہیں اوی کا ملک ہو اوی کو جو ہی اور وہ ہر چیز پر قادر ہو الہی کوئی
 روکنے والا نہیں تیر ہی چیز کو اور کوئی فیض والا نہیں تیر ہی چیز کو اور تیرے در و در نصیب والے کو اسکا نصیب کو جمع نہیں کرنا شکر کو
 ہر نماز کے بعد فرماتے تھے حق جان لالہ لالہ لالہ وحدۃ لا شریک لہ الملک ولہ الحمد وهو علی کل شیء
 قدير لالہ لالہ لالہ وحدۃ لا شریک لہ وحدۃ لا شریک لہ وحدهم الاحزاب وحدۃ قال علی الصفا
 بخاری اور سلم بن جابر سے روایت ہو کہ حضرت نے فرمایا کہ کوئی ہندگی کے سزاوار نہیں خدا کے سولے وہ اکیلا ہو کوئی اسکا شریک نہیں
 اوی کا ملک ہو اوی کو جو ہی اور وہ ہر چیز پر قادر ہو زمین کوئی ہندگی کے لائق خدا کے سولے وہ اکیلا ہو کوئی اسکا شریک نہیں
 کو اور مدد کی لینے سجد کی میں حضرت کی تونر تھا اونچی احراب کو یعنی کفار کے گرد ہوں کو شکست دی حضرت نے صفا پر فرمایا جب کہ تیر ہو
 تیر حضرت نے صفا پر اپنی نعت اور مدد کا لشکر اور اکیا عبد اللہ بن ابی بنی القوام لالہ لالہ لالہ وحدۃ لا شریک لہ
 لا شریک لہ الملک ولہ الحمد وهو علی کل شیء قدير لا حول ولا قوۃ الا باللہ لالہ لالہ

۲۲۶۲

۲۲۶۳

۲۲۶۴

۲۲۶۵

۲۲۶۶

۲۲۶۷

خاتمة الطبع خدای کو حمد و ثناء ہو اور نہ کے لائق احمد مختار ہو اسے ہماری ہدایت کے لیے قرآن نازل فرمایا ہے جو اس کے مضامین کے احادیث میں معارف بنایا ہے سبھی کو بائین کہ ہماری سب سے باہر تھیں ہرگز ان کے کمال العلماء و اصحاب خدایاں کو روایت کی جہان کو یونین کو قرآن پر عمل واجب اور اجابنا احادیث صحیحہ کا لازم ٹھہرانا اپنے دین کے خیر و اربوں کے شرک کے بعد سب سے سہل و ضروریات ہے یوں تو اب لو کہ کوئی حدیث کے کتابت حدیث اور جو عربی نجاست ہو تو قرآن و وجہ طاعت العکبر بنی ہمعربین میں چاہیے کہ کوئی کتاب تصدیق ہو اور احادیث اس کے صحیح اور سید ہو دین کا بیان ہو اور تمامی ارکان اسلام کی تفسیر اور اس کے ساتھ معارف عربی و اسلامی آپرہند و الاجتہاد صحیحہ کو اسے شائق اور سکا ہو ایسی کتاب سے متحقق الانبیاء ترجیح بمشارق الانوار کے کوئی نسخہ اسی سبب بننا چاہی محمد حسین مخدوم اور ابو مظفر محمد مصطفیٰ خان بریلوی نے کتاب چھاپی یعنی کہ دونوں نسخوں سے مسملوں کو بڑا فیض ہوا اور لوگوں کا بہت مطلب نکلا اور اب علما این دونوں کو بڑا تحفہ اور ان کے درجات عالی کر کے اب ان میں سے کوئی نسخہ نہیں اور مسلمانوں کو اس کا شوق بہت تھا یعنی جناب سید امداد العلی صاحب بریلوی سلمہ اللہ ابوالفتحی نے کراچی کے ایک اور طبیعت ہو اور بدگامی سلطان کی اوکھٹیت ہو اس سید وار حستانہ و زمان محمد عبد الرحمن بن حاجی محمد روضہ خاں علیہ السلام امر خیر کے پیش کی ترغیب دینی یعنی اس کے چھاپنے کی فرمائش کی ہو پہلے میں نسخہ پر یہ بھی قلمی سے اس کے مقابلہ ہوا اور میں نے اس کو سکا بعد طالب کرنے کے مانڈ سے حاشیہ پر لکھ دیا نسخہ لکھا اور دوحہ تیسرے میں ان نسخوں میں میں نے یاد دہائیں و انداز کتاب کے پڑھائیں اور اوپر سے علامت نسخے کے ہندسہ جو احادیث پر مرتب مرسوم ہو اسے نشان کے نہیں لکھا بلکہ رقم سیاہی اور نشان ان کی انجاء کتابیں طرح مرتب و طبع ہوئی اور او میں کوئی حالت نظر نہ باقی نہیں رہی فقیر نے حسب فرمائش عظمیٰ میں مرجع کے اور سکا چھاپا شروع کیا اب کہ مینا رضائے الہیہ کے سلسلہ ہجری ہو چھپنا اور اس کا مطبع نظامی واقع کانپور میں تمام کو پونہ پانچ ماہ میں میری کدیں اس کتاب کے مطالعہ سے فائدہ اور ٹھہرائیں فقیر اور اس کے چھپنے کے مددگاروں کو بے حساب خارج داریں یا دفتر مین

[illegible]

فهرست بعضی از فوائد و مطالب این کتاب که اهل دین را شوق دریافت آن اکثر باشد

۱۰	تحقیق معروف بدعت و ذکر بعضی از بدعت ها	۲۷	ثواب پرورش دختران	۴۷	تخذیر از لذات دنیا
۱۷	فضیلت سهل طبعی و قرض معاف نمودن	۲۸	ثواب حاجت روائی مسلم	۴۸	خبر ضعف اسلام بشارت مستحل بن
	بعض آن	۲۹	ثواب دعای اذان	۴۹	بیان علامات عشق قبل از قیامت
۱۷	فضیلت جنت اوان بشارت یقین کبر	۲۹	اعادیت فضائل پنج و تحمیل و تملیل	۵۰	فضیلت صدق و زنت کذب
۱۷	بشارت تعمیر مسجد	۳۰	ثواب عبادت شب قدر	۵۱	علی خیر سبب کشایش زرق ست
۱۷	بیان برای سیکه خود را بدست خود بکشد	۳۱	بیان اقسام شهادت	۵۲	بشت ناکر حضرت
۱۸	فضیلت نیت مال اگر چه کمتر بشت	۳۲	تاکیه عمو کرمان حقوق العباد	۵۲	فضیلت صدق الکر بر رضی الله عنه
۱۸	فضیلت حضور مساجد نمازگزاران	۳۳	بجزندای تعالی قسم دیگری روایت	۵۲	عدم مواخذه بر وسوسه و قول و فعل
۱۸	دعای بیاری نسبت فضیلت نماز تجمیع	۳۳	تحقیق متعه و بیان جواب شبهات	۵۳	دلیل فرضیت سلوک برادری
۱۸	فضیلت نماز جمعه با آداب	۳۴	در ذریع تعریف دعا و بیان طریقه مزاج	۵۴	فضیلت صدق الکر بر رضی الله عنه
۱۹	فضیلت ثواب وضو	۳۵	بیان حقوق مهمانی و عسایه تا کی کف لسان	۵۴	معجزه انبیا فتوح اسلام
۱۹	فضیلت حضرت عثمان رضی الله عنه	۳۵	امتناع زرد و سیر و تخته زرد و غیره	۵۵	بیان فرضیت احسان
۱۹	فضیلت حج مبرور	۳۶	امتناع زرد و ممنوعه	۵۵	بیان حجت اهل بیرون و بیانی کافران و معتدیان
۲۰	بیان عذاب قسم دروغ	۳۶	دعای مسافر وقت ورود و منزل	۶۱	نفع اهل عیال داخل صدقات ست
۲۲	بیان ثواب ایوانی عذاب اگر نکند گناه	۳۸	مصیبت مورخ طاعت حجت الهی ست		بشرط نیت ادای فرض
۲۲	بیان عذاب باغیان اراکان جهات	۳۸	فضائل یاری و امداد مسلم	۶۱	فضیلت حاکمان عادل
۲۲	بیان ثواب نسی عن المنکر	۳۸	بیان افیالیکه بخیال شهادت فضیلت یقین	۶۲	در علاج جبهت و قسط یعنی کوک
۲۳	بیان عذاب سوال بی حاجت	۳۹	بیان جنگ احد	۶۵	بیان شکرین و کافران لغت
۲۳	بشارت طلب نمودن دنیا	۴۰	بشارت بشت برین عثمان رضی الله عنه	۶۸	نصائح عام در رجوع الوداع
۲۴	ثواب تریج امریکه شاهره بشت برین و تریج شریع	۴۰	بیان جنگ بدر	۷۰	قرقران انبیا عذاب خدا و جواز اهل در قرقر
۲۵	بشارت کله گویان	۴۱	بشارت مجاهدین	۷۴	معجزه انطباق خبر آینه ده
۲۶	دلیل وجوب قنات فاتحه و عدم فرضیت	۴۵	حرم قصور سزای امتناع شدت او در مکران	۷۵	در تعریف علم و تعامل
۲۶	ثواب درود خوانی	۴۶	در تریج مومنین بشارت با یکدیگر بکلام	۷۶	بیان اهل در و نگو بیان که وضع احادیث
۲۷	ثواب نماز سننهای بیچگانه		کفر بجهت لبسوی دینه باید کرد		ره اندو تا کیه تفتیش ارا دیش
۲۷	بیان عذاب مصورین	۴۶	تحقیق تقوی	۷۷	فضیلت حفظ نور و زمام اهل حق و بیایستی

۷۸	بیان وسعت رحمت الهی	۱۲۷	سجده انبار آینه ظهور آتش مرینی	۱۵۷	مسائل عداوت امیر المسلمین
۷۹	فضیلت کراکلی برکت محبت اهل البیت	۱۲۷	سجده خبر آینه	۱۵۹	تحقیق جهاد و وجهه جعفره امیر ربیع
۸۳	فضیلت صدیق اکبر رضی الله عنه	۱۲۸	خبر فتح قسطنطنیه قبلت و طهر حضرت	۱۶۰	بیان حال مومنین کافرین خروج روح از بدن
۸۴	ذکر خوارج		امام سید ذوالخیر علی السلام قول	۱۶۱	مسائل دعوت و لیدر و غیره
۸۶	قصه حضرت موسی و خضر علیهما السلام	۱۲۹	بیان غریب ترین معجزه علی علیه السلام	۱۶۲	ذکر خواب پریشان
۸۸	بیان قتل خود آنحضرت صلی الله علیه و آله وسلم	۱۳۰	درب خوراک پوشاک و غیره	۱۶۲	امتناع گفتگوی آیات تشابهات
۹۱	و لیل ختم نبوت	۱۳۱	سجده برکت طعام	۱۶۵	فضیلت درود و فضیلت حضرت جمیع علم
۹۲	دعای حضرت در باب نانی مقبول	۱۳۲	ترغیب سخاوت و منع بخل	۱۶۷	سجده خبر توحیح ایران و دم و توحیح حوادث
۹۵	سجده سلام نمودن سنگ	۱۳۳	بیان عدم مرگ پیران در قفسه قدک	۱۷۱	سکاست کعبه نبوت بر نفع آن بانی
۱۰۰	فضیلت اصحاب بدر	۱۳۴	دو چو محبت اخلاص و محاسن محبت بگو	۱۷۲	طالع بیکسری و غرور
۱۰۳	تبدیل ای بسبب تبدل کلم	۱۳۵	سجده زیارتی آب	۱۷۳	معجزه ضریح روم و ایران
۱۰۵	نکاید گاه دشمن مال برای اولاد	۱۳۵	تقدیم محبت آنحضرت بر محبت پدر و پسر	۱۷۴	نار استخاره و دعای آن
	و زیاده از سوم خصیرات نکردن	۱۳۷	دو چو محبت انصار	۱۷۷	استحاب قرآن بخوش الحان خواندن
	و سجده خبر آینه و داوود و حیوان	۱۳۸	عدم جواز قتل مسلم بگرسنه صورت	۱۷۸	فضیلت عشره ذبح
	واقع شدن در محاصره ای جهاد جریحین	۱۳۸	بیان حکم آنحضرت با وجود قدرت انتقام	۱۸۰	بیان یک سال شهادت آنحضرت صلی الله علیه و آله وسلم
۱۰۷	سجده زیاده شدن آب	۱۳۸	عدم جواز سفر زن الا با محرم		و زیاده شدن آب بطبی القدم
۱۰۸	سجده خبر آینه و طالع بن آن	۱۳۸	و لیل حرمت سوگ	۱۸۱	ذکر سنت بودن تراویح در پیش شبیه
۱۰۹	بیان امامت صدیق اکبر علیه السلام آنحضرت	۱۳۹	بیان حقیقت غرور و جواز خوش لباسی	۱۸۱	دعای نریم از جی و ذریت بدخلقی
	صلی الله علیه و آله و سلم	۱۴۲	فضیلت قوی بنی و بر کجی آنجا	۱۸۲	ریشه بدخاری که پیغمبر از نانی سیاه
۱۱۰	بیان فضیلت محمدی از حدیث و تخیل	۱۴۳	در بیان حقیقت تبارک و تعالی اهل سنت	۱۸۳	و بی فضیلت اعجاز قرآن مبین معجزات
۱۱۲	براکت امت سابقه در جانب و اس	۱۴۴	فضیلت فاکرین		انبیای سابقین
۱۱۳	کیفیت تحم و جواب از خفیه	۱۴۵	بیان اسمای خلاف شرع	۱۸۴	در عذاب تارکان زکوة
۱۱۴	حیله دفع ربا با دخال جنس دیگر	۱۴۷	امر گمان نیک داشتن وقت مرگ	۱۸۵	در ذرات کز کز کز و بیان حقاقت بنیان
۱۲۵	قصه فدک عدم مرگ پیران علیهم السلام	۱۵۰	بیان حرمت آلتی بر مسلم نیکو کار		و فصاحت مسلمانان
۱۲۵	بیان انصاف بر تو که در آن قطع بد شود	۱۵۱	مسائل سنگ شکاری	۱۸۶	فصل اول وضو
۱۲۶	جواب خود و شادی فی علم غریب از خود	۱۵۲	آداب طعام خوردن	۱۸۷	بیان تقدیر و حال شنبه سبزه است عمل باقی

۱۸۷	ذکر کرب از وضو	۲۳۳	عرق آنحضرت مثل عطر خوشبو دار بود	۲۵۶	فضیلت صبر
۱۸۸	نماز پنجگانه در کفایت و گنا مان	۲۳۵	بیان از تحریر آنحضرت در انتقام گرفتن	۲۵۷	تقصید بنگار و تداوارت ابراهیم و اخیوت
۱۸۸	بیماری و تکالیف لغاه گنا بمانت		از سحر با وجود قدرت		خلافت صدیق اکبر که جماع حاصل شده
۱۸۸	ثواب درخت نشانیدن	۲۳۷	خوف آنحضرت از برنج و ابر	۲۵۷	بیان مصلحت علی بن ابی طالب که قصد و محبت
۱۹۰	شناعت با علما و بدعت کوش و مجاهد	۲۳۷	تأکید تکرار آن بپوشیدن و روشن شدن		در کلام روزگار دست و سر که کم ممنوع
	نمودن با ایشان		غفلت که بسبب نسیان است	۲۵۸	بیان روز نغم و دهم محرم
۱۹۱	زکوة و جبهه نقصان مال نیست و غفلت	۲۳۷	فضیلت عمر فاروق رضی الله عنه	۲۵۹	خیریت قرون گذشته ظهور به دینی بعد از آن
	سبب نماندن	۲۳۷	بیان کسانیکه حضرت عمر را دشمن و دشمنی		و بیان حقیقت بدعت
۱۹۱	معجزه زبانی شیر	۲۳۷	فضیلت عمر فاروق رضی الله عنه	۲۶۱	فضیلت روز جمعه بحسب خصوصیت
۱۹۷	اقتدای حضرت پیر صدیق اکبر	۲۳۷	فضیلت عین محمد و فاروق و اشاره حکمت		بنوع انسان
۱۹۸	امکان تمهید یا نفاق که ادوا تحلیف		ایشان	۲۶۲	کافی در نماز عشاء و سجده از علامات
	و ریاضت است آخر ملکاتش عادت	۲۳۷	بشارت بهشت فاروق عظمی را		نفاق است
۱۹۹	بیان جوار سر و دشمنی	۲۳۹	قصه معراج	۲۶۲	فضیلت دوام عبادت
۲۰۰	فضیلت صدیق اکبر رضی الله عنه	۲۳۹	در مذمت ریشی که بجهت غرور و بخت کشیدن	۲۶۳	فضیلت اعتدال در عبادت
۲۰۱	تمثیل آفتاب بساعت یعنی گهری	۲۳۹	ممانعت قرار دادن قبر و راهی از اقبال	۲۶۷	گناه پوشیده را بنای عبادت ساخت
۲۰۲	فضیلت ایمان و جهاد		شرک به قبور	۲۶۷	اعانت مردم بر صدقات اهل بیت
۲۰۳	فضیلت اصحاب که غنای آنجه کرده	۲۳۹	اتساع چشمه الدین و سجایای خیر و برجات		اقسام صدقات
۲۰۷	بدون ایمان برادر بی باغبان بکار نمی آید		ایمان و توفیق به ایمانی بر اهل بیت بر فاعلین	۲۷۰	بیان فصل هفتاد و فصل اصحاب
۲۱۱	معجزه خیر و برکت و توفیق و برکت	۲۳۹	در مصیبت طاعت کس نباید کرد	۲۷۲	بیان بعضی از کیفیات معراج
	قطع الطریق در غرب	۲۳۹	قصه سید کذاب	۲۷۲	احتمال بودن بکار وجود و صدق نبوت آنحضرت
۲۱۲	فضیلت حضرت توفیق علی و در شنبه	۲۴۰	فضیلت ایمان فارسیان بیان بار کینه	۲۷۲	حدیث شفاء تحقیق اینکه شفاء حضرت
۲۱۳	حاجت سوال در دست قدرت		و دور بینی نشان		بر شش قسم
۲۱۴	تمت کتاب اینده تیه علیها السلام	۲۴۱	امروز که در وقت بیخ و شر و عدم	۲۷۵	فضیلت ذکر کلمات اربعه
	و اکثریت زمان روز و خیر یا سبب گشتن		وزن کردن وقت خرج	۲۷۵	بیان مصلحتی که بنشین هم مسافرت و خروج مسافر
	و نا شکری شوهران	۲۴۲	گواه بر دمی و قسم در معایر لغات و کلمات		و وقوع آن که از همه معجزات است
۲۲۰	تأکید طلب حلال	۲۴۲	فضیلت سواک پنجگانه کردن	۲۷۹	بیان آنحضرت در باره گناه و نحو این که باکی است

۳۲۸	معجزه اخبار فرخ کله و دو قوش	۳۹۹	غازی اهل بیت بجمعی نسیم	۳۹۹	دلیل عدم جواز علم رمل و غیره
۳۲۹	معجزه اخبار ریح آینه یعنی آذری	۴۰۰	رفع امانت داری ظهور بدیانتی	۴۰۰	خواه با فیاض اسلام حق باشد لکن
۳۳۰	انتقال عام عثمانی که غایت اجماع است	۴۰۱	فضیلت آخر شب وقت استجابت دعا	۴۰۱	مقام شهبازی می افتد و چندی کاشفات اولیا
۳۳۱	گروه حضرت در باب اخذ فدایا سیران	۴۰۲	خبر رفتن بنی امیه	۴۰۲	سکایت ابو ذر ع روایت حضرت مایش
۳۳۲	و اجتماع و عمل برای آنحضرت را	۴۰۳	در کمال حق نزداری را بر مال و نسب	۴۰۳	در قصه یازده زن
۳۳۳	مصلی اندک علیه آله و سلم	۴۰۴	و جمال سمت را باید داشت	۴۰۴	که ایت بی حضرت اخذ و در سوا سنی گوی
۳۳۴	کیفیت غسل حیض	۴۰۵	تعداد فرشتگان کشته دوزخ	۴۰۵	جواز زیارت قبر بعد از امتناع غسل
۳۳۵	بیان درجه شهادت	۴۰۶	گواهی است محمدی بر دعوی نوح علیه السلام	۴۰۶	نوازش فرمائی حضرت در باب غیبت
۳۳۶	ذمت فغان و دورونی	۴۰۷	عجلت در دعا مانع قبولیت دعاست	۴۰۷	که شرف صحبت ترسیده
۳۳۷	تذکره پیغمبر ارضی با قصه و تالاک پیغمبر خود	۴۰۸	بیان الزام نصاری سبب ترک ختنه	۴۰۸	و فضیلت جهاد
۳۳۸	جواز تشنگی نری و حزن قلب	۴۰۹	معجزه اخبار شهادت پیغمبر و عده و الطاف	۴۰۹	حدیث درویشی آتی ذکر دوزخ و پشت سر
۳۳۹	معجزه خبر فتح عرب فارس روم	۴۱۰	بیان قبول آقا با گرچه چند بار تو نجسته	۴۱۰	و قصه خشکی بعد از جهاد و ریش نهادن
۳۴۰	و قریب طوالت نصاری غریب قیامت	۴۱۱	دلیل فضیلت بر عظمی بر است و کوه	۴۱۱	بیان جزای کذاب زانی و سود خور
۳۴۱	قصه حضرت اویس قرنی رحمه الله علیه	۴۱۲	و عیسوی از حدیث و انجیل	۴۱۲	تارک عمل بر قرآن
۳۴۲	بیان مراتب امامت	۴۱۳	ذمت حریفین تعریف غازی گناهم کرد	۴۱۳	شدن آحضرت اشعار امیه را
۳۴۳	تشبیه الاله و الاله و انیکه جز علی در گو	۴۱۴	اطاعت امیه باشد	۴۱۴	جواز رد و بیخودگی که ایت بی مهر و مهر
۳۴۴	غوغاری نیست	۴۱۵	اسلام علی ک کوان منته آدم علیه السلام	۴۱۵	قصه طلوع قرطاس و ریش بد شیده
۳۴۵	سبب و فرشتگان اخبار نویس	۴۱۶	علامت ذلعه ایمانی	۴۱۶	در گنا مان کبیره
۳۴۶	حدیث شفاعت کبری و عام محمود	۴۱۷	دلیل امتناع ساجی امام قاصم و شهادت	۴۱۷	تفصیل حراز مدح و عدم جواز آن
۳۴۷	ذمت تحت کنندگان انبیا و اولیا	۴۱۸	غوث الاعظم	۴۱۸	معجزه خبر آینه و کثیر آب
۳۴۸	فضیلت نماز شب	۴۱۹	ثواب غیرات نمانع نمیشود اگر چه بناد	۴۱۹	معجزه ادای قرض حایر و کم نشدن غرام
۳۴۹	ترغیب خیرات و ترهیب اذکار	۴۲۰	بیموقع صرف شود	۴۲۰	حریت نو و گری
۳۵۰	بیان وسعت رحمت آتی	۴۲۱	بیان ابتدای آفرینش عالم	۴۲۱	که ایت لباسیکه در حضور خلل اندازد
۳۵۱	نصف نبل بهشت است محمدی خواهد بود	۴۲۲	آینه قبولیت و نیکو کنش می گوی	۴۲۲	و جوب تبدیل ارکان
۳۵۲	خبر و ازده مالک بعد آنحضرت علیه السلام	۴۲۳	آینه در ویش و ساه و کرامت طفل	۴۲۳	و صورت عدم قدرت ابدی اندر و نسبت
۳۵۳	و آله و سلم غایبند بود	۴۲۴	و ظهور بدایت آتی	۴۲۴	تقلید طریق معالیه با زنان

صحیحنا مع صحیفۃ الانبیاء ترجمہ مشارق الانوار							
۱	۲	۳	۴	۱	۲	۳	۴
مسیح	غلط	۸۹	۸	مسیح	غلط	۳۴	۲
اوسکو	اوسکو	۸۹	۸	رئی	رئی	۳۴	۲
پڑوس	پڑوس	۱۷	۷	تئی	تئی	۳۴	۲
عائشہ	عائشہ	۱۸	۸	یونس	یونس	۲۵	۵
قرآن	قرآن	۱۹	۹	یصل	یصل	۱۸	۸
قرآن	قرآن	۱۹	۹	تک	تک	۱۵	۵
غلیل	غلیل	۲۱	۱۱	تئی	تئی	۲۵	۵
رائی	رائی	۲۷	۱۷	نہ سے	نہ سے	۱۸	۸
اور غلگلم	اور غلگلم	۲۹	۱۹	بداء	بداء	۲۸	۸
نی	نی	۳	۳	یہ دے	یہ دے	۲۷	۷
القصی	القصی	۴	۴	کے ہوئے	کے ہوئے	۲۸	۸
حب	حب	۸	۸	والد کان	والد کان	۱۲	۲
کریم	کریم	۱۸	۱۸	جاری	جاری	۳	۳
مفصل	مفصل	۲۳	۲۳	وین این میں این	وین این میں این	۱۲	۱۲
مین	مین	۲۲	۲۲	عز الدم	عز الدم	۵	۵
عزو	عزو	۸	۸	لین این	لین این	۱۵	۱۵
قسما	قسما	۵	۵	ان اعدا	ان اعدا	۱	۱
سیر	سیر	۲۲	۲۲	ابوہریرہ	ابوہریرہ	۲	۲
عبر	عبر	۵	۵	کینکم	کینکم	۵	۵
تقلیل	تقلیل	۲	۲	پرومین	پرومین	۵	۵
رائینا	رائینا	۲۶	۲۶	آخر	آخر	۱۸	۱۸
قصوم	قصوم	۵	۵	اما	اما	۲۷	۲۷
انکہ	انکہ	۹	۹	واممہم	واممہم	۲۶	۲۶
نونی	نونی	۱۹	۱۹	سینلر	سینلر	۱۸	۱۸
بہر	بہر	۱۹	۱۹	مھا	مھا	۵	۵
جھن	جھن	۱۹	۱۹	بیطر	بیطر	۲۶	۲۶
لیس	لیس	۸	۸	اعلکم	اعلکم	۵	۵
روایت	روایت	۱۸	۱۸	سندر	سندر	۸	۸
مناجسوا	مناجسوا	۲۳	۲۳	الفرک	الفرک	۱۹	۱۹
نہ	نہ	۴	۴	نکین	نکین	۱۲	۱۲
سندر	سندر	۱۹	۱۹	انکا	انکا	۱۱	۱۱
دیار	دیار	۵	۵	اور عین	اور عین	۱۳	۱۳
ایقین	ایقین	۳	۳	عرو	عرو	۱	۱
واممہم	واممہم	۵	۵	کھل	کھل	۲۳	۲۳
انکہ	انکہ	۲	۲	لنور	لنور	۲	۲

